Annual Report
and Accounts

Indian Council of Philosophical Research

वार्षिक रिपोर्ट
एवं लेखा

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

वार्षिक रिपोर्ट
2014—2015

दर्शन भवन
36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, एम. बी. रोड, नई दिल्ली—110062

आईसीपीआर वार्षिक रिपोर्ट
2014–15

सदस्य सचिव
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
दर्शन भवन,
36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया,
एम.बी. रोड, नई दिल्ली–110062
द्वारा प्रकाशित

011–29901505, 011–29901506
ईमेलः icpr@bol.net.in

अध्यक्ष की कलम से

मुझे वर्ष 2014–15 के लिए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है।

वार्षिक रिपोर्ट में परिषद् द्वारा संबंधित वर्ष के दौरान उसे दिए गए लक्ष्यों और उद्देश्यों को हासिल करने के लिए आयोजित किए गए कार्यक्रमों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया गया है। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हम देश के विभिन्न हिस्सों में नियमित शैक्षिक कार्यकलाप आयोजित करने में सफल रहे : इन कार्यकलापों में संगोष्ठियां, सम्मेलन, कार्यशालाएं, देश और विदेश के प्रख्यात दार्शनिकों के व्याख्यान और हमारे युवा शोध छात्रों के लिए आयोजित किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं। हमने योग्य शोध छात्रों को विभिन्न श्रेणियों में फैलोशिप भी प्रदान की। लखनऊ स्थित हमारा शैक्षिक केन्द्र विगत वर्षों की भांति पूरी तरह सक्रिय रहा और इसने बड़ी संख्या महत्वपूर्ण शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किए।

देश के विभिन्न हिस्सों में स्थित विश्वविद्यालयों में दर्शन के विभिन्न क्षेत्रों में स्पेशल चेयरर्स गठन करने का निर्णय इस वर्ष का एक महत्वपूर्ण और दूरगामी कदम है। दार्शनिक समुदाय और विश्वविद्यालयों ने इस कदम का जोरदार स्वागत किया है।

मृणाल मिरी,
अध्यक्ष

प्राक्कथन

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट (2014–15) हमारे कार्यकलापों के तीनों खंडों यथा शैक्षिक, प्रशासनिक एवं वित्तीय खंड का विवरण प्रस्तुत करती है। शैक्षिक खंड का संचालन मुख्यतया लखनऊ स्थित ग्रंथालय और शैक्षिक केन्द्र से होता है। व्याख्यान, सेमिनार, सम्मेलन, कार्यशालाएं एवं अध्ययन सर्कल बैठकें नियमित कार्यकलाप हैं। आईसीपीआर आवधिक व्याख्यान, विश्व दर्शन दिवस और आईसीपीआर राष्ट्रीय विजिटिंग प्रोफेसरों (भारतीय और विदेशी) के व्याख्यान कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी अखिल–भारतीय दृश्यता और उपस्थिति को असरदार तरीके से सुनिश्चित करता है। परियोजना अनुसंधान समिति ने देश के सभी आठ भौगोलिक जोनों यथा उत्तर–पश्चिम जोन, उत्तर जोन, पूर्वोत्तर जोन, पश्चिम जोन, मध्य जोन, दक्षिण जोन और तटीय भारत में चेयर–प्रोफेसरशिप और दर्शनशास्त्र शिक्षक बैठक आयोजित की। इसके अलावा, इस वर्ष विदेशी सहयोगी और परिषद् के प्रकाशन विभाग अधिक सक्रिय रहें। जेआईसीपीआर एक ई–जर्नल बन गया है और इसके दो अंक बाजार में आए। हम इसके पिछले अंकों के लिए भी कड़ी मेहनत कर रहे हैं।

परिषद् के कार्यकलाप इसकी वेबसाइट **(www.icpr.in)** पर भी दर्शाए जाते हैं। हमारे कार्य/विज्ञापन राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्रों और रोजगार समाचार पत्र में भी प्रकाशित किए गए। मूल रूप से आइसीपीआर एक वैश्विक अनुसंधान विश्वविद्यालय है, जो दर्शन के क्षेत्र में काम करता है। अनुसंधान अपडेट और वर्तमान डिबेट का उल्लेख करने की आवश्यकता है। कर्मियों द्वारा दैनिक आधार पर प्रभावी निगरानी की जाती है। कर्मियों के सेवानिवृत्त होने के कारण उनकी संख्या में लगातार कमी आ रही है। इसलिए लक्ष्य को पाना हमारे लिए काफी चुनौती भरा काम हो गया था।

वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के एक नीतिगत निर्णय के अनुसरण में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने सभी स्वायत्त निकायों के योजना और गैर–योजना शीर्षों के अनुदान में कटौती की है। लेखक से भेंटे, फैलो मीट और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ने युवा और वरिष्ठ शिक्षाविदों को आकर्षित करने और एकजुट करने का काम किया।

उपरोक्त परिस्थितियों के दृष्टिगत वर्ष 2014–15 को एक सफल वर्ष के रूप में माना जा सकता है।

(डॉ. एम. पी. सिंह)
सदस्य–सचिव, आईसीपीआर

विषय–वस्तु

	अध्यक्ष की कलम से	3
	सदस्य सचिव का प्राक्कथन	4
	विषय–वस्तु	5
I.	लक्ष्य एवं उद्देश्य	6
II.	संगठनात्मक संरचना	8
III.	बैठकें	9
IV.	शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ (कार्यक्रम और कार्यकलाप)	10
V.	फैलोशिप	18
VI.	परियोजनाएं	33
VII.	प्रकाशन	34
VIII.	सेमिनार / सम्मेलन / कार्यशालाएं / परिचर्चा / संवाद, इत्यादि	35
	क. सेमिनार / सम्मेलन / कार्यशाला के लिए आईसीपीआर अनुदान	35
	ख. कार्यशाला के लिए सीपीआर अनुदान	63
	ग. आईसीपीआर द्वारा आयोजित सेमिनार	67
	घ. आईसीपीआर द्वारा आयोजित कार्यशालाएं	68
	ड. लेखक से भेंट कार्यक्रम	69
IX.	दर्शनशास्त्र के शिक्षकों का सम्मेलन	70
X.	फैलो मीट	74
XI.	अध्यापन तर्कशास्त्र	79
XII.	व्याख्यानमाला	79
XIII.	प्रख्यात भारतीय और विदेशी विद्वानों के व्याख्यान	80
	क. विजिटिंग प्रोफेसरों (विदेशी) के व्याख्यान	80
	ख. विजिटिंग प्रोफेसरों (भारतीय) के व्याख्यान	81
	ग. विशेष व्याख्यान कार्यक्रम	
	घ. आईसीपीआर राष्ट्रीय फैलो द्वारा व्याख्यान	86
XIV.	आवधिक व्याख्यान	86
XV.	विश्व दर्शन दिवस	93
XVI.	आईसीपीआर का पुस्तक अनुदान	100
XVII.	लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड	104
XVIII.	हिंदी पखवाड़ा का आयोजन	107
XIX.	परिषद्, जीबी, आरपीसी और एफसी के सदस्य	109
XX.	वार्षिक लेखों की टिप्पणी	115
XXI.	फोटो खंड	171

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
आईसीपीआर वार्षिक रिपोर्ट 2014–15

I. लक्ष्य एवं उद्देश्य

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् को सोसाइटी अधिनियम, 1860 के तहत मार्च, 1977 में सोसाइटी के रूप में पंजीकृत किया गया था, मगर इसने वास्तविक रूप से 1981 में प्रोफेसर डी. पी. चट्टोपाध्याय के अध्यक्षता में काम करना शुरू किया था।

भारत सरकार द्वारा परिषद् की स्थापना निम्नलिखित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के लिए की गई थी :–

- दर्शन के क्षेत्र में अनुसंधान की प्रगति की समय–समय पर समीक्षा करना;
- दर्शन के क्षेत्र में परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों को प्रायोजित करना या सहायता करना;
- दर्शन के क्षेत्र में अनुसंधान करने में शामिल संस्थानों और संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करना;
- व्यक्तियों या संस्थानों द्वारा दर्शन के क्षेत्र में अनुसंधान परियोजनाएं एवं कार्यक्रम तैयार करने के लिए तकनीकी सहायता और सलाह देना और/या अनुसंधान पद्धति में प्रशिक्षण आयोजित करना और संस्थागत सहायता या अन्य तरह की मदद करना;
- समय–समय पर क्षेत्र और विषय सूचित करना, जिनके संबंध में दर्शन में अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाने चाहिए और दर्शन के उपेक्षित एवं उभरते क्षेत्रों में अनुसंधान के विकास के लिए विशेष उपाय करना;
- दर्शन के क्षेत्र में कार्यकलापों में अनुसंधान में समन्वय करना और अंतर–विषय अनुसंधान के कार्यक्रम को बढ़ावा देना;
- दर्शन में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए सेमिनार, विशेष पाठयक्रमों, अध्ययन सर्कल, कार्यकारी समूह/पक्षों और सम्मेलन आयोजित, प्रायोजित करना और सहायता प्रदान करना; और इन्हीं उद्देश्यों के लिए संस्थान स्थापित करना;
- दर्शन में अनुसंधान को समर्पित संकलनों, पत्रिकाओं, पुस्तकों के प्रकाशन के लिए अनुदान देना और उनका प्रकाशन शुरू करना;
- छात्रों, शिक्षकों और अन्य द्वारा दर्शन में अनुसंधान के लिए फैलोशिप, छात्रवृत्ति और अवार्ड स्थापित करना और प्रदान करना;
- डाटा के रखरखाव और आपूर्ति सहित प्रलेखन सेवाओं का विकास और सहायता करना, दर्शन में वर्तमान अनुसंधान की सूची तैयार करना और दार्शनिकों का राष्ट्रीय रजिस्टर का संकलन करना;
- दार्शनिकों और दार्शनिक संस्थानों एवं अन्य देशों के दार्शनिकों एवं दार्शनिक संस्थानों के बीच अनुसंधान में

सहयोग को बढ़ावा देना;

- प्रतिभासंपन्न युवा दार्शनिकों का समूह तैयार करने के लिए विशेष कदम उठाना और विश्वविद्यालयों एवं अन्य संस्थानों में कार्यरत युवा दार्शनिकों के अनुसंधान को बढ़ावा देना;
- भारत सरकार द्वारा उसे समय–समय पर सौंपे गए दर्शन में अध्यापन और अनुसंधान संबंधी सभी मामलों पर भारत सरकार को सलाह देना;
- परस्पर सहमति वाली शर्तों पर अन्य संगठनों और एजेंसियों के साथ दर्शन में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए समझौते करना;
- दर्शनशास्त्र में अध्यापन और अनुसंधान को बढ़ावा देना;
- दर्शन में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर वो सभी कदम उठाना जो जरूरी समझे जाएं; और
- नियमों एवं विनियमों के उपबंधों के अनुसार, परिषद् में शैक्षिक, प्रशासनिक, तकनीकी, लिपिकीय और अन्य पद बनाना और उन पर भर्ती करना।

वित्तपोषण / वित्त :–

परिषद् की निधियों में निम्नलिखित शामिल हैं :–

(क) परिषद् के लक्ष्यों के विस्तार के लिए भारत सरकार द्वारा दिए गए अनुदान;

(ख) अन्य स्रोतों से अंशदान;

(ग) उपहार, दान, चंदा, उत्तरदान और अन्य अंतरण;

(घ) अन्य स्रोतों से परिषद् की प्राप्तियां;

(ङ.) परिषद् की परिसंपत्तियों से आय।

II. संगठनात्मक संरचना

इसमें चार प्रमुख निकाय यथा परिषद् सदस्यों का शासी निकाय, अनुसंधान परियोजना समिति और वित्त समिति शामिल हैं, जो आईसीपीआर के मुख्य संगठनात्मक संरचना का निर्माण करते हैं। परिषद् आईसीपीआर का सर्वोच्च निकाय है, इसके सदस्यों में प्रतिष्ठित दार्शनिक, सामाजिक वैज्ञानिक, विभिन्न सांविधिक निकाय यथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, केन्द्र सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार के प्रतिनिधि शामिल हैं। शासी निकाय (जीबी) और अनुसंधान परियोजना समिति (आरपीसी) आईसीपीआर के मुख्य निर्णय निर्धारक निकाय हैं। इन निकायों के सुपरिभाषित अधिकार और कार्य हैं। शासी निकाय में एक अध्यक्ष, सदस्य सचिव, जिनकी संख्या तीन से कम और आठ से अधिक नहीं होती है, और जिनकी नियुक्ति परिषद् द्वारा की जाती है, मानव संसाधन विकास मंत्रालय और वित्त मंत्रालय का एक–एक प्रतिनिधि और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मनोनीत दो सदस्य शामिल होते हैं। यह परिषद् के कार्य प्रदान करता है, निर्देशित और नियंत्रित करता है। अनुसंधान परियोजना समिति में एक अध्यक्ष, परिषद् द्वारा नियुक्त सदस्य, जिनकी संख्या पांच और नौ के बीच होती है, और एक सदस्य सचिव शामिल है। यह परिषद् द्वारा प्राप्त या नियोजित परियोजनाओं और अन्य प्रस्तावों के लिए अनुदान सहायता की जांच–पड़ताल करती है और स्वीकृति प्रदान करती है। वित्त समिति परिषद् के व्यय से संबंधित बजट अनुमानों और अन्य प्रस्तावों की जांच पड़ताल करती है।

केन्द्र सरकार द्वार नियुक्त अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव के सुपरिभाषित अधिकार और कार्य हैं।

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, प्रोफेसर मृणाल मिरी अध्यक्ष के पद पर बने रहें।

डॉ. मनेन्द्र प्रताप सिंह सदस्य सचिव के पद पर बने रहे।

परिषद् में दो निदेशक हैंः 1. डॉ. मर्सी हेलन, निदेशक (नियोजन और अनुसंधान) और 2. डॉ0 अरुण मिश्रा, निदेशक (अकादमिक)। डॉ. अरुण मिश्रा नवंबर, 2014 तक इस पद पर बने रहे। परिषद् में दो कार्यक्रम अधिकारी नामतः डॉ. सुशिम दुबे, वर्तमान में आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ में सेवारत और डॉ. सरोज कांता कार, दिल्ली कार्यालय में सेवारत हैं। श्री श्रीधरन श्रीकुमारन, जो लेखा अधिकारी के पद पर काम कर रहे हैं, को आज तिथि तक निदेशक प्रभारी (प्रशासन एवं वित्त) का अतिरिक्त कार्यभार भी दिया गया है।

III. बैठकें

समय–समय पर गठित अन्य समितियों के अलावा परिषद् के प्रमुख निकाय रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, समय–समय पर बैठकें करते हैं, जिनका ब्यौरा निम्नानुसार है :–

1. एक परिषद् बैठकः 8 जनवरी, 2015
2. शासी निकाय की दो बैठकें: 19 जून, 2014 और 8 जनवरी, 2015
3. वित्त समिति की दो बैठकें: 18 जून, 2014 और 7 जनवरी, 2015
4. अनुसंधान परियोजना समिति की दो बैठकें: 76वीं आरपीसी–18 जून, 2014 और 77वीं आरपीसी–7 जनवरी, 2015
5. आरपीसी की उप समिति की बैठकें: 28 अक्टूबर, 2014 और 18 फरवरी, 2015
6. जेआईसीपीआर की बैठकें: (I) 17 अक्टूबर, 2014 को आईसीपीआर और स्प्रिंगर का समझौता,
7. फैलोशिप चयन समितिः

   (1) जेआरएफ और जीएफ के चयन हेतु फैलोशिप चयन समिति की दो बैठकें 26 से 29 मई 2014 को आयोजित की गई।

   (2) एसएफ जेआरएफ के चयन हेतु फैलोशिप चयन समिति की दो बैठकें 10 से 11 दिसंबर 2014 को आयोजित की गई।

8. अन्य महत्वपूर्ण बैठकें :–

   (I) वर्ष 2014–15 के लिए अजा और अजजा बजट आवंटन के शीर्ष के तहत शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए 10 जून, 2014 को बैठक आयोजित की गई।

   (II) अध्यक्ष द्वारा कर्मियों के साथ और एमएस द्वारा कर्मियों के साथ आवधिक बैठकें आयोजित की गई।

   (III) हिंदी पर कार्यक्रमों के लिए बैठकें।

IV. शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ (कार्यक्रम और कार्यकलाप)

लखनऊ स्थित परिषद् के शैक्षिक केन्द्र ने वित्त वर्ष 2014–15 के दौरान विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए।

क्र. सं.	कार्यकलाप की श्रेणी	कार्यकलापों की संख्या
क	कार्यशालाएं	5
ख	सेमिनार	2
ग	व्याख्यान कार्यक्रम (विदेश में)	2
घ	व्याख्यान कार्यक्रम (भारत में)	4
ड.	अन्य व्याख्यान (विश्व दर्शन दिवस, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस)	2
च	युवा शोध छात्र सेमिनार	1
छ	हिंदी पखवाड़ा	1

कार्यक्रमों और कार्यकलापों की विस्तृत रिपोर्ट निम्नानुसार हैः

रसेल्स प्रोब्लम ऑफ फिलोसफी पर कार्यशाला
20–29, अगस्त, 2014

यह कार्यशाला बुधवार, 20 अगस्त, 2014 को पूर्वाह्न 10 बजे शुरू हुई। प्रोफेसर राकेश चंद्रा के उदघाट्न भाषण के उपरांत सभी प्रतिभागियों ने डॉ. विजय टंखा और डॉ. प्रियदर्शनी जेटली की उपस्थिति में अपना–अपना संक्षिप्त परिचय दिया।

अध्याय 1: दर्शन की समस्या का 'एपीएरेंस एंड रिएलिटी पर डॉ. विजय टंखा के व्याख्यान के साथ पहला सत्र तय कार्यक्रमानुसार शुरू हुआ (कार्यक्रम की प्रति रिपोर्ट के अंत में संलग्न है)। डॉ. टंखा ने पश्चिमी दर्शन और प्राचीन युनानी दर्शन में रसेल के दर्शन की जड़ों के परिप्रेक्ष्य में पुस्तक के साथ शुरूआत की। कार्यक्रम में 31 सत्र/अध्यापन घंटे थे। प्रतिभागियों की अंतिम प्रस्तुति शिक्षण विषय पर आधारित थी, जिसके बाद प्रश्नोत्तरी सत्र आयोजित किया गया। कुल चौबीस प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुतियां प्रस्तुत की। प्रस्तुतियां विस्तृत श्रेणी की थी। कई प्रस्तुतियां पहचान द्वारा ज्ञान और वर्णन द्वारा ज्ञान के बीच के अंतर और हम पहचान द्वारा अपने ज्ञान के वर्णन द्वारा कैसे ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, की समस्या पर केन्द्रित थी।

अंतिम 36वें सत्र में, डॉ. सुशिम दुबे, कार्यक्रम अधिकारी, आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ की उपस्थिति में प्रत्येक प्रतिभागी ने कार्यशाला के बारे में अपने संपूर्ण प्रभाव और आकलन के बारे में बताया। प्रत्येक प्रतिभागी को सहभागिता प्रमाणपत्र भी दिया गया और कार्यशाला का समापन 29 अगस्त, 2014 को 05.15 बजे हुआ।

''फिलोसफी ऑफ माइंड'' पर कार्यशाला संबंधी रिपोर्ट
1–10 सितंबर, 2014

समकालीन दृष्टिकोण से मन के दर्शन पर प्रतिभागियों से डिबेट और चर्चा शुरू कराने के लिए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् द्वारा 'फिलोसफी ऑफ माइंड' पर एक 10 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कोर्स को चार मॉडयूल में बांटा गया था: मन का तत्वमीमांसा, मन की ज्ञानमीमांसा, अर्थ संबंधी समस्याएं केन्द्रित मन और मन के दर्शन की कार्यपद्धति। पूरे कोर्स को इंटर–एक्टिव व्याख्यान सत्रों, चिंतन प्रयोगों और महत्वपूर्ण मुद्दों पर ब्रेन स्टोर्मिंग सत्रों की सहायता से तैयार किया गया था। कक्षा भागीदारी के आधार पर चुने गए कुछ विषयों पर प्रतिभागियों को प्रश्न पूछने और प्रस्तुतियां प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उन्हें संसाधन सामग्रियां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराई गई थी, जिसकी सूची नीचे संलग्न की गई है।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के बाद, पहला शैक्षिक सत्र शुरू हुआ। प्रोफेसर चटर्जी ने प्रतिभागियों को 90–90 मिनट के तीन लगातार सत्रों के लिए मन के दर्शन हेतु समकालीन दृष्टिकोणों की जानकारी दी और भारतीय दार्शनिक परिदृश्य में समानांतर डिबेट के प्रति उनका ध्यान आकर्षित किया। पहले दिन का अंतिम सत्र डॉ. स्मिता ने आयोजित किया, उन्होंने मन–शरीर द्ववैतवाद और इसकी विभिन्न किस्मों से संबंधित दार्शनिक समस्या पर विचार किया गया। यह कार्यशाला 10 दिन तक चली। कार्यशाला के अंतिम दिन 'आंतरिक क्या हो सकता है?', 'अंगभूत संबंध का क्या अर्थ है, क्या आंतरिक बाहरी विभेद टिकाऊ है?' और 'क्या स्व की भावना भीतरी–बाहरी विभेद की स्वीकार्यता या अस्वीकार्यता के अनुकूल है?' पर इंटरेक्टिव चर्चाएं आयोजित की गई। समापन सत्र के साथ कोर्स समाप्त हुआ।

''द मेकर्स ऑफ एनेलिटिक फिलोसफी'' पर कार्यशाला
8–18 अक्टूबर, 2014

8 अक्टूबर से 17 अक्टूबर, 2014 के बीच प्रोफेसर आर. सी. प्रधान के नेतृत्व में आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ में **''विश्लेषणात्मक दर्शन के सृजक''** पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को विश्लेषणात्मक दर्शन के क्षेत्र में हुई प्रगति से अवगत कराना और समकालीन समय में दार्शनिक पद्धति के रूप में विश्लेषण के महत्व का प्रदर्शन करना था।

यह कार्यशाला विश्लेषणात्मक दर्शन के संस्थापकों जैसे फर्जे, रसेल, मूल और विटजेंसटिन के मौलिक योगदान पर चर्चा पर केन्द्रित थी। कार्यशाला में भावना की अवधारणा, संदर्भ, विचार और फर्जे में सत्य, रसेल में विवरणों का सिद्धांत जी.ई. मूर में कॉमनसेंस की रक्षा और बाहरी दुनिया का प्रमाण और विटजेंसटिन में भाषा एवं अर्थ की चित्र सिद्धांत, भाषा–खेल, नियमों का पालन और नैतिकता एवं धर्म में समस्याओं पर विचार किया गया।

प्रोफेसर राकेश चंद्रा, दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ने अपने व्याख्यान में विश्लेषण की पद्धति में ऐतिहाहिसक प्रगति और हमारे समय में इसके महत्व एवं प्रासंगिकता के बारे में बताया। प्रोफेसर साधन चक्रवर्ती, दर्शनशास्त्र विभाग, जाधवपुर विश्वविधालय ने जी. ई. मूर के दर्शन विशेषकर विश्लेषण की उनकी कल्पनाओं,

कॉमनसेंश, दुनिया और नैतिकता में यथार्थवादी दोष पर चर्चा की। प्रोफेसर अमिताभ दास गुप्ता, दर्शनशास्त्र विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय ने फर्जे की भावना की कल्पनाएं, संदर्भ और विचार एवं रसेल के विवरणों का सिद्धांत पर चर्चा की। प्रोफेसर प्रधान, दर्शनशास्त्र विभाग, हैदराबाद विश्वविधालय ने विटजेंसटिन की भाषा की प्रारंभिक और उत्तरवर्ती अवधारणाओं, अर्थ, दुनिया और नैतिकता एवं धर्म पर उनके विचारों पर चर्चा की।

इस कार्यशाला में पूरे देश, विशेषकर जेएनयू, आईआईटी बॉबे, हैदराबाद विश्वविधालय, बीएचयू, लखनऊ विश्वविधालय, मदुरै विश्वविधालय, बर्धवान विश्वविधालय और अन्य विश्वविधालयों के कुल 22 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रतिभागियों ने कार्यशाला में होने वाले विचार–विमर्श में गहरी रूचि दिखाई और चर्चाओं में सक्रियता से भाग लिया। उन्होंने अपनी पसंद के विषयों पर प्रस्तुतियां भी प्रस्तुत की।

प्रोफेसर राजेन्द्र प्रसाद, भारत के प्रतिष्ठित दार्शनिक ने अपने समापान भाषण में विचारों की स्पष्टता के साथ–साथ किसी वैचारिक भ्रम से बचने, आध्यात्मिकता में विश्लेषण पद्धति के अत्यधिक महत्व पर चर्चा की।

शैक्षणिक संयोजक, प्रोफेसर राकेश चंद्रा, कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. सुशिम दुबे और आसीपीआर शैक्षिक केन्द्र के समस्त सदस्यों ने इस कार्यशाला को सफल बनाने में अपना–अपना योगदान दिया।

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस
11 नवंबर, 2014

आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र ने राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम आयोजित किया। प्रो. राकेश चंद्रा के साथ प्रो. निधि बाला, प्रभारी, शिक्षा विभाग, एल. यू. और प्रो. यू. एस. वशिष्ठ (वही विभाग) इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे। छात्रों, शोधार्थियों और फैक्लटी के सदस्यों सहित लगभग 31 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। शिक्षा के इतिहास से लेकर मौजूदा समस्याओं आदि पर इस कार्यक्रम में चर्चा की गई।

विश्व दर्शन दिवस
20 नवंबर, 2014

आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र ने यूनेस्को द्वारा घोषित 20 नवंबर, 2014 को विश्व दर्शन दिवस के रूप में मनाने के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया।

प्रोफेसर एस.बी. निमसे, उप–कुलपति, लखनऊ विश्वविधालय इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। प्रोफेसर प्रदीप गोखले (तिब्बती अध्ययन का केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी) को वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था और चर्चा का मुख्य विषय ''बौद्ध नैतिकता और इसकी प्रासंगिकता'' था। कार्यक्रम के आरंभ में, डॉ. सुशिम दुबे, कार्यक्रम अधिकारी ने प्रोफेसर एस.बी. निमसे, उप–कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय और प्रोफेसर प्रदीप गोखले के साथ अन्य विशिष्ट अतिथियों, विद्वानों एवं छात्रों का स्वागत किया। प्रोफेसर निमसे ने अपने संबोधन में चिंतन के लिए जिम्मेदार तार्किकता के साथ विश्लेषण एवं सवाल–जवाब की सामान्य प्रकृति पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर गोखले ने शोधपत्रों की अपनी प्रस्तुति में बौद्ध दर्शन विशेषकर नैतिकता में मुख्य मुद्दों पर चर्चा की। प्रोफेसर राकेश

चंद्रा ने प्राचीन युनानी सुकरात और दर्शन की परंपरा के बारे में बताया।

व्याख्यान के बाद चर्चा और परस्पर सवाल–जवाब हुए। कार्यक्रम का समापन नवयुग कन्या महाविद्यालय के स्नातक के छात्रों के अकादमिक टूर के साथ हुआ। कार्यक्रम में लगभग 109 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का समापन डॉ. सुशिम दुबे के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

''फिलोसफी ऑन क्वांटम मैकेनिक्स फॉर फिलोसिफर्स एंड सोशल साइंटिस्ट'' पर कार्यशाला 1–10 जनवरी, 2015

आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ में 1–10 जनवरी, 2015 के दौरान **''फिलोसफी ऑन क्वांटम मैकेनिक्स फॉर फिलोसिफर्स एंड सोशल साइंटिस्ट''** पर एक कार्यशाला आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला का आयोजन तीन संसाधन व्यक्तियों यथा प्रोफेसर बिजॉय मुखर्जी, दर्शनशास्त्र एवं धर्म विभाग, विश्व भारती शांतिनिकेतन (संयोजक), प्रोफेसर प्रशांतो बंधोपाध्याय, दर्शनशास्त्र विभाग, मोनटाना विश्वविद्यालय, यूएसए और डॉ. राकेश सेनगुप्ता (हैदराबाद) द्वारा किया गया था। गणित के विभिन्न बुनियादी विषयों पर सघन सत्र आयोजित किए गए और उनकी दार्शनिक व्याख्याओं के साथ क्वांटम भौतिकी पर चर्चा की गई। इस कार्यशाला में देशभर के लगभग 16 शोध छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया।

तर्कसंग्रह ऑफ अन्नमभट्ट पर कार्यशाला 19 जनवरी से 31 जनवरी, 2015

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् ने आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ में 19 जनवरी से 31 जनवरी 2015 के बीच ''तर्कसंग्रह ऑफ अन्नमभट्ट'' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। प्रो. वी.एन. झा कार्यशाला के कोर्स संयोजक थे। कार्यशाला की प्रकृति को देखते हुए देशभर से ढेर सारे आवेदन प्राप्त हुए। लगभग 31 प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला में सक्रियता से भाग लिया। यह कार्यशाला दर्शन एवं संबद्ध क्षेत्रों के शिक्षकों एवं विद्वानों के लिए आयोजित की गई थी और मौलिक दार्शनिक ग्रंथों के पठन के अधिक व्यापक परिप्रेक्ष्य जैसे अन्नमभट्ट का तर्कसंग्रह और और इसके गहन पठन पर अधिक ध्यान दिया गया । प्रोफेसर उज्जवला झा, संस्कृत एडवांस्ड स्टडीज केन्द्र, पूना विश्वविद्यालय और प्रोफेसर वी.एन. झा इसके संसाधन व्यक्ति थे, जिनहोंने ग्रंथ पढ़ाएं। संस्कृत शब्दों की मौलिक शब्दावली, जो भारतीय दर्शन को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं, विशेषकर न्याय पर ग्रंथ ''तर्क–संग्रह'' के पठन के साथ चर्चा की गई।

इस कार्यशाला का शुभारंभ प्रोफेसर झा द्वारा मंगलाचरण के साथ किया गया। डॉ. सुशिम दुबे, कार्यक्रम अधिकारी और प्रभारी शैक्षिक केन्द्र द्वारा प्रतिभागियों का स्वागत किया गया। 31 जनवरी, 2015 को समापन सत्र आयोजित किया गया जिसमें प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

आईसीपीआर के राष्ट्रीय फेलो, प्रो. पी. के. महापात्रा का व्याख्यान कार्यक्रम 22 जनवरी, 2015

आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ के सम्मेलन कक्ष में 22.01.2015 को आईसीपीआर के राष्ट्रीय फेलो, प्रो. पी. के. महापात्रा का व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्रोफेसर महापात्रा का व्याख्यान दो विषयों पर केन्द्रित था, जिन पर उन्होंने अपने शोधपत्र तैयार किए थे। पहला विषय था–''ऐथिक्स, एप्लाइड ऐथिक्स एंड इंडियन थ्योरीज ऑफ मोराल्स'' और दूसरा विषय था–''थ्योरी ऑफ कर्म''।

प्रोफेसर महापात्रा ने नैतिकता के विभिन्न सिद्धांतों पर अपने विचारों के बारे में श्रोताओं को विस्तार से बताया। अपने व्याख्यान में उन्होंने प्राचीन ग्रंथों और भारतीय परंपराओं के उपाख्यानों का संदर्भ लिया और अपना विश्लेषण प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यान के बाद सत्र में श्रोताओं के लिए चर्चा और परस्पर सवाल–जवाब का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 36 से अधिक प्रतिभागी मौजूद थे।

आरंभ में प्रोफेसर राकेश चंद्रा ने वक्ताओं का श्रोताओं से परिचय कराया। प्रोफेसर निरूपमा श्रीवास्तव, पूर्व प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ने सत्र की अध्यक्षता की। कार्यक्रम अधिकारी और केन्द्र के प्रभारी डॉ. सुशिम दुबे के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

प्रो. रिचर्ड सोराबजी, आईसीपीआर विजिटिंग प्रोफेसर (विदेशी) का व्याख्यान कार्यक्रम 02 फरवरी, 2015

आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ के सम्मेलन कक्ष में 02.02.2015 को प्रो. रिचर्ड सोराबजी, आईसीपीआर विजिटिंग प्रोफेसर (विदेशी) का व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस व्याख्यान का विषय ''फ्रीडम ऑफ कोसाइंस वर्सिस रिलीजन एंड स्पीच'' था। डॉ. सुशिम दुबे, कार्यक्रम अधिकारी और केन्द्र प्रभारी के स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम 14.30 बजे शुरू हुआ। प्रो. राकेश चंद्रा ने वक्ताओं का श्रोताओं से परिचय कराया।

प्रो. सोराबजी ने अपने व्याख्यान में शब्द ''अंतरात्मा'' की अलग–अलग व्याख्याएं प्रस्तुत की और हिब्रू, रोमन आदि में ऐतिहासिक अर्थ के बारे में बताया। उन्होंने बोलने की आजादी और इसके संबंध, भूमिका एवं दायरे के साथ अंतरात्मा बनाम धर्म का वर्णन विशेषकर पश्चिमी दार्शनिक परंपराओं के संदर्भ में किया। प्रो. सोराबजी ने भारतीय परंपरा, गांधी जी की विचारधारा और भारतीय दंड संहिता से उदाहरण प्रस्तुत किए।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. उर्वशी साहनी, निदेशक, अध्ययन कक्ष फाउंडेशन ने की। व्याख्यान कार्यक्रम में लगभग 38 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें शोध छात्र, नौकरशाह, चिकित्सक और दर्शन एवं अन्य विषयों के शिक्षक शामिल हैं। व्याख्यान कार्यक्रम में गोरखपुर विश्वविद्यालय के शिक्षकों/फैकल्टी सदस्यों एवं विद्वानों ने भी भाग लिया। स्थानीय अखबारों, हिंदुस्तान टाइम्स (हिंदी) ने 03.02.2015 को इस व्याख्यान कार्यक्रम की खबरें

प्रमुखता से प्रकाशित की।

निबंध प्रतियोगिता एवं युवा शोध छात्र सेमिनार
16–17 फरवरी, 2015

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् ने अपने शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ में निबंध प्रतियोगिता एवं युवा शोध छात्र सेमिनार का आयोजन किया था। यह कार्यक्रम 25 वर्ष से छोटे युवा शोध छात्रों से प्रविष्टियां आमंत्रित करके आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम सभी विषयों के समूह शोध छात्रों के लिए खुला था।

कार्यक्रम के लिए प्रत्येक वर्ष का विषय तय किया जाता है और इस वर्ष का विषय था ''समुदाय, पहचान और व्यक्ति के अधिकार''। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार और दर्शनशास्त्र विभाग के प्रमुख को पत्र भेजकर कार्यक्रम का संक्षित विवरण और विषय को विभिन्न राष्ट्रीय समाचारपत्रों में प्रकाशित किया गया था।

मूल्यांकन के लिए लगभग 31 प्रविष्टियां भेजी गई थी, जो इस कार्यक्रम का पहला चरण है। प्रो. एस.पी. गौतम (जेएनयू), प्रोफेसर ओइनम भगत (जेएनयू) और प्रोफेसर लॉर्डनाथन (मदुरै) इस कार्यक्रम के मूल्यांकनकर्ता एवं जज थे।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में युवा शोध छात्रों ने व्यक्तिगत प्रस्तुतियां प्रस्तुत की, जो आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र में 16–17 फरवरी, 2015 को आमंत्रित की गई थी। प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुतितियां देने, विषय पर आगे की चर्चा में पूरे जोश और उत्साह के साथ भाग लिया।

जजों के निर्णयानुसार कार्यक्रम के विजेता निम्नानुसार रहेः प्रथम पुरस्कार (किसी प्रतिभागी को प्रदान नहीं किया गया), द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त रूप से) श्री जस्टिन, जोस पूनजाट और सुश्री सलमा जफर को दिया गया। तृतीय पुरस्कार (संयुक्त रूप से) सुश्री रूचिका मान और श्री आकाश सिंह को प्रदान किया गया। सांत्वना पुरस्कार–सुश्री वंदना उपाध्याय, श्री आशुतोष व्यास, सुश्री रिचा आर्य, सुश्री अर्पिता टंडन, सुश्री स्वाति गिलोटरा, श्री पियूष गोयल।

डॉ. सुशिम दुबे, कार्यक्रम अधिकारी और केन्द्र प्रभारी, शैक्षिक केन्द्र द्वारा विद्वानों को भागीदारी प्रमाणपत्र वितरण, नतीजों की घोषणा और जजों को धन्यवाद देने के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रो. सुभाषचंद्र ई. भल्के, आईसीपीआर
विजिटिंग प्रोफेसर (भारतीय)
17 फरवरी, 2015

आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ के सम्मेलन कक्ष में 17.02.2015 को प्रो. सुभाषचंद्र ई. भल्के, आईसीपीआर विजिटिंग प्रोफेसर (भारतीय) का एक व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्रोफेसर भल्के का व्याख्यान भारतीय काव्यशास्त्र और कला प्रदर्शन पर केन्द्रित था और उनके व्याख्यान का शीर्षक था ''भरतमुति थ्योरी ऑफ रस एंड भाव''।

प्रोफेसर भल्के ने भारतमुनि के नाट्यशास्त्र के अनुसार, 'रस' और 'भाव' के विभिन्न पक्षों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि ''रस एक कलाकार की रचना है ताकि एक प्रशंसक इसका अहसास करके सौन्दर्य को अनुभव कर सकें। भरतमुनि ने भावों का एक विस्तृत सिंद्धात तैयार किया था।'' उनके व्याख्यान के बाद, सत्र को श्रोताओं के साथ चर्चा करने और सवाल जवाब करने के लिए खोल दिया गया था, जिसमें प्रतिभागियों ने सक्रियता से भाग लिया और आधुनिक थियेटर एवं कला प्रदर्शन के साथ संबंध पर राय मांगी गई थी।

प्रारंभ में डॉ. सुशिम दुबे ने प्रतिभागियों और आमंत्रित वक्ताओं का स्वागत किया। प्रोफेसर राकेश चंद्रा ने वक्ताओं का श्रोताओं से परिचय कराया। इस कार्यक्रम के दौरान कुल 37 प्रतिभागी मौजूद थे।

दलित थ्योरी एंड एक्सपीरियंस–द क्रेक्ड मिरर पर राष्ट्रीय सेमिनार
11–12 मार्च, 2015

आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ में परिषद् द्वारा दलित थ्योरी एंड एक्सपीरियंस – द क्रेक्ड मिरर पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया था। प्रो. राकेश चंद्रा और प्रो. गोपाल गुरू सेमिनार के संयोजक थे।

शैक्षिक केन्द्र के सम्मेलन कक्ष में 11.03.2015 को पूर्वाह्न 10:45 बजे एक उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया था। जिसमें डॉ. सुशिम दुबे, कार्यक्रम अधिकारी और केन्द्र प्रभारी, शैक्षिक केन्द्र ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और प्रो. राकेश चंद्रा ने कार्यक्रम का विषय और सिद्धांत एवं अनुभव से संबंधित दलित मुद्दों पर आयोजित की गई डिबेट के बारे में बताया और प्रोफेसर गोपाल गुरू ने 2002 के महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान आकर्षित किया। कार्यक्रम के बाद प्रोफेसर गोपाल गुरू ने अपना प्रमुख भाषण दिया, उन्होंने विषयों विशेषकर सिद्धांत एवं अभ्यास, अनुभव और सामाजिक विज्ञानों में समानता के सिद्धांत के समावेशन पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इनमें से कई विषयों पर उनकी पुस्तक ''द क्रेक्ड मिरर'' में चर्चा की गई है, वे प्रोफेसर सुंदर सरूक्की के साथ इसके सह–लेखक हैं और इसका प्रकाशन 2012 में ऑक्सफेम यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा किया गया था। प्रमुख बिंदु और मुद्दे सेमिनार के विषय पर केन्द्रित थे और दो दिनों के दौरान सात सत्रों में आमंत्रित वक्ताओं और प्रतिभागियों ने इसे पर विस्तार से चर्चा की, इसकी अनुसूची संलग्न है। कार्यक्रम का समापन समापन सत्र के साथ हुआ, इस सत्र में प्रतिभागियों का उनकी सक्रिय प्रस्तुति और भागीदारी के लिए धन्यवाद किया गया। लगभग 30 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

''दया कृष्ण ऑन हयूमन वैल्यु : डिवीजन एंड डायनिमिक्स'' पर राष्ट्रीय सेमिनार
16–18 मार्च, 2015

16–18 मार्च, 2015 को आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र में ''दया कृष्ण ऑन हयूमन वैल्यु : डिवीजन एंड डायनिमिक्स'' पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया । प्रो. आशा मुखर्जी, विश्व–भारती शांति निकेतन (पश्चिम बंगाल) इस सेमिनार की सह–संयोजक थी और इस सेमिनार का आयोजन दया कृष्ण अकादमिक फाउंडेशन, शांतिनिकेतन द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

जर्नल सेक्शन में 16.03.2015 को पूर्वाह्न 10:30 बजे उद्घाटन सत्र आयोजित किया गया था, जिसमें कार्यक्रम अधिकारी और केन्द्र के प्रभारी ने सभी आमंत्रित प्रतिभागियों और दया कृष्ण अकादमिक फाउंडेशन के सदस्यों का फूलों के गुलदस्ते से स्वागत किया। प्रो. आशा मुखर्जी द्वार औपचारिक स्वागत भाषण पढ़ा गया, जिसमें उन्होंने कार्यक्रम का विषय प्रस्तुत किया और प्रो. दया कृष्ण के महत्वपूर्ण और यादगार योगदान और कार्यक्रम के मुद्दों के बारे में बताया। प्रोफेसर राकेश चंद्रा ने मानवीय मूल्यों से संबंधित विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तार से बताया। प्रोफेसर दया कृष्ण के समकालीन प्रो. राजेन्द्र प्रसाद ने उद्घाटन भाषण दिया, जिसमें उन्होंने मानव जीवन में मूल्यों के महत्व और दार्शनिक व्याख्याओं के बारे में बताया। डीकेएएफ के अध्यक्ष, प्रो. आर.एस. भटनागर ने अध्यक्षीय भाषण दिया। यह सेमिनार तीन दिनों के 6 शैक्षिक सत्रों में आयोजित किया गया, जिनमें लगभग 37 विद्वानों ने सक्रियता से भाग लिया (कार्यक्रम की प्रति संलग्न है)।

शैक्षिक केन्द्र के जर्नल सेक्शन में 18.03.2015 को 15.00 बजे से समापन सत्र आयोजित किया गया था, जिसमें डॉ. एम.पी. सिंह, सदस्य सचिव, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् ने समापन भाषण दिया। अपने समापन भाषण में प्रो. सिंह ने प्रोफेसर दया कृष्ण को याद किया और उनके साथ जुड़ाव के बारे में बताया। उन्होंने देश में मौजूदा परिदृश्य और दर्शन विभागों में छात्रों की घटती संख्या पर चिंता भी जताई। कार्यक्रम का समापन प्रो. आशा मुखर्जी की समापन टिप्पणी के साथ हुआ।

प्रोफेसर मोहिनी मुल्लिक, आईसीपीआर का व्याख्यान कार्यक्रम (विजिटिंग प्रोफेसर, भारतीय) 19 मार्च, 2015

19.03.2015 को आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ में प्रोफेसर मोहिनी मुल्लिक (आाईसीपीआर विजिटिंग प्रोफेसर–भारतीय) का एक व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस व्याख्यान का शीर्षक ''क्लासिकल इंडियन थॉट एंड द कॉलोनियल कांन्सियसनेश'' था। कार्यक्रम शैक्षिक केन्द्र के सम्मेलन कक्ष में पूर्वाह्न 11:30 बजे शुरू हुआ। प्रारंभ में प्रो. राकेश चंद्रा ने वक्ताओं का श्रोताओं से परिचय कराया। प्रो. मोहिनी मुल्लिक ने अपने व्याख्यान में शास्त्रीय भारतीय सोच की अवधारणा के अनुवाद और प्रस्तुति की समस्याओं पर ध्यान आकर्षित किया, जिसे आज के समय में अंग्रेजी भाषा में पढ़ा जा रहा है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा ''हम समकालीन भारतीय दार्शनिकों के काम और शास्त्रीय ग्रंथों की उनकी समझ को देखते हैं–हम स्वभावतः ऐसे काम में दिलचस्पी रखते हैं, जिसका आज भारतीय दर्शन के रूप में वर्णन किया जाता है –देखें कि कैसे अपनी विचारात्मक परंपराओं की हमारी समझ में कितनी गिरावट आ गई है। केवल एकल लेखक (हालांकि कार्यों का भी उल्लेख करना जरूरी है) ही नहीं बल्कि स्थायी औपनिवेशिक चेतना की घटना की भी जाच किए जाने की आवश्यकता है। व्याख्यान के बाद रोचक चर्चा, सवाल और जवाब हुए। प्रो. निशि पांडे, प्रमुख, अंग्रेजी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ने सत्र की अध्यक्षता की और उन्होंने व्याख्यान के महत्वपूर्ण बिंदुओं का सार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन डॉ. सुशिम दुबे, कार्यक्रम अधिकारी और केन्द्र प्रभारी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। इस व्याख्यान कार्यक्रम में लगभग 34 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

प्रोफेसर चंदा गुप्ता (आईसीपीआर विजिटिंग प्रोफेसर–भारतीय) का व्याख्यान कार्यक्रम

24 मार्च, 2015

24.03.2015 को आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ के सम्मेलन कक्ष में 14.00 बजे प्रोफेसर चंदा गुप्ता (आईसीपीआर विजिटिंग प्रोफेसर–भारतीय) का व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया था। । व्याख्यान का विषय थाः ''फेमिलीः हैवन और प्रिजन'' था। प्रोफेसर गुप्ता जाधवपुर विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त प्रोफेसर हैं, ये लंबे समय से सामाजिक और राजनैतिक दर्शन पर काम कर रही थी। उन्होंने परिवार की अवधारणा के सामाजिक–दार्शनिक विश्लेषण को प्रस्तुत किया। उन्होंने परिवार के संबंध में दो विचारों यथा 'प्रो–फेमिली' और 'एंटीफेमिली' के बारे में बताया और उन दोनों की जांच–पड़ताल की। उनके व्याख्यान में मुद्दे से संबंधित अन्य प्रमुख क्षेत्रों में शामिल थे–मौलिक सामाजिक संरचना के अनिवार्य, सार्वभौमिक और शाश्वत आदर्श', 'वैवाहिक स्वर्ग घर की एक कार्यानुरूप तस्वीर' आदि ।

कार्यक्रम के आरंभ में प्रो. राकेश चंद्रा ने वक्ताओं का श्रोताओं से परिचय कराया और डॉ. सुशिम दुबे, कार्यक्रम अधिकारी एवं केन्द्र के प्रभारी ने वक्ताओं और श्रोताओं का स्वागत किया। डॉ. आलोक टंडन ने सत्र की अध्यक्षता की, और व्याख्यान के महत्वपूर्ण बिंदुओं का सार प्रस्तुत किया। व्याख्यान कार्यक्रम के बाद, चर्चा, सवाल/राय का दौर चला।

राजभाषा हिंदी संगोष्ठी

30 मार्च, 2015

26 मार्च, 2015 को ''हिंदी का स्वरूप संपर्क भाषा के रूप में'' विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र के सभी पदाधिकारियों ने इस कार्यक्रम में पूरे जोश एवं उत्साह से भाग लिया। प्रो. शिशिर कुमार पांडे, विभागाध्यक्ष, हिंदी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था और दोस्ताना भाषण प्रतियोगिता के लिए उन्होंने जज के रूप में भी काम किया। आरंभ में, डॉ. सुशिम दुबे, कार्यक्रम अधिकारी, शैक्षिक केन्द्र ने ''संप्रेषण भाषा के रूप में संवाद'' से संबंधित मुद्दों पर डिबेट शुरू की। प्रोफेसर पांडे ने कार्यक्रम के विषय की जानकारी प्रतिभागियों को दी। इसके बाद, विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें श्री पंकज रस्तोगी को प्रथम पुरस्कार के रूप में 1000 रु., सुश्री रितिका बिष्ट को द्वितीय पुरस्कार के रूप में 700 रु. और श्री कृष्ण कुमार को तृतीय पुरस्कार के रूप में 500 रु. दिए गए। यह कार्यक्रम शिक्षाप्रद और प्रेरणादायी था।

V. फेलोशिप

आईसीपीआर फेलोशिप कार्यक्रम कर मुख्य उद्देश्य शोध छात्रों विशेषकर युवा शोध छात्रों को उनकी पंसद के विषयों से संबंधित अनुसंधान परियोजनाओं में पूर्णकालिक आधार पर शामिल करने के लिए वित्तीय सहायता मुहैया करा

कर विभिन्न स्तरों पर दर्शन में अनुसंधान को सुगम बनाना है। अनुसंधान का विषय सामान्यतः दर्शन और संबंधित विषयों के क्षेत्र में जांच के प्रमुख क्षेत्रों के अंतर्गत आता है जैसा कि परिषद् ने पहचान की है। इनमें से कुछ निम्नानुसार हैं :–

- सत्य और ज्ञान के सिद्धांत।
- भारतीय संस्कृति में सम्मिलित मौलिक मूल्य और राष्ट्रीय निर्माण में उनकी प्रासंगिकता।
- मानक पड़ताल (नैतिकता और सौंदर्यशास्त्र)।
- अंतः विषयक पड़ताल (नैतिकता और सौंदर्यशास्त्र)।
- दर्शन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी।
- आदमी का दर्शन और पर्यावरण।
- सामाजिक और राजनैतिक दर्शन और विधि का दर्शन।
- दार्शनिक प्रणालियों / गतियों में तुलनात्मक और आलोचनात्मक अध्ययन धर्म।
- गणित का तर्कशास्त्र, दर्शन और भाषा का दर्शन।
- शिक्षा का दर्शन
- सामाजिक विज्ञान का दर्शन।

परिषद् प्रमुख समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित करके फेलोशिप (राष्ट्रीय फेलोशिप को छोड़कर) के लिए आवेदन आमंत्रित करता है। विज्ञापन की प्रतियां देश में विश्वविद्यालयों के दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्षों को भेजी जाती हैं। विभिन्न फेलोशिप की श्रेणियां नीचे दी गई हैं।

राष्ट्रीय फेलोशिप

राष्ट्रीय फेलोशिप ऐसे प्रख्यात शोध छात्रों को प्रदान की जाती है, जिन्होंने दर्शन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। 60000 रु. की वार्षिक आकस्मिकता के साथ फैलोशिप की राशि 55000 रु. प्रतिमाह निर्धारित की गई थी। ये फेलोशिप आवेदन आमंत्रित किए बगैर नामांकन के आधार पर प्रदान की जाती हैं और ये शोध छात्रों की उम्र और पद पर ध्यान दिए बगैर केवल योग्यता और श्रेष्ठता के आधार पर प्रदान की जाती हैं। फैलोशिप दो साल के लिए प्रदान की जाती हैं।

परिषद् ने वर्ष 2014–15 के लिए राष्ट्रीय फेलोशिप प्रदान नहीं की है। बहरहाल, पिछले वर्ष (2013–14) में सम्मानित राष्ट्रीय फेलोः प्रो. सुखरंजन शाह और प्रो. पी. के. महापात्रा ने क्रमशः ''सलेक्ट स्टडीज इन शंकर फिलोसफी एज इन हिज कमेंटरी ऑन वेदांत एफोरिज्म'' और ''ए स्टडी इन इंडियन ऐथिक्सः ए एप्लाइड ऐथिकल पर्सपेक्टिव'' पर काम करना जारी रखा।

सीनियर फेलोशिप

सीनियर फेलोशिप आमतौर पर उन शोध छात्रों को प्रदान की जाती है, जिन्होंने बेहद उच्चकोटि का प्रकाशन किया हों। ये फेलोशिप दर्शन के मशहूर सीनियर पेशेवर शोध छात्रों को दी जाती है, जिन्होंने दर्शन और संबंधित विषयों में उल्लेखनीय योगदान दिया है क्योंकि यह उनके शोधपत्रों और पुस्तकों के प्रकाशन का प्रमाण है। फेलोशिप राशि 40,000 रु. प्रतिमाह और आकस्मिक अनुदान 40000 रु. प्रतिवर्ष है। यह फैलोशिप दो साल के लिए प्रदान की जाती है।

2014–15 में चुने गए फैलो में से दो सीनियर फेलो ने फेलोशिप ज्वाइन कर ली है और वे अपने शोध कार्य कर रहे हैं। इनके नाम हैं 1. **प्रो. रमेश चंद्रा दास**, विटिजेनटिन फिलोसफी ऑफ मेथमेटिक्सः ए स्टडी ऑन ''रिमार्क्स ऑन द फाउंडेशन ऑफ मेथमेटिक्स'' के दर्शन पर शोध कार्य कर रहे हैं, 2. **प्रो. मीरा गौतम** "शुद्धअद्वैत दौरान के पुष्टिमाग्रीय काव्य में पर्यावरण का विश्लेषण'' पर शोध कार्य कर रही हैं।

पिछले वर्ष (2013–14) के सीनियर फेलो अपने शोध कार्य को जारी रखे हुए हैं, जिसका विवरण निम्नानुसार हैः

1. **डॉ. रंजन के. घोष** लिटरेचर एंड फिलोसफीः कंटमपोरेरी डिस्कोर्स पर अपना शोध कार्य कर रहे हैं। 2. **डॉ. मंजुला सक्सेना** परियोजना ध्वनि एंड स्फोटा थ्योरीजः दियर रेलेवेंश इन आर्ट एंड ऐस्थेक्सि (पांडुलिपि का पहला मसौदा प्रस्तुत किया जा रहा है) पर शोध कार्य कर रही हैं; 3. **प्रो. आर.एस. भटनागर** परियोजना अवर माइंड पर शोध कार्य कर रहे हैं; 4. और **प्रो. प्रबल कुमान सेन** सिद्धांतबिंदु पर लिख रहे हैं।

सामान्य फेलोशिप

सामान्य फेलोशिप उन शोध छात्रों को प्रदान की जाती है, जिन्होंने स्वतंत्र अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण संभावना और योग्यता का प्रदर्शन किया है क्योंकि यह पुस्तकों और/या शोध लेखों के रूप में उनके प्रकाशनों का प्रमाण है। फेलोशिप की इस श्रेणी का पुरस्कार उम्मीदवार के शोध कार्य और प्रकाशनों (पुस्तकें या लेख) की गुणवत्ता के आधार पर पोस्ट–डॉक्टारल शोध और समान स्तर के शोध के लिए दी जाती है। जांच पड़ताल के बाद, शोध छात्रों की योग्यता और उनके परियोजना प्रस्ताव का आकलन करने के लिए पात्र उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। पीएच.डी. की डिग्री फेलोशिप की इस श्रेणी के लिए अनिवार्य अपेक्षा नहीं है और यह केवल उन शोध छात्रों के लिए है जिनके पास अनुभव और आशाजनक शोध आउटपुट है। इस श्रेणी के लिए फेलोशिप राशि 28,000 रु. प्रतिमाह है और आकस्मिक अनुदान 20,000 रु. प्रतिवर्ष है। फेलोशिप दो वर्ष के लिए प्रदान की जाती है।

निम्नलिखित शोध छात्रों को उनके संबंधित शोध विषयों, जिन पर वे अपना शोध कार्य कर रहे हैं, के लिए वर्ष 2014–15 के लिए सामान्य फेलोशिप प्रदान की गई थी। इनमें से कुछेक ने अपना शोध पूरा कर लिया और कुछ अन्य उनके सामने किए गए उल्लेखानुसार पंजीकृत हैं।

सामान्य फेलोशिप 2014–15

क्र.सं.	फाइल सं. व श्रेणी	फेलो का नाम	शोध परियोजना का शीर्षक	टिप्पणी
1	1–8 अपिव	डॉ. अरुलप्पन एम	''सार्त्र एक्जिस्टेंशियलिस्टक ऐथिक्सः ए क्रिटिकल स्टडी''	
2	1–9 सामान्य	डॉ. ब्रज मेहता राठी	''मार्था नुसोबोम कोस्मोपोलिटिनिज्मः ए क्रिटिकल स्टडी''	
3	1–11 अपिव एनईआर	श्री कोंथोजम नांगपोक चिंगखेई नगंबा	''ए फिलोसफिकल एपराइजल ऑन राइट टू सेल्फ–डिटरमिनेशन मूवमेंट विद स्पेशल रिफरेंश टू मणिपुर''	
4	1–12 अपिव	सुश्री पी निथ्या	''द फिलोसफिकल एंड एजुकेशनल थॉट ऑफ जॉन डेवे''	
5	1–13 अजा	डॉ. संजय कुमार राम	''डॉ. बी.आर. अंबेडकर के सामाजिक न्याय की अवधारणा का अध्ययन''	
6	1–14 सामान्य	श्री सिकंदर जमील	''ए स्टडी ऑफ कृपके क्रिटिक्यू ऑन कांत अपिस्मिेटिक फाउंडेशन्स''	
7	1–15 सामान्य	डॉ. वाल्टर मेनजेस	''विवेका इन इंडियन फिलोसफीः रिट्राइविंग द ट्रांस–एंपिरिकल प्रमाण इन शंकरा जन–मार्ग''	
8	1–33 सामान्य	डॉ. चंद्रशेयर व्यास	''ए फिलोसफिकल ग्राउंडवर्क ऑन ऐथिक्स बिजनस''	
9	1–34 सामान्य	डॉ. हेमलता जैन	हरिभद्रासूरी कृत 'सस्त्रावरतसमुच्चय' एवं यशोविजय कृत 'शायदवदकल्पलता' टीका के आलोक में शब्दार्थ–मीमांसा	
10	1–36 अपिव	डॉ. नीतू सिंह	"फिनोमिनोलॉजीकल स्टडी ऑफ एजुकेशन विद स्पेशन रिफरेंस टू एक्जिस्टेंशिल वैल्यु''	
11	1–37 अपिव	डॉ. संजीश ई .वी.	''रिप्रेजेंटिंग द प्राब्लम ऑफ रियल एंद द अनरियल –फिलोसफी–	

			फिजिंग इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ न्यू मीडिया''	
12	1–38 सामान्य	डॉ. श्वेता जैन	''नागार्जुन कृत 'उपायह्रदय' का दार्शनिक अनुशीलन''	त्यागपत्र दे दिया
13	1–39 अपिव	डॉ. विश्वनाथ धितल	''उदयानाचार्य कृत लक्षणवलया तत्वमीमांसियामनुसिलनम	

निम्नलिखित विद्वानों को अनुसंधान परियोजनाओं पर काम करने के लिए वर्ष 2013–14 के दौरान सामान्य फेलोशिप प्रदान की गई थी। इनमें से कुछ ने अपना शोध कार्य पूरा कर लिया है जबकि कुछ ने इस्तीफा दे दिया है, जिसका उल्लेख उनके नाम के सामने किया गया है।

सामान्य फेलोशिप 2013–14

क्र.सं.	**फाइल सं. व श्रेणी**	**फेलो का नाम**	**शोध का शीर्षक**	
1.	1–8 सामान्य	आशुतोष त्रिपाठी	वाचस्पति मिश्रा का भारतीय दर्शन में अध्ययन	
2.	1–9 अपिव	जितेन्द्र यादव	प्रेम की अवधारणा का दार्शनिक समीक्षात्मक अध्ययन	त्यागपत्र दे दिया
3.	1–10 अपिव एनईआर	खंगेजमबम रोमेश सिंह	ऑन कर्न्शन ऑफ मोरल थ्योरी एंड इन्वायरमेंटल इश्यूज	
4.	1–11 अजा	नरेश कुमार बौद्ध	अंबेडकर का हिंदू धर्म के दार्शनिक महानिष्कर्मण	
5.	1–12 सामान्य	पी. आई. देवराज	इप्लीकेशन ऑफ निओ–वेदांत इन द सोशल फिलोसफी ऑफ द निनेशियंस थिंकर्स ऑफ केरल	
6.	1–13 सामान्य	राजेश कुमार त्रिपाठी	शब्धबोधः न्याय दर्शन भृतहरि के परिदृश्य में एक तुलनात्मक समीक्षा	
7.	1–14	ऋषभ कुमार जैन	जैन धर्म की खंडनात्मक योजनाः	

	सामान्य		भाव सेना कृत विश्वतत्व प्रकाश के विशेष संदर्भ में	
8.	1–15 सामान्य	श्रुति राय	ए स्टडी ऑफ त्रिका फिलॉसफी ऑफ कोजिनिशन	त्यागपत्र दे दिया
9.	1–16 अजा	स्नहेलता कुशुम	भारतीय संस्कृति के विकास में रामायण और महाभारत का योगदानः स्वामी विवेकानंद की दृष्टि	त्यागपत्र दे दिया
10.	1–17 सामान्य	सुश्री उमा धर	कंटमप्लेटिव न्यूरोसाइंसः ए फिलोसॉफिकल असेसमेंट	
11.	1–18 सामान्य	अनून पति तिवारी	राधाकृष्णन कृत धार्मिक अनुभूति का धार्मिक बहुलतावाद के आलोक में समीक्षात्मक अध्ययन	
12.	1–19 सामान्य	मायावी सिंह	लिबरल इक्विलिटी एंड ऐथिक्स	

जूनियर अनुसंधान फेलोशिप 2014–15

जूनियर अनुसंधान फेलोशिप

जूनियर फेलोशिप के उम्मीदवार ने स्नातकोत्तर में कम से कम 55 प्रतिशत अंक प्राप्त किए होने चाहिए। बहरहाल, ऐसे उम्मीदवारों पर यह शर्त लागू नहीं होगी, जिनके शोध पत्र/लेख दर्शन की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

इस फेलोशिप को प्राप्त करने का अर्हक होने के लिए दर्शन में पीएच.डी प्रोग्राम या अध्ययन के संबद्ध क्षेत्रों के लिए पंजीकरण कराया होना चाहिए।

इस फेलोशिप में 16,000 रु. का अनुदान प्रतिमाह और 15000 रु. का आकस्मिक अनुदान प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है। फेलोशिप की इस श्रेणी के लिए पे–प्रोटेक्शन का कोई प्रावधान नहीं है।

जूनियर अनुसंधान फेलोशिप दो वर्ष के लिए दी जाती है। बहरहाल, अगर फेलो द्वारा अपने कार्यकाल के दौरान किया गया शोध कार्य प्रकाशन के लायक पाया जाता है तो ऐसे आपवादिक मामलों में फेलोशिप को तीसरे वर्ष तक के लिए बढ़ाया जा सकता है।

जूनियर अनुसंधान फेलोशिप 2014–15

क्र. सं.	फाइल सं. व श्रेणी	फेलो का नाम	शोध का शीर्षक	टिप्पणी
1	1–16 सामान्य	श्री गौतम मिश्रा	भअरबिंदो, टैगोर एवं विवेकानंद के शैक्षणिक दर्शन में स्वतंत्रता की अवधारणा''	
2	1–17 अपिव	सुश्री हिर्चा आर्य	"तत्वपप्लवसिंह का समीक्षात्मक अध्ययन''	
3	1–18 अपिव	श्री कच्चा जिग्नेश कांझीभाई	"श्रीमद भागवद गीता के नैतिक सांस्कृतिक आयाम एवं उनकी समकालीन प्रस्तोताः एक तुलनात्मक अध्ययन''	
4	1–19 सामान्य	सुश्री लक्ष्मी शर्मा	"व्याकरण दर्शने प्रथिता प्रमेयनम नागेश दृष्टया स्वरूपविमर्श''	
5	1–20 अपिव	सुश्री मनीषा प्रवीन	"भट्ट मीमांसा नव्य न्याय दर्शनयहो पदार्थनम तुलनात्मकअमस्यानम"	
6	1–21 अजा	सुश्री नीतू मझवार	भवेदांत दर्शन में भक्ति के विभिन्न स्वरूपों की समसामयिक प्रासंगिकता''	
7	1–22 अपिव	श्री निकेश कुमार	"वेदांत परंपराओं को माधव, निंबार्क और वल्लभ की देन"	
8	1–23 सामान्य	श्री प्राण गोस्वामी	"एथिकल क्लेम्स विदिन द डिटरमिनिस्टिक मेटाफिजिक्स ऑफ स्पिनजोः ए स्टडी''	
9	1–24 एनईआर ओबीसी	सुश्री फनजोबम लिंथोइंगगंबी	"सिच्युएटिंग 'फ्रीडम' इन सर्टेरेस अर्ली एंड लेटर फिलोसफी''	
10	1–25 सामान्य	श्री पोलोसिजु के. एफ.	"द व्यू ऑफ वल्लभचार्य ऑन मैग्नीटयूड ऑफ भक्तिः ए फिलोसफिकल स्टडी"	

11	1–26 अपिव	सुश्री आर. सावित्री	"कन्शियसनैस इन विशिष्टअद्वैत और द्वैत''
12	1–27 सामान्य	श्री राजीव रंजन पांडे	"त्रिगुणित योगा (भागवद गीता के संदर्भ में)"
13	1–28 अपिव	श्री राम किशोर	"बौद्ध समख्य–योगा एवं भागवद गीता के संदर्भ में दुख का दार्शनिक विश्लेषण''
14	1–29 सामान्य	सुरी रिधयी चटर्जी	"ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ डिस्कोर्सेस ऑफ जस्टिस इन कन्टमपोरेरी इन्वारमेंट ऐथिक्स''
15	1–30 अपिव	श्रीमती रूख्साना खातून	"इस्लाम धर्म दर्शन में ईश्वर ओ मनुष्य के स्वरूप का अध्ययन''
16	1–31 अपिव	सुश्री एस सुशिला मैरी	"इंटर–रिलीजियस हारमोनी इन द टिचिंग ऑफ स्वामी विवेकानदं एंड क्रिश्चियनिटी
17	1–32 अजा	सुश्री विजय एस.एम. इंदिरा	"इश्यू इन इन्वारमेंट ऐथिक्सिः इंडियन फिलोसफिकल पर्सपेक्टिव''
18	1–40 सामान्य	सुश्री अफीता लियाकत	"एन एनेलिटिकल स्टडी ऑफ द कान्सेप्ट ऑफ वॉयलेंस''
19	1–41 सामान्य	श्री अजय सिन्वर	"स्वामी विवेकानंद के द्वारा प्रतिपादित व्यावहारिक वेदांत दर्शन का परिशीलन एवं वर्तमान प्रासंगिकता''
20	1–42 सामान्य	श्री आनंद शंकर तिवारी	"विश्व शांति के संदर्भ में बुद्ध एवं गांधी के दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन"
21	1–43 सामान्य	श्री अशविन जयंत	"फिनोमेनोलॉजीकल हरमैन्यूटिक्स ऑफ टेक्नोलॉजीकल प्राक्सिसः ए कान्सेप्चुयल इन्वेस्टीगेशन''
22	1–44 अपिव	श्री अवधेश यादव	"श्री अरबिंदो के समग्र योगा"
23	1–45	श्री चंद्रजीत सिंह	"जे. कृष्णामूर्ति कान्सेप्ट ऑफ

	सामान्य		फ्रीडमः ए सिस्टमेटिक एंड क्रिटिकल स्टडी''
24	1–46 सामान्य	सुश्री एकता सैनी	"ए फिलोसफिकल इन्वेस्टीगेशन ऑफ इंटरनल हिस्ट्री ऑफ हयूमैन एक्पीरियंश विद स्पेशल रिफरैंस टू मिर्शिया इलाइडस अंडरस्टैंडिंग ऑफ रिलिजन''
25	1–47 सामान्य	श्री गोपाल कुमार	"बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर और लोकनायक जयप्रकाश नारायण के समाजदर्शन का तुलनात्मक अध्ययन''
26	1–48 सामान्य	श्री हदुले धनराज सुभाष	"भगवान रजनीश (ओशो) के शैक्षिक विचारः एक दार्शनिक अध्ययन''
27	1–49 अपिव	श्री जगदीप सिंह	"कल्चरल कॉनफिलिक्ट एंड सोशल हारमनीः ए फिलोसफिकल एनेलिसिस विद स्पेशल रिफरैंस टू जॉर्ज सिमेल''
28	1–50 सामान्य	सुरी जागृति राय	"नारीवादी परिस्थितियों की नैतिकता का समीक्षात्मक सर्वेक्षण''
29	1–51 अपिव	श्री के.एस. वेंकटेश बाबू	"कर्म योग इन वेथाथिरि महात्रृषि फिलासफि एंड भागवत गीता–ए कंपेरेटिव स्टडी''
30	1–52 अपिव	सुश्री कामना शर्मा	"न्याय एवं बौद्ध दर्शन में अर्थ की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन''
31	1–53 अपिव	सुश्री कृष्णा सिंह	"श्री अरबिंदो दर्श में मनाव एकता की अवधारणा का समीक्षात्मक अध्ययन''
32	1–54 सामान्य	सुश्री मिनाक्षी सिंह	"ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ लिबरल एंड कम्युनिटेरियन डिस्कोर्सेस ऑन मल्टीकल्चरलिज्म"
33	1–55 सामान्य	श्री मुदस्सिर अहमद तांत्रे	"माइंड, लॉजिक एंड लैंग्वेजः ए फिलासफीकल स्टडी''
34	1–56	मुजाहिदुल हक	पॉलिटिक्स ऑफ टेररिज्मः ए

	सामान्य		फिलोसफिकल स्टडी
35	1–57 अपिव	सुश्री मुमुन दास	"फिनोमेनोलॉजीकल एंड साइन्टिफिक अप्रोचेजस टू कान्सियसनेसः ए स्टडी विद स्पेशल रिफरेंस टू जीन–पॉल सरतरे एंड डेविड चालमर्स''
36	1–58 सामान्य	नासिर अहमद शाह	"सैयद हुसैन नर्स ऑन माडर्ननिज्मः ए क्रिटिकल स्टडी''
37	1–59 सामान्य	सुश्री राजलक्ष्मी घोष	"टैक्सटयूलिटी एंड सैक्स्युअल डिफरैंसः रीडिंग एज रि–राइटिंग"
38	1–60 सामान्य	श्री राजेश कुमार सिंह	"न्यायरत्नग्रंथास समीक्षात्मक माध्यअनम
39	1–61 अजा	रामआसरे प्रसाद	"संत गेज के मानववाद में पर्यावरणीय चेतना''
40	1–62 अपिव	सुश्री रामभतेरी	"वाल्मिकी रामायण एवं महाभारत में नैतिक मूल्यों का दार्शनिक विवेचन''
41	1–63 सामान्य	सुश्री रूचित्रा चंदेल	"एजुकेशनल फिलासफी ऑफ पॉलो फेरियरः ए फिनोमोलॉजीकल रीडिंग''
42	1–65 सामान्य	सुश्री सकीना काजिर	"फेमिनिस्ट रिकंस्ट्रक्शन ऑफ अपिस्टीमोलॉजीः ए क्रिटिकल स्टडी''
43	1–66 सामान्य	श्री संदीप पैनुली	"संख्यासरा ग्रंथेना सहा गुनामयीतिकय तुलनात्मक – माध्यमनम''
44	1–67 सामान्य	सुश्री संध्या दुबे	"योगविशिष्ट एवं पतंजल योगदर्शन का तुलनात्मक अध्ययन''
45	1–68 अपिव	श्री संजीव कुमार शाह	"पर्यावरणीय नैतिकता के संदर्भ में महात्मा गांधी के विचार''
46	1–69 सामान्य	सुश्री सीमा वर्मा	"समख्याकरिकेयह स्वामीनारायणअभाष्य समीक्षात्मक माध्यवयानम''
47	1–70 सामान्य–पीसी	सुश्री स्वेता बरनवारी	"निंबार्कवेदांत विशिष्टअद्वैत वेदांतयोह तुलनात्मक मध्ययानम''

48	1–71 अपिव	सुश्री सोमया ए. एस.	"डेविड जॉन चालमर्स नॉन–रिडक्टिव थ्योरी ऑफ कांन्सियसनेस– एन एक्सप्लोरेशन"
49	1–72 अपिव	सुश्री सुजाता पटेल	"भारतीय दर्शन वर्गीकरण धारणम समीक्षात्मक माध्यवायानम''
50	1–73 अपिव	सुश्री तृष्णा लेखारू	"द पोस्टमार्डन ऐथिक्सः ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ इट्स कनफ्लिक्ट विद द क्रिशचियन व्यूज''

निम्नलिखित शोधछात्रों को अनुसंधान परियोजनाओं पर काम करने के लिए वर्ष 2013–14 के दौरान जूनियर अनुसंधान फेलोशिप प्रदान की गई थी। इनमें से कुछ ने अपना शोध कार्य पूरा कर लिया है जबकि कुछ ने इस्तीफा दे दिया है, जिसका उल्लेख उनके नाम के सामने किया गया है।

जूनियर अनुसंधान फेलोशिप 2013–14

क्र. सं.	फाइल सं. व श्रेणी	फेलो का नाम	शोध का शीर्षक	टिप्पणी
1.	1–20 सामान्य	अबीर कुमार दास	द फिलोसफी ऑफ भतृहरिः सम प्रोब्लम्स	
2.	1–21 सामान्य	अल्फांजो पी.के.	टूवार्ड्स एन ऐस्थेटिक संसेशनः डिलोज मूव बियोंड आर्ट	पूरा हो गया है
3.	1–22 सामान्य	अमित कुमार	देवराज की दार्शनिक दृष्टि	
4.	1–23 सामान्य	अपूर्व कुमार त्रिपाठी	अपूर्व कुमार त्रिपाठी रामानुजचार्य ऑन डिफरैंस एंड आईडेंटिटी	
5.	1–24 सामान्य	बिजॉय प्रसन्ना महापात्रा	फिनोमेनोलॉजी, हरमेन्युटिक्स एंड लैग्वेजः ए क्रिटिकल रिफ्लेक्शन ऑन गडमेर फिलॉसफी	
6.	1–25 अपिव	ई. जगदीश्वरन	अंडरस्टैंडिंग हयूमैन डिग्निटीः ए कंपेरेटिव स्टडी ऑफ बी. आर. अंबेडरकर एंड ई.वी.आर. पेरियार	
7.	1–26 सामान्य	गीता विजय पाल	भारतीय तत्वअजानुनू इतिहास लेखनः एम. हरिनारायण एने नर्मदाशंकर मेहताना संदर्भम	

8.	1–27 सामान्य एनईआर	हीराज्योति कलिता	टैगोर फिलॉसफी ऑफ मैनः ए स्टडी	
9.	1–28 सामान्य एनईआर	जयश्री डेका	एस्क्राइबर कान्टेक्युललिज्म ऑफ एपिसटेमिक कान्टेक्युललिज्म	त्यागपत्र दे दिया है
10.	1–29 अपिव	के. वेणुगोपालगढचलम	श्री अरबिंदो कान्सेप्शन कान्सियसनेसः ए क्रिटिकल स्टडी	
11.	1–30 अपिव	कुमार ऋषभ	न्याय और सामंत का दार्शनिक अवलोकन मार्क्सवाद एवं अन्य के परिप्रेक्ष्य में	
12.	1–31 सामान्य	माने प्रदीपकुमार पांडुरंग	स्वामी विवेकानंद ऑन बुद्धिज्म एंड हिज सार्वजनिक धर्मः ए फिलॉसफर स्टडी	
13.	1–32 सामान्य	संदीप कुमार चौरसिया	हठयोग प्रदीपिका का दार्शनिक विवेचन	
14.	1–33 सामान्य	संजीत चक्रवर्ती	माइंड एंड वर्ल्डः बियोन्ड द एक्सटर्नलिज्म/इंटरनेशनलिज्म डिबेट	
15.	1–34 अपिव	संतोष कुमार के	कान्स्युचललाइजिंग इंटरसब्जेक्टीविटी इन फ्राइडरिच नितेजचेक एंड ईमैन्युल लेवीनस	
16.	1–35 सामान्य	सलीम बाबू	परसेप्शन एंड सेंस डाटारू ए स्टडी इनटू द माइंड वर्ल्ड रिलेशन	
17.	1–36 सामान्य	सितांशु पांडे	न्यायबिंदु की जन मीमांसा या अवधारणा का समीक्षात्मक अध्ययन	
18.	1–37 सामान्य	श्रीजीत के. के.	द अचीवमेंट थीसिस एंड द क्रेडिट थीसिसः एग्जामिनिंग सम विर्च्यूः थ्योरिटिक प्रोचस टूवार्ड्स नॉलेज	
19.	1–38 सामान्य	श्रीतमा मिश्रा	सोलिडिट्री राइट्स एंड द प्रोस्पेक्ट ऑफ 'प्लानेटरी–ग्लोबल	त्यागपत्र दे दिया है

	एनईआर		एथिक्स; फिलासफीकल इन्क्वायरी	
20.	1–39 सामान्य	शुभानकरि पति	एन एग्जिमिनेशन ऑफ जस्टिस एंड राइट वि स्पेशल रिफरेंस टू अरिटोटले एंड रावल्स।	पूरा हो गया है
21.	1–40 अपिव	सुजाता के	इंटरसब्जेक्टीविटी लाइफ–वर्ल्ड एंड सोशल कान्टेक्स्ट इन एडमुंड हसरेल फिनोमेनोलॉजी	
22.	1–41	तारीक हुसैन के ए	ए क्रिटिक्यू ऑफ डीप इकोलॉजी फरोम गांधीयन प्रोस्पेक्टिव	
23.	1–42 सामान्य	विचित्र नारायण पांडे	ऐस्थिटिक्स ऑफ रबिन्द्रनाथ टैगोर	
24.	1–43 अजा	विजयआनंद वी.	अंबेडकर अप्रोच टू इंडियन फिलॉसफीः ए क्रिटिकल स्टडी	
25.	1–44 सामान्य	देबअंजलि मुखर्जी	मोरल स्टेटस ऑफ एनिमल्सः ए क्रिटिकल एक्सप्लोरेशन	
26.	1–45 सामान्य	ज्ञानेश कुमार त्रिपाठी विवेचना	न्याय वेदांतअभिमंत प्रमाण स्वरूप	
27.	1–.46 सामान्य	पंकज पांडे	भारतीय दर्शन में शब्दार्थ विचार	
28.	1–47 अपिव व पीसी	अमृत लाल विश्वक्रम	श्री अरबिंदो का समाज दर्शनः एक समीक्षात्मक अध्ययन	
29.	1–48 सामान्य	अरुण गर्ग	भए कंपेरेटिव स्टडी ऑफ द फिलोसफीकल व्यूज ऑफ एडमंड हसरेल एंड लुडविंग विटजेंसटीन ऑन द फाउंडेशन ऑफ मैथमेटिक्स	
30.	1–49 अजा	बिमन कर्माकर	कान्सेप्ट ऑफ सोल इन नया–वैशिस्का फिलासफीः सम आब्जर्वेशन	
31.	1–50 अजा	बिंदु कुमारी	समख्या दर्शन में प्रमाण मीमांसा	

32.	1–51 सामान्य	जयदेव शर्मा	"ओरिजन्स ऑफ द वर्णाश्रम धर्मः ए साइको फिलोसोफिकल इंटरप्रिटेशन विद एन अरबिंदोनियन प्रोस्पेक्टिव"	
33.	1–52 सामान्य	जीता मजूमदार	"द पैराडॉक्स ऑफ सोलिपिसिज्म इन हसरेल फिनोमिनोलॉजीः ए क्रिटिकल स्टडी''	
34.	1–53 एनईआर	ककाली बेजबरोह	"शंकराचार्य कमेंटरी ऑन द भागवद गीता– ए क्रिटिकल स्टडी''	
35.	1–54 सामान्य	ललित सारस्वत	"फिलोसोफिकल प्रोस्पेक्टिव ऑन बॉयोलॉजी ऑफ कंन्सियसनेस''	
36.	1–55 सामान्य	एम. ज्योतिमणि	अद्वैत वेदांतः ए न्यू इंटरप्रिटेशन	
37.	1–56 सामान्य	मैल्कम आर. प्रिंटर	"बेनिफिट ऑफ विपासना मेडिकेशन फॉर ऑल ऐज–ए फिलोसोफिकल प्रोस्पेक्टिव''	
38.	1–57 अपिव	मुकेश कुमार बेहरा	डिमसेक्रेटिजेशन ऑफ टेक्नोलॉजीः ए क्रिटिकल स्टडी ऑन एंड्रयू फीनबर्ग	
39.	1–58 सामान्य	मुनीष कुमार मिश्रा	आचार्य शंकर मिश्रा कृत कन्नड रहस्य समीक्षात्मक अध्ययन	
40.	1–59 सामान्य	एन. श्रीधर	वैसेसिक्य –दर्शनस्य कटिपया– सिद्धांतम वैजनानानिकृत्य विमर्शः	
41.	1–60 अपिव	निधि चौधरी	जीवगोस्वामी प्रणिता क्रम संदर्भ की दार्शनिक मीमांसा	
42.	1–61 अपिव	परूल	वैशिशीकसूत्रोपस्कर निरूपित विशेष गुण समीक्षानम	
43.	1–62 अजा	पंकज कांति सरकार	इन्वायरमेंटल ऐथिक्स एंड फ्यूचर जनरेशनः सम ऑब्जर्वेशन्स	त्यागपत्र दे दिया है
44.	1–63 सामान्य	राकेश कुमार सिंह	क्वेश्चन ऑफ बीइंगः ए क्रिटिकल रिफ्लेक्शन ऑफ हीडेगर्स फिलोसफी	
45.	1–64 अपिव	राखी देबनाथ	रिविजिटिंग द टेल ऑफ जैक डेरिडा डिकंस्ट्रक्शनः ए क्रिटिकल स्टडी	

46.	1–65 अजा	रोहित सुधाकर गायकवाड	"आस्तित्ववादी तत्ववदनयनतिल मृत्यु संकल्पनाः एक तात्विक चिकित्सा"	
47.	1–66 सामान्य	सौरभ तोडरिया	टैंपरलिटी, फ्रीडम एंड रिपीटीशनः ए स्टडी ऑफ मार्टिन हीडीगर्स फिलॉसफी	
48.	1–67 सामान्य	शंकर दत्त	चतुहु सूत्री पर्यन्तयः शिवरकमनीदीपिकायह समीक्षात्मक अध्ययन	
49.	1–68 अपिव	शारदा वंदना	मार्क्स एवं मानवेंद्र नाथ राय के भौतिकवाद का तुलनात्मक अध्ययन	
50.	1–69 सामान्य	सीमा देवी	मानवतावादः एक दार्शनिक अध्ययन (स्वामी विवेकानंद के विशेष संदर्भ में)	
51.	1–70 सामान्य	श्वेता सिंह	मोरल जनरलिज्म एंड पर्टिकुलेरिज्मः एक क्रिटिकल एनेलिशिस	
52.	1–71 सामान्य	सोनिका वर्मा	कन्वर्जिंग स्टोरीज इन इकोक्रिटिज्मः ए स्टडी ऑफ रेस, क्लास, जैंडर एंड लिटरेरी ईकोलॉजीस	
53.	1–72 अजा	सुरजीत कुमार	हीडीगर्स कान्सेप्ट ऑफ आर्टः ए क्रिटिकल एनेलिशिस	त्यागपत्र दे दिया है
54.	1–73 सामान्य	सूर्य प्रकाश पांडे	गांधी दर्शन में अहिंसा की अवधारणा के विविध आयाम एवं इसका समकालीन पुनर्मूल्यांकन	
55.	1–74 अपिव	टेरेंश मुखिया	इम्पैक्ट ऑफ क्रिस्टेनिटी अपॉन द लीपचा एंड तमंह ट्राइबल कम्युनिटीज इन द दार्जलिंग डिस्ट्रिक्ट (1841.2012) –ए फिलोसोफिकल प्रस्पेक्टिव	
56.	1–75 सामान्य	विकास कुमार सिंह	शंकर की माया की अवधारणा का स्वामी विवेकानंद और श्री अरबिंदो के आलोक में दार्शनिक अनुशीलन	
57.	1–76 सामान्य	जैद अहमद सिद्दीकी	आइडियोलॉजी ऑफ एस्थेटिक्स इन रबिन्द्रनाथ टैगोर	

VI. परियोजनाएं

परिषद् परियोजनाओं की अपनी योजनाओं के तहत संस्थानों के जरिये परियोजनाओं के लिए एकल शोध छात्रों को उनके प्रस्तावों की मेरिट के आधार पर वित्तीय सहायता प्रदान करता है। प्रस्ताव पूरे वर्ष आमंत्रित किए जाते हैं। प्रस्ताव वर्ष में दो या तीन बार मूल्यांकन के लिए रखे जाते हैं। मूल्यांकन रिपोर्ट अंतिम स्वीकृति के लिए अनुसंधान परियोजना समिति में रखी जाती हैं और फिर परियोजनाएं शुरू करने के लिए परिषद् के नियम एवं शर्तों के अनुसार, अनुदानग्राही को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। कभी–कभी आरपीसी द्वारा सीधे सीधे प्रस्तावों का मूल्यांकन किया जाता है। कुछेक मामलों में अगर आइसीपीआर के सक्षम निकाय की मंजूरी लेकर परिषद् भी कुछ विशिष्ट परियोजनाएं शुरू करता है। परियोजनाओं की पांडुलिपि मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत की जाती हैं और तत्पश्चात संभावित प्रकाशन किया जाता है।

वर्ष 2014–15 में निम्नलिखित परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गई है।

क्र. सं.	**अनुदानग्राही का नाम**	**शीर्षक**	**बजट और समय अवधि**
1.	डॉ. लिपि मुखोपाध्याय	एन एक्सप्लोरेटिव स्टडी ऑफ सोशियो–इकोनॉमिक **एंड कल्चरल चेंजेस इन डिसेन्डेंट्स ऑफ श्री रामकृष्ण परमहंस**	1.55 लाख रु. 6 माह
2.	डॉ. सी पोलोस	कल्चर, ट्रेडिशन एंड कन्टमपरेरी चेजेसः **रिडिस्कविरंग द मीनिंग एंड रेलेवेंश ऑफ गुरू ट्रेडिशन इन इंडियन कल्चरल ट्रेडिशन**	13.33 लाख रु. 2 वर्ष
3.	डॉ. हेमंत कुमार कलिता	अंडरस्टैंडिंग ट्राइबल रिलीजन एंड वर्ल्ड **रिलीजन इन द कान्टेक्स्ट ऑफ लोअर असम ऑफ नॉर्थ ईस्ट इंडिया**	2.00 लाख रु. 2 वर्ष
4.	डॉ. अशोक टंडन	लिविंग टूगैदरः रिथिंकिंग आइडेंटिटी **एंड डिफरेंस इन मॉडर्न कांटेक्स्ट**	1.50 लाख रु. 2 वर्ष
5.	डॉ. आभा सिंह	कान्सेप्ट ऑफ फ्रीडम इन बुद्धिज्म एंड एक्जिशियलिज्म	2.00 लाख रु. 6 माह
6.	डॉ. आत्रेयी मुखर्जी	इम्पैथीः डिफरेंट पर्सपेक्टिव	2.00 लाख रु. 2 वर्ष
7.	डॉ. ज्ञान प्रकाश	ट्रावर्सिंग द टेरीटरी ऑफ कंपरेटिव फिलोसफी	2.00 लाख रु. 2 वर्ष

8.	डॉ. प्रशांत बगद	गांधी क्रिटिक्यू ऑफ मॉडर्निटी इन हिंदी स्वराजः **ए फिलोसफीकल स्टडी**	1.50 लाख रु. 3 वर्ष
9.	डॉ. लालिमा धर चक्रवर्ती, नई दिल्ली और सहयोगी अनुसंधानकर्ता डॉ. पी.जी. धर चक्रवर्ती	**ए फिलोसफी ऑफ रबिन्द्र संगीत**	6.00 लाख रु. 2 वर्ष
10.	डॉ. रीना पत्रा	ऐथनिक आइडेंटी नेशनिलिज्म एंड कल्चरः **:फिनोमिनोलॉजीकल ग्राउंडिंग फॉर वदरनेश इन नॉर्थ ईस्ट इंडिया**	10.00 लाख रु. 2 वर्ष
11.	डॉ. प्रीति सिंह	सूफीज्म–ए स्टडी ऑफ इट्स हिस्टोरीकल **पर्सपेक्टिव्स एंड एलीमेंट्स ऑफ कम्युनल हारमनी इन एन ऐज ऑफ कॉनफिलिक्ट**	10.00 लाख रु. 2 वर्ष
12.	प्रोफेसर जॉर्ज करूवेली	रियलिज्म एंड रिलेटिविज्मः टूवार्ड्स एन अपिस्टोमोलॉजी	2.63 लाख रु फॉर द पोस्ट. मॉडर्न वर्ल्ड

VII. प्रकाशन

दर्शन और अध्ययन से संबंधित विषयों की पुस्तकों का प्रकाशन करना, परिषद् के महत्वपूर्ण कार्यकलापों में से एक है, परिषद् उसकी अनुसंधान परियोजना समिति द्वारा प्रकाशन के लिए, लिए गए विषयों के अलावा, परियोजनाओं से प्राप्त पांडुलिपियों और इसके द्वारा प्रायोजित फेलोशिप, सेमिनार और कार्यशालाओं पर विचार करता है। परिषद् ने अपने प्रकाशन कार्यक्रम के तहत वित्तीय वर्ष 2014–15 में निम्नलिखित के प्रकाशन पर विचार किया है।

क्र. सं.	**लेखक/संपादक का नाम एवं पदनाम**	**पुस्तक का नाम**	**पुस्तक का सह–प्रकाशक, आईएसबीएन और मूल्य**
1.	प्रोफेसर ए.डी. शर्मा सच्चिदानंद मिश्रा ,(Ed.) और के.एन. झा (tr. In Hindi)	न्यायादर्शन (नयासूत्र–नयाभाष्य) महामहोपाध्याय फणिभूषण तारवगीज कृत बंगला व्याख्यान सनबलिता	मै. डी. के. प्रिंटवर्ल्ड ISBN 978-81-246-0809-8 1050 रु.

2.	प्रो. ताप्ती मैत्रर	अद्वैत मेटाफिजिक्सः ए कंटमपोरेरी पर्सपेक्टिव	मै. डी. के. प्रिंटवर्ल्ड ISBN 978-81-246-0747-3 425 रु.
3.	प्रो. सुजाता मिरी और प्रो. करिलिमला	एओ नागावर्ल्ड–व्यू: ए डायलॉग	मै. डी. के. प्रिंटवर्ल्ड ISBN 978-81-246-0808-1 465 रु.
4.	मनीषा देशगुप्ता प्रोबल दासगुप्ता द्वारा संपादित	ऑन लव एंड फ्रेंडशिप इन द इंडियन कान्टेक्स्ट एंड सिग्मुड फ्रूड	मै. डी. के. प्रिंटवर्ल्ड ISBN 978-81-246-0809-8 550 रु.

VIII
सेमिनार/सम्मेलन/औपचारिक वार्तालाप/ कार्यशाला/परिचर्चा/संवाद

आईसीपीआर विद्वानों को अपने शोध दिखाने, अपने विचार व्यक्त करने और अन्य विद्वानों से बातचीत करने का अवसर देने के लिए दर्शन एवं अंतःविषय अध्ययनों के क्षेत्र के विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित करता है, इसके अलावा, परिषद् सेमिनार/परिचर्चा/कार्यशाला/संवाद आयोजित करने के लिए भारतीय विश्वविद्यालयों के दर्शन विभागों को अनुदान भी देता है। रिपोर्टाधीन वर्ष 2014–15 के दौरान, परिषद् ने कार्यक्रम आयोजित करने के लिए विभिन्न संस्थानों को कुछ अनुदान देता है, जिनका विवरण निम्नानुसार हैः

क. सेमिनार/सम्मेलन/कार्यशाला आदि के लिए आईसीपीआर अनुदान।

क्र. सं.	आयोजक का नाम	सेमिनार का नाम	स्वीकृतिधीन बजट
1.	प्राचार्य, दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	एशियाई समाजः 18वी शताब्दी के उत्तरार्ध और 19वीं शताब्दी के दौरान भारतीय विद्या और भारतविद्ता पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	5,00,000 रु.

2	डॉ. आर. अहमद, फारसी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गोपीनाथ बरदौली नगर, गुवाहाटी. 781014	उमर खय्याम की दार्शनिक मनीषा और पूर्वी व पश्चिमी दार्शनिक क्षेत्रों पर इसके प्रभाव पर राष्ट्रीय सेमीनार	5,50,000 रु.
3.	डॉ. एस. लॉडनाथन, दर्शनशास्त्र विभाग, अरूल अननंदर (स्वायत्त) कॉलेज, करूमाथुर, मदुरै 625 514	लोकतांत्रिक और सैद्धांतिक समाज के बदलते स्वरूप में पहचान और सबंधात्मकता की दृष्टि पर राष्ट्रीय सेमिनार	2,40,000 रु.
4.	डॉ. मनीषा बरूआ, दर्शन विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी–781014 असम	डॉ. राधाकृष्णन के नए वेदांतवाद– एक मूल्यांकन पर राष्ट्रीय सेमिनार	2,75,000 रु.
5.	डॉ. ओम प्रकाश भारतीय, एसोसिएट प्रोफसेर, समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, बीएचयू, वाराणसी– 221005	डॉ. अंबेडकर के सामाजिक दर्शन पर सेमिनार	2,00,000 रु.
6.	प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार तराई, दर्शनशास्त्र और संस्कृति स्कूल, एसएमवीडी विश्वविद्यालय, जम्मू एवं कश्मीर	दर्शन में शोध कौशल बढ़ाने पर सेमिनार	2,61,000 रु.
7.	प्राचार्य, लोयोला कॉलेज, चेन्नई	मंदिर और तीर्थस्थलः दार्शनिक दृष्टि पर सेमिनार	1,00,000 रु.
8.	सुश्री शिमी सीएम, दर्शनशास्त्र विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालाडी, एर्णाकुलम 683574	बहु–संस्कृतिवाद और पहचान की राजनीतिः समकालीन भारत में बहु–संस्कृतिवाद से संबंधित समस्याओं के दार्शनिक आयाम पर सेमिनार	2,60,000 रु. (60,000 रु. की अतिरिक्त राशि सहित)

9	प्रो. प्रकाश चंद्र महापात्रा, दर्शनशास्त्र में रीडर, चौधवाड़ कालेज, चौधवाड़ पीओ–कपलेश्वर, जिला कटक– 754071.	प्रो. पी. के. महापात्रा की नैतिक दर्शन पर सेमिनार	1,00,000 रु.
10	प्रोफेसर जी. मिश्रा, दर्शनशास्त्र विभागए चेपक कैंपस, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई–5	''फिलोसफी करना, इनोवेशन और भीतर से परंपरा को बदलनाः श्रीनिवास राव का समकालीन दार्शनिक विचारधारा में योगदान''	3,70,000 रु.
11	स्वामी सुपर्णानंद, रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान, गोल पार्क, कोलकाता 700 029	सांस्कृतिक विरासत पर राष्ट्रीय सेमिनार	5,00,000 रु.
12	प्रोफेसर आर.बी.एस वर्मा, सामाजिक कार्य विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लडनुन, नागौर, राजस्थान 341306	जनजातीय अधिकारः दार्शनिक आधार, समस्याएं और दृष्टि पर राष्ट्रीय सेमिनार	3,00,000 रु.
13	डॉ. आरती बरूआ, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, देशबंधु कॉलेज, कालकाजी, नई दिल्ली	स्वयं, दुनिया नैतिकताः उपनिषद (ओपनिक हट) के विशेष संदर्भ में कस्चोपीनीहोर और भारतीय दर्शन पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार	5,00,000 रु.
14	डॉ. अपार, कुमार, दर्शनशास्त्र के सहायक प्रोफेसर, मणिपाल दर्शनशास्त्र एवं मानविकी केन्द्र, डॉ. टीएमए पाई, प्लेटेरियम कांप्लेक्स, मणिपाल विश्वविद्यालय, मणिपुर.576 104	स्वराज पर पुनर्विचार पर राष्ट्रीय सेमिनार	3,42,000 रु.
15	डॉ. बाबू एम.एन.	भारतीय सौंदर्यशास्त्र का समकालीन	3,00,000 रु.

	सहायक प्रोफेसर दर्शनशास्त्र विभाग श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय कालाडी, केरल– 683574,	पुनर्पठनः दक्षिण की दृष्टि पर सेमिनार	
16	डॉ. मुहम्मद सहीर, शिक्षा विभाग, विश्व भारती, शांतिनिकेतन–731235	सूफीवाद और भारतीय आध्यात्मिक परंपराः हृदय की शिक्षा की निरंतरता पर सेमिनार	2,80,000 रु.
17	डॉ. रघुनाथ घोष और डॉ. लक्ष्मीकांत पधी, दर्शनशास्त्र विभाग, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय, राजा, राममोहनपुर, दार्जलिंग, प.बं.– 734 013	धर्म विवाद और दृष्टि के दर्शन पर राष्ट्रीय सेमिनार 27 से 29 नवंबर, 2014	3,50,000 रु.
18	डॉ. एस. लार्डनाथन, एसोसिएट प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, अरूल अनंदर कॉलेज, करूमाथुर– 625514 मदुरै,तमिलनाडु	दलित स्वयंः दार्शनिक अन्वेषण पर राष्ट्रीय सेमिनार	5,00,000 रु.
19	डॉ. शशिन्गुला, एसोसिएट प्रोफेसर, कला संकाय, दर्शन विभाग, एडवांस्ड अध्ययन केन्द्र, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता– 700 032	दलित ज्ञानवाद और नारीवाद पर राष्ट्रीय सम्मेलन	4,23500 रु.
20	डॉ. राकेश सोनी, दर्शनशास्त्र विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, (लालपुर–पोंडकी)	आदिवासी संस्कृति की समझ पर राष्ट्रीय सेमिनार	5,00,000 रु.

	कैंपस, तहसील पुष्पराजगढ़, जिला अन्नुपुर, मध्य प्रदेश		
21	डॉ. नैनी बथ राजीव गांधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स दोईमुख 791112.	दर्शन, सामाजिक विज्ञान और जनजाति पर राष्ट्रीय सेमिनार	5,00,000 रु.
22	प्रोफेसर प्रसनजीत बिश्वास, एनईएचयू, शिलांग	दक्षिण पूर्व एशियाई जनजातीय दुनियाः विचार और दर्शन XXXVII भारतीय सामाजिक	5,00,000 रु.
23	प्रोफेसर पी.एस. रामकृष्ण, अध्यक्ष, भारतीय सामाजिक विज्ञान अकादमी; ईश्वर सरण आश्रम कैंपस, इलाहाबाद 211 004	विज्ञान कांग्रेस	प्रतिपूर्ति का मामला?
24	डॉ. मो. सिराजुल इस्लाम, प्रोफेसर व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र एवं धर्म विभाग, विश्व भारती, शांतिनिकेतन–731235	दर्शन एवं धर्म में महिलाओं के मुद्दों पर राष्ट्रीय सेमिनार	2,25,000 रु.
25	डॉ. राज कुमार मोडक, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, सिधो कान्हो बिरसा विश्वविद्यालय, पुरूलिया, पश्चिम बंगाल	भाषा के विश्लेषण के जरिये दर्शन पर दस दिवसीय कार्यशाला	4.75,000 रु.
26	प्रोफेसर पांडिकट्टू कुरूविला, जन दीपा विद्यापीठ, दर्शनशास्त्र एवं धर्म संस्थान, रामवाडी, नगर रोड, पूना– 411 014	लोकतांत्रिक हमः मानव विकास एवं बहुवादी राष्ट्रीयता के लिए दार्शनिक खोज पर सेमिनार	3,05,380 रु.
27	प्रोफेसर आर.पी. सिंह,	XXXVIII भारतीय सामाजिक विज्ञान	3,00,000 रु.

	अध्यक्ष, भारतीय सामाजिक विज्ञान अकादमी, ईश्वर सरण आश्रम कैंपस, इलाहाबाद	कांग्रेस पर राष्ट्रीय सेमिनार	
28	डॉ. डोमिनिक मियोलो, असम डॉन बोस्को विश्वविद्यालय, एयरपोर्ट रोड, अजारा, गुवाहाटी– 781017	एशियाई मूल्य एवं मानव भविष्य पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार	2,00,000 रु.
29	प्रोफेसर फ्रानसन मंजली, भाषा एवं साहित्य संस्कृति अध्यन स्कूल, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली 110067	अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार दर्शन, भाषा और राजनीतिः संरचनावाद उपरांत पुनर्मूल्यांकन पर	1,00,000 रु.
30	प्रोफेसर प्रजित के बासु, समाजशास्त्र विभाग हैदराबाद विश्वविद्यालय	वैचारिकता, निर्देशात्मकता और निष्पक्षतावाद पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार	
31	प्रोफेसर रंजन कुमार पंडा, दर्शनशास्त्र विभाग एचएसएस, आईआईटी, बॉबे,	''स्व–ज्ञान और नैतिकता'' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की रिपोर्ट	4,13,000 रु.
32	डॉ. भांग्ये भुकया, इतिहास विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय	आदिवासी स्वायत्ता पर पुनर्विचारःस्वयं घर और आवास	5,00,000 रु.

उपरोक्त में से कुछ कार्यक्रमों पर चयन–रिपोर्ट

13–15 मार्च, 2015 के दौरान, मद्रास विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र विभाग में आयोजित ''फिलोसफी करना – इनोवेशन और भीतर से परंपरा को बदलना : श्रीनिवास राव का समकालीन दार्शनिक विधारधारा में योगदान'' पर आईसीपीआर राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट।

प्रोफेसर जी. मिश्रा
की रिपोर्ट

दर्शनशास्त्र विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी हॉल में उपरोक्त विषय पर एक तीन दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया था। प्रोफेसर आर. गोपालकृष्णन, पूर्व प्रमुख ने प्रोफेसर मृणाल मिरी के साथ मुख्य अतिथियों के रूप में उदघाटन सत्र की अध्यक्षता की।

सेमिनार का उद्देश्य श्रीनिवास राव के लेखन, उनकी रचनात्मक उत्कृष्टता और अद्वैत एवं पश्चिम की अन्य प्रणालियों के साथ भारतीय विचारधारा में उनके योगदान को सराहना और मूल्यांकन करना है। शोधपत्र प्रस्तुत करने वाले अधिकांश शोध छात्रों ने प्रो. राव के विषयक व्याख्या के एक या अन्य पहलुओं का गहन अध्ययन किया है जबकि कुछ पारंपरिक विद्वानों ने उन विषयों पर परंपरागत रूझानों एवं प्रतिबिंबों पर प्रकाश डाला।

उदघाटन सत्र में प्रो. जी. मिश्रा ने प्रतिनिधियों, विशिष्ट व्यक्तियों, प्रतिभागियों और अन्य आमंत्रित व्यक्तियों का औपचारिक स्वागत किया। डॉ. आर. गोपालकृष्णन ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रोफेसर श्रीनिवास राव की निजी गुणों, शैक्षणिक कुशग्रता, सरल व्यवहार, व्यक्तिगत इंटरैक्शन, भातृत्व आदि का उल्लेख किया। प्रो. मृणाल मिरी ने अपने उदघाटन भाषण में प्रो. राव के साथ अपने संबंधों के बारे में बताया और उनके लेखन कार्य की सराहना की, जो मौजूदा सेमिनार के लिए प्रासंगिक है।

पहले शैक्षिक सत्र में दो प्रख्यात विद्वान वक्ताओं ने अद्ववैत वेदांत के सैद्धांतिक अर्थ को उदाहरण देकर सुंदर ढंग से समझाया। प्रो. एन. वीजीनाथन ने पहले प्रमुख भाषण में बताया कि माया को सही ढंग से समझे बगैर कोई भी व्यक्ति ब्रह्मा की वास्तविकता को नहीं जान सकता है और न ही जीव के स्वभाव को समझ सकता है। सैद्धांतिक और व्यावहारिक, दोनों दृष्टिकोणों से अद्वैत का परंपरागत नजरिये पर उनके द्वारा प्रमाणिक ढंग से बल दिया गया है। स्वामी परमानंद भारती ने अपने दूसरे प्रमुख संबोधन में कहा कि बुद्धिजीवियों, विद्यार्थियों और सन्यासियों के मन में उठने वाली सभी आशंकाओं का समाधान शास्त्रों में एक ही जगह उपलब्ध नहीं हो सकते हैं, जिनमें परस्पर विरोधाभासी कथन होते हैं । केवल भाष्य में ही कोई व्यक्ति सभी आंशकाओं का समाधान पा सकता है। उन्होंने कहा कि लिखित ग्रंथों का अध्ययन करने और इन्हें समझने के लिए व्याख्यात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए।

डॉ. मणि द्रविड ने प्रस्थानकरस की पारंपरिक स्थिति को उचित ठहराया जैसे वाचस्पति मिश्रा और प्रकसटमान ने कहा कि अद्वैत में मूलाविद्या तार्किक रूप से मान्य है। श्री गोडा वेंकेटेश्वर शास्त्री ने ब्राह्मण और माया के बीच संबंध के संदर्भ के साथ अद्वैत के विव्रत वाद पर चर्चा करते समय प्रस्तानत्रयी के टिप्पणीकारों पर विस्तृत फोकस के साथ दुनिया की प्रकृति पर सहमति और असहमति वर व्यापक विचार विमर्श किया गया। एम्मानुएल उप्पामठाकथिल ने अवधारणात्मक त्रुटि के सिद्धों पर प्रो. श्रीनिवास राव के विचारों पर एक आलोचनात्मक पत्र पेश किया।

शाम का सत्र, दो पुस्तकों के विमोचन को समर्पित था। प्रो. एम. आनंदकृष्णन ने प्रो. मिरी की पुस्तक ''फिलोसफी एंड एजुकेशन'' का विमोचन किया। प्रो. बिजॉय बोरूह और डॉ. जी. वेदप्रयाण ने पुस्तक के बारे में बताया। प्रो. जी मिश्रा द्वारा संपादित दूसरी पुस्तक ''वेदांत विदाउट माया'' का विमोचन प्रो. मृणाल मिरी ने किया और प्रतियां डॉ. सी.एल.

रामकृष्ण, स्वामी परमानंद भारती और प्रोफेसर वी. स्वामीनाथन द्वारा प्राप्त की गई।

दूसरे दिन की शुरूआत प्रो. वी. स्वामीनाथन द्वारा शोधपत्र प्रस्तुत करने के साथ हुई, जिन्होंने अविद्या और अनिवर्चनीय ख्याति के नागेस के निराकरण की श्री राम शास्त्री की समालोचना की जीवंत तस्वीर पेश की। उन्होंने कई पहलुओं से चुने विषय पर विस्तार से चर्चा भी की।

डॉ. रूपा बंधोपाध्याय ने अवधारणात्मक भ्रम के अद्वैत सिद्धांतः श्रीनिवास राव के विशेष संदर्भ में अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने तर्क दिया कि भ्रम की प्रकृति अद्वैत के कथामीमांसा और आध्यात्मिक युग में है और इस विषय पर प्रो. श्रीनिवास राव के विचार प्रस्तुत किए। डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने प्रो. श्रीनिवास राव की पुस्तक ''परसेप्च्युल एररः द इंडियन थ्योरीज'' में वर्णित बौद्ध धर्म और प्रतिबिंबों का सहारा लेकर अवधारणात्मक त्रुटि के सिद्धांतों पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रो. राव के दृष्टिकोण का ईमानदारी से विश्लेषण किया और ऐसे प्रेक्षण के लिए जिम्मेदार कारणों का पता लगाया।

डॉ. बिजॉय बोरूह ने विषय 'द नॉन–इंटेंशिएलिटी ऑफ आई–कोन्शिसनेस' पर बढ़िया प्रस्तुति दी और जोर देकर कहा कि जहां स्व–चेतना का सवाल है तो गैर–वैचारिकता थीसिस एक सत्य है। उन्होंने कई महत्वपूर्ण बिंदुओं का विश्लेषण किया जैसे 'मैं चेतना, 'मैं' परिवर्तक, मुझे, स्व–परिचय' । 'मेरी जागरूकता', 'मेरी पहचान', आस्तित्व में अनुभव नींव है', मैं–हूं–पन' 'मैं खुद के होने के बारे में जानता हूं' आदि। प्रो. यू. ए. विनय कुमार ने श्रीनिवास राव की पुस्तक 'अद्वैतः ए क्रिटिकल स्टडी' पर सी राम प्रसाद की समीक्षा पर काम किया और यह दर्शाने का प्रयास किया कि राव बिल्कुल सही मार्ग पर थे।

श्री इरा सचेप्टिन ने सबसे मूल्यवान और महत्वपूर्ण घटना के रूप में आत्म बोध पर जोर देते हुए शंकराचार्य से स्वामी सच्चिदानंदेन्द्र सरस्वती तक अद्वैत के विकास की समीक्षा की। उन्होंने जोर देकर कहा कि अज्ञानता माया नहीं है मगर अज्ञानता का कारण माया है। शंकर ने कभी भी मूलाविद्या पर विश्वास नहीं किया। श्री शशिधर शास्ती ने दुनिया की प्रकृति पर अपने विचार रखें और विद्वानों से कार्य–कारण की दृष्टि से अद्वैत को देखने के लिए कहा जो कारण के दृष्टिकोण से व्यावहारिक नहीं है और कार्य के दृष्टिकोण से यह है; और यह विरोधाभासी नहीं हैं। बुद्धि एक कार्य है और यह शायद ही कारण की खोज कर सकती है।

डॉ. वरूण कुमार त्रिपाठी ने प्रो. टीआरवी मूर्ति और प्रो. श्रीनिवास राव द्वारा व्याख्यित अज्ञानता के दो रूपों पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह साबित करने का प्रयास किया कि प्रो. राव ने हालांकि परंपरागत विचारों से अलग मत दिया जबकि टीआरवी मूर्ति ने अद्वैत के ढांचे के भीतर अपने विचार रखें। डॉ. आर. मुरली ने भ्रष्टाचार की अवधारणा का आलोचनात्मक ढंग से विश्लेषण और मूल्यांकन किया जैसा कि प्रो. राव ने अपनी आगामी किताब ''फिलोसफी फॉर यू' में चर्चा की है।

सेमिनार के तीसरे दिन की शुरूआत प्रो. जॉन बिग्रम्स द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत करने के साथ हुई जिन्होंने अद्वैत की दृष्टि से अज्ञानता, सर्वज्ञता, सृजन, एक और अनेक, विषय–वस्तु विरोधाभास, मुक्ति आदि पर अपने विचार प्रस्तुत किए और सच्चिदानदेंद्र सरस्वती के विचारों की समाआलोचना की।

प्रो. पी. के. मुखोपाध्याय के शोध पत्र प्रो. आर. गोपालकृष्णन ने पढ़कर सुनाए, जिनमें परंपरागत भारतीय दार्शनिक

विचारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने में राव के साथ अन्य समकालीन विद्वानों के प्रयासों की सराहना की गई थी।

डॉ. एस. लॉर्डनाथन ने प्रो. राव की पुस्तक 'फिलासफी फॉर यू' द्वारा उनके विचारात्मक उत्थान पर प्रकाश डालने का प्रयास किया। सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और सदाचारी होने के साथ दार्शनिक होने की भावना उनकी थीम का आधार है, जिसमें उन्होंने दोहराया है कि दार्शनिक होने का अर्थ नैतिक–दार्शनिक भावना को गंवाए बगैर सामाजिक, सास्कृतिक की गहरी संवेदना में जाना है।

प्रोफेसर प्रदीप गोखले ने प्रो. राव द्वारा किए गए विश्लेषण के अनुसार अवधारणात्मक त्रुटि के भारतीय सिद्धांतों पर कुछ प्रतिबिंब व्यक्त किए। उनके प्रतिबिंब मुख्यतया वैध ज्ञान, अवैध ज्ञान, आध्यात्मक त्रुटि आदि से संबंधित हैं।

डॉ. उमा देवी ने 'द कान्सेप्ट ऑफ सर्वतमभाव इन शंकरा थॉट' पर अपने शोध पत्र में पूरी दुनिया के साथ एकता की भावना के रूप में सर्वमभाव की धारणा स्थापित करने के लिए महाव्याख्या के अर्थ को ढूंढने की विधि दर्शाने का प्रयास किया है।

सुश्री एम. ज्योथिमणि, अनुसंधान विद्वान, दर्शनशास्त्र विभाग ने समकालीन भारतीय विचारधारा में स्वामी परमानंद भारती के योगदान के परिप्रेक्ष्य में परंपरा और व्याख्या की समझ पर प्रकाश डाला।

प्रो. हरमोहन मिश्रा ने श्रीनिवास राव की व्याख्या के मूल्यांकन के रूप में अद्‌वैत टीका पर अपने विचार रखें। उन्होंने प्रो. राव की निजी समझ से परंपरागत अद्‌वैत की आलोचना में कई कमियों का उल्लेख किया।

कुल मिलाकर इसमें उदघाटन और समापन सत्रों के अलावा नौ शैक्षिक सत्र और पुस्तक विमोचन कार्यक्रम आयोजित किए गए। सभी शोध पत्रों में प्रो. श्रीनिवास राव के योगदान के कुछेक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया तो कभी राव के दृष्टिकोण को उचित ठहराया गया तो कभी परंपरा की दृष्टि से उनके विचारों की आलोचना की गई।

शोध पत्र प्रस्तुत करने के बाद चर्चाओं, स्पष्टीकरणों और व्याख्या का दौर चला।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. रामा राव पप्पू (मियामी विश्वविद्यालय यूएसए) द्वारा की गई और समापन भाषण प्रो. वी स्वामीनाथन द्वारा दिया गया। सेमिनार का समापन निदेशक, प्रोफेसर जी मिश्र के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

मंदिर और तीर्थ स्थल : दार्शनिक दृष्टिकोण पर सेमिनार की रिपोर्ट

दर्शनशास्त्र विभाग, लोयोला कॉलेज ने सत्य निलायम अनुसंधान संस्थान के साथ मिलकर 16–17 जनवरी, 2014 को 'मंदिर और तीर्थस्थल : दार्शनिक दृष्टिकोण'' पर एक दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया। नीचे इस सेमिनार की संक्षिप्त रिपोर्ट दी गई है। सेमिनार कार्यक्रम के अनुसार आयोजित किया गया (इस पत्र के साथ संलग्न कार्यक्रम को देखें)। हमने मनेरसा हॉल, सत्य निलायम में सुबह 9:30 बजे उदघाटन समारोह शुरू किया। मंगलाचारण के बाद, डॉ. ई.पी. मैथ्यू, दर्शन विभाग प्रभारी, लोयोला कॉलेज ने मेहमानों का स्वागत किया। इसके बाद डॉ. अल्बट मुथुमलाई का अध्यक्षीय भाषण हुआ। डॉ. एस. पन्नीरसेल्वम, दर्शन विभाग प्रभारी, मद्रास

विश्वविद्यालय ने प्रमुख भाषण दिया और डॉ. जोशु कलापत्थी, दर्शन विभाग प्रभारी, मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज ने धन्यवाद दिया। डॉ. लारेंस फर्नाडिस, सेमिनार के संयोजक ने सेमिनार की गतिका सदस्यों के साथ साझा की।

उदघाटन समारोह के बाद कॉफी ब्रेक लिया गया। सुबह के सत्र में दो शोध पत्र और दोपहर के सत्र में तीन शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। लंच के बाद, 14.00 बजे सत्र शुरू हुआ, जिसमें तीन शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। पहले दिन का कार्यक्रम 16.15 बजे चाय और नाश्ते के साथ समाप्त हुआ।

दूसरे दिन का सेमिनार लोयोला कॉलेज के लारेंस सुंदरम सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आरंभ सुबह 9:30 बजे मंगलाचारण के साथ हुआ। तीसरे सत्र में तीन शोध पत्र और चौथे सत्र में दो शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। लंच के बाद, 14.00 बजे सत्र शुरू हुआ, जिसमें दो शोध पत्र प्रस्तुत किए गए और समापन समारोह 15.30 बजे हुआ, रेव फादर फ्रांसिस जयापथी एसजे, लोयोला कॉलेज, चेन्नै के पादरी ने समापन भाषण दिया और रेव डॉ. जोसफ एंटनी समे ने धन्यवाद दिया। जोइल द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम 16.15 बजे समाप्त हुआ। इसके बाद चाय और नाश्ता दिया गया। लोयोला कॉलेज के दर्शनशास्त्र विभाग के छात्रों, अन्य विभागों और सत्य निलायम अनुसंधान संस्थान के अनुसंधान विद्वानों के अलावा विवेकानंद कॉलेज, चेन्नै के दर्शनशास्त्र विभाग के दर्शनशास्त्र के छात्रों, मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, चेन्नै, दर्शनशास्त्र विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय के छात्रों ने इसमें भाग लिया। सभी वक्ताओं और अध्यक्षों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। सेमिनार के आयोजकों द्वारा बाहर से आए वक्ताओं के लिए सत्य निलायम में रहने और खाने की व्यवस्था की गई थी और सत्य निलायम एवं लोयोला कॉलेज के लिए परिवहन की व्यवस्था की गई थी।

इस सेमिनार ने मंदिरों एवं तीर्थ स्थलों पर महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार रखने का अवसर प्रदान किया। सेमिनार के दौरान विभिन्न पहलुओं पर दार्शनिक अंदाज में प्रकाश डाला गया। देश के अलग–अलग हिस्सों से आए विद्वानों ने सेमिनार को विविधता प्रदान की और एक ही सत्य को देखने के कई मार्ग बताएं। विषय, इसको आयोजित करने के तरीके, मेजबानी और सेमिनार की सुविधाओं के बारे में भारी संतुष्टि देखने को मिली।

‘भारत की सांस्कृतिक विरासत में कला’ पर राष्ट्रीय सेमिनार पर रिपोर्ट 27 और 28 अक्टूबर, 2014

रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान द्वारा 27 और 28 अक्टूबर, 2014 को गोल पार्क, कोलकाता–700029 में वॉल्यूम VII भाग I और भाग II के आधार पर भारत में सांस्कृतिक विरासत में कला : भारत की सांस्कृतिक विरासत में पुनर्विचार थीम’ पर एक दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया था। इस सेमिनार का उद्देश्य युवा शोध छात्रों और सामान्य लीडरशिप का ध्यान वॉल्यूम के महत्व और प्रभाव की ओर आकृष्ट करना था। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने इसके लिए वित्तीय सहायता प्रदान की। संस्थान के आमंत्रणों के जवाब में विषय से परीचित प्रतिभाशाली शोध छात्रों ने बड़ी संख्या में इसमें भाग लिया और अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों के संक्षिप्त बॉयो–नोट्स और उनके शोध पत्रों के सार वाली एक पुस्तिका प्रतिभागियों को बांटी गई थी।

सेमिनार का उदघाटन संस्थान के शिवनंदा हॉल में 27 अक्टूबर, सोमवार पूर्वाह्न 10:00 बजे किया गया था। संस्थान के भिक्षुओं द्वारा वैदिक मंत्रोचारण के बाद स्वामी सपूर्णानंद, सचिव, रामकृष्ण मिशन संस्कृति

संस्थान, कोल पार्क, कोलकाता ने मंच पर मौजूद प्रतिभागियों को सम्मानित किया। स्वामी संपूर्णानंद ने स्वागत भाषण भी दिया। श्रद्धेय स्वामी प्रभानंदजी महाराज, उपाध्यक्ष, रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ ने अध्यक्षीय भाषण दिया, श्री एच.एन. रामचंद्रन, डॉ. कपिला वात्स्यायन भारत की सांस्कृतिक विरासत के वॉल्यूम टप्प के संपादक के सचिव ने डॉ. कपिला वात्स्यायन का संदेश दिया कि वो अपने खराब स्वास्थ्य के कारण इसमें भाग नहीं ले सकीं। स्वामी भजननंदजी महाराज, सहायक सचिव, रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन ने प्रमुख भाषण दिया। प्रो. सब्यसांची भट्टाचार्य, पूर्व उपकुलपति, विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन और इस सेमिनार के सह–संयोजक ने सम्मेलन के बारे में जानकारी दी। स्वामी यादवेन्द्र, प्रभारी, सेंटर फॉर इंडोलॉजीकल स्टडीज एंड रिसर्च, गोल पार्क कोलकाता, ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

सेमिनार के उदघाटन सत्र से पहले, इसमें उपस्थित प्रतिभागियों का शिवानदं हॉल के सामने एक ग्रुप फोटो लिया गया। श्रद्धेय स्वामी प्रभानंदजी महाराज, उपाध्यक्ष, रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ ने चार पुस्तकों नामतः (i) इंडियन ट्रेडिशन इन सर्च ऑफ यूनिटी ऑफ म्यूजिक (ii) कान्सेप्ट ऑफ स्प्रिटिचुलिटी इन आर्टः पास्ट, प्रजेंट एंड फ्यूचर (iii) स्वामी विवेकानंद विजन ऑफ फ्यूचर सोसाइटी और (iv) रिथिंकिंग द क्लचरल यूनिटी ऑफ इंडिया का विमोचन किया। ये सभी पुस्तकें संस्थान के प्रकाशन हैं। राष्ट्रीय सेमिनार का शैक्षिक सत्र उसी दिन अर्थात् 27 अक्टूबर, 2014 को उदघाटन सत्र के बाद शुरू हुआ। इसमें कुल पांच शैक्षिक सत्र आयोजित किए गए। प्रत्येक सत्र एक संयोजक द्वारा आयोजित किया गया। प्रत्येक शोध पत्र प्रस्तुत करने के बाद चर्चा की गई। पांचवा शैक्षिक सत्र का समापन प्रो. हेमाद्री चटर्जी द्वारा कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने के साथ किया गया। स्वामी यादवेन्द्रनंद ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। प्रतिभागियों/संसाधन व्यक्तियों और पर्यवेक्षकों को पठन सामग्री उचित फोल्डर में प्रदान की गई थी। उदघाटन एवं शैक्षिक सत्रों को रिकार्ड किया गया और इनका विडियो बनाया गया। संसाधन व्यक्तियों/प्रतिभागियों, अतिथि पर्यवेक्षकों और पर्यवेक्षकों की कुल संख्या क्रमशः 25, 26 और 130 थी। इस सेमिनार में संसाधन व्यक्तियों/प्रतिभागियों, अतिथि पर्यवेक्षकों और पर्यवेक्षकों, कर्मचारियों, स्वयंसेवकों, सहायक व्यक्यितों की कुल संख्या लंगभग 220 थी।

डॉ. बी. आर. अंबेडकर के सामाजिक दर्शन पर रिपोर्ट

आईसीपीआर, नई दिल्ली और समाजशास्त्र विभाग, वाराणसी ने मिलकर ''डॉ. बी. आर. अंबेडकर का सामाजिक दर्शन'' पर एक दो दिवसीय (15–16 नवंबर, 2014) राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया था। सेमिनार के पहले दिन 11:00 बजे ये 13:00 बजे तक चले उदघाटन सत्र में प्रो. सोहन आर. यादव, समाजशास्त्र विभाग, बनारस विश्वविद्यालय, वाराणसी ने स्वागत भाषण पढ़ा। उन्होंने डॉ. बी. आर. अंबेडकर के सामजिक दर्शन पर बल देते हुए बताया कि उन्होंने सामाजिक समानता स्थापित करने के लिए कैसे प्रयास किया। उनके अनुसार विकास तभी किया जा सकता है, जब यह सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक आधार पर किसी भी इन्सान के साथ भेदभाव किए बगैर किया जाएं। वंचित और पिछड़े तबकों के उत्थान के लिए डॉ. बी. आर. अंबेडकर द्वारा किए गए कार्य को भारतीय इतिहास भुला नहीं जा सकता। वे भारतीय समाज में समानता और न्याय स्थापित करने के लिए काम करने वाले अगुवा व्यक्तियों में से एक रहे हैं। प्रो. आर.आर. झा, अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान संकाय, बनारस हिंदू

विश्वविद्यालय ने उदघाटन सत्र की अध्यक्षता की। भारतीय समाज महा परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है और इसमें जबर्दस्त सामाजिक—आर्थिक बदलाव आ रहे है, मगर इसमें एक ऐसी व्यवस्था का भी उदभव हुआ है, जो पहचान के आधार पर अपने लोगों के साथ भेदभाव करती है, समाज के कुछ वर्गों के दमन और शोषण को स्वीकार किया जाता है। अतः जाति और जाति आधारित भेदभाव अभी भी जारी है। असमानता का सिद्धांत जाति प्रथा का महत्वपूर्ण और केन्द्र बिंदु है। भारतीय संविधान में अनुसूसचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा करने और उनको बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण उपबंध दिए गए हैं। इतना ही नहीं हमारे सदियों पुराने हिंदू समाज के दीन लोगों और संस्कृति ने ऊंची जाति के हिंदुओं के अमानवीय और अपमानजनक व्यवहार के खिलाफ कई आंदोलन और संघर्ष किए।

मुख्य अतिथि प्रो. आई.एस. चौहान, पूर्व उपकुलपति, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल ने डॉ. अंबेडकर के दार्शनिक विचारों के बारे में बताया। उनकी विचारधारा जनता के सामाजिक सुधार, राजनीतिक ज्ञान, आध्यात्मिक जागृति और आर्थिक विकास पर आधारित थी। मौलिक मानव अधिकारों, पुरुषों एवं महिलाओं के लिए समान अधिकार, व्यक्तिगत गरिमा, सामाजिक एवं आर्थिक न्याय, मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में शांति एवं सुरक्षा के साथ जीवन के बेहतर मानकों और सामाजिक प्रगति में उनकी गहरी आस्था थी। शायद डॉ. अंबेडकर ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने मजबूत राष्ट्र और लोकतंत्र के उभार के लिए अनिवार्य विशेषता के रूप में समावेशी भारतीय समाज में सामाजिक समानता पर गंभीरता से विचार किया। मगर उनके अधिकांश विद्वान साथियों ने आर्थिक, राजनैतिक और आध्यात्मिक समानता पर बल दिया और सामाजिक समानता को नजरअंदाज किया। प्रो. बद्री नारायण, जी. बी. पंत सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान, झूसी इलाहाबाद, ने अपने प्रमुख भाषण में दलित दृष्टि से समाज के कमजोर तबकों के उत्थान पर बात की। डॉ. अंबेडकर के विचार, आइडिया और लोकतंत्र का दर्शन एवं समतावादी समाज सहजीवी तरीके से एक—दूसरे से जुड़े हैं। उन्होंने न केवल दलितों के कल्याण के बारे में सोचा बल्कि वे भारत को एक पूर्ण लोकतांत्रिक और लोक हितकारी समाज के रूप में देखने के लिए निरंतर संघर्ष करते रहे। बेशक अंबेडकर पूरे देश में दलितों के मसीहा हो सकते हैं मगर उन्होंने सभी भारतीय लोगों के लिए आधुनिक मूल्यों का प्रचार—प्रसार किया। उन्होंने समता और सभी लोगों के लिए समानता की लड़ाई लड़ी। उनकी नजर में भारत तब तक कल्याणकारी राष्ट्र नहीं बन सकता जब तक कि यह पुरातन और भेदभावपूर्ण जाति प्रथा का उन्मूलन या समाधान नहीं कर देता। उनका मत था कि मॉडेम—समकालीन भारतीय समाज पदानुक्रम और जाति विरोधाभासों में जकड़ा हुआ है, जो इसके विकास, प्रगति और बदलाव को बाधित कर रहे हैं। ये ताकतें और संगठन राष्ट्र निर्माण और सभी लोगों के पुनर्जागरण में बाधा पहुंचा रहे हैं। अतः कानून, आजादी, समानता और लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और तर्कसंगत मूल्यों पर आधारित उनका भाईचारे पर डॉ. अंबेडकर के विचार द्वारा भारत में सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक समाज की शुरूआत की जा सकती है।

विशेष अतिथि, प्रो. प्रदीप गोखले, डॉ. बी.आर. अंबेडकर अनुसंधान प्रोफेसर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तिब्बतन, सारनाथ, वाराणसी ने इस बात पर बल दिया कि कैसे डॉ. अंबेडकर ने सामाजिक न्याय पर आधारित समाज बनाने के बारे में कल्पना की थी। सामाजिक न्याय में केवल न्यायसंगत और निष्पक्ष सामाजिक व्यवस्था शामिल नहीं है बल्कि सभी के लिए न्याय और निष्पक्षता को शामिल किया गया है। सामाजिक व्यवस्था को समाज के सभी सदस्यों के लिए निष्पक्ष और न्यायसंगत बनाने के लिए इसे उन लोगों के लिए अनिवार्य बनाए जाने की आवश्यकता है, जो

कुछ त्याग करने के लिए अभिशप्त हैं। इस अर्थ में सामाजिक न्याय एक क्रांतिकारी आदर्श है। इसमें आर्थिक और सामाजिक, दोनों न्याय शामिल हैं। भारत में सामाजिक न्याय सामाजिक अन्याय की देन है और हमारी जाति प्रथा और सामाजिक संरचना सामाजिक अन्याय के स्रोत हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आजादी के सड़सठ साल बाद भी सामाजिक न्याय अभी आम लोगों के लिए एक दूर का सपना बना हुआ है। अंबेडकर भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पकार थे। उन्हें भारतीय समाज के स्वरूप और समस्याओं की पूरी समझ थी। उन्होंने एक आदमी–एक मूल्य के संदर्भ में सामाजिक न्याय और सामाजिक लोकतंत्र हासिल करने का प्रयास किया। उन्होंने सामाजिक न्याय को देशभक्ति और राष्ट्रवाद का वास्तविक आधार माना। अंबेडकर ने सामाजिक न्याय के सिद्धांत को वर्ण व्यवस्था द्वारा प्रतिपादित, अरस्तू व्यवस्था, प्लूटो योजना, गांधीवादी सर्वोदय व्यवस्था और यहां तक मार्क्स के सर्वहारा समाजवाद के रूप में मानने से इंकार कर दिया। इसके बाद, 14:00 बजे लंच हुआ और 18:00 बजे प्रतिभागियों ने 11 सामानांतर तकनीकी सत्रों में अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

सेमिनार के दूसरे दिन 10:30 बजे से 13:00 बजे तक विशेष व्याख्यान सत्र आयोजित किया गया। प्रो. जे. के. तिवारी, पूर्व प्रमुख, समाजशास्त्र विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने इस सत्र की अध्यक्षता की। उन्होनें डॉ. बी. आर. अंबेडकर के मौलिक दार्शनिक विचारों के बारे में बताया। उनकी विचारधारा जनता के सामाजिक सुधार, राजनीतिक ज्ञान, आध्यात्मिक जागृति और आर्थिक विकास पर आधारित थी। मौलिक मानव अधिकारों, पुरुषों एवं महिलाओ के लिए समान अधिकार, व्यक्तिगत गरिमा, सामाजिक एवं आर्थिक न्याय, मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में शांति एवं सुरक्षा के साथ जीवन के बेहतर मानकों और सामाजिक प्रगति में उनकी गहरी आस्था थी। सामाजिक तथ्यों पर आधारित उनका अध्ययन राजनैतिक दर्शन से समृद्ध था। डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने अपने विद्वत्तापूर्ण कार्यों की विस्तृत श्रृंखला और सतत् राजनैतिक सक्रियता से राजनीति, समाज और अर्थव्यवस्था पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। हालांकि उनके राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक लेखन पर बहुत कुछ सुना और लिखा गया है, मगर उनके वैश्विक दृष्टिकोण दार्शनिक आधार और सैद्धांतिक मूल को समझने के बहुत कम प्रयास हुए हैं। डॉ. पितांबर, दास, दर्शनशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने डॉ. अंबेडकर के दार्शनिक विचारों पर प्रकाश डाला। हालांकि भारत विकास के दौर से गुजर रहा है और हमें बेहतर एवं न्यायसंगत सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था के लिए अपना मार्ग तलाशने की आवश्यकता है। सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था के नए मॉडल की खोज समय की जरूरत है।

उनकी विश्वदृष्टि न केवल विद्वत्तापूर्ण हित से परिपूर्ण थी बल्कि भेदभाव एवं उपेक्षा के निजी अनुभव से युक्त थी। उनके द्वारा महसूस की गई अन्याय की गहरी अनुभूति ने डॉ. अंबेडकर को समाज की सभी दमनकारी संस्थाओं को चुनौती देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने जिंदगी भर हिंदू जाति प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई, जो उन जातियों के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक दमन पर आधारित थी, जिन्हें 'निचली जातियां' माना जाता है। जाति आधारित भेदभाव के खिलाफ अपने संघर्ष में डॉ. अंबेडकर का मानना था कि भारत में दलितों की मुक्ति केवल ''शिक्षा, आंदोलन और संगठन'' की तीन आयामी सोच के जरिये संभव हो सकती है। उनके कार्यों में मानव समाज की धर्मनिरपेक्ष और मॉडेम समझ गहराई में अंतःस्थापित हैं। इसके अलावा, वे मानवतावाद की गहरी भावना और मानव गरिमा एवं मूल्य में गहरी आस्था से काफी प्रभावित थे। प्रो. एच. एस. झा, प्रमुख, समाजशास्त्र विभाग, डॉ. शकुंतला मिश्रा, पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ ने वर्तमान समय में डॉ. अंबेडकर के विचार की प्रासंगिकता के बारे

में बताया। अंबेडककर के बहुमुखी एवं विविध योगदान के जरिये एक एकीकृत थीम चल रहा है। उनके इस वाक्य में आर्थिक दर्शन बढ़िया ढंग से रेखांकित हो रही हैः बहुजन हिताय बहुजन सुखाय। अंबेडकर दर्शन सामाजिक, धार्मिक और नैतिक विचारों में वर्णित होता है। दर्शन के केन्द्र में दीन और वंचित हैं। दर्शन का उद्देश्य उन लोगों को जीवन देना है, जो परित्यक्त हैं, उनको उठाना है, जो दबे हैं, उनको उदात्त बनना है जो कुचले गए हैं, जाति पर ध्यान दिए बगैर सभी को आजादी, समानता और न्याय प्रदान करना है। डॉ. बी. आर. अंबेडकर के अनुसार, ''समाज हमेशा वर्गों से बनता है।'' उनके आधार जरूर अलग–अलग हो सकते हैं। वे आर्थिक, बौद्धिक या सामाजिक हो सकते हैं मगर समाज में कोई भी व्यक्ति हमेशा वर्ग का सदस्य होता है। यह एक सार्वभौमिक तथ्य है और पहले का हिंदू समाज भी इसका अपवाद नहीं रहा है और वास्तव में हम जानते हैं कि यह नहीं था। इसलिए वो क्या वर्ग था जो जाति में सबसे पहले स्वतः बना था, वर्ग और जाति के लिए कह सकते हैं कि एक दूसरे के पड़ोसी हैं और यह एक समय ही है, जो इनको इन दोनों को एक दूसरे से जुदा करता है, जाति एक सलंग्न वर्ग है। समाज के सभी लोगों के साथ इस तरह का व्यवहार होना चाहिए कि वे सभी इन्सान हैं इसलिए जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। यह डॉ. अंबेडकर के विचारों की मूल धारणा थी।

डॉ0 प्रमोद बगडे, दर्शनशास्त्र विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने जाति, लिंग, पंथ और धर्म के आधार पर भेदभाव के लिए जिम्मेदार कारकों के बारे में प्रमुखता से बताया। अंबेडकर हिंदू सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ थे और हिंदू धर्म को पसंद नहीं करते थे। अंबेडकर का मानना था कि बौद्ध धर्म में धर्म परिवर्तन सामाजिक न्याय देता है और उन्होंने देखा कि शांतिपूर्ण सामाजिक आजीविका को बढ़ावा देने के लिए बौद्ध धर्म को अपनाना सबसे बढ़िया मार्ग है। अपने प्राचीन धर्म, जो आज असमानता और दमन का प्रतीक बन गया है, को हटा कर अंबेडकर को उद्धृत करके मेरा पुनर्जन्म हुआ है, मैं अवतार के दर्शन में बिल्कुल विश्वास नहीं रखता; और यह गलत और शरारतपूर्ण है कि बुद्ध विष्णु के अवतार थे। मैं किसी हिंदू देवता या देवी का उपासक नहीं हूं। मैं श्राद्ध नहीं करूंगा। मैं बुद्ध के अस्सी गुना मार्ग का अनुसरण करूंगा। बौद्ध धर्म एक सच्चा धर्म है और मैं ज्ञान, सही पथ और करूणा के तीन सिद्धांतों के अनुसार जीवन व्यवीत करूंगा और उन्होंने यह भी कहा कि दुनिया उन बागियों की कृतज्ञ होगी, जिनमें मुकाबला करने की हिम्मत होगी और इस पर जोर दिया कि यह अपरिहार्य है। मुझे उस सम्मान की भी परवाह नहीं है, जो हर प्रगतिशील समाज अपने बागियों को देता है। मुझे संतुष्टि तब होगी जब हिंदुओं को यह अहसास करा सकूं कि वे भारत के बीमार लोग हैं और उनकी यह बीमारी दूसरे भारतीयों के स्वास्थ्य एवं खुशियों के लिए खतरानाक है। उसी दिन 14:00 बजे से 16:00 बजे के बीच समापन सत्र में प्रो. सोहन आर. यादव, समाजशास्त्र विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने स्वागत भाषण दिया। मुख्य अतिथि प्रो. नंदू राम, पूर्व, अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जेएनयू, नई दिल्ली ने डॉ अंबेडकर के दर्शन पर प्रकाश डाला। दार्शनिक तथ्यों से समृद्ध डॉ. अंबेडकर की विचारधारा हिंदू समाज की नैतिक, सामाजिक और कानूनी बुनियाद तैयार करती है। उपेक्षित एवं वंचित वर्ग के उत्थान में डॉ. अंबेडकर द्वारा निभाई गई भूमिका को भारतीय इतिहास भुला नहीं सकता। उन्हें भारतीय समाज में समानता के लिए समर्पित अगुवा में से एक माना जाता हैः उनकी मानव अधिकारों, पुरुषों एवं महिलाओं के अधिकारों, व्यक्तिगत गरिमा, सामाजिक एवं आर्थिक न्याय, सामाजिक प्रगति के प्रोत्साहन और जीवन क सभी क्षेत्रों में शंति एवं सुरक्षा के साथ जीवन के बेहतर मानकों में गहरी आस्था थी। विशेष अतिथि प्रो. क्रीति पांडे, पूर्व प्रमुख, समाजशास्त्र विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने डॉ. अंबेडकर द्वारा दिए गए सामाजिक न्याय के विचार पर व्याख्यान दिया।

सामजिक न्याय का भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में विशेष महत्व रहा है, जो जातियों एवं समुदायों में बंटा हुआ है और ये उच्चत और हीनता जैसी असमानता के आधार पर विशेषता की दीवारें और रूकावटें पैदा करती हैं और यह भारतीय लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा हैं। सामाजिक न्याय की अवधारणा का उद्देश्य असमानता दूर करना और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मामलों के सभी नागरिकों को समान अवसर प्रदान करना है। सामाजिक न्याय में सभी के लिए न्यायसंगत और निष्पक्ष सामजिक व्यवस्था का निर्माण करना शामिल है। समुदाय के प्रत्येक सदस्य के लिए सामाजिक व्यवस्था को न्यायसंगत और निष्पक्ष बनाने के लिए विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्तियों को कुछ त्याग करने की आवश्यकता है। इस अर्थ में सामाजिक न्याय एक क्रांतिकारी आदर्श है। इसका उद्देश्य सभी तरह की असमानताओं का उन्मूलन करना और सामाजिक एवं आर्थिक मामलों में सभी नागरिकों को समान अवसर प्रदान करना है। इस प्रकार सामाजिक न्याय का उद्देश्य जाति, वर्ग, लिंग, अधिकार, पद, धन पर आधारित सभी तरह की असमानताओं को खत्म करना है और सामाजिक न्याय का समान वितरण सामाजिक अधिकारों और सामाजिक बंधनों के बीच एक संतुलन है। अध्यक्ष, प्रो. एम. सलीम, सामाजिक विज्ञान संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने बताया कि डॉ. अंबेडकर द्वारा अपनाई गई रणनीति में संवैधानिक सुरक्षा, विधायी उपाय, सार्वजनिक नीतिगत उपाय, आध्यात्मिक पहलु और सामाजिक न्याय एवं दमन का उन्मूमलन करने का निरंतर संघर्ष शामिल हैं। इसका हमारे मौजूदा समाज और राजनीति में महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है। बहरहाल, वर्तमान में भारतीय संदर्भ में मानवतावाद, लोकतंत्र, समानता और आजादी के मूल्यों को फिर से परिभाषित किए जाने की आवश्यकता है। आजादी के 6 से अधिक दशक बीत जाने के बाद भी भारत कुछ समीचीन सवालों का जवाब देने और विरासत में मिली समस्याओं को हल करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। क्या हिंदू समाज दलितों को हमारे समाज के अन्य नागरिकों के बराबर दर्जा देता है? दलित अभी भी गरीबी, कुपोषण और भूख से क्यों पिस रहा है? दलितों के लिए सामाजिक न्याय के क्या मायने हैं और क्या यह हमारे संविधान का आभूषण मात्र है या इसके हम पर कुछ महत्वपूर्ण प्रभाव हैं? भारतीयों की आजादी के 65 साल बाद भी जाति प्रथा क्यों कायम है और इस पर अंबेडकर की क्या दृष्टि है? जाति, लिंग, उम्र और धर्म के आधार पर भारतीय समाज में सामाजिक बहिष्कार क्यों मौजूद है? इन जटिल प्रश्नों के जवाब केवल डॉ. अंबेडकर ने दिया है।

''दर्शन में अनुसंधान कौशल का विकास करना'' पर पांच दिवसीय कार्यशाला पर रिपोर्ट 16—20 फरवरी, 2015

दर्शनशास्त्र एवं संस्कृति स्कूल, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय ने 16 से 20 फरवरी, 2015 के बीच एक पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् ने इस कार्यक्रम को प्रायोजित किया। इस कार्यक्रम को आयोजित करने का उद्देश्य दर्शन में कुछ योजनाबद्ध शोध करने के लिए कुछ व्यावहारिक थीसिस तैयार करना था क्योंकि दर्शन के विषय में शोध के उद्देश्यों और तरीकों के संबंध में भ्रम की स्थिति है।

देशभर से आए लगभग पचास प्रतिभागियों और 10 स्थानीय प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। उदघाटन एवं समापन सत्रों को छोड़कर कुल उन्नीस व्याख्यान हुए। इसमें नौ संसाधन व्यक्ति थे, जिनमें कुछ भारत के प्रख्यात विचारक शामिल थे। निम्नलिखित व्यक्ति संसाधन व्यक्ति थे :—

1. प्रो. प्रिय दर्शनी जेटली
2. प्रो. बिजॉय बोरूह
3. प्रो. निर्मलांशु मुखर्जी
4. प्रो अशोक वोहरा
5. प्रो. पी. आर. भट्ट
6. डॉ. गोपाल शाहु
7. डॉ. वरुण त्रिपाठी
8. डॉ. अमित कुमार तिवारी
9. श्री सुमंत सारथी शर्मा

उदघाटन सत्र :–

कार्यशाला का उदघाटन सत्र 16 फरवरी, 2015 को 10:00 बजे शुरू हुआ था। डॉ. वरूण के. त्रिपाठी, प्रभारी निदेशक, दर्शानशास्त्र एवं संस्कृति ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने देश के अलग–अलग हिस्सों से आए प्रतिनिधियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने सभी को श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय में बेहतर माहौल देने का आश्वासन दिया।

श्री अशोक कुमार तराई, कार्यशाला के आयोजन सचिव ने कार्यशाला का विषय प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में बताया कि भारत में दर्शन के छात्रों की नियोजन योग्यता में भारी गिरावट आ रही है। दार्शनिक समुदाय के प्रति मुख्यधारा के लोगों में भारी उपेक्षा का भाव है। अकादमिक दर्शन में प्रशिक्षण की जरूरत है क्योंकि दर्शन की पूरी बिरादरी दर्शनशास्त्र करने के अव्यवस्थित तरीके को नहीं अपना सकती। उन्होंने अंत में इस कार्यशाला की जरूरत के बारे में बताया।

कार्यशाला के संसाधन व्यक्तियों में से एक प्रो. पी. जेटली ने विस्तार से बताया कि कैसे कोई व्यक्ति स्व–प्रेरणा से दर्शनशास्त्र को कर सकता है। उन्होंने दर्शनशास्त्र करने के वस्तुनिष्ठ तरीके वाले विचार को नकार दिया। उन्होंने भरोसा दिलाया कि कार्यशाला में उनके व्याख्यान यह दर्शाने का प्रयास करेंगे कि ऐसी कोई विशेष शोध पद्धति नहीं हो सकती है, जिसे दर्शन या दार्शनिक अनुसरण करें।

माननीय उपकुलपति, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, प्रो. सुधीर कुमार जैन अपने आदर्श विचारों से इस अवसर की गरिमा बढ़ाई। उन्होंने दर्शन विषय की उपयोगिता पर चर्चा की। इस बात की अत्यंत आवश्यकता है कि दर्शन और दार्शनिक समाज की बेहतरी के लिए इसका मार्गदर्शन करें। उन्होंने तर्क दिया कि यह यह तभी संभव हो सकता है जब दर्शनशास्त्र को कड़ी मेहनत कि साथ किया जाए। अंत में उन्होंने यकीन दिलाया कि दर्शन समुदाय के बीच युवा मनों में विवेक प्रसार करने के लिए दर्शन में इस तरह के कार्यक्रम की भारी मांग है। डॉ. अनिल कुमार तिवारी, सहायक प्रोफसेर, दर्शन एवं संस्कृति स्कूल ने धन्यवाद भाषण दिया।

16.02.2015 (दिन–1)

कार्यशाला का पहला व्याख्यान श्री सुमंत सारथी शर्मा, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र अैर संस्कृति विद्यालय और एस.एम.वी.डी विश्वविद्यालय का था। श्री शर्मा की प्रस्तुति का शीर्षक ''फार्मेटिंग और साइटेशन :सम इश्यू''। उन्होंने दर्शन में शोध से संबंधित तकनीकी समस्याओं जैसे संदर्भित, ग्रंथ सूची, प्रंशसा पत्र आदि पर चर्चा की उन्होंने प्रतिभागियों को थीसिस या शोध प्रबंध लेखन के लिए संदर्भित के मानक तरीकों की जानकारी दी।

प्रो. पी. जेटली, पूर्व संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय और प्रो. निर्मलनांशु मुखर्जी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय ने कार्यशाला के पहले दिन लंच के बाद के सत्र में दो व्याखयान दिए। प्रो. जेटली ने ''इज द साइंटिफिक मैथड यूरोसेंट्रिक'' पर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में दार्शनिक शोध में वैज्ञानिक विधि के इतिहास के बारे में बताया। उनकी प्रस्तुति में दार्शनिक शोध में वैज्ञानिक विधि के महत्व को दर्शाया गया था।

पहले दिन की कार्यशाला में लंच के बाद के सत्र में दूसरा व्याख्यान प्रो. निर्मलनंशु मुखर्जी का था। उनकी प्रस्तुति का शीर्षक ''प्राब्लम ऑफ फिलोसफिजिंग इन इंडिया'6 था। प्रो. मुखर्जी ने कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं का उल्लेख किया, जिन्हें उन्होंने बहुत पले अपने एक लेख ''एकेडमिक फिलोसफी इन इंडिया'' में उठाया था, उनका यह लेख मार्च, 2002 में ईपीडब्ल्यू में प्रकाशित हुआ था। उन्होंने भारतीय दार्शनिकों द्वारा क्वालिटी दार्शनिक कार्य की विफलता के बारे में बताया। भारत के दार्शनिक भारतीय विषय–वस्तु को शामिल करके शैक्षिक दुनिया में अपनी छाप छोड़ सकते हैं।

17.02.2015 (दिन–2)

लंच से पहले प्रो. एन मुखर्जी का व्याख्यान था। उनके व्याख्यान का शीर्षक ''लैंगवेज इम्बोडिड माइंड'' था। उन्होंने अपने व्ख्यायान में दावा किया कि भाषा सन्निहित है। एकता का विचार मन–शरीर द्वैतवाद का उत्पाद है। इसके बाद उन्होंने बताया कि भाषा वास्तव में मस्तिष्क का उत्पाद कैसे है। इस संबंध में प्रतीत्य सम्पुटडा के बौद्ध सिद्धांत के बारे में भी बताया गया।

लंच से पहले का दूसरा व्याख्यान प्रो. अशोक वोहरा, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय ने प्रस्तुत किया। उन्होंने ''इंपोसिबिलिटी ऑफ ए यूनविर्सल मैथड इन फिलोसफी–I पर अपना व्याख्यान दिया। प्रो. वोहरा ने अपने व्याख्यान में बताया कि दर्शन में शोध कार्य की कोई रेसिपी नही ंहै; अर्थात् दर्शन में ऐसा कोई विशेष विधि नहीं है, जिसका अनुसरण शोध कार्य करते हुए किया जा सकें। दर्शन में समस्याओं की भिन्नता के अनुसार लेखन के तरीके भी भिन्न होते हैं। इसमें अलग–अलग तरीके हैं जैसे भाषाई विधि, द्वंद्वात्मक विधि, वर्णनात्मक विधि आदि। व्यक्ति को लिखते समय समस्या के अनुसार विधि को चुनना होता है। मगर अपके द्वारा गई विधि समस्या का समाधान करने वाली होनी चाहिए।

लंच के बाद के सत्र में पहला व्याख्यान प्रो. बिजॉय बोरूह, प्रोफेसर, आईआईटी दिल्ली ने प्रस्तुत किया। उनका व्याख्यान ''अप्रियोरी और आर्मचेयर फलोसफिजिंग'' पर था। प्रो. बोरूह ने पश्चिम और पूर्व के परंपरागत दर्शन पर विचार रखें। उन्होंने दर्शन के कुछ महत्वपूर्ण पूर्व तर्कों का विश्लेषण किया, जैसे सेंट अन्सेलम का सात्विक तर्क,

डेस्क्रेट्स का कोजिटो इर्गो कुल तर्क और विटजेन्सटिन का निजी भाषा तर्क।

लंच के बाद के सत्र में दूसरा व्याख्यान प्रो. वोहरा ने दिया, जिन्होंने अपने पिछले व्याख्यान को जारी रखा। उन्होंने अपने दर्शन में चर्चा की और बताया कि प्रश्नों की 'एन' संख्याएं हैं मगर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है और प्रत्येक उत्तर पर दुबारा प्रश्न पूछा जा सकता है। इसलिए लेखन कार्य करते समय प्रश्न जरूर करें और अपने नजरिये से इसका उत्तर देने का प्रयास करें। एक अच्छा लेखन वो है जिसमें लेखक प्रश्न का उत्तर देता है या अपने शब्दों में समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है और तर्क देने का प्रयास करता है कि यह समाधान सबसे अधिक उपयुक्त है। अंत में, उन्होंने उन सभी छोटी–बड़ी समस्याओं के बारे में बताया जिनका सामना आप अपने शोध कार्य करते समय कर सकते हैं।

18.02.2015 (दिन–3)

लंच से पहले के सत्र में पहला व्याख्यान प्रो. बोरूह ने दिया था। उनके व्याख्यान का शीर्षक ''इनोवेटिव कंपेरेटिव फिलोसफी'' था। उन्होंने कई समकालीन दार्शनिक शोधों पर चर्चा की, जो भारत और पश्चिम में तुलनात्मक प्रकृति के हैं। विभिन्न दार्शनिक परंपराओं को समझने की आवश्यकता है। अगर आप विचार की एक प्रणाली का दूसरे विचार की प्रणाली से तुलना नहीं करते हैं तो यह दार्शनिक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। यह भी जरूरी है कि दर्शन में युवा शोधार्थियों के अंतर–विषयक शोध को बढ़ावा दिया जाए।

लंच से पहले के सत्र में दूसरा व्याख्यान प्रो. पी. जेटली ने दिया। उनका व्याख्यान ''फिलासफी एज लकाटोसियन रिसर्च प्रोग्राम'' पर था। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में और पोपर की विधियों के बारे में बताया। दर्शन में कोई विशेष विधि नहीं है क्योंकि दर्शन में विभिन्न समस्याएं हैं। इसलिए ऐसा कोई पक्का तरीका नहीं है, जिसे शोध कार्य करने के लिए सर्वव्यापी बनाया जा सकें। दर्शन में विधि दर्शनशास्त्र करने के बाद सामने आती है न कि केवल सीखने से। सबसे पहले शोधकर्ता को विभिन्न स्रोतों जैसे किताबों (प्राथमिक और माध्यमिक), पत्रिकाओं आदि से सीखना पढ़ता है और सीखने के बाद सीखी गई चीजों को अपने लेखन में उतारना होता है। शोध शुरू करने से पहले आपको सबसे पहले किसी की रूचि के क्षेत्र की समस्याएं ढूंढनी होती हैं। दार्शनिक शोध करने में रूचि प्रमुख कारक है। समस्या का चुनाव करने के बाद आपको समस्या से जुड़े साहित्य को खोजना होता है। शोधकर्ता को समस्या का समाधान करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना होता है।

लंच के बाद के सत्र में पहला व्याख्यान श्री सुमंत सारथी शर्मा ने प्रस्तुत किया। उनका व्याख्यान ''द क्लासीकल नोशन ऑफ वैलिडिटी एंड साउंडनेस इन डिडक्टिव लॉजिक'' पर था। इसमें उन्होंने वियोजक तर्क में वैधता, अवैधता और पूर्णता पर चर्चा की। वाक्यात्मकता और अर्थ धारणा के बीच अंतर पर चर्चा की गई। वैधता की वाक्यात्मक धारणा और पूर्णता की अर्थ धारणा के बीच अंतर को स्पष्ट करने के लिए कुछ प्रतिबंधों को भी स्पष्ट किया गया था।

लंच के बाद के सत्र का दूसरा व्याख्यान डॉ. अनिल तिवारी, सहायक प्रोफेसर, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय ने दिया। उन्होंने ''मैथड्स ऑफ एनेलिसिस इन इंडियन फिलोसफी'' पर व्याख्यान दिया। शास्त्रीय भारत में दार्शनिक आमतौर पर रीजनिंग का सामान्य पैटर्न (वदाविधि, लिट। 'चर्चा की विधि') अपनाते हैंः उन्हें पहले अपने प्रतिपक्षी के

दृष्टिकोण का वर्णन करना चाहिए। प्रतिपक्षी की स्थिति को तकनीकी भाषा में पूर्वापक्षा कहते हैं। आवश्यक टीका के बाद बहस द्वारा पूर्वापेक्षा का जोरदार खंडन किया जाता है। इसे खंडन करना कहते हैं। प्रतिपक्षी की स्थिति का खंडन होने के बाद समर्थक अपनी स्थिति को बेहतर करता है जिसे उत्तरापक्षा या सिद्धांत कहते हैं। बहस की विधि को वर्णनात्मक ढंग से पूर्वापक्षा खंडनपूर्वक–सिंद्धांतप्रतिपढना विधि कहते हैं।

19.02.2015 (दिन–4)

प्रो. जेटली ने लंच से पहले के सत्र का पहला व्याख्यान दिया। उनके व्याख्यान का शीर्षक ''हाउ टू राइट फिलासफीकल वर्क्स. I था। अपने व्याख्यान में उन्होंने दार्शनिक शोध करने में आने वाली कई समस्याओं और चुनौतियों के बारे में बताया। शोध पत्र लेखन एक हुनर है। इस हुनर में समस्याओं का उल्लेख करना, समस्या को परिभाषित करना और अच्छे तर्क के जरिये इनका समाधान प्रस्तुत करना शामिल है। प्रो. जेटली ने सुझाव दिया कि व्यक्ति को एकाग्र चित से दिन में निरंतर तीन घंटे पढ़ना और लिखना चाहिए। शोधकर्ता को सप्ताह का एक ऐसा दिन चुनना चाहिए, जिसमें वह लगातार आठ घंटे काम करें। लेखन कला पहले पत्रिका को पढना और फिर लिखना है।

लंच से पहले के सत्र का दूसरा व्याख्यान डॉ. वरूण त्रिपाठी, सहायक प्रोफेसर, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय ने प्रस्तुत किया। उन्होंने ''इश्यू ऑन मोरल इपिस्टिमोलॉजी'' पर व्याख्यान दिया। डॉ त्रिपाठी ने नैतिक ज्ञानमीमांसा पर समकालीन शोध कार्यों पर चर्चा की। मूल प्रश्न, जिस पर उन्होंने चर्चा की, वह यह था कि ''क्या हम कभी जान सकते हैं या हमारे पास यह विश्वास करने के कुछ औचित्य है कि कोई चीज नैतिक दृष्टि से सही है या गलत, न्यायसंगत है या नहीं, वास्तविक है या अवास्तविक, आदर्श है या आधार, अच्छी है या बुरी?' इस संबंध में उन्होंने बुनियादवाद, संकल्पनावाद और सुसंगतवाद द्वारा विभिन्न दार्शनिक प्रतिक्रियाओं के बारे में बताया।

लंच के बाद के सत्र का पहला व्याख्यान डॉ. अनिल कुमार तिवारी का था। उनके व्याख्यान का शीर्षक ''प्रसंग : ए फिलोसफिकल अप्रोच'' था। प्रसंग तार्किक जांच की विधि है, जिसका विकास माध्यमिक बौद्धधर्म के संस्थापक नागार्जुन (सी. दूसरी शताब्दी सीई) द्वारा किया गया था। इस विधि में प्रतिपक्षी की दार्शनिक स्थिति को स्थिति में मौजूदा विरोधाभासों को उजागर करके बेतुका दिखाया जाता है और ऐसे विश्लेषण का मकसद सत्य की संकल्पनात्मक समझ के साथ जुड़ी सीमाओं का उल्लेख करना है। इसलिए यह कहना सही है कि तर्क की प्रसंग विधि दार्शनिकता की कठोर गतिविधि को तार्किक ढंग से व्यक्त करती है।

लंच के बाद के सत्र में दूसरा व्याख्यान प्रो. जेटली ने प्रस्तुत किया, जिन्होंने अपना पहले का व्याख्यान ''हाउ टू राइट फिलासफीकल वर्क्स. II को जारी रखा। प्रो. जेटली ने दार्शनिक पत्र लिखने के आठ तरीके बताएं जैसे (1) शोध, (2) पठन, (3) पुनः पठन, (4) कठिनाई, (5) रीजनिंगए (6) प्रत्यावर्तनए (7) रिविजनए (8) फिर से लिखना। इसमें एक ठोस कहानी होनी चाहिए जो पाठकों को प्रेरित करें और उन्हें पूरा शोध पत्र पढ़ने के लिए आकर्षित करें। अच्छा लेखक बनने के लिए आपको लिखने का अभ्यास करना चाहिए जिसके लिए पढ़ना जरूरी है। आपको लेख पढने चाहिए ताकि आप अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकें, फिर आपको पढ़े गए लेख पर टीका लिखनी चाहिए।

20.02.2015 (दिन–5)

कार्यशाला के अंतिम दिन का पहला व्याख्यान प्रो. पी.आर. भट्ट, आईआईटी बॉबे ने दिया। उन्होंने ''आर्डिनरी लैंगवेज फिलोसफी'' पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने साधारण भाषा दर्शन के इतिहास और शैक्षिक दर्शन में इसके उदभव पर चर्चा की। साधारण भाषा की परंपरा विटजेस्टिन के समय से चली आ रही हें साधारण भाषा दार्शनिक पत्र लिखने में काफी उपयोगी है क्योंकि साधारण भाषा जटिल भाषा की तुलना में सरल होती है, यह आसान और साधारण ढंग से काम करती है जो आम आदमी को समझ आती है। दर्शन में हमें चीजों और अपने लेखन को दूसरे के समझने योग्य बनाना चाहिए। जटिल भाषा को अपनाना जरूरी नहीं है। साधारण भाषा में लेख को लिखना आसान है और पढ़ना आसान है। भाषा संवाद करने या अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट करने का साधन है।

लंच से पहले के सत्र का दूसरा व्याख्यान डॉ. गोपाल शाहु, एसोसिएट प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने दिया। उन्होंने ''राइटिंग ए फिलोसफी पेपरःस्किल्स, स्टेप्स एंड स्ट्रक्चर'' पर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने व्याख्यान में दार्शनिक पत्र लिखने की कई बारीकियों पर चर्चा की। उन्होंने लेखन के विभिन्न हुनर पर चर्चा की जैसे (1) विषय कौशलः व्यक्ति को शोध के क्षेत्र के लेखकों, काल और ऐतिहाकस विकास के बारे में जानना चाहिए। जिससे वह दार्शनिक मुहावरों और भाषा से परिचित हो सकें; तर्कों, व्यवस्था, तर्क के नियमनिष्ठा, तक के मूल्यांकन, तक में अशुद्धि की पहचान करने और तर्क में अशुद्धि को नाम देना चाहिए। (2) पठन कौशलः व्यक्ति को विषय से संबंधित सभी लेख, किताबें पढ़नी चाहिए। (3) लेखन कौशलः इसमें लिखते समय स्पष्टता, सुबोधगम्यता, सरलता होनी चाहिए। (4) फार्मेटिंग कौशलः विभिन्न संदर्भ शैलियों जैसे एमएलए, एपीए आदि की जानकारी होनी चाहिए।

लंच के बाद के पहले सत्र में प्रो. पी.आर. भट्ट ले व्याख्यान दिया। उन्होंने ''थॉट एक्सपेरीमेंट मैथड'' पर व्याख्यान दिया। उन्होंने दार्शनिक शोधों विशेषकर समकालीन दिनों में विचार प्रयोग विधियों के महत्व के बारे में बात की। हालांकि प्रयोग का इस्तेमाल किया जा सकता है और यह इसका इस्तेमाल आमतौर पर दूसरी स्थापित दार्शनिक सिद्धांतों की आलोचना करने में किया जाता है। प्रो. भट्ट ने कहा कि विचार प्रयोग विधि न केवल विपरीत विचारों में दोष खोजने में मदद करती है बल्कि यह व्यक्ति की थीसिस का बचाव करने में भी मदद करती है।

कार्यशाला का अंतिम व्याख्यान डॉ. गोपाल शाहु का था। उन्होंने ''इन्वेंटिंग काउंटर एक्जांपल थ्रू थॉट एक्सपेरीमेंट'' पर व्याख्यान दिया। उन्होंने दार्शनिक शोधों में जवाबी उदाहरणों की प्रासंगिकता पर चर्चा की। इसके साथ उन्होंने दावा किया कि विचार प्रयोगों के जरिये जवादी उदाहरण बनाए जा सकते हैं।

विभिन्न दार्शनिक क्षेत्रों में विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए इन कुल उन्नीस सत्रों के साथ तकनीकी सत्रों का समापन हुआ। ये सभी सत्र प्रतिभागियों के लिए अत्यंत फायदेमंद थे, जिन्होंने कार्यक्रम के अंत में अपने विचार साझा किए।

समापन सत्रः

यह पांच दिवसीय कार्यक्रम समापन सत्र के साथ समाप्त हुआ, जो 20 फरवरी, 2015 को 16.30 बजे आयोजित किया गया। अध्यक्ष संकाय, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान समापन सत्र में मुख्य अतिथि थे। प्रो. पी. आर. भट्ट, प्रो. पी. जेटली और डॉ. गोपाल शाहु कार्यशाला के संसाधन व्यक्तियों के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित थे।

श्री अशोक कुमार तराई, कार्यशाला के आयोजक ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम में मौजूद सभी संसाधन व्यक्तियों ने इस आयोजन के लिए दर्शनशास्त्र स्कूल को बधाई दी, उन्होंने दर्शनशास्त्र के युवा शोधार्थियों के लिए बेहद जरूरी कार्यशाला बताया।

प्रो. वी. के. भट्ट, अध्यक्ष, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान ने सभी प्रतिभागियों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया, ये लोग देश के विभिन्न हिस्सों से इस कार्यक्रम में भाग लेने आए हुए थे। उन्होंने विभिन्न विषयों में दर्शन की प्रासंगिकता के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि कैसे सभ्यता के इतिहास में कुछ महान गणितिज्ञ अपने करियर के अंत में दार्शनिक बन गए थे।

डॉ. वरूण के. त्रिपाठी ने धन्यावाद ज्ञापन दिया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

''सेल्फ, वर्ल्ड एंड मोरालिटी : स्कोपेंहउेर एंड इंडियन फिलोसफी विद ए स्पेशल रिफरेंश टू द उपनिषद (ओपनेक'हाट)'' पर सम्मेलन की रिपोर्ट

दर्शनशास्त्र विभाग, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय और आईडीएसएस (इंडियन सोसायटी ऑफ स्कोपेंहउेर सोसायटी), जेएनयू संस्कृति अध्ययन केन्द्र, एमएमबी (मैक्स मूलर भवन) द्वारा मिलकर यह सम्मेलन आयोजित किया गया। जर्मनी, फ्रांस और आस्ट्रेलिया के विदेशी शोध छात्रों के साथ देशभर से आए शोध छात्र पश्चिमी दार्शनिक को अपनी श्रद्धांजलि देने और उनकी याद में सम्मान प्रकट करने के लिए 23–25 फरवरी, 2015 को कन्वेंशन सेंटर जेएनयू में एकत्रित हुए, वे ऐसे दार्शनिक थे जिन्होंने उपनिषदों और बौद्ध विचारों से पश्चिम दुनिया को अवगत कराया।

डॉ. आरती बरूआ, निदेशक, आईडीएसएस ने जनसमूह का स्वागत किया और डॉ. रामनाथ झा, जेएनयू और सम्मेलन के सह–संयोजक ने सम्मेलन की विषयक दृष्टि के बारे में बताया। इसके अलावा, देशबंधु कॉलेज और अन्य संस्थानों के शिक्षकों एव छात्रों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

प्रो. एस के सोप्रे, उपकुलपति, जेएनयू सेमिनार का उद्‌घाटन करते हुए अपने उदघाटन भाषण में स्कोपेंहउेर को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर डॉ. बिजॉय, मैंज के यू से लिप्रेंडेंट ने प्रो. मथायस कोसलेर, अध्यक्ष, स्कोपेंहउेर गैसलसाफ्ट, जर्मनी की ओर से विशेष भाषण दिया। प्रो. वी. एन. झा, पूर्व निदेशक, एडवांस्ड संस्कृत स्टडी सेंटर, पूना विश्वविद्यालय ने प्रमुख भाषण दिया और भारतीय दर्शन एवं संस्कृति के महान प्रशंसक आर्थर स्कोपेंहउेर को सम्मान देने में आईडीएसएस एवं संस्कृति अध्ययन केन्द्र, जेएनयू के प्रयासों की सराहना की।

8–10 जनवरी, 2015 को दर्शनशास्त्र विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय मे आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार 'इंटेंशनिएलिटी नोरमेटिववविटी और ऑब्जेक्टीविटी' की रिपोर्ट

'इंटेंशनिएलिटी नोरमेटिववविटी और ऑब्जेक्टीविटी' नाम के अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में तीन अलग–अलग विषयों में

झांकने का प्रयास किया गया और यह भी बताया गया कि ये विषय एक साथ कैसे आए। वैचारिकता, प्रामाणिकता और निष्पक्षता के विषय दर्शन के विभिन्न उप–क्षेत्रों जैसे मन का दर्शन, एपिस्टोमोलॉजी, संज्ञानात्मक विज्ञान का दर्शन और विज्ञान का दर्शन से बहुत आगे निकल गए हैं। सेमिनार का जोर वर्तमान शोध के आलोक में इन अवधारणों पर पुनर्विचार करने पर था और सामान्य रूप से निष्पक्षता की विशेषताएं कैसे प्रामाणिकता की विशेषताओं से टकराती हैं। सेमिनार के कुछ पत्रों में बताया गया था कि प्रामाणिकता की विशेषताएं किस तरह से वैचारिकता की विशेषताओं के लक्षण बताने में महत्वपूर्ण हैं। सेमिनार का शुभारंभ प्रो. अकील बिलग्रामी, मूल्यों और एजेंसी के लिए एक प्रख्यात दार्शनिक के प्रमुख भाषण के साथ हुआ। उन्होंने स्पष्ट किया कि कैसे मूल्यों द्वारा एजेंसी संभव है जो दुनिया के अंगभूत हैं। अगले दो सत्रों के पत्रों का जोर कांतियन बुनियाद पर खड़ी कार्टेसियन लिंग्वीस्टिक से जुड़ी प्रामाणिकता पर था और चोम्सकियान लिंग्वीस्टिक भाषा पर स्पष्टीकरण दे रहे हैं। पत्रों में ज्ञान के डिगेटीयराइज्ड एकाउंट मार्क्स को समझने में पेरिक्स के प्रभाव के साथ जुड़ी प्रामाणिकता पर भी विचार किया गया।

सत्र III और IV में रखे गए पत्रों का फोकस नैतिक एजेंटोंः व्यक्तिगत और सामूहिक, नैतिकता, संस्कृति और विटजेनिस्टन की व्याख्याओं में मूल्यों, वैचारिकता के मार्ग के जरिये भाषायी अभ्यावेदनों में निर्मित नोमेलिटी और सर्ले के सत्याभाषी और इसके निर्देशात्मक एवं ऑब्जेक्टिव बाध्यता के साथ मेटजलेस और चेतना के प्रत्युत्तर पर था।

सत्र V में रखे गए पत्र का फोकस प्रामाणिकता पर था जो इन्सान और ज्ञान को जोड़ती है और निष्पक्षता जो सत्य और वाजिब एवं उनके आतंरिक कान्सेपट मैपिंग से संबद्ध है मार्क्स एवं टेक्नोलॉजी हीडग्रेरियन एकाउंट से संबद्ध और कोई रेनेटिविटी नहीं और निष्पक्षता से भी संबद्ध है।

समापन कार्यक्रम के साथ सेमिनार का समापन हुआ, जिसकी अध्यक्षता प्रो–उप कुलपति, प्रो. ई हरिबाबू ने की और और श्री ए.वी वजलवार ने शानदार प्रायोजन के लिए आईसीपीआर को धन्यवाद किया।

दर्शन, भाषा और राजनीति : उत्तर संरचनावाद का पुनर्मूल्यांकन पर शैक्षणिक सेमिनार

उत्तरसंरचनवाद, जो पिछले पांच दशकों में विकसित हुआ है, के विचार और पद्धति पर विचार–विमर्श करने के लिए दर्शन, भाषा और राजनीतिः उत्तर संरचनावाद के पुनर्मूल्यांकन पर एक अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक सेमिनार 12 दिसंबर, 2014 को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम को जेएनयू, एल'इंस्टियूट फ्रान्सिस, नई दिल्ली, आईसीएसएसआर (उत्तर क्षेत्र), नई दिल्ली और आईसीपीआर नई दिल्ली का समर्थन प्राप्त था। फ्रांन्सन मंजाली, मुख्य संयोजक ने भारत से बाहर से आए प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए इस सेमिनार का परिप्रेक्ष्य और संदर्भ के बारे में संक्षेप में बताया। उदघाटन सत्र की अध्यक्षता आयशा किदवई, अध्यक्ष, भाषा केन्द्र ने की। इकोले नार्मल सुपररयोर, पेरिस के मार्क क्रिपन ने उद्घाटन व्याख्यानः द इन्वेंशन ऑफ द इडियम्सः द इवेंट ऑफ अनट्रांसलेटेबल दिया। क्रिपन का शोध पत्र साधारण या विद्वान तरीके से भाषा के प्रयोग के संदर्भ में मुहावरों की प्रासंगिकता और उन सभी घटकों के बारे में संवेदनशील होने पर केन्द्रित है, जिनमें ऐतिहासिक अवसाद है। शोधपत्र व्यक्ति की नैतिक–राजनैतिक आस्तित्व की विशिष्टता के भाग के रूप में उन्हें विस्थापित करने और

अभिभूत करने के काम पर आधारित है। क्रेपन के संदर्भ का मुख्य बिंदु डेरिडा सेमिनल का काम, मोनोलिंगयुएलिज्म ऑफ द अदर, या द प्रोस्थेसिस ऑफ ओरिजन था।

इसके बाद, बारह सत्र आयोजित किए गए जिनमें 23 शोधछात्रों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इनमें से पहला पॉल पैटन, न्यू साउथ वेल्स यूनिवर्सिटी, सिडनी और अनिरूद्ध चौधरी, आईआईएएस, शिमला के व्याख्यान थे। पैटन के शोधपत्र उत्तर संरचनावाद और राजनैतिक प्रामाणिकताः द केस ऑफ डेल्यूज, में उत्तर संरचनावाद विचार के खिलाफ सामान्य आलोचना को संबोधित किया कि इसने समकालीन समाज और सरकार से संबंधित प्रामाणिक सिद्धांतों पर ध्यान नहीं दिया गया था। पैटन ने तर्क दिया कि हालांकि यह आलोचना डेल्यूज और गुआटर के एंटी–ईडिपिस और थाउजंड प्लेटयूस के संबंध में कुछ प्रासंगिक है, यह उस भावना की अनेदेखी करती है, जिसमें औपचारिक प्रामाणिकता फोकोल्ट, डेरिडा और डेल्यूज के अपन काम में निहित है और कि डेल्यूज एवं गुआटर का बाद का कार्य सीधे ही राजनीतिक अवधारणा और मापदंडों से जुड़ा है, जो उदार संवैधानिक राज्य का निर्माण करते हैं। दूसरा शोधपत्र, एकल इतिहासः चौधरी द्वारा प्रारंभ हाईडेगर में फिनिटयूड, टेंपोरेलिटी और हिस्ट्रोरिसिटी पर था, जिसमें हाईडेगर के जीवन और काल के तर्क के लिए ऐतिहासिकता की धारणा का पता लगाया गया था। उन्होंने तर्क दिया कि फिनिटयूड और व्यक्तित्व हाइडेगर के ऐतिहासिकता और ऐतिहासिक पुनरावर्ति के विश्लेषण अविभाज्य अंग बन हुए हैं।

दूसरा सत्र रूस्तम सिंह, एकलव्य संस्थान, भोपाल के शोधपत्र के साथ शुरू हुआ, जिसका शीर्षक नॉट दिस, नॉट देट, मौरिस ब्लेन्चोट और उत्तर संरचनावाद था। उनके अनुसार, ब्लेनचोट उत्तर संरचना आंदोलन का केन्द्र बिंदु था और इसे भाषा, काम और फ्रेगमेंटरी पर पुराने दृष्टिकोण में देखा जा सकता है।

दिन के अंतिम सत्र में अछियाअंजी, जेएनयू ने शोधपत्र प्रस्तुत किया, उन्होंने मिशेल फूको के निबंध ''दिस इन नॉट ए पाइप'' पर चर्चा की, यह बेल्जियम के प्रसिद्ध कलाकार रेने मेग्रीट की प्रसिद्ध पेंटिंग की व्याख्या करता है, उनके शोधपत्र का शीर्षक दिस जी (नॉट) ए पाइप फूको का निबंध पढ़ने की पेशकश करता है, यह मेग्रीट की पेंटिंग के संदर्भ में आधुनिक कला की आलोचना करना चाहता है। उन्होंने ब्रिटिश ग्रेफ्टी कलाकार बांस्की द्वारा ''दिस इन ए पाइप'' के महत्व पर प्रकाश डाला है, जो मेग्रीट की पेंटिंग को चुनौती देती है। जे इयन–लक नैंसी का लाइव वीडियो जोइस के वर्षगांठ के बारे में है। ''सीन्स ऑफ इनर लाइफ'' फॉर द टेन्थ टूलबॉक्स गो टू वॉर?' उत्तर संरचनावाद की राजनैतिक विरासत, केस्ट ने उत्तर संरचनवावाद विचारकों की एंटीपिसक्रिप्टिव और एंटीटोटलाइजिंग रूख पर चर्चा की क्योंकि यह आज के वैश्विक फजी और राजनैतिक स्थिति के समाधान के लिए उपयुक्त है। कुछ कार्यों को आपस में संबद्ध करने के लिए उन्होंने डीरिया, डेल्यूज और गुआटरी और नाइटजेक की तीन प्रमुख धारणाओं यथा मित्रता, बनना और वाइटिलिज्म पर चर्चा की। बिश्वास का शोधपत्र फूको और डीरिया सत्य और अर्थ पर था। अर्थ संबंधी, राजनैतिक और नैतिक पुनर्मूल्यांकन न्याय, विषय, सत्य और अर्थ के विचारों पर केन्द्रित था। बिश्वास ने डीरिडीन और फूकोडियन स्थितियों की सत्य के आधार पर तुलना की, जो मुख्यताया 'तृतीय पक्ष' के रूप में व्यक्ति की विधान बेबसी में न्याय की न्यूनतम घोषणा है। उनके पत्र में ''द पर्लओइंड लैटर'' फरोम द इवेंट होरीजनः लैटर टू माई लव ऑफ ट्रेवल, को स्मरण करते हुए चटर्जी ने एडकर एलन पो की कहानी ''द पर्लओइंड लैटर'' पर पुनविर्चार करने पर जोर दिया ताकि डीरिडा और लकन के बीच की बहस को समझा जा सकें, जो कई पत्रों की सीरीज में है। वे दिखाना चाहते हैं कि कैसे ट्रेवोलॉजी के विचार के जरिये जीवन को समझने के

लिए भाषा और यात्रा करीब आ सकते हैं।

तीसरे और अंतिम दिन के पहले सत्र में तीन शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। अनुप धर, अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली ने प्रासंगिक प्रश्न उठाया ''यह उत्तर संरचनावाद का पुनर्मूल्यांकन करना है?'' उनका शोधपत्र, क्रिप्टोनॉमीः डिकंस्ट्रक्शन, साइकोएनेलिसिस, पोलिटिक्स का संबंध साइकोएनेलिसिस एंड साइकोएनेलिटक और द क्रिप्टा–एनेलिटिक से है, जिसे डीरडिया के ''जिओपसाइकोएनेलिसि' और शेष दुनिया में संबोधित किया गया है। अपने शोधपत्र, द बॉडी ऑफ नॉलेजः नोट्स ऑन द स्टिग्मा टेक्स्ट, संध्या देवेसन नांबियार, दिल्ली विश्वविद्यालय ने ''एनिमल काल्ड मैन'' की श्रेणी का अन्वेषण किया, जिसमें उन्होंने विशेष श्रेणी को समस्या के रूप में माना। उन्होंने 'द एनिमल देट दियर फॉर आई एम'' और ''द बेस्ट एंड सोविरजन'' में डीरियल के विचारों पर गहराई से चर्चा की और इनका अनुसरण किया। इस संदर्भ में, उन्होंने हाइडीगेरियन के मिटसेन के विचार और डेल्यूजियन के पशु बनने के विचार पर प्रकाश डाला। इस बीच, सौरव कारगुपत, सीएसएसएस, कोलकाता ने अपने पत्र, डिकंस्ट्रक्शन ऑफ्टर मार्क्स में डीरिडा के वैकल्पिक पठन को मुहैया कराया और सोचने के दो तरीके एक बाहरी, ने पूरक और रखे गए पाठ में भूमिका के सैद्धांतिक स्थापन को स्पर्श किया गया। मार्क्सवादी 'यूज–वैल्यु' के संबंध में उन्होंने बताया कि कैसे दोनों जेक्स डीरडा और गायत्री चक्रवर्ती–स्पाईवाक ने मार्क्सवाद को पढ़ा।

सेमिनार का दसवें सत्र में अनिर्बेन दास, सीएसएसएस, कोलकाता और सिबी के. जॉर्ज, आईआईटी मुंबई ने अपने पत्र प्रस्तुत किए। दास ने अपने पत्र द साइंस क्वेश्चन इन पोस्टस्ट्रक्चरलिज्मःऐथिक्स एंड पॉलिटिक्स ऑफ द रीयल में कारण की कटौतियों के अकाट्य तर्क और अनुभववाद में सक्रिय रीजनिंग के प्रेरक मोड के बीच बुनियादी प्रतिपक्षी का विश्लेषण किया। इसमें उन्होंने इस प्रश्न पर विचार किया गया कि विश्वास और वैज्ञानिक ज्ञान कैसे एक साथ रह सकते हैं। डीरिडीन के दृष्टिकोण से इस संबंध को पढ़ने में उन्होंने मानव होने और लेखन की संरचना की व्यापकता से इसके संबंधों और की मूल जातीयता पर चर्चा की। जॉर्ज के पत्र कंस्टीटयूटिव थ्योरी ऑफ लैंगवेज एंड द पोलिटिक्स ऑफ चेंज में भाषा विधान सिंद्धों का पता लगाया गया, जिसमें शब्द और जीवन को एक साथ लाया गया है और भाषा की प्रत्युत्तर शक्ति पर बल दिया गया है। हाईडेगर के संदर्भ में इस विचार का विश्लेषण किया गा हैं

''आत्मज्ञान और नैतिक पहचान'' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की रिपोर्ट

वीएमसीसी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बॉबे में 13–16 जनवरी, 2015 के दौरान ''आत्मज्ञान और नैतिक पहचान'' पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया । इस सम्मेलन में विभिन्न विषयों पर सार्थक चर्चा की गई जो आत्मज्ञान और नैतिक पहचान के विधान एकाउंट की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं। चर्चा ज्ञान को जानने और समझने के भिन्न तरीकों में निहित जटिलताओं और प्रामाणिक अंतर–वैयक्तिक संबंध, जो सामाजिक जीवन में मौजूद हैं, के संदर्भ में हमारी नैतिक पहचान का निर्माण करने के महत्व पर केन्द्रित थी। सम्मेलन के पहले दिन (आईसीपीआर द्वारा पूर्णत वित्तपोषित) का शुभारंभ प्रोफेसर डी. पार्थसारथी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग प्रमुख, आईआईटी, बॉम्बे के स्वागत भाषण के साथ हुआ। प्रोफेसर रंजन के पंडा, सेमिनार के संयोजक ने विषय का परिचय दिया और आत्मज्ञान पर डिबेट के महत्व के बारे में बताया। प्रो. आर. सी. प्रधान ने प्रारंभिक व्याख्यान दिया। प्रो.

प्रधान ने अपनेपन के हमारे ज्ञान की खूबियों पर प्रकाश डालने के लिए प्रामाणिक दृष्टि से आत्मज्ञान की प्रकृति का पता लगाया जो अभौतिक और नैतिकता की सीमा है और इसके साथ आत्मज्ञान पर समकालीन डिबेट के संबंध में कुछ समस्याओं पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने यह तर्क देकर कि आत्मज्ञान का विचार हमारे स्व के अभौतिक विचार द्वारा तय होता है, के जरिये आत्मज्ञान के लिए कार्तीय दृष्टि की सीमाओं को भी दर्शाया। उदघाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. अकील बिलग्रामी, भारत में जन्मे प्रख्यात दार्शनिकों में से एक ने की।

14 जनवरी, 2014

दिन के पहले तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर आर. सी. प्रधान ने की और पहले वक्ता प्रोफेसर अकील बिलग्रामी, सिडनी, मोरजेनबीसर प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, कोलंबिया विश्वविद्यालय थे, जिन्होंने ''लिब्रललिज्म एंड द कान्सेप्ट ऑफ आइडेंटी'' पर चर्चा की। उन्होंने अपने व्याख्यान को व्यावहारिक कारण में दार्शनिक मुद्दों के साथ राजनीति में पहचान की अवधारणओं से जोड़ा और फिर प्रयास किया और दर्शाया कि उनकी नैतिक मानसिकता में छिपी टेंशन को प्रकट करके पहचान राजनीति से निपटना उदारवाद के लिए कितना मुश्किल है। इसी सत्र के दूसरे वक्ता प्रोफेसर अमिताभ दासगुप्ता, हैदराबाद विश्वविद्यालय थे और उनके शोधपत्र का शीर्षक ''सेल्फ–कान्सेप्शन एंड सेल्फ–नॉलेजःए मैपिंग ऑफ द मोरल डाइमेंशन ऑफ द सेल्फ'' था। अपने शोध पत्र में उन्होंने कहा कि आत्मज्ञान पर चर्चा को परंपरागत और समकालीन दर्शन, दोनों में महत्वपूर्ण स्थान मिला है। उनके शोधपत्र में तर्क दिया गया है कि आत्मज्ञान को दो भागों में देखा जा सकता है। पहले भाग को स्व–संकल्पना कह सकते हैं, जो गुणों के समूह के रूप में स्वयं को व्यक्त करता है, जैसे स्वयं जैसा सोचना, रीजनिंग और भावना अभिव्यक्त करना। आत्मज्ञान का दूसरा भाग सूचना का विशेष टुकड़ा है जो हम स्व–संकल्पनाओं के कुछ वर्सन की पृष्ठभूमि पर अपने बारे में बनाते हैं। इस शोधपत्र में दर्शाया गया है कि आत्मज्ञान के ये दो पहलु मिलकर स्वयं के नैतिक विधान प्रकृति का निर्माण करते हैं।

इसी दिन के दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर विक्रम सिरोला, एचएसएस, आईआईटी, बॉम्बे ने की। डॉ. गीता रमन, मुंबई विश्वविद्यालय का एक शोधपत्र ''द मोरल एंड द ट्रांसपेरेंट ऑफ सेल्फ'' और रोशनी, एचएसएस आईआईटी बॉम्बे का शोधपत्र ''द नेचर ऑफ सेल्फ–नॉलेज इन कृष्णचंद्रा भट्टाचार्य'' प्रस्तुत किए गए, जिसके बाद प्रतिभागियो के साथ चर्चा की गई। दिन के लंच के बाद तीसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. परवेश जंग गोले, एचएसएस आईआईटी, बॉम्बे ने की और इसमें सजग एजेंसी और नैतिक मूल्यों पर जोर दिया गया। इस सत्र में दो शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। प्रो. सी.डी. सेब्सटियन ने चौथे सत्र की अध्यक्षता की और डॉ. पौलिना रमेश, उपासला विश्वविद्यालय, स्वीडन ने चर्चा के लिए शोधपत्र प्रस्तुत किया, जिसका शीर्षक ''सेल्फ नॉलेज एंड सेलरियलाइजेशन इन एन्साइंट प्लेटोनिस्म'' था। दिन का अंतिम सत्र प्रो. नारायण के साथ जारी रहा, जिन्होंने सत्र की अध्यक्षता की और और डॉ. निर्मला नारायण चक्रवर्ती के शोधपत्र ''सेल्फ–नॉलेजःद मोरल डाइमेंशन'' से शुरू किया इसके बाद, डॉ. विनीत शाहु, आईआईटी कानपुर के शोधपत्र ''सेल्फ टू मोरल सेल्फः द कन्टयूनम पर्सन, पर्सनल आइडेंटिटी एंड मोरल आइडेंटिटी'' पर चर्चा की गई। दिन का समापन सांस्कृतिक कार्यक्रम ''रबीन्द्र संगीत'' के साथ किया गया।

15 जनवरी, 2014

तीसरे दिन का पहला तकनीकी सत्र प्रो. करोल रोवेन, कोलंबिया, विश्वविद्यालय, न्यू यॉर्क के शोधपत्र के साथ शुरू

हुआ, इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. मंदिपा सेन, जेएनयू नई दिल्ली द्वारा की गई। अगले सत्र की अध्यक्षता प्रो. पी.आर. भट्ट द्वारा की गई। यह सत्र दो शोधपत्रों के साथ आयोजित किया गया था। पहला शोधपत्र स्मिता सिरकर, जाधवपुर विश्वविद्यालय कोलकाता ने प्रस्तुत किया, जिसका शीर्षक ''अंडरस्टैंडिंग कलेक्टिव मोरल रिस्पांसिबिलिटी थ्रू द कार्मिक वर्ल्ड'' था। दूसरा शोधपत्र पिओट्रे मकोस्की, अडम विश्वविद्यालय, पोलैंड द्वारा प्रस्तुत किय गया। उनके शोधपत्र का शीर्षक ''शेयर्ड एजेंसीः इटेंशन, रीजन्स एंड प्रोपेनसाइट्स टू एक्ट'' था। दिन के तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. राकेश चंद्रा, लखनऊ विश्वविद्यालय ने की और इसकी शुरूआत डॉ. अनुमप यादव, बीआईटीएस पिलानी के शोधपत्र के साथ हुई जिसका शीर्षक ''द क्वेस्ट फॉर द सेल्फहुड एंड द मोरल आइडेंटिटी'' था। दूसरा शोधपत्र प्रोरंजन के पंडा, एचएसएस, आईआईटी बॉम्बे का था, जिसका शीर्षक क्वेस्ट फॉर आइडेंटिटीः वॉकिंग ऑन द लेन ऑफ नोरमेटिविटी'' था। दिन के लंच के बाद के सत्र की अध्यक्षता प्रो. करोल रोवेन, कोलंबिया, विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क ने की और प्रो. के. श्रीनिवास, मानविकी स्कूल, पुदुचेरी विश्वविद्यालय ने शोधपत्र प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक ''इज सेल्फ–नॉलेज पॉशिबल'' था। दिन की सबसे रोचक और जोशपूर्ण चर्चा प्रोफेसर अकील द्वारा रचित और हार्वड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006 में प्रकाशित पुस्तक ''सेल्फ–नॉलेज एंड रिसेंटमेंट'' पर संगोष्ठी थी। इस संगोष्ठी में भाग लेने वाले चर्चाकार थेरू 1) प्रोफेसर मंदिपा सेन, जेएनयू, नई दिल्ली 2) प्रो. राकेश चंद्रा 3) डॉ. निशाद पटनायक, द न्यू स्कूल, न्यूयॉर्क सिटी 4) विनीत शाहु, आईआईटी कानपुर। अकील बिलग्रामी की पुस्तक सेल्फ–नॉलेज एंड रिसेंटमेंट न केवल आत्मज्ञान के विशेष चरित्र का गूढ़ और आदर्श लेखा–जोखा प्रस्तुत करती है बल्कि यह एक तथ्य–मूल्य विभेद, मुक्त इच्छा की समस्या और एजेंसी और वैचारिकता की प्रकृति के बारे में दिलचस्च पुस्तक है। बिलग्रामी के अनुसार आत्मज्ञान दो विशेषताओंः प्राधिकार और पारदर्शिता के नैतिक गुणों में खास है। उन्होंने तर्क दिया कि हमारी वैचारिक सिथति का आत्मज्ञान हमारे सभी ज्ञानों में विशेष है क्योंकि यह उक्त संदर्भ की मानक भावना में ज्ञानमीमांसा विचार नहीं है बल्कि विचार और एजेंसी का मूलतः प्रामाणिक प्रकृति का नतीजा है। एक एकीकृत दार्शनिक स्थिति में चार विषय या प्रश्न एक साथ लाए गए थेंः वो कौन सी चीज है जो आत्मज्ञान को ज्ञान के दूसरे रूपों से अलग करती है? नियतात्मक ब्रह्मांड में स्वतंत्रता और एजेंसी को क्या चीज बनाती है? वो कौन सी चीज है तो विषय अलघुकरणीय की वैचारिक स्थिति को इसकी भौतिक और कार्यात्मक स्थिति बनाती है? और कौन मूल्य को प्रकृति की स्थितियों के लिए अपरिवर्तनीय बनाता है ताकि प्राकृतिक विज्ञान उनका अध्ययन कर सकें? यह दावा कि आत्मज्ञान खास है और यह बाहरी दुनिया के ज्ञान से भिन्न है, एक प्रशंसनीय और आकर्षक है। पुस्तक का प्रारंभिक उद्देश्य यह दर्शाना है कि इस दावे का दार्शनिक प्रमाण उपलब्ध कराने का सर्वोतम तरीका यह है कि बिल्ग्रामी के 'एकीकरण'' की संख्या का समर्थन करना हैः एजेंसी का मूल्य के साथ और वैचारिकता का मूल्य के साथ एकीकरण। बिलग्रामी ने चार लंबे अध्यायों में इन एकीकरण के द्वारा प्राधिकार एवं पारदर्शिता के लिए 'संकल्पनात्मक आधार' के बारे में बताया, जिसके परिणामस्वरूप आत्मज्ञान का प्रामाणिक एकाउंट के रूप में सामने आता है, ये सब मिलकर वैधानिक विचारों जैसे 'औचित्य' या 'हकदारी' को रोकता है। आत्मज्ञान की व्यापक कार्तीय विटजेंस्टीनियन सिद्धांतों को अस्वीकार करने के बाद बिलग्रामी मुख्य विरोधी सिद्धांत पर आए, कारण–अवधारणात्मक मॉडल, जो कारक तंत्रों के संबंध में आत्मज्ञान का निर्माण करती है जो दूसरे दर्जे की आस्थाओं और प्रथम दर्जे की मनोवृत्ति को जोड़ता है। बिलग्रामी ने इसके खिलाफ यह तर्क दिया कि दूसरे दर्ज की आस्थाओं और प्रथम दर्जे की मनोवृत्तियों के बीच संबंध मात्र आकस्मिक नहीं हैं बल्कि वैधानिक और संकल्पनात्मक है। पुस्तक करीने से संरचित है। अध्याय 1 पारदर्शिता एवं प्राधिकार के दावे का प्रतिनिधित्व

करता है और विचार करने के लिए बिलग्रामी के कारण देता है कि आत्मज्ञान का कोई भी अवधारणात्मक या आनुमानिक एकाउंट उन्हें सही वजन नहीं दे सकता। अध्याय 2–3 पारदर्शिता के लिए 'संकल्पनात्मक आधार' प्रदान करता है। इस दृष्टि का तर्क पी. एफ. स्ट्रासन्स के प्रभावकारी शोधपत्र 'फ्रीडम एंड रिसेंटमंट' पर आधारित है। अध्याय 4–5 प्राधिकार के लिए 'संकल्पनात्मक आधार' देता है। बिलग्रामी 'कंपलीटली पॉसिव' पर विचार करता है और तर्क देता है कि कोई विचारक होना संभव नहीं हो सकता है। पूरी तरह से निष्क्रिय होने से प्रथम व्यक्ति के रीजनिंग और विमर्श की दृष्टि से कमी है। ऐसा सर्वश्रेष्ठ 'उदाहरण देना' हो सकता है और यह निष्कर्ष निकलता है कि विचार, वैचारिकता एवं आत्मज्ञान के लिए एजेंसी एक जरूरी शर्त है। बिलग्रामी ने अधिक महत्वाकांक्षी दावे के लिए तर्क दिया कि वैचारिक स्थितियां अपने आपमें अधिक प्रामाणिक दशाएं हैं। इस दृष्टि का तर्क कृपके के नियम अनुपालन और मूर के मुक्त प्रश्न पर आधारित हैं। वैचारिक स्थितियां कतिपय टिप्पणियों के लिए जरूरी हैं; इसलिए बिलग्रामी के तर्क, मानसिक स्थिति की पहचान मिजाज के साथ नहीं की जा सकती है। अध्याय 6 दो परिशिष्ट के साथ समाप्त होता है। पहला बिलीग्राम आत्मज्ञान के बीच संबंध को बताता है, जैसा कि वैधानिक दृष्टि से समझा गया है। उन्होंने अभी तक ज्ञात मामलों का बचाव किया जिनमें आत्मज्ञान विफल हो सकता है या स्व–अन्वेषण या तीसरे व्यक्ति की सूचना की आवश्यकता हो सकती है। दूसरा प्रतिबद्धताओं के रूप में बिलग्रामी की अंतर्राष्ट्रीय निरूपण के अलोक में कार्यवाही के लिए कारणों के संबंध में बाहयवादी और अंतःवादी के बीच बहस की 'रिओरिएंटेशन' का सुझाव देते हैं। कुल मिलाकर बिलग्रामी की पुस्तक आत्मज्ञान के विचार के जटिल दृष्टिकोण के साथ बुने कई रोचक तर्क पेश करती है और यह एजेंसी और वैचारिकता के लिए प्रामाणिक व प्रकृतिवादी विरोधी दृष्टि का महत्पूर्ण और सचेत दृष्टिकोण प्रदान करता है। प्रतिभागियों एवं वक्ताओं के बीच दिन के इंटरैक्टिव और चर्चा का समापन संगोष्ठी के साथ हुआ और इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम और रात्रिभोज दिया गया।

16 जनवरी, 2014

चौथे/अंतिम दिन के सत्र की अध्यक्षता प्रो. निर्मला एन चक्रवर्ती, रबीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता ने की और इस सत्र में दो शोधपत्र प्रस्तुत किए गएः प्रो के श्रीनिवास, दर्शनशास्त्र विभाग,पुदुचेरी विश्वविद्यालय का 'इज सेल्फ–नॉलेज पॉसिबल'' और डॉ. सरोज कांता कार, कार्यक्रम अधिकारी, नई दिल्ली का 'ऑन मोरल एजेंसी इन द वेदांदिक एंड बुद्धिष्ट ट्रेडिशन'। मंदिता सेन, जेएनयू, नई दिल्ली का एक जिज्ञासु शोधपत्र भी प्रस्तुत किया गया। उनके शोधपत्र का शीर्षक ''एजेंसी एंड फर्स्ट–पर्सन अथॉरिटीः रिविजिटिंग द कमिटमेंट मॉडल ऑफ सेल्फ–नॉलेज'' था। डॉ. निषाद पटनायक, द न्यू स्कूल, न्यूयॉर्क ने अगले सत्र में दो शोधपत्र प्रस्तुत किए– न्यूयॉर्क सिटी– इंटरमिनेसी एंड आइडेंटिटीःकांत एंड हसरेल ऑन मोरल कन्शियसनेस और संजीत चक्रवर्ती, जादवपुर विश्वविद्यालय–रिविजिटिंग सेल्फ नॉलेज एंड एक्सटरनिलिज्म। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. के श्रीनिवास, पुदुचेरी विश्वविद्यालय ने की। दिन के तीसरे सत्र की अध्यक्षता कोस्टिका ब्राडटेन ने की और इस सत्र में पहला शोधपत्र प्रो. भगत ओनिम, जेएनयू, नई दिल्ली ने प्रस्तुत किया। इस शोधपत्र का शीर्षक ''प्रोब्लमटाइजिंग सेल्फ–आइडेंटिटी क्लेम'' था, इसे प्रस्तुत करने के बाद चर्चा आरंभ की गई। इस सत्र में दूसरा शोधपत्र टेडयूज सीसरस्की, इंस्टीटयूट ऑफ फिलोसफी, यूनिवर्सिटी ऑफ वारसो, पोलैंड प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक ''एट्टीटयूड एंड नोरमेटिविटी'' था। डॉ. कोस्टिका ब्राडटेन, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, टेक्सास टेक विश्वविद्यालय, यूएसए ने चौथे दिन के लंच के बाद के चौथे सत्र में अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया, उनके शोधपत्र का शीर्षक ''सेल्फ–नॉलेज एंड फेल्योर'' था। इस

सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर भगत ओनिम, जेएनयू, नई दिल्ली ने की। ब्राडटेन का पीस इस सत्र का केवल शोधपत्र है। दिन के शेष दो तकनीकी सत्रों में चार शोधपत्र प्रस्तुत किए गए मगर दुर्भाग्य से एक प्रस्तुतकर्ता डॉ. दीपा मिश्रा, सीएचएम कॉलेज अनुपस्थित थी। अन्य तीन शोधपत्र प्रस्तुत किए गए; प्रस्तुति के बाद चर्चा की गई।

''सेल्फ नॉलेज एंड मोरल आइडेंटिटी'' पर आयोजित इस सम्मेलन का समापन प्रतिभागियों के प्रत्युत्तरों और प्रो. डी पार्थसारथी, प्रभारी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, आईआईटी, बॉम्बे के धन्यवाद प्रस्ताव और प्रो. पी. आर. भट्ट, एचएसएस, आईआईटी बॉम्बे की समापन टिप्पणी के साथ हुआ। सम्मेलन की कार्यावाही को तैयार करने का निर्णय लिया गया। हाई टी के साथ सम्मेलन समाप्त हुआ।

आदिवासी स्वायत्तता की समीक्षा : स्व, घर और पर्यावास विषय की सगोष्ठी पर रिपोर्ट

यह सेमिनार 19–21 फरवरी, 2015 के बीच हैदराबाद विश्वविद्यालय के कैंपस में आयोजित किया गया था। इसमें हमें प्रतिभागियों से जबर्दस्त प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। मगर हमनें उदघाटन सत्र और पैनल चर्चा के अलावा कुल 18 शोधपत्रों को प्रस्तुत करने की अनुमति दी। उदघाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. अकोला पराशर सेन, अध्यक्ष, सामजिक विज्ञान स्कूल, हैदारबाद विश्वविद्यालय ने की। डॉ. अल्पा शाह, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक ने प्रमुख भाषण दिया, जिसमें उन्होंने वैश्वीकृत दुनिया में आदिवासी स्वायत्तता के महत्व को रेखांकित और ध्वनित किया गया। देश के सभी हिस्सों से शोधपत्र आमंत्रित करने में पूरी सावधानी बरती गई थी। इसमें झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार, पूर्वोत्तर भारत, तमिलनाडु, केरल और आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना से शोधपत्र प्राप्त किए गए। इस सत्र का फोकस पांचवी अनुसूची के क्षेत्रों पर था।

इसमें प्रस्तुत प्रत्येक शोधपत्र पर गहन चर्चा की गई। प्रमुख संबोधन इस सेमिनार का मुख्य आकर्षण था और इसे प्रो. अर्चना प्रसाद और डॉ. बोधी ने आगे बढ़ाया। डॉ. बोधी ने भारत के आदिवासियों पर मौजूदा लेखन में इंथोसेट्रिज्म के रूझानों पर प्रकाश डाला। डॉ. राजू नायक ने तेलंगाना के आदिवासियों के मौखिक इतिहास में व्यक्त स्वायत्ता के बारे में बताया। डॉ. जगन्नाथ और विन्सेंट इक्का ने पहचान राजनीति और आदिवासी के प्रश्न पर प्रकाश डाला। प्रो. रेखा पांडे और डॉ. श्रीनिवास ने हमारी आधुनिक शिक्षा में आदिवासी स्वायत्तता के प्रश्न की अनुपस्थिति पर बात की। डॉ. शशांक केला और श्री सुजीत कुमार ने बताया कि कैसे आधुनिक प्रशासनिक प्रणाली परंपरागत आदिवासी राजनैतिक संस्थानों को और प्रणाली को छिन्न–भिन्न कर रही है। प्रो. देवनाथन और डॉ. शमराव ने भारत में वैश्वीकरण की प्रक्रिया और आदिवासियों के घरों और बस्तियों पर इसके प्रभाव पर प्रश्नचिन्ह लगाया। डॉ. सी. लक्ष्मण और डॉ. रामदास ने बताया कि कैसे आदिवासी को विकास प्रक्रिया से अलग रखा जा रहा है। डॉ. संयुक्ता दास गुप्ता ने औपनिविशक छोटा नागपुर में दिकु और आदिवासियों के बीच के संबंध के बारे में बताया और बताया कि यह कैसे आदिवासी और गैर–आदिवासी संबंधों को प्रदर्शित करना जारी रखे हुए हैं जबकि डॉ. वी.जे. वर्गीस ने दर्शाया कि कैसे प्रवास की प्रक्रिया केरल में आदिवासी स्वायत्ता को कमजोर कर रही है। डॉ. उमा महेश्वरी ने आध्र प्रदेश के पोलावरम क्षेत्र में आदिवासियों के विस्थापन की पड़ताल की। डॉ. बिपिन जोजो ने झारखंड में खनन और आदिवासियों के विस्थापन पर चर्चा की।

ख. संस्थानों और व्यक्तियों द्वारा आयोजित कार्यशालाओं के लिए आईसीपीआर अनुदान राशि

क्र. सं.	आयोजक का नाम	कार्यशाला का शीर्षक	स्वीकृतिधीन बजट
1	प्रोफेसर पी.जे. महंत, तेजपुर विश्वविद्यालय, नप्पम, तेजपुर 784028, असम	**समुदाय, संस्कृति, राजनीति और लोकतंत्र पर कार्यशाला,**	5,00,000
2	प्रोफेसर अनिल कुमार तिवारी, दर्शनशास्त्र एवं संस्कृति स्कूल, एसएमवीडी विश्वविद्यालय, जम्मू एवं कश्मीर	**शंकर अद्वैत दर्शन पर मौलिक कार्यशाला**	5,00,000
3	प्रोफेसर रमेश सी. भारद्वाज, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय	**मीमांसाःभाषा का दर्शनशास्त्र (भारतीय दर्शन के अन्य स्कूलों के संदर्भ में) पर दस दिवसीय कार्यशाला**	2,00,000

समकरा अद्वैत वेदांत पर प्रायोजित मौलिक कार्यशाला पर आईसीपीआर, नई दिल्ली की रिपोर्ट (16 से 31 मार्च, 2015)

दर्शनशास्त्र एवं संस्कृति स्कूल, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटरा ने 16 से 31 मार्च, 2015 तक 'उंकारा अद्वैत वेदांत पर मौलिक कार्यशाला'' का आयोजन किया। इस कार्यशाला को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने प्रयोजित किया था। उदघाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. वी. वर्मा, तत्कालीन कार्यवाहक उपकुलपति, एसएमवीडयू थे और निदेशक और कार्यशाला के संसाधन व्यक्ति प्रो. वी.एन. झा सम्मानित अतिथि थे। प्रो. वी.के. भट्ट, अध्यक्ष, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, एसएमवीडीयू ने उदघाटन सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. वरूण के. त्रिपाठी (निदेशक, एसओपीसी) ने मेहमानों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. अनिल के. तिवारी (कार्यशाला के संयोजक) ने कार्यशाला के कॉन्सेप्ट नोट के बारे में बताया। अपने संबोधन में डॉ. तिवारी ने माध्यमिक स्रोतों और उधार की भाषा के आधार पर संस्कृत और इसकी आधुनिक समझ में भारतीय दार्शनिक ग्रंथों में वर्णित प्राचीन ज्ञान के बीच की चौड़ी खाई को भरने की जरूरत पर बल दिया। संसाधन व्यक्ति प्रो. झा ने भारत की आधुनिक शिक्षा में भारतीय बौद्धिक परंपरा के प्रमाणित और विश्वसनीय ज्ञान की उपेक्षा पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा इस मूल स्रोत, मुख्यतया संस्कृत भाषा में इस ज्ञान को सीखने का कोई विकल्प नहीं है। प्रो. भट्ट ने

अपने भाषण में बताया कि संस्कृत भाषा की समृद्धता किसी भी अन्य भाषा से अधिक है। मुख्य अतिथि प्रो. वर्मा ने स्वेदशी भाषाओं विशेषकर संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डाला। अपने विदग्ध टिप्पणी में उन्होंने कहा कि भारत के परंपरागत बुद्धिमत्ता का अपना ज्ञान संस्कृति की कमी के कारण बोलने वाले पेड़ के लेख पर आधारित है। उन्होंने यह भी बताया कि कोई भी संस्कृति तब तक फल–फूल नहीं सकती, जब तक कि इसके पास अपनी जबान और भाषा न हों। शोध विद्वानों और दर्शनशास्त्र एवं संस्कृत के संकाय सदस्यों और कुछ सामान्य रूचि वाले व्यक्तियों सहित कुल 52 व्यक्तियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। यह अलग बात है कि कुल 92 आवेदकों में से केवल 50 प्रतिभागियों को इसमें भाग लेने का अवसर मिल सका।

संस्कृत ग्रंथ का नाम धर्मराज अधवरिन्द्र का वेदांतपरिभाना (सी 17वीं शताब्दी एडी) था, जिसे प्रो. झा ने कार्यशाला के लिए चुना था। यह ग्रंथ जो ओंकार अद्वैत वेदोंन विवरर्ना स्कूल से संबंधित है, अद्वैत दर्शन का एक परिचय है। इसे नव्य–न्याय की संक्षिप्त भाषा में लिखा गया है जो संस्कृत भाषा में सटीक संचार के लिए लगभग 10वीं शताब्दी में विकसित की गई थी। अद्वैत परंपरा और नव्य–न्याय भाषा का जरूरी परिचय देने के बाद प्रो. झा ने ग्रंथ को पढने के लिए मार्गदर्शन दिया। वे ग्रंथ के पहले खंड के भाषाई और दार्शनिक बारीकियों के विस्तार में चले गए जो 'धारणा' है। चर्चा का केन्द्र बिंदु था अनुभूति को अवधारणात्क अनुभूति के रूप में कैसे वर्गीकृत किया जाता है। अद्वैत दर्शन के अनुसार, आध्यात्मिक और ज्ञानमीमांसा दशाएं क्या है, जो अवधारणात्मक अनुभूति के कारण हैं? चूंकि यह ग्रंथ संवदात्मक शैली में लिखा गया है, यह भारतीय शैक्षिक परंपरा की समृद्ध शैली है। न्याय और अद्वैत दर्शन के बीच संवाद की दृष्टि से चर्चा को आगे बढ़ाया गया। इस चर्चा को और रोचक बनाने के लिए प्रतिभागियों को उधमपुर के निकट क्रिमची मंदिर की सांस्कृतिक यात्रा पर ले जाया गया। इस टूर के गाइड प्रख्यात हिंदी और डोगरी लेखक प्रो. शिव निर्मोही, पंथाल गांव, निकट एसएमवीडीयू थे। माना जाता है कि ये मंदिर उसी काल में स्थापित किए गए थे जब अद्वैत दर्शन ओंकाराचार्य के प्रतिपादक जीवित थे (अर्थात् 7वीं या 8वी शताब्दी एडी)। यह कार्यशाला 31 मार्च, 2015 को समाप्त हुई और माननीय उपकुलपति, एसएमवीडीयू प्रो. सुधीर कुमार जैन समापन सत्र में मौजूद थे। कार्यशाला के संयोजक अनिल तिवारी ने कार्यक्रम की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। उपकुलपति ने संसाधन व्यक्ति प्रो. वी.एन. झा को सम्मानित किया और संस्कृत भाषा एवं दर्शन के शिक्षण के लिए उनके प्रयासों की सराहना की। प्रतिभागियों को भागीदारी प्रमाणपत्र दिए गए और मेरिट की सराहना की गई। स्कूल के निदेशक वरूण त्रिपाठी ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

भाषा की मीमांसा दर्शन पर राष्ट्रीय कार्यशाला पर रिपोर्ट

(जैसा कि व्याकरण, न्याय, काव्यशास्त्र और बौद्ध दर्शन की परंपरा में दिखाया गया है)
आईसीपीआर, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित

कमरा नंबर 11, प्रथम तल, सामाजिक विज्ञान एक्सटेंशन भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय में 09.02.2015 से 19.02.2015 तक भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, भारत सरकार, नई दिल्ली के सहयोग से संस्कृत विभाग द्वारा भाषा की मीमांसा दर्शन पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्देश्य भाषा की संरचना को समझना था। भाषा की संरचना को समझकर कोई भी व्यक्ति हकीकत की संरचना को समझ सकता है। भाषा का दर्शन अर्थ की समकालीन दार्शनिक सिद्धांतों पर व्यापक बहस करता है। अर्थ के सिद्धांत को समझने के लिए व्यक्ति को उनके अंगों की वाक्यात्मक संरचना और प्रतिनिधित्ववादी अवधारणाओं के आधार पर वाक्यों की सत्य शर्तों को

विनिर्दिष्ट करने के लिए एक रूपरेखा की आवश्यकता होती है। इस रूपरेखा को ध्यान में रखकर 'शब्दार्थ–उपयोगितावाद' दृष्टि की परख की गई है जो सघन समकालीन निरीक्षण का फोकस है।

कार्यशाला का उदघाटन सत्र 9.02.2015 को आयोजित किया गया था। प्रो. वी.एन. झा, पूर्व निदेशक, संस्कृत अध्ययन केन्द्र, पूना विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र इसके मुख्य अतिथि थे और प्रो. सूर्य कांत बाली, राष्ट्रीय प्रोफेसर, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने इसकी अध्यक्षता की। कार्यशाला के निदेशक, प्रो. रमेश चंद्र भारद्वाज, प्रमुख, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ने अध्यक्ष और उदघाटन सत्र के मुख्य अतिथि का स्वागत किया। प्रोफेसर भारद्वाज ने अपने स्वागत भाषण में कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया। प्रो. वी.एन. झा ने अपने उदघाटन भाषण में ग्रंथ न्याय–मंजरी (उब्धखंड) की प्रासंगिकता के बारे में जानकारी बढ़ाने पर बल दिया। यह सत्र काफी शिक्षाप्रद था क्योंकि इसमें प्रतिभागियों को ग्रंथ से अवगत कराया गया। इसने हमारी जानकारी बढ़ाने और सिद्धांत का अध्ययन करने के लिए प्रेरित करने में मदद की। प्रो. सूर्य कांत बाली ने संस्कृत भाषा के महत्व और इसका प्रसार करने के बारे में अध्यक्षीय टिप्पणी की।

दिल्ली विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के 110 पंजीकृत प्रतिभागियों में से 103 प्रतिभागी (शिक्षक एवं शोध छात्र) ने राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया और इसे सफलतापूर्वक पूरा किया।

कार्यशाला के पहले सत्र में प्रो. वी. एन. झा ने ग्रंथ न्याय–मंजरी (उब्धखंड) के संदर्भ में भारतीय दार्शनिक ग्रंथों की प्रासंगिकता के बारे में बताया। उनकी सारगर्भित चर्चा के बाद, प्रतिभागियों ने सवाल पूछे और सम्मानित विद्वान झा ने इनके जवाब दिए।

कार्यशाला के दूसरे दिन (10.02.2015) प्रो. एच.एस. प्रसार, दर्शनशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपोहा सिद्धांत पढ़ाया। अपोहा सिद्धांत सार्वभौमिक की समस्या, अनेकों पर एक की समस्या का दृष्टिकोण है। एक को स्पष्ट करने की समस्या कैसे संभव है, जब हम एक बर्तन को देखते हैं तो इसे बर्तन की तरह सोचते हैं और इसे 'बर्तन' नाम से पुकारते हैं, एक नाम जो कई दूसरे विशेष बर्तनों पर लागू होता है। एक चीज क्या है, एक बर्तन के नाते, यह विशेष कई विशेषों के साथ साझा होता है? क्या दुनिया में वास्तव में ऐसी चीजें हैं? एकल बर्तनों के अलावा, या यह किसी प्रकार को मानसिक रचना है? पहले विकल्प को अपनाना सार्वभौमिक से ऊपर यथार्थवादी होना होगा, दूसरे को अपनाना, नामवादी होना होगा। अपोहा सिद्धांत नामवादी होने के लिए एक विशिष्ट बौद्ध दृष्टिकोण है।

दूसरे दिन का दोपहर के बाद का सत्र न्याय–मंजरी ग्रंथ को पढ़ने के साथ शुरू हुआ और इसे सुगम बनाया प्रो. झा ने। यह ग्रंथ ईमानदारी से नायिका की परिकल्पना को स्थापित करने का प्रयास करता है कि उब्ध ज्ञान का विशिष्ट स्रोत है। भरोसेमंद व्यक्ति के वाक्यों से प्राप्त ज्ञान सत्य है। हालांकि यह अप्रत्यक्ष है मगर यह अनुमानिक नहीं है। उन्होंने उस विचार का खंडन किया कि मौखिक ज्ञान एक अनुमान है। यह अवधारणा पढ़ाई गई, जिसे शब्दार्थ संरचना और व्यक्ति के जीवन में इसके प्रयोग को और स्पष्ट किया गया।

कार्यशाला के तीसरे दिन (11.02.2015), प्रो. पियूष कांत दीक्षित ने शब्दशक्ति प्रकाशिका को पढ़ाया । तीसरे दिन के लंच के बाद के सत्र में प्रो. वी.एन. झा ने न्याय–मंजरी को 14.00 बजे शुरू किया। उन्होंने ग्रंथ को आगे बढ़ाया। उन्होंने बौद्धों की उस आपत्ति को दूर किया जो मानते हैं कि मौखिक ज्ञान सत्य नहीं है। नायिका की थीसिस को

सिद्ध करने के लिए कि वेद स्पष्ट नहीं हैं, उन्होंने बुनियादी समस्या को उठाया अर्थात् ज्ञान का सत्य स्पष्ट है या नहीं।

उन्होंने समस्या के दूसरे पहलु अर्थात् कारक, जो ज्ञान का अंग है, इसकी सच्चाई के लिए जिम्मेदार हैं या नहीं, पर भी चर्चा की। सभी विरोधी विचारों पर चर्चा करने बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ज्ञान के अंग का सत्य स्पष्ट नहीं है। सत्य ज्ञान के अंग को प्रकट करने के लिए ज्ञान के अंग के पहचाने गए कारकों के अलावा एक कारक अपेक्षित है।

12.02.2015 को न्याय–मंजरी ग्रंथ का अंतिम सत्र हुआ जो सुबह 10.00 शुरू हुआ। ग्रंथ के पठन के साथ सारगर्भित सिद्धांतों पर बात की गई जो भाषा के विकास, व्यक्ति के विचार और अर्थ को बेहतर जीवन के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। दोपहर बाद के सत्र में डॉ. राम सलाही द्विवेदी ने परमएलघुमंजुआ (मीमांसा–पूर्वखंड) एक्ति–निरूपम पर चर्चा की और इसे पढ़ाया।

13.2.2015 को प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी और प्रो. एस द्विवेदी का प्रो. रमेश सी. भारद्वाज, विभागाध्यक्ष ने स्वागत किया। दिन का आरंभ ग्रंथ काव्यप्रकुआ (पनकामा उल्लास) के साथ हुआ। सत्र का नेतृत्व अनुभवी शिक्षकों ने किया, उन्होंने शिक्षण में मदद की और अतिरिक्त व्यावहारिक ज्ञान और सलाह प्रदान की। लंच के बाद के सत्र में, प्रोफेसर एस.के. शर्मा, पूर्व प्रोफेसर और प्रमुख, जे,एन. व्यास, जोधपुर विश्वविद्यालय के साथ ग्रंथ धतवर्थाविचार को लिया गया। ग्रंथ के संक्षिप्त परिचय के साथ विभागाध्यक्ष ने उनका स्वागत किया और फिर हमने पठन कार्य शुरू किया।

कार्यशाला के छठे दिन (14.02.2015), प्रो. एस.के. शर्मा ने धतवर्थाविचार पढ़ाया गया और इसके बाद परस्पर संवाद सत्र शुरू हुआ। प्रतिभागियों ने ग्रंथ से संबंध में प्रश्न पूछें और संसाधन व्यक्ति ने इनके जवाब दिए।

लंच के बाद का सत्र 14.00 बजे प्रो रीवा प्रसाद द्विवेदी और प्रो. एस. द्विवेदी के साथ शुरू हुआ। उन्होंने ग्रंथ काव्यप्रकाश पढ़ाया। पढ़ाने और पढ़ने का माहौल काफी रोचक और मजेदार था।

कार्यशाला के सातवें दिन 15.02.2015 को खुशनुमा रविवार था और इसकी शुरूआत प्रो. एस.के. शर्मा के साथ धतवर्थाविचार की नवीन पढ़ाई के साथ हुई।

13.00 बजे सभी ने लंच का आनंद लिया और प्रो. आर.पी. द्विवेदी और प्रो. एस. द्विवेदी के साथ काव्यप्रकाश (पनकमाउल्लाह) के लिए तैयार हो गए।

16.02.2015 को नए दिन की शुरूआत सुबह 10.00 बजे चाय के साथ हुई और इसमें कई सूचनाप्रद सत्र थे। प्रो. देवदत्त गोविंद पाटिल, पूना, महाराष्ट्र ने मीमांसा ग्रंथ खंडवा–ग्रंथसार (भट्टानया शब्दबोधप्रकाश) पढ़ाया। दोपहर के बाद के सत्र में प्रो. आर.के भट्ट, पूर्व प्रोफेसर और प्रमुख, वेदांत विभाग, शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालाडी केरल ने वेदांत–परिभुआ (अगमपरिच्छेद) पढ़ाया।

17.2.2015 को डॉ. देवदत्त गोविंद पाटिल ने मीमांसा ग्रंथ खंडदेवग्रंथसार और प्रो. आर. के. भट्ट ने वेदांत–परिभुआ (अगमपरिच्छेद) पढ़ाया।

कार्यशाला के दसवें दिन डॉ. देवदत्त गोविंद पाटिल ने मीमांसा ग्रंथ खंडदेवग्रंथसार और प्रो. आर. के. भट्ट ने

वेदांत–परिभुआ (अगमपरिच्छेद) पढ़ाया।

ग. भारतीय दार्शनिक अनुसंधान शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ में आईसीपीआर द्वारा आयोजित सेमिनार।

क्र.सं.	आयोजक का नाम	कार्यशाला का शीर्षक	स्वीकृतिधीन बजट
1	आईसीपीआर, शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ	**सिद्धांत और अभ्यासः टूटे दर्पण में दलित पर** दो दिवसीय सेमिनार	5,00,000 रु.
2	आईसीपीआर, शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ	**मानव मूल्यः विभाजन और गतिविज्ञान पर दया कृष्ण** पर सेमिनार	5,00,000 रु.
3	प्रो. राकेश चन्द्रा, संयोजक, लखनऊ	**11.11.14** को **शिक्षा दिवस**	35000 रु.
4	प्रो. राकेश चन्द्रा, संयोजक, लखनऊ	**युवा शोध छात्र निबंध प्रतियोगिता**	जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है
5	भारतीय राष्ट्रीय विज्ञाान अकादमी परिसर, नई दिल्ली में प्रो. बेनेडिक्ट लोवे और प्रो. मिहिर कुमार चक्रवर्ती, सह–संयोजक	**गणित की संस्कृति पर चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन**	22 से 25 मार्च, 2015

क्रम संख्या 1–4 की विस्तृत रिपोर्ट ऊपर खंड IV में उपलब्ध है।

गणित की संस्कृति पर चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, नई दिल्ली
प्रोफेसर मिहिर कुमार चक्रवर्ती की रिपोर्ट

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् ने भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी परिसर, नई दिल्ली में 22 से 25 मार्च के दौरान गणित की संस्कृति पर चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। पिछला और तीसरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन गुआंगजौ, चीन में 9 से 12 नवंबर, 2012 में आयोजित किया गया था। इसमें दो भारतीय वक्ताओंः प्रो. अमिता चटर्जी, दर्शनशास्त्र के प्रख्यात प्रोफेसर और मुझे आमंत्रित किय गया था। इसमें मैंने चौथा सम्मेलन भारत में आयोजित करने का अनंतिम प्रस्ताव रखा था। तत्पश्चात, आरपीसी बैठकों में एक बैठक में मैंने ऐसा एक सम्मेलन आईसीपीआर के प्रयोजन के तहत कराने का प्रस्ताव किया था, जिसे स्वीकार कर लिया गया। प्रो. निर्मला नारायण चक्रवर्ती उस समय सदस्य सचिव थी। एक ओर प्रो. बेनेडिक्ट लोवे और प्रो. मृणाल मिरी के नेतृत्व में आईसीपीआर और दूसरी ओर से सदस्य सचिव डॉ. मनेन्द्र प्रताप सिंह मौजूद थे, इन्होंने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए

शुरूआत की और यह वास्तव में काफी सफल भी रहा।

कुल 23 वक्ताओं में से 5 वक्ता भारतीय संस्थानों के भारतीय थे। एक वक्ता प्रवासी भारतीय थे। आस्ट्रिया, फ्रांस, जर्मनी, जापान इंग्लैंड, यूएसए, अर्जेंटाइना, बेल्जिम और स्कॉटलैंड जैसे देशें के विदेशी शोध छात्रों का इसमें स्वागत किया गया। इसमें भारतीय संस्थानों के कुछ आमंत्रित प्रतिभागी भी थे। इसमें दर्शकों की संख्या बहुत अधिक नहीं थी क्योंकि इसका उद्देश्य भीड़ को आकर्षित करना नहीं था बल्कि गणित, दर्शनशास्त्र और संस्कृति को ओवरलैप करने वाले नए विकसित हो रहे क्षेत्रों में रूचि पैदा करना था। इस कार्यक्रम के विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला पर चर्चा की गई। प्रत्येक चर्चा के बाद एक गंभीर इंटरैक्शन हुआ। उदाहरण के लिए जापान के केंजी के अत्यंत रोचक व्याख्यान के बाद अल्बर्च्ट, हीफर, रामासुब्रामण्यम, अमिल सिमनोव, बेनेडिक्ट लोवे, आर सी दास, मेडिलाइन और मिहिर चक्रवर्ती द्वारा प्रश्न पूछे गए। सुनीता भट्ट की प्रस्तुति एक अलग ही किस्म की थी। उन्होंने दक्षिण भारत के कोलम नामक स्थानीय कला पर बात की और उनके अभ्यास में यथार्थ गणित प्रस्तुत हुआ है। विषयवस्तु को और प्रभावशाली बनाने और जीवंतता प्रदान करने के लिए प्रस्तुति में वीडियो का प्रयोग किया गया था – प्रस्तुति का यह रूप एक अनिवार्यता था न कि आकर्षण के लिए शो । बहरहाल, अधिकांश चर्चाए काफी आकर्षक थी।

उदघाटन सत्र में प्रो. मृणाल मिरी ने गणित और दर्शन की परस्पर क्रिया पर बात की। प्रो. बेनेडिक्ट लेवे ने सम्मेलन के विचार, इतिहास और संगठन के बारे में बताया। अन्य वक्ताओं में श्री वैभव अग्रवाल, हर्मन हाउस, नई दिल्ली और मिहिर कुमार चक्रवर्ती शामिल थे।

इसके समापन सत्र में यह प्रस्ताव रखा गया कि अगली बैठक ब्यूनस आर्यस, अर्जेंटीना में आयोजित की जाए। सदस्य सचिव, डॉ. सिंह ने सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी लोगों का आभार प्रकट किया। सभी प्रतिभागियों ने आईसीपीआर संगठन और इसकी मेजबानी की जमकर तारीफ की।

इसमें एक मामूली सी कमी थी, जिसका यहां पर उल्लेख करना जरूरी है, वो यह थी कि अधिक प्रतिभागियों को आमंत्रित किया जा सकता था। अपनी किस्म का पहला कार्यक्रम होने के कारण यह अधिक लोगों को आकर्षित कर सकता था जो कि वास्तव में इस थीम में रूचि रखते थे, अगर इस सम्मेलन का व्यापक प्रचार किया जाता तो यह संभव हो सकता था।

घ. आईसीपीआर ने भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ में निम्नलिखित के निर्देशन में कार्यशालाओं का आयोजन किया।

क्र. सं.	निम्नलिखित के निर्देशन में	कार्यशाला का शीर्षक	स्वीकृतिधीन बजट
1	प्रो. पी. जे. महंत, तेजपुर विश्वविद्यालय, नप्पम, तेजपुर –784 028, असम	**मन का दर्शनशास्त्र** पर 10 दिवसीय कार्यशाला	5,00,000 रु.
2	प्रो. आर.सी प्रधान	**विश्लेषणात्मक दर्शन** के संस्थापकों पर 10 दिवसीय कार्यशाला	5,00,000 रु.

3	प्रो. प्रियदर्शनी जेटली	**दर्शनशास्त्र की रसेल की समस्याओं** पर 10 दिवसीय कार्यशाला	5,00,000 रु.
4	प्रो. बिजॉय मुखर्जी	**गणित के दर्शनशास्त्र पर 10 दिवसीय कार्यशाला (दार्शनिकों और समाज विज्ञानियों के लिए क्वांटम मैकेनिक्स)**	5,00,000 रु.
5	प्रो. वी.एन. झा	**तर्कसंघर्ष पर 13 दिवसीय कार्यशाला**	6,00,000 रु.

क्रम संख्या 1–5 की विस्तृत रिपोर्ट ऊपर खंड IV में उपलब्ध है।

क. लेखक से भेंट कार्यक्रम

क्र.सं.	**लेखक का नाम**	**लेखक का ग्रंथ**
1	कंचन महादेवन	बिटवीन फेमिनिटी एंड फेमिनिज्म, आईसीपीआर एंड डी.के प्रिंटवर्ल्ड, 2013.
2	निर्मलांगशु मुखर्जी	द प्राइमेसी ऑफ ग्रामर, एमआईटी पब्लीकेशन्स, 2010 (पीएचआई लर्निंग प्रा. लि. इंडियाए 2011)

क. लेखक से भेंट – प्रो. कंचन महादेवन पर रिपोर्ट

25 मार्च, 2015 को सेमिनार हॉल, आईआईसी, नई दिल्ली में 14.00 बजे एक आईसीपीआर लेखक से भेंट कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कंचन महादेवन की पुस्तक ''बिटवीन फेमिनज्म फेमिनिटी'' प्रस्तुत की गई थी और इस पर चर्चा की गई थी। इस कार्यक्रम की शुरूआत प्रो. महादेवन द्वारा पुस्तक के परिचय पर एक परिचर्चा के साथ हुई। उन्होंने उन विभिन्न विषयों पर चर्चा की, जो उन्होंने इस पुस्तक में शामिल किए हैं। उदाहरण के लिए उन्होंने महिलाओं के अधिकार के साथ–साथ पुनर्विवाह के समान अधिकार के मुद्दे, संरक्षणवाद और विश्वास पर बात की। इसमें समाज सुधारकों और दार्शनिकों जैसे सुसान, राव्ल्स पर टिप्पणी की गई है, जिन्होंने आजादी, देखभाल, सामाजिक न्याय और समाज के पुनर्गठन पर बात की है। अन्य दार्शनिक जैसे सिमोन डी बेयोवोइस, मार्था नोसबोम पर भी चर्चा की गई। उन्होंने ताराबाई सिंधे, जानाबाई और पंडित रमाबाई पर बात की और विषय पर अधारित उनके विचारों के बारे में बताया, जो उन्होंने अपनी किताब में शामिल किए हैं। उनकी पुस्तक पर मुख्य चर्चा प्रो. लता छतरे और प्रो. वैजयंती बेलसरे, पूना ने की। उन्होंने बौद्ध दृष्टि से देखभाल की अवधारणा और नारी नैतिकता के बारे में बताया। इसमें दिल्ली विश्वविद्यालय, जेएनयू और कोलकाता के कई अन्य प्रतिभागियों ने भी हिस्सा लिया और चर्चा बेहद रोचक थी।

लेखक और चर्चाकारों की चर्चा के बाद प्रतिभागियों ने विभिन्न मुद्दों पर लेखक से प्रश्न पूछें। इस प्रकार कार्यक्रम

बेहद बढ़िया रहा और सभी प्रतिभागी इससे पूरी तरह से संतुष्ट थे। इस कार्यक्रम का समापन डॉ. मनेन्द्र प्रताप सिंह, सदस्य सचिव, परिषद् के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ और इसके बाद हाई टी दी गई।

व्याकरण की प्रधानता पर निर्मलांग्शु मुखर्जी की पुस्तक पर लेखक से भेंट कार्यक्रम पर रिपोर्ट

लेखक से भेंट कार्यक्रम 24 अगस्त, 2015 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित मृणाल मिरी की पुस्तक ''फिलॉसफी एंड एजुकेशन'' पर चर्चा की गई। कार्यक्रम कर शुभारंभ डॉ. मनेन्द्र प्रताप सिंह, सदस्च सचिव, परिषद् के स्वागत भाषण से हुआ। प्रो. एस.पी. गौतम ने सत्र की अध्यक्षता की।

इसमें कुल 30 शोध छात्र उपस्थित थे। प्रो. मिरी ने अपनी पुस्तक का परिचय दिया और बताया कि यह पुस्तक दर्शन एवं शिक्षा पर आलेख नहीं है बल्कि एक ऐसी कृति है जिसमें लेखक ने कुछ हताष विषयों पर से पर्दा उठाने का प्रयास किया है। ''शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है'', ''मूल्य क्या हैं और शिक्षा के मूल्य क्या हैं'', ''स्वयं के विकास का लक्ष्य'', ''शिक्षा का विकास'', ''शिक्षक–छात्र संबंध'' ''स्वयं के विकास के लिए संगीत एक साधन के रूप में'', जैसे मुद्दे महत्वपूर्ण थे। संगीत भावों को पैदा करता है और यह विलक्षता को व्यक्त करने में समर्थ है। ''उच्च शिक्षा – शिक्षा संस्थान में स्वायत्ता क्या है'', उच्च शिक्षा प्रणाली में मानविकी का स्थान'', ''कौशल विकास के रूप में प्रौद्योगिकी'' आदि भी चर्चा के मुख्य बिंदु थे।

डॉ. राज अय्यर, प्रोफेसर राकेश चद्रा, प्रो. मोहिनी मुल्लिक और प्रो. गुरूचरण दास ने पुस्तक पर बेहद रोचक प्रतिक्रिया और समीक्षा प्रस्तुत की। इसके अलावा, दर्शकों जैसे डॉ. शशि मेतिलाल, डॉ. मालाबिका मजूमदार, डॉ. रंजन घोष, डॉ. अग्रवाल जैसे दर्शकों द्वारा उठाए गए प्रश्नों पर चर्चा की गई। उठाए गए सभी प्रश्नों पर लेखक प्रो. मिरी ने अच्छे ढंग से जवाब दिए।

यह पूरा कार्यक्रम विचारप्रेरक था और यह न केवल दार्शनिक शोध छात्रों लिए बल्कि शिक्षाविदों और समाज विज्ञानियों के लिए भी फायदेमंद था।

IX
दर्शनशास्त्र के शिक्षकों का सम्मेलन

दर्शनशास्त्र शिक्षक सम्मेलन परिषद् का एक आदर्श कार्यक्रम है। यह दर्शनशास्त्र पढ़ाने में प्रणाली संबंधी और शैक्षणिक मुद्दों पर केन्द्रित था। ये उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने कि दार्शनिक मुद्दे और दर्शनशास्त्र पढ़ाने में सहायता के लिए समय–समय पर इनका समाधान किया जाना चाहिए। इसके दृष्टिगत परिषद् देश के अलग–अलग हिस्सों में शिक्षक बैठक आयोजित करता है। इस साल परिषद् ने दर्शनशास्त्र शिक्षक सम्मेलन निम्नलिखित विश्वविद्यालयों में आयोजित करने का संकल्प लिया हैः

1. आचार्य नागर्जुन विश्वविद्यालीय, नागार्जुन नगर

2. श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, उप–डाकघर, कटरा,
3. मथुरा कॉलेज, मदुरै
4. ए. एन. सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना

उपरोक्त में प्रत्येक सम्मेलन के लिए 4 लाख रु. स्वीकृत किए गए हैं और निम्नलिखित संस्थानों के लिए 5 लाख रु0 स्वीकृत किए गए हैंः

5. कॉटन कॉलेज राज्य विश्वविद्यालय, गुवाहाटी
6. डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय, डिब्रुगढ़

इस वर्ष परिषद् ने देशभर में स्थित निम्नलिखित संस्थानों में दर्शशास्त्र शिक्षक सममेलन आयोजित करने का संकल्प किया हैः

1. माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर
2. पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार
3. आर. डी. विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश
4. आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुंटूर, आन्ध्र प्रदेश
5. मुद्रा कॉलेज, मदुरै, तमिलनाडु

इन सम्मेलनों के लिए प्रत्येक के लिए 4 लाख रु. स्वीकृत किए गए हैं। इस वर्ष सम्मेलन आयोजित नहीं किए जा सके और ये अगले वित्त वर्ष के लिए लंबित हैं।

दर्शनशास्त्र एवं संस्कृति स्कूल, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटरा, जम्मू एवं कश्मीर

द्वारा आयोजित
उत्तर–पश्चिम जोन दर्शनशास्त्र शिक्षक सम्मेलन की रिपोर्ट
25–27 फरवरी, 2015

दर्शनशास्त्र एवं संस्कृति स्कूल, माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटरा द्वारा 25 से 27 फरवरी, 2015 को ''भारतीय उच्चतर शिक्षा में दर्शन का भविष्य'' विषय पर तीन दिवसीय ''उत्तर–पश्चिम जोन दर्शनशास्त्र शिक्षक सम्मेलन'' आयोजित किय गया था। इस कार्यक्रम को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया था। इस सम्मेलन का उदघाटन प्रो. सुधीर के. जैन, उपकुलपति, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय ने किया

और इस अवसर पर डॉ. एम.पी. सिंह, सदस्य सचिव, आईसीपीआर, नई दिल्ली, प्रो. वेद कुमारी घई (पदम श्री), सेवानिवृत्त संस्कृत के प्रोफेसर, जम्मू विशविद्यालय और प्रो. वी. के. भट्टट, अध्यक्ष, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय सम्मानित अतिथि थे। डॉ. वी. के. त्रिपाठी (निदेशक, एसओपीसी) ने सभी अतिथियों का स्वागत किया, जबकि अनिल के. तिवारी (संयोजक) ने सम्मेलन के कान्सेप्ट नोट की जानकारी दी। इस अवसर पर अपने संबोधन में डॉ. सिंह, एमएस, आईसीपीआर ने देशभर में दर्शनशास्त्र के विषय को बढ़ावा देने के लिए आईसीपीआर के प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने आईसीपीआर द्वारा प्रायोजित विभिन्न कार्यक्रमों और छात्रवृत्तियों का भी उल्लेख किया। उनहोंने परिषद् के लखनऊ स्थित शैक्षिक केन्द्र में उपलब्ध विभिन्न सुविधाओं के बारे में जानकारी दी और केन्द्र द्वारा संचालित गतिविधियों के बारे में बताया। उन्होंने उपस्थित शोध छात्रों से गतिविधियों और कार्यकलापों का लाभ उठाने का अनुरोध किया।

प्रोफेसर घई ने अपने संबोधन में आधुनिक काल में दर्शन की प्रासंगिकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि अनुशासन की केवल सांस्कृतिक प्रासंगिकता नहीं है बल्कि यह समकालीन प्रासंगिकता के विभिन्न मुद्दों पर हमारी राय बनाने के लिए हमें विनम्र भी बनाता है। प्रो. भट्ट ने अपने भाषण में दर्शन एवं गणित में गहरे संबंध के बारे में बताया। प्रो. जैन, वीसी, एमएसवीडीयू ने उत्तर–पश्चिम क्षेत्र विशेषकर जम्मू एवं कश्मीर में दर्शन को बढ़ावा देने के लिए ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने के लिए स्कूल के संकाय सदस्यों के प्रयासों की सहराहना की। आईआईटी कानपुर में पीएचडी प्रशिक्षण के दौरान संकाय सदस्यों और दर्शनशास्त्र के पीएचडी छात्रों के साथ अपनी चर्चाओं को स्मरण करते हुए उन्होंने अपनी प्रशिक्षण में उन परस्पर संवाद के प्रभाव और लाभों के बारे में बताया। उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दर्शन की जरूरत पर भी बल दिया। डॉ. पी. पी. सिंह, राजकीय महिला कॉलेज, परेड ने जम्मू एवं कश्मीर में दर्शन की स्थिति पर चिंता व्यक्त की और बताया कि दर्शनशास्त्र के नियमित शिक्षकों की उपलब्धता से संबंधित बाधाओं के बावजूद सैकड़ों छात्रों ने राज्य के विभिन्न कॉलेजों में यूजी स्तर पर जम्मू एवं कश्मीर राज्य में उच्चतर शिक्षा में दर्शनशास्त्र को चुना है। उन्होंने बताया कि राज्य में केवल एक विश्वविद्यालय (एसएमवीडीयू) है जो दर्शनशास्त्र में पीएचडी की पेशकश करता है, उन्होंने कॉलेज स्तरों पर दर्शनशास्त्र में रिक्त पदों को भरने में सरकार की बेरूखी पर चिंता जताई। सत्र का समापन श्री एस.एस. शर्मा, सहायक प्रोफेसर, एसओपीसी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ किया गया।

इस सम्मेलन का समापन 27 फरवरी, 2015 को समापत्र सत्र के साथ हुआ। सत्र की अध्यक्षता प्रो. किशोर कुमार चक्रवर्ती ने की और प्रो. पी. जेटली एवं प्रो. एस. सी. भल्के इसके सम्मानित अतिथि थे। डॉ. वी. के. त्रिपाठी ने अतिथियों और दर्शको का स्वागत किया। डॉ. अनिल के. तिवारी, संयोजक ने सम्मेलन पर संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। सम्मानित अतिथि ने सम्मेलन की कार्यवाही पर अपनी राय व्यक्त की। उन दोनों ने ऐसे सम्मेलनों को क्षेत्र के दर्शनशास्त्र के शिक्षकों के शैक्षिक इंटरैक्शन के लिए आईसीपीआर, नई दिल्ली की अच्छी पहल बताया। यह उन्हें हमारे देश के वरिष्ठ शोधार्थियों के विचारों से लाभान्वित होने का अवसर भी देता है। इस सम्मेलन का समापन श्री सुमंत शर्मा, सहायक प्रो. एसओपीसी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

इसमें उदघाटन सत्र के अलावा, कुल 6 शैक्षिक सत्र आयोजित किए गए थे। विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानो से आए प्रख्यान शोधछात्रों ने कुल 18 प्रस्तुतियां प्रस्तुत की। उनके शोधपत्रों का विवरण नीचे दिया गया है :–

क्र.सं.	नाम	संस्थान	प्रस्तुति का नाम
1	प्रो. गोदाबरिशा मिश्रा	मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई	इन बिटवीन फिलासफी एंड दर्शनः व्हाट एंड हाउ इंडियन फिलासफी
2	प्रो. एस. सी, भल्के	पूना विश्वविद्यालय, पूना	भारतमुनि थ्योरी ऑफ रस
3	डॉ. चंदन चक्रवर्ती	डेविस और एलकिन्स कॉलेज, डब्ल्यू. वर्जीनिया, यूएसए	बुद्ध, ह्यूम एंड जेम्स ऑन द स्ट्रीम ऑफ
4	प्रो. किशोर के. चक्रवर्ती	डेविस और एलकिन्स कॉलेज, डब्ल्यू. वर्जीनिया, यूएसए	साइको–फिजीकल डयूलिज्मः ईस्ट एंड वेस्ट
5	प्रो. राम बहादुर शुक्ला	जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू	मूल्य–मीमांसा के परिप्रेक्ष्य में मोक्ष की समीक्षा
6	प्रो. गोदाबरिशा मिश्रा	मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई	ब्रेकिंग द बाउंड्रीजः इंटर एंड ट्रांस डिसिप्लेनरी रेलेवेंश ऑफ फिलोसफी
7	प्रो. किरण बक्शी	प्राचार्य, जीसीडब्ल्यू, नगर, जम्मू	एप्लाइड फिलासफी
8	प्रो. एस. सी. भल्के	पूना विश्वविद्यालय, पूना	भारतमुनि थ्योरी ऑफ भाव
9	डॉ. चंदन चक्रवर्ती	डेविस और एल्किन्स कॉलेज, डब्ल्यू. वर्जीनिया, यूएसए	द न्याय थ्योरी ऑफ ट्रूथ
10	प्रो. फ्रान्सन डी. मंजली	जेएनयू, नई दिल्ली	डायलॉग्क्सि ऑफ द ऐथिक्स ऑफ इंटरसब्जेक्टीविटी
11	प्रो. किशोर के. चक्रवर्ती	डेविस और एलकिन्स कॉलेज, डब्ल्यू. वर्जीनिया, यूएसए	प्रोफ्लेम ऑफ इंडक्शनःईस्ट एंड वेस्ट
12	प्रो. मंदीपा सेन	जेएनयू, नई दिल्ली	सेल्फ–नॉलेज एंड एजेंसी
13	प्रो. फ्रान्सन डी. मंजली	जेएनयू, नई दिल्ली	नेशनलिज्म, कोलोनियलिज्म एंड मॉडर्न लिंग्विस्टिक स्टडीज

क्र.सं.	नाम	संस्थान	प्रस्तुति का नाम
14	प्रो. प्रियदर्शनी जेटली	टीआईएसएस, मुंबई	अब्डक्शन एज ए फार्म ऑफ इन्फरेंश
15	प्रो. मंदीपा सेन	जेएनयू, नई दिल्ली	फिनोमिनल एंड इंटेंशनल कंटेंट्स ऑफ कांन्सियसनेस
16	प्रो. प्रियदर्शनी जेटली	टीआईएसएस, मुंबई	नॉलेज एज एन एक्टिविटी
17	डॉ. पीपी. सिंह	जीसीडब्ल्यू, परेड, जम्मू	फिलोसफी इन जेएंडके
18	प्रो. बी लभ	जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू	एसिसीमिलेटिव स्ट्रैंथ ऑफ बुद्धिज्म

X
फेलो मीट 2014
(2–4 अप्रैल, 2014)

फेलो मीट परिषद का ऐसा कार्यक्रम है, जिसमें जूनियर और सामान्य फेलो शोध में अपनी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने और शोध के उनके क्षेत्रों के विशेषज्ञों से संवाद करने के लिए आमंत्रित किए जाते हैं। फेलो मीट 2014 2 से 4 अप्रैल, 2014 को समिति कक्ष, एसएस–1, जेएनयू में दर्शनशास्त्र, सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, जेएनयू के सहयोग से आयोजित की गई थी। इसकी कार्यवाही योजनानुसार आगे बढ़ी। इस मीट का उदघाटन प्रो. मृणाल मिरी, माननीय अध्यक्ष, आईसीपीआर और प्रो. एस.पी. गौतम, सीनियर दर्शनशास्त्र संकाय, जेएनयू के स्वागत भाषण के साथ किया गया। फेलो और संसाधन व्यक्ति आमंत्रित किए गए थे और इस मीट की जरूरत पर चर्चा की गई थी। डॉ. मर्सी हेलन, निदेशक (पीएंडआर) ने माननीय अध्यक्ष के संबोधन पर धन्यवाद प्रस्ताव दिया। मीट को सत्रों के लिए खोल दिया गया।

मीट का आयोजन निम्नलिखित आमंत्रित संसाधन व्यक्तियों की भागीदारी के साथ किया गया, जिन्होंने शोध के अपने क्षेत्रों पर फेलो को रोचक जानकारी प्रदान की।

1. प्रो. बिशम्बर पही, वर्तमान में सीनियर फेलो, आईसीपीआर और पूर्व फैकल्टी, दर्शनशास्त्र, राजस्थान विश्वविद्यालय;
2. प्रो. पी. के. महापात्रा, वर्तमान में सीनियर फेलो, आईसीपीआर और पूर्व फैकल्टी, दर्शनशास्त्र, उत्तकल विश्वविद्यालय;
3. प्रो. राकेश चंद्रा, फैकल्टी, दर्शनशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय;

4. प्रो. अमिता चटर्जी, वर्तमान में सीनियर फेलो, आईसीपीआर और पूर्व फैकल्टी, दर्शनशास्त्र, जादवपुर विश्वविद्यालय, जिन्होंने मीट में दूसरे दिन हिस्सा लिया।

5. डॉ. मनेन्द्र प्रताप सिंह, सदस्य सचिव, आईसीपीआर

संसाधन व्यक्तियों के अलावा, सत्रों के बीच–बीच में माननीय अध्यक्ष भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहे। डॉ. मनेन्द्र प्रताप सिंह, सदस्य सचिव, आईसीपीआर, डॉ. मर्सी हेलन, निदेशक (पी और आर), डॉ. अरूण मिश्रा, निदेशक (ए) और डॉ. एस. के. कार, (पी.ओ) और आईसीपीआर के संबंधित कर्मचारी सभी सत्रों में उपस्थित थे। कार्यवाही देखने के लिए बीच–बीच में लेखा अधिकारी भी आते रहें। लेखा विभाग के कर्मचारी टीए का वितरण करने के लिए आयोजन स्थल पर समय पर पहुंच गए थे। आईसीपीआर का पूरा ऑफिस मीट के लिए सुविधाओं एवं तैयारियों के लिए विभिन्न मौकों पर इसमें शामिल हुआ।

जैसा कि कार्यक्रम अनुसूची (नीचे दी गई है) में उल्लेख किया गया है कि प्रत्येक सत्र में संसाधन व्यक्ति का 45 मिनट का एक ओरएंटेशन व्याख्यान था, जिसके बाद लगभग 15 मिनट का समय चर्चा के लिए रखा गया था। तत्पश्चात, आईसीपीआर फेलोशिप के तहत फेलो के शोध कार्य से संबंधित विषयों पर उनकी प्रस्तुति प्रस्तुत की गई। इसमें 41 फेलो ने भाग लिया। लगभग सभी फेलो ने अपने नियत समय पर अपने शोध से संबंधित लिखित दस्तावेज तैयार करके प्रस्तुत किए। प्रत्येक फेलो के शोध के विषय पर उनकी प्रस्तुति के 15 मिनट बाद, अक्सर संसाधन व्यक्ति मल्टीमीडिया सुविधाओं के जरिये शामिल विषयों पर उनसे संवाद करता था और संबंधित फेलो के शोध कार्य को और बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण और सलाह और सुझाव देता था। मीट के 3 दिन तक चले सभी सत्रों में इसी तरह की कार्यवाही चली।

2 अप्रैल को पहले (सुबह) सत्र की शुरूआत नैतिक लेख और भारतीय नैतिकता में शोध पर प्रो. पी. के. महापात्रा के ओरिएंटेशन व्याख्यान के साथ हुई, जिसमें फेलो को एक पुस्तिका बांटी गई।

2 अप्रैल को दूसरे सत्र (दोपहर के बाद) की शुरूआत शोध पर राकेश चंद्रा के दूसरे ओरिएंटेशन व्याख्यान के साथ हुई। इसके बाद चाय सत्र हुआ और फिर 6 फेलो ने अपने शोध विषयों पर अपनी प्रस्तुतियां प्रस्तुत की।

3 अप्रैल को तीसरे सत्र (दोपहर से पहले) की शुरूआत पश्चिमी ज्ञानमीमांसा और तर्क में शोध पर प्रो. बिशंभर पही के तीसरे ओरिएंटेशन व्याख्यान के साथ हुई। इसके बाद चाय सत्र हुआ और फिर 9 फेलो ने अपने शोध विषयों पर अपनी प्रस्तुतियां प्रस्तुत की।

3 अप्रैल को चौथे सत्र (दोपहर के बाद) की शुरूआत भारतीय ज्ञानमीमांसा और तर्क में शोध पर प्रो. बिशंभर पही के चौथे ओरिएंटेशन व्याख्यान के साथ हुई। इसके बाद चाय सत्र हुआ और फिर 7 फैलो ने अपने शोध विषयों पर अपनी प्रस्तुतियां प्रस्तुत की।

4 अप्रैल को पांचवे सत्र (दोपहर से पहले) की शुरूआत ज्ञानमीमांसा और ज्ञान की उन्नति में शोध पर प्रो. अमिता चटर्जी के पांचवे ओरिएंटेशन व्याख्यान के साथ हुई। इसके बाद चाय सत्र हुआ और फिर 6 फेलो ने अपने शोध विषयों पर अपनी प्रस्तुतियां प्रस्तुत की।

4 अप्रैल को छठे सत्र (दोपहर के बाद) की शुरूआत अध्ययन में शोध पर डॉ. मनेन्द्र पताप सिंह के छठे ओरिएंटेशन व्याख्यान के साथ हुई। इसके बाद चाय सत्र हुआ और फिर 6 फेलो ने अपने शोध विषयों पर अपनी प्रस्तुतियां प्रस्तुत की।

अलग–अलग सत्रों की अध्यक्षता प्रो. एस.पी. गौतम, प्रो. पी.के. महापात्रा, प्रो. राकेश चंद्रा, प्रो. अमिता चटर्जी और प्रो. बी. पही और डॉ. मनेन्द्र प्रताप सिंह ने की । इन सभी ने फेलो को अपने सुझाव दिए और चर्चाओं में भाग लिया। डॉ. अरूण मिश्रा, निदेशक (ए) ने भी भारतीय ज्ञानमीमांसा से संबंधित विषय पर चर्चाओं में भाग लिया।

समापन सत्र में, फीडबैक देने के लिए 4 फेलो आमंत्रित किए गए। ये थे श्री ललित सारस्वत, श्री संजीत चक्रवर्ती, सुश्री स्वेता सिंह और श्री पी.आई देवराज । इनमें से प्रत्येक ने मीट की विशेषताओं और उपयोगिता के बारे में बताया। श्री देवराज ने बताया कि सेमिनार और कार्यशाला के रूप में इस तरह की मीट हर 6 माह में आयोजित की जानी चाहिए ताकि सभी फेलो प्रत्येक अवसर पर अपने अध्याय प्रस्तुत कर सकें और चर्चाएं और फीडबैक उनके शो की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए अत्यधिक उपयोगी हों जिससे वे समय पर अपने शोध पूरे कर सकें।

प्रो. एस.पी. गौतम, जेएनयू ने अपने समापान भाषण में सभी सत्रों और मीट के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों को स्पर्श किया । प्रो. पही और प्रो. गौतम ने फोटोग्राफरों की फ्लैश लाइटों और प्रतिभागियों के मुस्कराते चेहरों के बीच भागीदारी प्रमाणपत्र प्रदान किए।

इसमें कुल 6 ओरिएंटेश्न व्याख्यान, संबोधन के 2 सत्र (जैसा ऊपर उल्लेख किया गय है) और फेलों ने विभिन्न विषयों (ये नीचे दिए गए हैं) 41 प्रस्तुतियां प्रस्तुत की। समपान सत्र में चार फेलो के सामान्य फीडबैक के अलावा सभी फेलो से लिखित फीडबैक प्राप्त किए गए। फैलो की प्रस्तुतियां हमेशा काफी जीवंत रही और संसाधन व्यक्तियों के व्याख्यान और परस्पर संवाद काफी स्पष्ट और लंबे रहे, इनके लिए हमेशा समय की कमी रही, जिसके कारण सत्रों को 18.00 बजे तक चलाना पड़ा।

आईसीपीआर फेलो मीट 2014 के प्रतिभागियों के नाम और उनकी शोध प्रस्तुति का शीर्षक

क्र. सं.		फेलो का नाम	आईसीपीआर फेलोशिप के अंतर्गत परियोजना से संबंधित शोधपत्र की प्रस्तुति का शीर्षक
1.		अबीर कुमार दास	भातृहरि ऑन शब्दब्रह्माः सम क्रिटिकल ऑब्जर्वेशन्स
2.		अल्फांसो पी. के.	ऐस्थेटिक ऑफ सेंसेशन
3.		अमित कुमार	डॉ. नंद किशोर देवराज के दर्शन में धर्म की अवधारणा
4.		अपूर्व कुमार त्रिपाठी	शंकर और रामानुज का कार्यकरण विचार

क्र. सं.		फेलो का नाम	आईसीपीआर फेलोशिप के अंतर्गत परियोजना से संबंधित शोधपत्र की प्रस्तुति का शीर्षक
5.		अरूण गर्ग	सम फिलोसोफीकल व्यूज ऑन फाउंडेशन्स ऑफ मैथमेटिक्स
6.	अजा	बिमन कर्माकर	थ्योरी ऑफ सोल इन न्याय–वैयुइंका फिलोसफी
7.	अजा	बिंदु कुमारी	समक्या दर्शन में प्रमाण मीमांसा
8.		ई. जगदीश्वरण	व्यूज ऑन हयूमन डिग्निटीः बी.आर अंबेडकर एंड ई.वी आर. पेरियार
9.		गणेश त्रिपाठी	प्रमाणः स्वतः ग्रहः प्रातोवा
10.		जयदेव शर्मा	वर्ण व्यवस्थाः ओरिजन्स,बग्रोथ एंड डिके फरोम श्री अरबिंदो पर्सपेक्टिव
11.		जयंत मजूमदार	डेसक्रेट्स एंड हसरेलः डाउट एंड रिडक्शन – ए नोट
12.		के. वेंगदचलम	श्री अरबिंदो थ्योरी ऑफ कउसशन
13.		कोमलजीत कौर	कंपेरेजिन ऑफ होब्स एंड राउल्स इन द लाइट ऑफ सोशल कान्ट्रेक्ट थ्योरी
14.		कुमार ऋषभ	मार्क्स के न्याय सिद्धांत दार्शनिक अवलोकन
15.		ललित सारस्वत	फिलोसफीकल पर्सपेक्टिव ऑफ कउसशन ऑफ कान्शियसनेश
16.		एम. ज्योतिमणि	अद्‌वैत वेदांतः ए न्यू इंटरप्रिटेशन
17.		मने प्रदीपकुमार पांडुरंग	विवेकानंद कन्सेप्शन ऑफ बुद्धिज्म
18.		मनोज पंडा	द कंटेंट ऑफ परसेप्शन एंड रीजन्स फॉर इम्प्रिकल थॉट
19.		मुकेश बेहरा	ए क्रिटिकल एक्जामिनेशन ऑफ फिलोसफी ऑफ टेक्नोलॉजी
20.		मनीष कुमार मिश्रा	न्यायः वैसेसिका दर्शन के अनुसार द्रव्यस्वरूप विमर्शन
21.		एन. श्रीधर पदमनाभन	वैवैसिका दर्शनस्य विजयननीकृत्य विमर्श

क्र. सं.		फेलो का नाम	आईसीपीआर फेलोशिप के अंतर्गत परियोजना से संबंधित शोधपत्र की प्रस्तुति का शीर्षक
22.	अजा	नरेद्र बौद्ध	अंबेडकर के हिंदू धर्म से दार्शनिक महाभिनिष्क्रमण
23.		निधि चौधरी	जीवागोस्वामी रचित कर्मसंदर्भः दर्शनशास्त्रीय अध्ययन
24.		पी.आई. देवराज	सोशल फिलोसफी ऑफ कन्टमपोरेरी थिंकर्स ऑफ केरलः ए बर्ड आई व्यू
25.		पंकज पांडे	भारतीय दर्शन में शब्दार्थ– एक विहंगालोकन
26.	अजा	पंकज कांति सरकार	एंथ्रोपोसेंट्रिज्मः सम फिलोसोफीकल ऑब्जर्वेशन
27.		पारूल	द्रव्य व गुणों के लक्षण समीक्षा
28.		राकेश कुमार सिंह	बीइंग, टैंपपोरलिटी एंड लैंग्वेजः ए क्रिटिकल रिफ्लैशन ऑफ मार्टिन हाईडीगर्स फिलोसफी
29.		ऋषभ कुमार जैन	भावसेन कृत विश्वतत्वप्रकाश में वर्णित चावार्क माता खंडन
30.		शारदा वंदना	नैतिक वादी दार्शनिक चिंतन
31.		संगीता बसु	सेंसेज ऑफ एक्सटेंशन
32.		संजीत चक्रवर्ती	थ्योरी ऑफ मीनिंगः रिविजिटिंग फ्रेज
33.		शंकर दत्त	श्री अपयया दीक्षित का ज्ञान कर्म समन्वय
34.		श्वेता सिंह	मोरल स्पेस इन पर्टिकुलरिज्म – इंपटी स्पेस
35.		सीमा देवी	विवेकानंद के अनुसार मानवतावाद का दार्शनिक अध्ययन
36.		श्रीजीत के.के.	एड्रेसिंग द चैलेंज फरोम टेस्टीमोनियल नॉलेज टू विर्च्यू एपिस्टीमोलॉजी
37.	एनई आर	श्रीतमा मिश्रा	सोलिडेरिटी राइट्सः मीनिंग एंड प्रोसपेक्ट्स
38.		टेरेंश मुखिया	इम्पैक्ट ऑफ क्रिस्टीयनिटी ऑन लेप्चा एंड तमंग ट्राइबल फिलोसफीज़

क्र. सं.		फेलो का नाम	आईसीपीआर फेलोशिप के अंतर्गत परियोजना से संबंधित शोधपत्र की प्रस्तुति का शीर्षक
39.		उमा धर सिंह	कंपेशन मेडिटेशन
40.		वी. विजय आनंद	अंबेडकर इंटरप्रिटेशन ऑफ इंडियन फिलोसफी
41.		जैद अहमद सिद्दकी	एस्थेटिक्स एंड इट्स रिलेशन टू पॉल्टिकल फिलोसफी

XI
तर्कशास्त्र शिक्षण

तर्कशास्त्र शिक्षण पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए एक कार्यक्रम है। आईसीपीआर +2 छात्रों को तर्कशास्त्र पढ़ाने के लिए जूनियर शिक्षक नियुक्त करने के लिए 60,000 रु. प्रतिवर्ष देता है। तर्कशास्त्र पढ़ाने के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र से चुने गए आवेदकों के लिए निम्नलिखित कॉलेजों ने अनुदान प्राप्त किया हैः–

1. प्राचार्य, जेबी कॉलेज, जोरहाट 785001ए असम, पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए
2. प्राचार्य, पाचुंगा विश्वविद्यालय कॉलेज, आईजोल –796001, मिजोरम, पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए।

XII
व्याख्यान माला

परिषद् ने शैक्षिक केन्द्र लखनऊ में आयोजित प्रत्येक व्याख्यान कार्यक्रम के लिए 50000 रु. के साथ व्याख्यान माला को स्वीकृति प्रदान की है।

आधुनिक भारतीय दर्शन के शिल्पकारों पर व्याख्यान माला	आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ	वक्ता
अमित चटर्जी	19.3.2015	प्रो. बी.एन. शाह
डी. एन. चक्रवर्ती	20.3.2015	प्रो. कालिदास भट्टाचार्य

लखनऊ में कार्यक्रमों पर खंड IV में विस्तृत रिर्पोट दी गई है।

XIII
प्रख्यात विद्वानों–विजिटिंग प्रोफेसरों के व्याख्यान

भारतीय विद्वानों को अग्रणी दार्शनिकों के नवविचारों से अवगत कराने और उनके साथ बातचीत करने का अवसर देने के लिए परिषद् हर साल भारत और विदेश के प्रोफेसरों और मशहूर विद्वानों के राष्ट्रीय व्याख्यान आयोजित करता है। इस योजना के अंतर्गत, प्रत्येक आमंत्रित विद्वान भारत में कम से तीन से चार विश्वविद्यालयों में तीन व्याख्यान देता है। नीचे ऐसे ही कुछ कार्यक्रमों को ब्यौरा दिया गया है जो वर्ष 2014–15 में आयोजित किए गए हैं।

क. विजिटंग प्रोफेसर (विदेशी) द्वारा व्याख्यान

क्र. सं.	व्याख्याता का नाम	विश्वविद्यालय का नाम / तिथि	व्याख्यान का शीर्षक	अनुदान
1.	प्रोफेसर रिचर्ड सोराबजी, विजिटिंग प्रोफेसर (विदेशी)	प्रो. हरि शंकर प्रसाद, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110 007		15ए000 / – (अनुदान) एस0ओ0. दिनांक 2.2.2015
2	–वही–	प्रो. विजय तंखा, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, सेंट स्टीफन्स कॉलेज, यूनिवर्सिटी इन्क्लेव, दिल्ली–110 007		35,000 / – (अनुदान) 20.1.2015
	–वही–	कार्यक्रम अधिकारी, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, 3 / 9, विपुल खंड, गोमती नगर, लखनऊ – 226 001	2, फरवरी, 2015	
3.	प्रोफेसर पुरूषोत्तम बिलिमोरिया विजिटिंग प्रोफेसर (विदेशी)	प्रो. एस.पी. गौतम, प्रोफेसर और अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र केन्द्र, जेएनयू, नई दिल्ली– 110 067		35,000 / – (अनुदान) 17.12.2014
4	–वही–	डॉ. मो. सिराजु इस्लाम, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र एवं धर्म, विश्व भारती, शांतिनिकेतन–731235	1. टैगोर गांधी बिटवीन लाहाटोर्ड एंड हाबरमास (ऑन एजुकेशन) 2. सेक्युलरिज्म एंड इट्स डिस्इन्चंटमेंट। 9–10 जनवरी, 2015	35ए000ध् ;अनुदानद्ध 17.12.2014

क्र. सं.	व्याख्याता का नाम	विश्वविद्यालय का नाम/तिथि	व्याख्यान का शीर्षक	अनुदान
5	–वही–	प्रो. श्रीकला, एम. नायर, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालाडी, केरल–683 574		35,000/– (अनुदान) 17.12.2014
6	–वही–	प्रो. कंचन महादेवन, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, मुंबई विश्वविद्यालय, विद्यानगरी कैंपस, मुंबई–400 098	1. थिकिंग इमोशन्सः डू इंडियन ऐस्थेटिक थ्योरीज गेट इट? 2. गांधी एंड टैगोर बिटवीन लाहाटोर्ड एंड हाबरमास, एजुकेटिंग, टेक्नो–कल्चर एंड क्रिएटिविटी 19 और 21 जनवरी, 2015	35,000/– (अनुदान) 17.12.2014
7	–वही–	प्रो. दिलीप कुमार शांतिदानर चरण, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद–380 009		35,000/– (अनुदान) 17.12.2014

शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ में आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम की रिपोर्ट खंड IV में उपलब्ध है।

ख. विजिटिंग प्रोफसेरों के व्याख्यान (भारतीय)

क्र.सं.	विजिटिंग प्रोफेसर	व्याख्यान का स्थान	शीर्षक	अनुदान
1.	प्रोफेसर एस.सी. भल्के, विजिटिंग प्रोफेसर (भारतीय)	डॉ. जगदीश पटगिरि, एसोशिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी–781 001		35,000/– (अनुदान)
2.	–वही–	प्रो. श्रीकला, एम. नायर, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलाडी, केरल– 683 574		35,000/– (अनुदान)

क्र.सं.	विजिटिंग प्रोफेसर	व्याख्यान का स्थान	शीर्षक	अनुदान
3	–वही–	कार्यक्रम अधिकारी, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, 3/9, विपुल खंड, गोमती नगर, लखनऊ – 226 001		35,000/– (अग्रिम) 8.1.2015
4	प्रोफेसर एस. पन्नीरसेल्वम, विजिटिंग प्रोफेसर (भारतीय)	डॉ. मो. सिराजु इस्लाम, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र एवं धर्म, विश्व भारती, शांतिनिकेतन–731235		35,000/– (अनुदान) 14.1.2015
5	–वही–	प्रो. श्रीकला, एम. नायर, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालाडी, केरल–683 574		35,000/– (अनुदान) 2ण्12ण्2014
6	–वही–	प्रो. एस.पी. गौतम, प्रोफेसर और अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र केन्द्र, जेएनयू, नई दिल्ली–110 067		35,000/– (;अनुदान) 4.3.2015
7	–वही–	प्रो. कंचन महादेवन, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, मुंबई विश्वविद्यालय, विद्यानगरी कैंपस, मुंबई–400 098	फिनोमनोलॉजी ऑफ कांसियशनेस ए शिफ्ट फरोम लैंग्वेज टू डिस्कोर्सः गडामेर, रिकोयूर एंड हेबरमास। 23–24, मार्च, 2015	35,000/– (अनुदान) 4.3.2015
8.	प्रो. मोहिनी मुल्लिक, विजिटिंग प्रोफेसर (भारतीय)	डॉ. कृष्णा भट्टाचार्य, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला, त्रिपुरा (पश्चिम)–799001		35,000/– (अनुदान) 24.2.2015
9	–वही–	प्रो. के. गोपीनाथन, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, कालीकट विश्वविद्यालय, कोजीकोडे, मल्लापुरम– 673 635, केरल	क्लासीकल इंडियन थॉट एट द कालोनियल कांनसियसनेस 23, फरवरी, 2015	35,000/– (अनुदान) 5.12.2014

क्र.सं.	विजिटिंग प्रोफेसर	व्याख्यान का स्थान	शीर्षक	अनुदान
10	–वही–	प्रो. यू.ए. विनय कुमार, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा–403 206	धर्म, लॉ एंड रिलिजन	35,000/– (अनुदान) 5.12.2014
11	–वही–	कार्यक्रम अधिकारी, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, 3/9, विपुल खंड, गोमती नगर, लखनऊ–226 001		35,000/– (अग्रिम) 5.12.2014
12	प्रो. अमित चटर्जी और प्रो. एन.एन. चक्रवर्ती	कार्यक्रम अधिकारी, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, 3/9, विपुल खंड, गोमती नगर, लखनऊ–226 001	अमिता चटर्जी, प्रो. बी.एन. शाह और एन.एन. चक्रवर्ती, प्रो. कालीदास भट्टाचार्य का आधुनिक भारतीय दर्शन के शिल्पकारों पर व्याख्यान	1,30,000/– (अग्रिम) 4.3.2015
13	प्रो. चंद्र गुप्त	प्रो. पराजित के. बसु, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद, हैदराबाद–500 046	फेमिलीःहैवन एंड प्रिजन टू वोइस ऑफ लिब्रलिज्मः फॉर एंडएगेन्स्ट द फेमिली 20–21 अक्टूबर– 2014	35,000/– 12.9.14 D-VII (A)- व्याख्यान राष्ट्रीय
14	–वही–	डॉ. मो. सिराजु इस्लाम, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र एवं धर्म, विश्व भारती, शांतिनिकेतन–731235	29 जनवरी, 2015	35,000/– 5.1.2015 D-VII (A)- व्याख्यान राष्ट्रीय
15	–वही–	कार्यक्रम अधिकारी, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, 3/9, विपुल खंड, गोमती नगर, लखनऊ – 226 001		35,000/– 5.1.2015 D-VII (A)- व्याख्यान

क्र.सं.	विजिटिंग प्रोफेसर	व्याख्यान का स्थान	शीर्षक	अनुदान
			राष्ट्रीय	
16	प्रो. राजेन्द्र प्रसाद	कार्यक्रम अधिकारी, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, 3/9, विपुल खंड, गोमती नगर, लखनऊ – 226 001		29 मई, 2014

शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ द्वारा आयोजित व्याख्यान कार्यक्रमों पर रिपोर्ट खंड IV में उपलब्ध है।

प्रो. एस. पन्नीरसेल्वम के आईसीपीआर विजिटिंग फेलो व्याख्यान कार्यक्रम पर संक्षिप्त रिपोर्ट

दर्शनशास्त्र विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालाडी ने 4 दिसंबर, 2014 को प्रो. एस. पन्नीरसेल्वम का आईसीपीआर राष्ट्रीय फेलो कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के मुख्य कैंपस के लैंग्वेज लैब, एकादमिक ब्लॉक I में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम 10.30 बजे संगीत विभाग के मंगलाचारण गायन के साथ शुरू हुआ। प्रो. एम. नायर, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र ने लोगों का स्वागत किया। इसके बाद, माननीय उपकुलपति डॉ. एम.सी. दिलीप कुमार ने अध्यक्षीय भाषण दिया। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा शुरू किए गए शैक्षिक कार्यक्रमों के बारे में संक्षेप में बताया और इस विधा के विकास के लिए केरल में दर्शनशास्त्र विभाग की अग्रणी भूमिका पर प्रकाश डाला। इसके बाद, प्रो. पन्नीरसेल्वम ने ''हेर्मेनेयुटिकल टर्न इन फिलोसफीः ईस्ट वेस्ट पर्सपेक्टिव'' पर पहला व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने व्याख्यात्मकता के विकास के बारे में बताया। उनका विचार था कि पश्चिम में व्याख्यात्मकता के विकास को गलतफहमी से बचने की एक कला के रूप में समझा जाए। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि कम समझ की कोई पूर्वधारणा नहीं है। सभी व्याख्याएं दूरदृष्टि और पूर्व अवधारणा में निहित हैं (हाईडेगर)। उन्होंने व्याख्यात्मकता में ऐतिहासिकता, परंपरा, समुदाय और व्याख्या की भूमिका को भी दोहराया। इस व्याख्यान के बाद एक गंभीर चर्चा हुई। लंच के बाद के सत्र में, प्रो. पन्नीसेल्वम ने थीम ''फरोम लैंग्वेज टू डिकोर्सः रिकोइयूर, हबेरमास एंड डेरिडा'' को शुरू किया। इसमें उन्होंने दार्शनिक (गडामेर), अतिवादी (रिकोइयूर), गंभीर (हबेरमास) और विखंडनीय (डेरिडा) लेख का संक्षिप्त परिचय दिया। गडामेर के लिए व्याख्यात्मकता व्याख्या के, परंपरा के समृद्धता के ट्रांसमिशन के, उक्त ट्रांसमिशन की गतिशीलता के सिद्धांत में दर्ज है। परंपरा परिमित कंटेंट की परिमित विकास, एक अनिवार्य रूप से अटूट के परिमित वास्तविकीकरण का इतिहास या अनंत सत्य है। व्याख्यात्मक प्रक्रिया स्पष्ट करती है कि समझ में क्या घटित होता है। डिल्थी और डेविड ई. लिंजे के समझ अनिवार्य रूप से एक स्वत स्थानांतरण है, जिसमें ज्ञाता अस्थायी दूरी को अस्वीकार करता है। इस प्रस्तुति के बाद डॉ. पी. के. शशिधरन, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग ने धन्यवाद भाषण दिया।

प्रोफेसर सुभाष चंद्र भल्के के आईसीपीआर राष्ट्रीय फेलो व्याख्यान कार्यक्रम पर संक्षिप्त रिपोर्ट

दर्शनशास्त्र विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालाडी ने 16 जनवरी, 2015 को प्रो. सुभाष चंद्र भल्के का आईसीपीआर राष्ट्रीय फेलो कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के मुख्य कैंपस के लैंग्वेज लैब, एकादमिक ब्लॉक I में आयोजित किया गया था। 10.30 बजे कार्यक्रम संगीत विभाग के मंगलाचारण गायन के साथ शुरू हुआ। डॉ. पी. उन्नीकृष्णन, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग ने लोगों का स्वागत किया। इसके बाद, प्रो. श्रीकला एम. नायर, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र ने अध्यक्षीय भाषण दिया। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा शुरू किए गए शैक्षिक कार्यक्रमों के बारे में संक्षेप में बताया और इस विधा के विकास के लिए केरल में दर्शनशास्त्र विभाग की अग्रणी भूमिका पर प्रकाश डाला। व्याख्यान कार्यक्रम के विषय के संक्षिप्त परिचय में उन्होंने भारतीय सौंदर्यशास्त्र में रस एवं भाव के सिद्धांत के उदभव का ऐतिहासिक खाका पेश किया।

प्रो. भल्के का पहला व्याख्यान, जिसका शीर्षक थ्योरी ऑफ रस इन भारत नाट्यशास्त्र था, नाट्यशास्त्र में प्रसिद्ध रससूत्र के विश्लेषण पर केन्द्रित था। सूत्र के लक्ष्यार्थ और अर्थ पर चर्चा करते हुए प्रो. भल्के ने बताया कि भारत के अनुसार रस एक सौन्दर्य प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए एक सौंदर्य वस्तु है, जिसका आनंद लिया जाना चाहिए। उनके लिए जीवन का अर्थ आनंद में निहित है–आनंद एक कामुक नहीं है मगर एक उच्च कोटि का है। सुंदरता और उदात्त के बीच सीमांकन की कोई रेखा नहीं है मगर क्षैतिज और उर्ध्वाधर स्तरों पर उनके बीच एक निरंतरता है। दुनिया की अवधारणा, कला का चित्रण और रचना के रूप में समझने पर आधारित है, कला का उद्देश्य और रस की अवधारणा सभी इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि सौंदर्य अनुभव एक सुदंरता और उदात्त का मिलाजुला अनुभव है।

रस पर भरत के सिद्धांत का विकास उनके उत्तराधिकारियों ने कला के विभिन्न रूपों, जिनका विकास उन्होंने समय के साथ किया, पर प्रयुक्त करके किया। व्याख्यान के बाद इस पर विस्तार से चर्चा हुई। लंच के बाद के सत्र में प्रो भल्के ने नाट्यशास्त्र में भाव के सिद्धांत पर बात की। उन्होंने बताया कि अभिनवगुप्ता ने नाट्यशास्त्र पर अपनी टिप्पणी, अभिनवभारती में कहा कि उनके अंदर का जिम्मेदार पाठक पूर्व में अनुभव की गई भावनाओं की अव्यक्त छाप है। जब वे उचित विभव, अनुभव और संचारीभाव की स्पष्ट अभिव्यक्ति को पढ़ते या देखते हैं तो अव्यक्त भाव पैदा होते हैं और ऐसा आधार तैयार करते हैं, जो वे प्राप्त करते हैं। उनके सर्वव्यापक रूप में ये निजी या व्यक्तिगत गुणों–साधारणीकरण से रहित हैं। इस अवैयक्तिक अवस्था में भावनाएं हमेशा खुशनुमा होती हैं और सत्वगुणों के जरिये रस के रूप में इनका आनंद लिया जाता है। उनके अनुसार, रस एक सुझाया गया अनुभव है और यह खुद को सुझाव की प्रक्रिया के जरिये प्रस्तुत करता है–विभव, अनुभव के रूप में सुझाव के साधन हैं। रस के अनुभव की प्रकृति लोकोत्तर है। इसका अनुभव सब नहीं कर पाते हैं, बल्कि केवल कुछेक लोग ही कर पाते हैं जिनमें सह्रदयता की विशेष योग्यता होती है। ये आनंद उन लोगों में घटित होता है, जिनके पास अन्य दो गुण की तुलना अधिक प्रबल सत्व है क्योंकि जो इसे साहित्य से निरंतर प्राप्त करते हैं। यह आनंद की प्रकृति है और इसे ब्रह्मअनुभव के समान है।

प्रस्तुति के बाद इस पर चर्चा हुई । फ्रां. सिजो सब्सटियन, शोध विद्वान, दर्शनशास्त्र विभाग ने धन्यवाद भाषण दिया। कार्यक्रम का समापन 16.00 बजे किया गया।

ग. आईसीपीआर राष्ट्रीय फेलो द्वारा व्याख्यान

क्र.सं.	वक्ता का नाम	व्याख्यान स्थल	व्याख्यान का शीर्षक	तारीख
1.	प्रो. पी.के. महापात्रा, राष्ट्रीय फेलो, आईसीपीआरए 2013–2014	दर्शनशस्त्र विभाग, एचएसएस, आईआईटी, बॉम्बे	पर्सनल आइडेंटिटी एंड बॉडिली कंटिन्यूटीः ए क्रिटिक्सू ऑफ बर्नाड विलियम्स ऑन द क्राइटेरिया	29.11.2014
2.	वही	वही	कर्म, रिबर्थ एंड पर्सनल आइडेंटिटी	20.11.2014
3.	वही	आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ	ऐथिक्स, एप्लाइड ऐथिक्स एंड इंडियन थ्योरीज ऑफ मोराल्स	22.01.2015
4.	वही	आईसीपीआर शैक्षिक केन्द्र, लखनऊ	कर्म एज ए थ्योरी ऑफ रिट्रिब्यूटिव मोरालिटी	23.01.2015

XIV
आवधिक व्याख्यान

आईसीपीआर कम लागत पर भारत के अलग–अलग शहरों में युवा छात्रों बीच दर्शन का प्रचार करने के लिए विभिन्न कॉलजों में हर वर्ष आवधिक व्याख्यान आयोजित करता है। स्थानीय क्षेत्र के विरिष्ठ विद्वानों को युवा शोध छात्रों, शिक्षकों के लिए व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है ताकि उन्हें इन व्याख्यानों से लाभान्वित किया जा सकें। वर्ष 2014–15 के दौरान परिषद् ने विभिन्न जगहों पर आवधिक व्याख्यान आयोजित करने के लिए कुछ कॉलेज संस्थानों को 10,000 रु. की वित्तीय सहायता प्रदान की, जिसका विवरण नीचे दिया गया है :–

क्र. सं.	प्रस्तावक व कार्यक्रम का विवरण (यथा सूचित)	व्याख्यान का विषय, संख्या, तिथि व वक्ता का नाम (यथा सूचित)
1.	डॉ. रमा रानी, विभागाध्यक्ष, विभाग, सी.एम.पी. कॉलेज, महात्मा गांधी मार्ग–211 002,	1. नेचर ऑफ कांन्सियनेस दृ दर्शनशास्त्र प्रो. डी.एन. द्विवेदी 2. फ्रीडम,राइट्स एंड डयूटीज.. प्रो. एस. के. सेठ

	इलाहाबाद	3. आईसीटी एंड स्किल डेवलपमेंट – प्रो. के.के. भूटानी 2, 14 और 24 फरवरी, 2015
2.	डॉ. जॉन पीटर वल्लबाडोसए दर्शनशास्त्र विभाग, विजननिलायम डिग्री कॉलेज, जनापेट, विजयरारी पीओ–534 475, डब्ल्यू.बी. डीटी. आंध्र प्रदेश	1. कोनफिलिक्ट रिजोल्यूशन एड पीस मेकिंगः गांधीयन पर्सपेक्टिव. .. डॉ. शांबाशिवा प्रसाद 2. कोनफिलिक्ट सिच्युवेशन्स एंड नीड फॉर पीस.. इलुरू, डॉ. बी. शांबाशिवा प्रसाद 19 जनवरी, 2015
3.	डॉ. एस. मणिकंदन, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, अगूरचंद मनमुल जैन कॉलेज, मीनाम्बक्कम, चेन्नई–600 114	1. अंडरस्टैंगिंड ऑफ अहिंसा – ए जैन पर्सपेक्टिव .. डॉ. प्रियदर्शन जैन 2. फंडामेंटल ऑफ शैव सिद्धांत डॉ. आर. गोपालकृष्णन 3. स्वामी विवेकानंद मैसेज टू यूथ –.डॉ. एस. कृष्णन 11 फरवरी, 2015
4.	श्रीमती सुमन महाजन, एसोसिएट प्रोफेसर, एमसीएमडीएवी महिला कॉलेज सेक्टर–36 / ए, चंडीगढ़–160036	1. एक्सप्लानेशन एंड अंडरस्टैंडिंग.. प्रो. आशा मुदगिल 2. भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता –डॉ० धर्मानन्द शर्मा 3. भारतीय संस्कृति और हमारा पर्यावरण –डॉ० सुधीर बवेजा 19 फरवरी, 2015
5.	डॉ. जी. जयमाणिक्य शास्त्री, सहायक प्रोफेसर, संस्कृत और भारतीय संस्कृति विभाग, एससीएसवीएमवी विश्वविद्यालय, इनाथुर, कांचीपुरम–631 561	''नेचर एंड वैलिडिटी ऑफ ममांसा शास्त्र'' पर व्याख्यान माला 1. प्रत्यक्ष अनुभव, अनुमान और उपममा प्रमाण–एस..डॉ. जी श्रीनिवासु 2. प्रमाण–एस विज. शब्द, अर्थपट्टी एंड अनुपलब्धि ऑफ मीमांसा दर्शन .. डॉ. के. वी. एन.के. प्रसाद 27 फरवरी, 2015

6.	डॉ. अजिमोन सी.एस., सहायक प्रोफेसर, न्याय विभाग, राजकीय संस्कृत कॉलेजए त्रिपुनिथुरा, एर्णाकुलम. केरल	1. न्याय एंड अदर सिस्टम ऑफ इंडियन फिलोसफी .. डॉ. सी राजेन्द्रन 2. केन वी हेव नॉलेज एट ऑल? सम रिफ्लेक्शन ऑन इंडियन स्केपिटिकसिज्म.. प्रो. श्रीकला एम नायर 10 मार्च, 2015
7.	श्रीमती प्रभा सूद, एसोसिएट प्रोफसर, दर्शनशास्त्र विभाग, छायागांव कॉलेज, छायागांव, कामरूप जिला–781 124, असम	फिलासफीकल ट्रेडिशन ऑफ असम
8.	डॉ. अतुल मधुकारो महाजन, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, रेणुका कला महाविद्यालय, बीसा, बैंक ऑफ इंडिया के पास, कोणार्क कॉलोनी, बीसा, नागपुर–440 034, महाराष्ट्र	नॉन–नेचुरलिज्मःजी. ई मूरे
9.	डॉ. ;मेजरद्ध मदन मोहन दास, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, सलीपुर कॉलेज, पी.ओ. सलीपुर, जिला कटक–754 202, ओडिशा	1.निष्कामकर्म ऑफ भागवद गीता – स्वामी सदानंद सरस्वती। 2.इन्वायरमेंट ऐथिक्सः इट्स एवेयरनेस एंड रेलेवेंश– डॉ. बसंत कुमार दास, 2 फरवरी, 2015 और 26 मार्च, 2015
10.	डॉ. बिंदु आर., विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, श्री नारायण कॉलेज, कोल्लम– 691 001 केरल	रेलेवेंश ऑफ कर्म थ्योरी इन द प्रजेंट सोसायटी आर्ग्यूमेंट एंड आर्ग्यूमेंटेशनः इंडियन एंड वेस्टर्न पर्सपेक्टिव
11.	डॉ. बसंत कुमार दास, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, रमा देवी महिला स्वायत्त कॉलेज, भुवनेश्वर–751 022, ओडिशा	1. द बेसिक कन्सर्न ऑफ फिलोसफी – प्रो. गणेश प्रसाद दास 2.इंडियन फिलोसफीकल स्टडीज– प्रो बिजयआनंद कार 25 फरवरी, 2015
12.	डॉ. देश राज सरसवाल, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, स्नातकोत्तर महिला	1. अवर इन्वायरनमेंटः अवर रिस्पॉन्सिबिलिटी–डॉ0 सुधीर बवेजा

	कॉलेज, सेक्टर– 11ए चंडीगढ़–160 011	2. वैल्यु एंड सोसाइटी। रि–डिस्कवरिंग द प्राइमेसी ऑफ कल्चरल कान्टेक्स्ट–प्रो. गीमता मनकतला 3. विर्च्यूज इन सिकिज्म–डॉ. परमवीर सिंह, 11 फरवरी, 2015
13.	डॉ. आर. अनबजगन, सहायक प्रोफेसर, सेवासिद्धांत दर्शन, धर्म, दर्शन और मानवतावादी विचार स्कूल, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, पलकलई नगर, मदुरै. 625 021	द फिलोसफी ऑफ वेदांत॰
14.	डॉ. अमिता पांडे, एसोसिएट प्रोफेसर, ईश्वरण शरण डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद, विश्वविद्यालय, इलाहाबाद–	1. सुखवादी नीतिशास्त्र–प्रो. जे.एस तिवार 2ण प्रो. संगम लाल पाडे की ज्ञान मीमांसा– प्रो. डी.एन. द्विवेदी 3. बौद्ध दर्शन और वेदांत दर्शन– प्रो. आर.एल. सिंह 22 जनवरी और 23 फरवरी, 2015
15.	डॉ. उषा कुशवाहा, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, वसंत कन्या महाविद्यालय, कमाच्छा, वाराणसी–221 010	1. भारतीय दर्शन का स्वरूप–प्रो. राजीव रंजन 2. आधुनिक युग में भारतीय दर्शन की उपयोगिता–प्रो. देववरित चौबे 3. भारतीय परिचय विद्या–सर विलियम जोन्स की दृष्टि से–डॉ. ओमप्रकाश केजरीवाल, 18–19 फरवरी, 2015
16.	डॉ. रोहताश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, राजकीय (पीजी) कॉलेज, जींद–126 102ए हरियाणा	
17.	डॉ. भास्कर चंद्र शाहु, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, चौदवार कॉलेज, चौदवार, जिला कटक–754 071, ओडिशा	1. गांधी अप्रोच टू जस्टिस–एन एक्सरसाइज इन एप्लाइड ऐथिक्स–डॉ. पी.के. महापात्रा 2. ऐथिक्स एंड एनिमल्स–प्रो. एस.के. महापात्रा, 25 मार्च, 2015
18.	श्री सी. सुगिरधराजन, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, सेंट जोसफ कॉलेज (कला व विज्ञान), कोवूर, चेन्नई–00 128.	"रिकंसिडरिंग इंडियन फिलोसफी फॉन दर 21st सेंचुरी" 1. इंडियन फिलोसफी फरोम 21ज सेंचुरी–

		डॉ. एस. पन्नीरसेल्वम 2. इंडियन फिलोसफीःइश्यूज एंड रेलेवेंश– प्रो. जी. मिश्रा 3. इंडियन फिलोसफी एंड हयूमनिज्मःए प्रागमेटिक अप्रोच–डॉ. कृष्णन 4. इंडियन फिलोसफीः मॉडर्न, केपोस्टमॉडर्न एंड पोस्टमॉडर्न– डॉ. के. जोशु 17 अप्रैल, 2015?
19.	श्रीमती कल्पना चौधरी, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, तिहु कॉलेज–781 371, जिला नलबाड़ी, असम	शंकरदेव फिलोसफी ऑफ कांनिसयनेश – डॉ. निलिमा शर्मा 18 मार्च, 2015
20.	डॉ. राजश्री रॉयए विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, लक्ष्मीबाई कॉलेज, (दिल्ली विश्वविद्यालय), अशोक विहार फेज–III, दिल्ली–110 052.	द सिग्नीफिकेंस ऑफ बुद्धिज्म इन टूडेज वर्ल्ड – प्रो. एच.एस. प्रसाद और प्रो. एच.पी. गंगनेगी, 2 फरवरी, 2015
21.	डॉ. असंगपोए विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, चेतगंज, वाराणसी–221 001	1. फिलोसफी एंड दर्शन–प्रो. पी. के. मुखोपाध्याय 2. फिलोसफी एंड द वैल्यु ऑफ लाइफ– प्रो. एस.पी. व्यास 3. चाइनीज बुद्धिज्म–प्रो. ए. के. राणा 4. 17 व 20 अप्रैल, 2015
22.	श्री स्वपन चंद्रा बर्मन, दर्शनशास्त्र विभाग, कूच बिहार कॉलेज, 2 नंबर, कालीघाट रोड, कूच बिहार–736 101	1. ट्रूथ, लैंगउग्टे एंड रिएलिटी–प्रो. कांति लाल दास 2. द डिफरेंस बिटवीन इंडियन एंड वेस्टर्न लॉजिक–प्रो. अमल कुमार हरह 18–19 फरेवरी, 2015
23.	प्रो. जे.एस. दुबेए विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, राजकीय हमिदिया कॉलेज, भोपाल–16, (म. प्र.)	1. संस्कृति एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा. –– डा० अरुण कुमार सिंह 2. प्राचीन भारत में मानवाधिकार का विधिक स्वरूप– –– डा० अरुण कुमार सिंह 30 दिसंबर, 2014
24.	डॉ. चंद्रिमा भरए सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, आशुतोष कॉलेज,	जैंडर एंड आइडेंटिटी। फेमिनिस्ट एपिस्टीमोलॉजी

	92 एस.पी. मुखर्जी रोड, कोलकाता 700 026,	
25.	डॉ. तृप्ति धर, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, विवेकानंद कॉलेज, 269, डायमंड हार्बर रोड, ठक्करपुर, कोलकाता – 700 063.	1. न्याय कान्सेप्ट ऑफ नॉलेज– डॉ. गंगाधर कार 2. द कान्सेप्ट ऑफ नॉलेज–डॉ. प्रोयश सरकार 17 अप्रैल, 2015
26.	डॉ. सी.वी. बाबूए सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, जाकिर हुसैन कॉलेज, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, नई दिल्ली– 110 002.	
27.	डॉ. कृष्णा मणि पाठकए विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–10 007.	1. रिविजिटिंग द इन्काउंटर बिटवीन इस्टर्न एंड वेस्टर्न फिलोसफीः ए व्यू फरोम फिलोसफी ऑफ साइंस–प्रो. ध्रुव राणा 12 फरवरी, 2015
28.	डॉ. बिभूति भूषण नायकए सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, प्रभात कुमार कॉलेज, कोंटई पूर्बा मिदिनीपुर– 721 401, पश्चिम बंगाल	1. शब्द एज ए सोर्स ऑफ नोइंगः सम रिफ्लेक्शन्स –प्रो. रघुनाथ घोष 2. द माध्यमिक पोलमिक–एगेन्सट प्रमाण–प्रमेय डिचोटॉमी– डॉ. दिप्यन पटनायक 4 मार्च, 2015
29.	डॉ. एम. वासुगी, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, पचियाप्पा कॉलेज, चेन्नई– 600 030.	1. फिलोसफीकल एनेलिसिस ऑफ एस्ट्रोलॉजी एंड एस्ट्रोनॉमी–पवालार प, सेंथामिल सेल्वम ची गुवेरे 2. फिलोसफिजिंग एंड क्रिटिसाइजिंग– डॉ. के.एल. माधवन 3 और 12 मार्च, 2015
30.	डॉ. बीना इस्साकए विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्रए केरल विश्वविद्यालय, थिरूवनंतपुरम	1. इपिस्टीमोलॉजीकल डाइमेंशन्स ऑफ फिलोसफी –डॉ. के.एस. राधाकृष्णन 2. साइबर ऐथिक्सःप्रोब्लम्स एंड पर्सपेक्टिव्स– श्री एन. विनय कुमारन नायर 18–19 मार्च, 2015
31.	डॉ. कोयल घोष और पंकज कांति सरकारए सहायक प्रोफेसर,	1ण इंडियन फिलोसफी एंड इट्स रेलेवेंश टूडे –प्रो आर. एन. घोष

	दर्शनशास्त्र विभाग, डेब्रा थाना शहीद खुदीराम स्मृति महाविद्यालय, पश्चिम मिदनिपुर, गंगरामचक, चकश्यामपुर,	2. प्रिडिक्टेट लॉजिक– श्री रामदास सरकार जिला–पश्चिम मिदनिपुर 721 124 पश्चिम बंगाल 3. इवोल्यूशन एंड डेवलपमेंट ऑफ मोरालिटी–डॉ. लक्ष्मीकाति पधी 4. इंपोर्टेंश ऑफ हेटयवस इन इंडियन लॉजिक –श्रीमती शुक्ला चक्रवर्ती 19–20 फरवरी, 2015
32.	डॉ. टी.के. बद्रीनाथ, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद कॉलेज (स्वायत्त) मायलापुर, चेन्नई–600 004	1. एलीमेंट्स ऑफ इंटीग्रेशन इन हिंदुज्म– डॉ. सी.वी. राधाकृष्णन 2. बिहेव्यिर डिस्ऑर्डर एंड थैरेपीज– डॉ. एं अप्पन रामानुजन, 13 मार्च, 2015
33.	श्रीमती पुण्नमोनी बरूआए सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, हॉफलॉग राजकीय कॉलेज, हॉफलॉग दीमा हसोए–788 819, असम	1. पुरुषार्थः द इंडियन क्वेस्ट फॉर वैल्यु–प्रो. अदरूसुपल्ली नटराजू 24 फरवरी, 2015
34.	डॉ. रमाकांत नंदाए विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्रए गोदावरीज महाविद्यालय, बनपुर, जिला–खुर्धा–752 031,	''पेशेवर नैतिकता'' पर सेमिनार। 1. प्रोफेशनल ऐथिक्स ऑफ डॉक्टर्स–प्रो. एच. शाहु 2. प्रोफेसल ऐथिक्स–ए स्टडी ऑन इउथेंशिया –सुश्री ओडिशा अनन्या दास, 19 फरवरी, 2015

कुछ अन्य अनुदानग्राहियों से रिपोर्ट अभी प्राप्त नहीं हुई है, अतः इनका उल्लेख इसमें नहीं किया गया है।

आईसीपीआर द्वारा प्रायोजित आवधिक व्याख्यानों की रिपोर्ट का नमूना

दर्शनशास्त्र विभाग, प्रभात कुमार कॉलेज, पूर्ब मिदनिपुर (पश्चिम बंगाल) ने कॉलेज के सेमिनार हॉल में 4 मार्च, 2015 को ''भारतीय दर्शन में प्रमाण की अवधारणाः एक पुनर्मूल्यांकन'' पर आईसीपीआर प्रायोजित आवधिक व्यख्यान आयोजित किया। इस कार्यक्रम में हमारे कॉलेज के संकाय सदस्यों और छात्रों के अलावा, विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के दो सौ से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। दो अलग–अलग विश्वविद्यालयों के दो नामी

दार्शनिकों यथा (1) डॉ. रघुनाथ घोष, दर्शनशास्त्र विभाग, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय, दार्जलिंग (पश्चिम बंगाल और (2) श्री दिप्यन पटनायक, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय (पश्चिम बंगाल) को संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम सुबह 10.30 बजे दर्शनशास्त्र विभाग, प्रभात कुमार कॉलेज के छात्रों के उदघाटन गीत के साथ शुरू हुआ। इसका उदघाटन मुख्य अतिथि पूर्व प्रोफेसर और शासी निकाय के सदस्य, प्रो. अनूप कुमार मैती ने किया और डॉ. अमित कुमार डे, कॉलेज के शिक्षक प्रभारी ने स्वागत भाषण दिया और कार्यक्रम की बुनियादी जानकारी डॉ. बिभूति भूषण नायक, कार्यक्रम के संयोजक एवं आयोजक ने दी। प्रो. रघुनाथ घोष ने ''शब्द एज ए सोर्स ऑफ नोइंगःसम रिफ्लेक्शन'' विषय पर बेहद उम्दा और विचारप्रेरक व्याख्यान दिया। प्रो. घोष ने भारतीय दर्शनशास्त्र के विभिन्न स्कूलों द्वारा स्वीकृत जानने के विभिन्न स्रोत और ज्ञान के मान्य स्रोत के रूप में इसके औचित्य के बारे में बताने का प्रयास किया। उन्होंने मुख्य रूप से मौखिक कथन या प्रमाण के रूप में वैध स्रोत के रूप में शब्द को स्वीकार करने के पक्ष में नायिका के तर्कों: इसकी संरचना, वर्गीकरण, कार्यप्रणाली और ठोस उदाहरणों के साथ अवधारणा के विश्लेषण पर फोकस किया, जिनकी हमारे स्नातक के छात्रों द्वारा सराहना की गई और ये उनको आसानी से समझ आए। प्रो. दिप्यन पटनायक ने ''द माध्यमिक पोलमिक एगेन्स्ट प्रमाण–प्रमिया डिचोटॉमी'' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। प्रोफेसर पटनायक ने माध्यमिक दार्शनिक, नागार्जुन द्वारा प्रमाण प्रमेय विरोधाभास के खिलाफ उठाई गई आपत्तियों पर प्रकाश डाला, जिन्हें दर्शनशास्त्र के अन्य स्कूलों द्वारा स्वीकार किया गया है। सबसे पहले उन्होंने सरल शब्दों में दो अवधारणाओं यथा प्रमाण और प्रमेय पर चर्चा की और भारतीय दार्शनिकों के विभिन्न शास्त्रीय दृष्टिकोणों का पालन करके इनकी परिभाषा दी तथा भारतीय ज्ञानमीमांसा के लिए इसकी प्रासंगिकता बताई। विभागाध्यक्ष, डॉ. सौम्या कांति सिन्हा के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ 16.30 बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ।

;डॉ. अमित कुमार डेद्ध ;डॉ. बिभूति भूषण नायकद्धए शिक्षक प्रभारी और कार्यक्रम के आयोजक, पी. के. कॉलेज कोंटाई, दर्शनशास्त्र विभाग, पी.के. कॉलेज, कोंटाई, पश्चिम बंगाल।

XV
विश्व दर्शन दिवस

यूनेस्को की घोषणा के अनुसार, सुकरात जयंती के उपलक्ष्य में 'अंतर्राष्ट्रीय दर्शन दिवस'' आमतौर पर नवंबर के तीसरे हफ्ते के किसी भी एक दिन पर मनाया जाता है। तदनुसार, परिषद् व्याख्यान कार्यक्रम, या संगोष्ठी या सेमिनार या पैनच चर्चा या कोई अन्य कार्यक्रम आयोजित करके इस दिन को मनाने के लिए दर्शनशास्त्र के सभी विभागों को पत्र भेजता है। निम्नलिखित संस्थानों ने वर्ष 2014–15 के दौरान, परिषद् से 20,000 रु. की वित्तीय मदद से इस दिन को मनाया।

क्र.सं.	**यथा सूचित प्रस्तावक का विवरण और कार्यक्रम की तारीख**	**यथा सूचित व्याख्यान का विषय और वक्ता का नाम**
1.	डॉ. एस. वीरपांडियन, प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, अन्नामलाई	सोशल एं पॉल्टिकल फिलोसफी

	नगर. 608 002 चिदम्बरम, तमिलनाडु	
2.	डॉ. प्रभु वेंकटरमन, एसोसिएट प्रोफेसर, एचएसएस विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी,. 781 039ए असम	1. द इन्फ्लुऐंश ऑफ फिलोसफी इन डे टू डे लाइफ–प्रो. शिबनाथ शर्मा 1 दिसंबर, 2014
3.	डॉ. ई.के. राजमोहन, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, महाराजा कॉलेज, एर्णाकुलम	''नैतिकताः नए परिप्रेक्ष्य'' पर एक दिवसीय सेमिनार। 1. प्रीजंबल ऑफ कांस्टीटयूशनःऐथिक्स एंड बियोंड–श्री कालीश्वराम राज 2. मेडिकल ऐथिक्सः ऐथिकल इश्यूज इन इयूथांसिया – डॉ. के. एस. डेविड 3. द फिलोसफी ऑफ वेदांत एंड इंडियन इथोस–डॉ. पी.वी रमनकुट्टी 4. इन्वायरमेंटल ऐथिक्स–ए ग्लोबल पर्सपेक्टिव–डॉ श्रीकुमार 5. ऐथिक्स ऑफ सिविल डिस्ओबिडेंस–श्री दलीप राय 30 दिसंबर, 2014
4.	डॉ. ई. आनंद विजयसारथी, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, मिशन विवेकानंद कॉलेज, मायलापुर चेन्नई–600 004	''क्रिटिकल थिंकिंग एंड फिलोसफिजाइजिंग'' पर एक दिवसीय सेमिनार 29 नवंबर, 2014
5.	प्रो. नव कुमार हांडीक, निदेशक, प्रभारी, दर्शन अध्ययन केन्द्र, डिब्रुगढ़, विश्वविद्यालय, डिब्रुगढ़, असम– 786 004	वैल्यु इंबोडीड इन इंडियन कल्चर 4 दिसंबर, 2014
6.	डॉ. कंचन महादेवन, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, मुंबई विश्वविद्यालय, जनेश्वर भवन, विद्यानगरी कैंपस, कलीना, सांतुक्रुज (पूर्व), मुंबई – 400 098	''कंपेरेटिव एंड क्रिटिकल स्टडी ऑफ फिलोसफीकल सिस्टम्स/मूवमेंट्स एंड रिलीजन्स'' पर सेमिनार 1. डॉ. विनय कुमार 2. डॉ. विलियम इडग्लास 3. डॉ. वी.एम. पुराणिक 4. डॉ. सी.डी. सेब्सटीयन 8 दिसंबर, 2014

7.	डॉ. मो. सिराजुल, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र और धर्म, विश्व भारती, शांतिनिकेतन–731 235	''मेटाफिजिक्स इन इंडियन फिलोसफी एंड रिलीजन'' पर एक दिवसीय सेमिनार 27 नवंबर, 2014
8.	डॉ. एस. गुरू उर्फ वासुकी, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा, वी.ओ. चिदम्बरम कॉलेज ऑफ शिक्षा, थुथुकुडी–628 008 तमिलनाडु (राज्य)	''थ्योरीज ऑफ ट्रूथ एंड नॉलेज'' पर सेमिनार। 1. ट्रूथफुल टीचर एंड लर्नर– फ्रां. डॉ. कुमार राज 2. नॉलेज बेस्ड सोसाइटी–श्री हनुमंतराव 3. नॉलेज एंड ट्रूथ फॉर हैप्पी लाइफ– डॉ. वी थमोधरन 4. इक्विटी इन एजुकेशन–डॉ. ए फ्रांसिस 23 दिसंबर, 2014
9.	डॉ. सोहनपाल सिंह आर्य, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, गुरूकुल, कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, (उत्तराखण्ड)– 249 404	बेसिक वैल्यू इमबोडीड इन इंडियन कल्चर एंड दियर रेलेवेंस टू नेशनल रिकंस्ट्रक्शन
10.	डॉ. हरीशचंद्र गोविंद नवाले, दर्शनशास्त्र विभाग, सावित्रीबाई फूले पूना विश्वविद्यालय, गनेशकेहिंद रोड, पूना– 411 007.	1. बिजनस ऐथिक्स। 2. प्रोफेशनल ऐथिक्स 3. मैनेजमेंट ऐथिक्स
11.	डॉ. अमल कुमार हर्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, कूच बिहार पंचानन बर्मा विश्वविद्यालय, केन्द्रीय किसान हॉस्टल, यू.बी.के.वी, पी.ओ पुंडुबाड़ी, जिला–कूच बिहार–736 165 पश्चिम बंगाल	''ट्रूथ एंड नॉलेजः ए ईस्ट–वेस्ट पर्सपेक्टिव'' पर सेमिनार 24 नवंबर, 2014
12.	डॉ. मेयिहो, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, असम डॉन बॉस्को विश्वविद्यालय, एयरपोर्ट रोड, अजरा, गुवाहाटी– 781 017,असम	1. रीजन, नोरमेटिविटी एंड द फिलोसफीकल रिस्पोंसीबिलिटीः ए रिन्यूड कॉल टू एल्टरिटी–प्रो. प्रसनजीत बिश्वास 2. क्वेस्ट फॉर ए प्लेस ऑफ वन्स ओनः लोकेटिंग ऐथिक्स इन द ऐज ऑफ ग्लोबललाइजेशन–प्रो. अर्चना बरूआ 28 नवंबर, 2014

13.	डॉ. रजनी सिन्हा, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, मूलजी जेठा कॉलेज, जलगांव–425 002	प्रोब्लम ऑफ इंडक्शन ऑफ इंडियन इपिस्टीमोलॉजी–प्रो. मीनल कातर्निकेर 9 दिसंबर, 2014
14.	डॉ. श्यामला के., सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, पयान्नूर क्षेत्रीय केन्द्र, ईदात, पो. ओ., प्यान्नूर, कन्नूर–670 327	एनालिटिकल ट्रेंड्स इन ईस्टर्न एंड वेस्टर्न थॉटः ए क्रिटिकल एप्रेजल–डॉ के. श्रीनिवास 12 दिसंबर, 2014
15.	डॉ. नीलम कुमारी, वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, एस.एम. कॉलेज, भागलपुर, टी.एम. भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर–812 001.	1. सोशल फिलोसफी ऑफ महात्मा गांधी–डॉ उषा सिन्हा 2. फिलोसफी एंड सोशल रिकंस्ट्रक्शन –प्रो. रामजी सिंह 3. सेक्युलरिज्म एंड इंडियन सोसाइटी–प्रो. अमरनाथ झा 4. अध्यात्म एवं विज्ञान–प्रो० शैलेश कुमार सिंह 22 नवंबर, 2014
16.	डॉ. अमरनाथ झा, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, एल.एन. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा–846 008, बिहार	1. बेसिक वैल्युज ऑफ इंडियन कल्चर 2. मिडिल पॉथ ऑफ बुद्धिज्म एंड इट्स रेलेवेंस टू नेशनल रिकंस्ट्रक्शन 3. बेसिक वैल्यु इम्बीडिड इन उपनिषद एंड इट्स रेलेवेंस टू नेशनल रिकंस्ट्रक्शन 4. प्रेक्टीकल वेदांत ऑफ स्वामी विवेकानंद एंड नेशनल रिकंस्ट्रक्शन
17.	श्रीमती सुमन बेरा, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र एवं जीवन विभाग–विश्व, विद्यासागर, विश्वविद्यालय, मिदनापुर– 721102, पश्चिम बंगाल	1. ऐथिक्स, कल्चर एंड ग्लोबललाइजेशन–प्रो. एन.एन. चक्रवर्ती 2. अपोनेर डी रोचिली रे की ई–प्रो. सोमनाथ चक्रवर्ती, 27 नवंबर, 2014
18.	श्री देवरथ मोरंग, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, बिश्वनाथ कॉलेज, बिश्वनाथ चाराली, सोनितपुर–784176, असम	फिलोसफी ऑफ मैन एंड इन्वायरमेंट

19.	श्रीमती मेलोडी लाल्नुसंगी दरलोंग, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, अंबेडकर कॉलेज, फटिकाराय, उनकोटि, त्रिपुरा–799 290.	''फिलोसफी ऑफ मैन एंड इन्वायरमेंट'' पर क्षेत्रीय सेमिनार, 27 दिसंबर, 2014
20.	डॉ. सुचित्रा दास, संयोजन जैन चेयर, उत्कल संस्कृति विश्वविद्यालय, सरदार पटेल हॉल, कांपलेक्स, यूनिट.II, भुवनेश्वर–751 009.	20 नवंबर, 2014
21.	डॉ. बी.आर. शांता कुमारी, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, पुदुचेरी विश्वविद्यालय, पुदुचेरी–605 014.	1. इंडियन फिलोसफी एंड द फ्यूचर ऑफ साइकोलॉजी–डॉ. मैथीज्स कोर्नेलिसन 21 नवंबर, 2014
22.	डॉ. एस.के. मिश्रा, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र अध्ययन स्कूल, विक्रम विशविद्यालय, उज्जैन–456 010.	''फिलोसफी इन द मॉडर्न वर्ल्ड'' पर सेमिनार, 27 जनवरी, 2015
23.	डॉ. आभा सिंह, विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र, ए.एन. कॉलेज, पटना–800 013	''ऐथिक्स ऑफ ग्लोबललाइजेशन'' पर सेमिनान, 4 दिसंबर, 2014
24.	डॉ. के. गोपीनाथन, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, कालिकट विश्वविद्यालय–673 635	सब्जेक्ट एंड सब्सजेंस इन द न्यू सिनेमा ऑफ इंडिया, 18 नवंबर, 2014
25.	डॉ. ई.पी. मैथ्यू, विभागध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, लोयोला कॉलेज (स्वायत्त), चेनई– 600 034.	"सेल्फ एंड करप्शन'' 1. बियोंड एंड द फिनोमिनोलॉजी ऑफ ट्रांससेडेंटल सेल्फ– प्रो. वी.सी. थॉमस 2. करप्शन मार्केट–डॉ. ई.पी. मैथ्यू 20 नवंबर, 2014
26.	डॉ. पूर्बबयन झा, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, गौड़ बंगा विश्वविद्यालय, पी.आ. मोकदमपुर, जिला मालदा– 732 103, पश्चिम बंगाल	"करप्शन एंड हयूमन बिइंग्सः ए फिलोसफीकल अप्रोच'' 1. प्रो. तपन कुमार चक्रवर्ती 2. प्रो. रंजन मुखर्जी 3. प्रो. रघुनाथ घोष 23 दिसंबर, 2014
27.	डॉ. बिजय कुमार नायक, विभागध्यक्ष, दर्शनशास्त्र,	1. वैल्यु ऑफ नेचर–प्रो. सरोज कुमार मोहंती

	उदयनाथ स्वायत्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कॉलेज, एटी/पीओ अदसपुर, जिला–कटक– 754 011.	2. लाइफ एंड डेथ ऑफ मैन – प्रो. गणेश प्रसाद दास 27 दिसंबर, 2014
28.	डॉ. राजन कुमार, विभागाध्यक्ष प्रयुक्त दर्शनशास्त्र एमजेपी रूहिलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली–243 006	"प्रोब्लम्स ऑफ अविद्या इन इंडियन फिलोसफी" 28 नवंबर, 2014
29.	प्रो. श्रीकला एम. नायर, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालाडी, केरल–683 574	बेसिक वैल्यु इम्बोडीड इन इंडियन कल्चर एंड दियर रेलेवेंश टू नेशनल रिकंस्ट्रक्शन
30.	डॉ. राजीवन ई, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, राजकीय ब्रेनन कॉलेज, थलेसरी, कन्नू (जिला), केरल–670 106	1. इन्वायरमेंटःए फ्री थॉट– प्रो. टी. साभीनदरन 2. पॉलिटिकल डाइनमिक्स ऑफ इन्वायरमेंट इश्यूजःए केस स्टडी – श्री टी. गंगाधरन 3. ईको–स्प्रिच्युलिटिज्म एंड ईस्टर्न फिलॉसफी – डॉ. एम. रामाकृष्णन। 27 नवंबर, 2014 ?
31.	डॉ. श्रीप्रकाश पांडे, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र एवं धर्म, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी. 221 005	ऐथिक्स ऑफ ग्लोबललाइजेशन।
32.	डॉ. शुधा चौधरी, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी कॉलेज, मोहनलाल शुक्ला विश्वविद्यालय, उदयपुर–313001	"फिलोसफी सोसाइटी एंड फिलोसफर" पर राज्य स्तरीय कार्यशाला 1ण अंडरस्टैंडिंग मैन– प्रो. भगत ओइनम। 17 व 25 नवंबर, 2014
33.	डॉ. गुरजीत सिंह, दर्शनशास्त्र विभाग, राजकीय राजेन्द्र कॉलेज, भटिंडा–151001	एप्लायड ऐथिक्सः ए स्पेशल रिफरेंस टू व्हिशल ब्लोइंग–डॉ. कुमार नीरज सचदेव 20 नवंबर, 2014
34.	डॉ. स्वागत घोष, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय, राजा राममोहनपुर, जिला–दार्जलिंग–734 013.	ऐथिक्स एंड ग्लोबललाइजेशन–डॉ. बरदा लक्ष्मी पंडा 20 नवंबर, 2014
35.	डॉ. मधुचंद सेन, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र	1. क्रिटिकल थिंकिंग एंड द फ्यूचर ऑफ द

	विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता –700 032	हयूमनिटीज–प्रो. सुप्रिया चंदौरी और प्रो. रंजन मुखोपाध्याय, 20 नवंबर, 2014
36.	प्रो. जी.सी. त्रिपाठी, निदेशक, बी.एल. भारतीय विद्या संस्थान, विजय वल्लभ जैन मंदिर, जी.टी. कर्नाल रोड, पी.ओ. अलीपुर, दिल्ली –110 036.	प्रमाण–मीमांसा इन द हिंदू–बुद्धिष्ट एंड जैन ट्रेडिशन ऑफ लॉजिक–ए कंपेरेटिव अप्रोच
37.	प्रो. डॉ. किरण बक्शी, प्राचार्च, दर्शनशास्त्र विभाग, जीसीडब्यू, गांधी नगर, जम्मू	"स्पोटर्स ऐथिक्स'' पर सेमिनार और अंतर–कॉलेज संगोष्ठी। 4 दिसंबर, 2014
38.	श्री प्राण चंद्र दास, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, बालुगांव कॉलेज, बालुगांव, डी. खुर्दा–752 030, ओडिशा	द रोल ऑफ फिलोसफी इन द चेंजिंग सोशल सीनिरियो।
39.	डॉ. अनुपम जश, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, बांकुरा क्रिश्चियन कॉलेज (बर्धवान विश्वविद्यालय से संबद्ध) पी.ओ.+जिला–बांकुरा–722101, पश्चिम बंगाल	''बेसिक वैल्युज इंबीडीड इन इंडियन कल्चर एंड इट्स रेलेवेंस टू नेशनल रिकंस्ट्रक्शन'' पर सेमिनार। 20 नवंबर, 2014
40.	डॉ. देबबंधु भट्टाचार्य, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, तिनसुकिया कॉलेज, तिनसुकिया–786 125, असम	फिलोसफी, लाइफ एंड वैल्युज–प्रो. शिबनाथ शर्मा 5 फरवरी, 2015
41.	डॉ. के. जोशु, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, तांबरम, चेन्नई–600 059, तमिलनाडु	इंटरकल्चरल फिलोसफी एंड सोशल ट्रांसफॉर्मेशन–डॉ. ई. पी. मैथ्यू। 28 नवंबर, 2014
42.	डॉ. आबिद गुलजार, सहायक प्रोफेसर (पर्शियन), केन्द्रीय एशियाई अध्ययन केन्द्र, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर–190 006, जम्मू एवं कश्मीर, भारत	''लाल डेड और नंद ऋषि''–एज टॉर्च बियरर ऑफ यूनिवर्सल ब्रदरहुड'' पर राष्ट्रीय सेमिनार 3–4 दिसंबर, 2014
43.	डॉ. आर. के. बेहरा, एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, पटकई क्रिश्चियन कॉलेज, चुमुकेडिमा, सीथकेमा–797 103	1. फिलोसफाइजिंग एंड इट्स वैल्यु– डॉ. के, एच, गोकुलचंद्र 2. सेल्फ एंड करप्शन– डॉ. तुसेम ए 27 नवंबर, 2014

44.	श्रीमती सुमन महाजन, एसोसिएट प्रोफेसर, एमसीएमडीएवी महिला कॉलेज, सेक्टर–36 / ए, चंडीगढ़–160036	1. फिलोसफी एंड लिटरेचर– प्रो. एस.पी. गौतम 2. आर्टः द मेडिसिन फॉर द करप्ट कन्सियसनेश–डॉ. शिवानी शर्मा 3. अंडरस्टैंडिंग फेमिनिस्ट पॉल्टिकल फिलोसफी इन द ट्रोबल्ड टाइम्स ऑफ नियो–लिब्रल ग्लोबललाइजेशन– श्री लल्लन बघेल 4. ए ब्रीफ हिस्टोरिकल इपिस्टीमोलॉजी ऑफ अंडरस्टैंडिंग ग्लोबललाइजेशन– प्रो. राजीव लोचन 20–21 नवंबर, 2014
45.	प्रो. राकेश चंद्रा, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ–226 007.	बुद्धिष्ट ऐथिक्स एंड इट्स रेलेवेंश– डॉ. प्रदीप गोखले 20 नवंबर, 2014
46.	डॉ. सुधाकर जैली, संयोजक, दर्शनशास्त्र विभाग, उत्तकल विश्वविद्यालय, वाणी विहार, भुवनेश्वर–751 004, ओडिशा	वेदांत, पंचरात्र और सक्त समहित के सभी क्षेत्रों में 9 व्याख्यान

कुछ अनुदानग्रहियों से रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है, अतः इसमें उनका उल्लेख नहीं किया गया है।

XVI
पुस्तक अनुदान 2014–15

क्र. सं.	प्राप्तकर्ता का नाम और पता
1	अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र अध्ययन केन्द्र, डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय, डिब्रुगढ़.786004
2	विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, रामकृष्ण मिशन, विवेकानंद कॉलेज, मायलापुर, चेन्नई–600004
3	विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालाडी, पी.ओ. एर्णाकुलम जिला, केरल –683574
4	विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, महाराजा कॉलेज, एर्णाकुलम–682011
5	विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

6 सचिव, वडके मधम ब्रह्सस्वम वैदिक अनुसंधान केन्द्र, त्रिसूर–680001, केरल

7 अध्यक्ष, गुरू गोविंद सिंह धर्म अध्ययन केन्द्र, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला –147002

8 उपकुलपति, कूच बिहार पंचानन बर्मा विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल–736165

9 प्रमुख, तुलनात्मक द्रविड़ साहित्य और दर्शन, द्रविड़ियन विश्वविद्यालय, कुप्पम–517425 (आन्ध्र प्रदेश)

10 सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, सीधो कान्हो बिरशा विश्वविद्यालय, पुरूलिया, पश्चिम बंगाल

11 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, आईसीएफएआई विश्वविद्यालय, छठा माले सोविमा ग्राम, कोहिमा रोड़, दीमापुर, नागालैंड–797112

12 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, असम डॉन बास्को विश्वविद्यालय, गुवाहाटी –781017

13 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, राजकीय ब्रेनन कॉलेज, थालास्सेरी, कन्नूर जिला, केरल –670106

14 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, मूलजी जैथा कॉलेज, जलगांव–600004

15 विभागाध्यक्ष, तर्कशास्त्र अैर दर्शनशास्त्र, उदयनाथ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्वायत्त कॉलेज, प्राची जननपिथा, पी.ओ.–अदसपुर जिला, कटक –754011

16 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, बांकुरा क्रिश्चियन कॉलेज, पीओ+जिला बांकुरा–722101 (पश्चिम बंगाल)

17 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, शीतलकुची कॉलेज, कूच बिहार, पश्चिम बंगाल–736158

18 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, छायागांव कॉलेज, छायागांव, जिला कामरूप (असम)–781124

19 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, गोलपाड़ा कॉलेज, गोलपाड़ा, असम

20 प्राचार्य, पटकई क्रिश्चियन कॉलेज, चुरूकिडिमो, नागालैंड–797103

21 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, रेणुका कला महाविद्यालय, मनेवाड़ रोड, बीसा, बैंक ऑफ इंडिया के पास, नागपुर

22 प्राचार्य, डेबरा थाना शहीद खुदीराम स्मृति महाविद्यालय, पी.ओ. चकश्यामपुर जिला–पश्चिम मिदिनापुर–721124 (पश्चिम बंगाल)

23 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, 10/18ई/1 होथर रोड़, जॉर्ज टाउन इलाहाबाद

24 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, ए.एम. जैन कॉलेज, मीनाबक्कम, चेन्नई–600114

25 विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, बालुगांव कॉलेज, बालुगांव जिला–खोर्धा–752030 (ओडिशा)

पुस्तक अनुदान प्राप्त पुस्तकों का विवरण

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	पुस्तक का मूल्य
1.	नेचुरल साइंस ऑफ द एन्साइंट हिंदू	200 रु.
2.	सत्यविषयक अनविष्का	250 रु.
3.	फिलोसफकल रिफ्लक्शन	300 रु.
4.	इंडियन इंटालेक्च्युअल ट्रेडिशन	420 रु.
5.	टूवार्ड्स क्रिटिक्यू ऑफ कल्चरल रीजन	225 रु.
6.	ए स्डटी ऑफ पातांजलि	225 रु.
7.	फिलोसफी एंड रिलीजन	360 रु.
8.	कर्मा कस्टोडियन एंड रिट्रिब्यूटिव मोरालिटी	400 रु.
9.	ए क्रिटिकल सर्वे ऑफ फिनोमिनोलॉजी एंड एक्जिटेंटियलिज्म	425 रु.
10.	द प्राइमेसी ऑफ पॉल्टिकल	250 रु.
11.	फिनोमिनोलॉजी एंड इंडियन फिलोसफी	380 रु.
12.	टोलरेंस	150 रु.
13.	द फिलोसफी ऑफ तमिल सिद्ध	227 रु.
14.	सोशल एक्शन एंड नॉन–वॉयलेंस	125 रु.
15.	माध्यमिक शून्यता	250 रु.
16.	द फिलोसफी ऑफ यश देव शल्य	600 रु.
17.	अंतर्यपति	350 रु.
18.	विटजनेस्टीनःन्यू पर्सपेक्टिव	300 रु.
19.	फिलोसफी ऑफ वैल्यु ओरिएंटिड एजुकेशन	325 रु.
20.	गणेश ऑन द उपाधि	250 रु.
21.	गुड टीचर एंड गुड प्यूपिल	600 रु.
22.	फिलोसफी ऑफ साइंस, फिनोमिनोलॉजी एंड अदर एश्येज	800 रु.
23.	बुद्धिष्ट थॉट एंड क्लचर इन इंडिया	300 रु.
24.	परंपरा	450 रु.

25.	पी.जे. चौधरी ऑन मल्टी एस्पेक्ट्स ऑफ फिलोसफी	700 रु.
26.	डिस्कशन एंड डिबेट इन इंडियन फिलोसफी	450 रु.
27.	हीट्रोक्लिटिक फ्रागमेंट्स एंड हेरेटिकिल कमेंट	250 रु.
28.	द फिलोसफी ऑफ सुरेश चंद्रा	400 रु.
29.	प्रकरण पंसिक्का	750 रु.
30.	नारायण गुरू	350 रु.
31.	फिलोसफीकल पेपर ऑफ प्रो. जे.एन. चुब	650 रु.
32.	एन एनेलिसिस इन शंकर वेदांत	240 रु.
33.	ऑथर एंड सब्जेक्ट इंडेक्स ऑफ जेआईसीपीआर वॉल्यूम 1.ग्ग	335 रु.
34.	फिलोसफी, कल्चर एंड वैल्यु	280 रु.
35.	द सेंट्रल प्रोबलम्स ऑफ भतृहरि फिलोसफी	530 रु.
36.	इंटर सिविलाइजेशन डायलॉग ऑफ पीस	435 रु.
37.	ट्रेडिशन एंड ट्रूथ	490 रु.
38.	ऐथिक्स, लैंगवेज एंड ट्रेडिशन	550 रु.
39.	रसिया लुक्स एट इंडिया	700 रु.
40.	गांधी एंड एप्लायड स्प्रिटच्युलिटी	895 रु.
41.	इंप्लीकेशन्स ऑफ द फिलोसफी ऑफ कांत	695 रु.
42.	इन्हेबिटिंग हयूमन लैंगवेज्सः	450 रु.
43.	अद्वैतः ए कन्टमपोरेरी क्रिटिक्यू	695 रु.
44.	बिटवीन फेमिनिटी एंड फेमिनिज्म	600 रु.
45.	नगरीकी पलाटून की पोलटिया का हिंदी अनुवाद	900 रु.
46.	अद्वैत मेटाफिजिक्स	425 रु.
47.	फिलोसफी ऑफ लाइफ	400 रु.
48.	लैंगवेज, नॉलेज एंड ओंटोलॉजी	225 रु.
49.	रिसेंट डेवलपमेंट ऑफ एनेलिटिक फिलोसफी	650 रु.
50.	न्यायअभ्यासवृत्तिका	625 रु.

51.	न्यायवृत्तिकातात्पर्यपरिशुधि	680 रु.
52.	मीमांसामंजरी	375 रु.
53.	गौतमियाअन्यदर्शनम	460 रु.
54.	झानगर्भ कमेन्टरी ऑफ जस्ट मैटरे	250 रु.
55.	कौंडभट्टा	300 रु.
56.	लैंगवेज, टेस्टीमनी एंड मीनिंग	250 रु.
57.	द फिलोसफी ऑफ जी. आर. मल्कानी	375 रु.
58.	फंडामेंटल ऑफ लॉजिक	450 रु.
59.	रियलिज्मःरिस्पॉस एंड रिएक्शन्स	850 रु.
60.	नॉलेज, ट्रूथ एंड रियलिज्म	250 रु.
61.	पकसता	350 रु.
62.	द पैराडॉक्स ऑफ बीइंग हयूमन	350 रु.
63.	द नेचर ऑफ फिलोसफी	450 रु.
64.	ए ओ नागा वर्ल्ड व्यू	625 रु.
65.	न्यायदर्शन (न्यायसूत्र–न्यायभाष्यद्ध	1050 रु.
	योग, प्रत्येक प्राप्तकर्ता के लिए	**28897 रु.**

XVII
आईसीपीआर लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड 2014–15

लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड कार्यक्रम 27 नवंबर, 2014 को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वारणसी में आयेजित किया गया था प्रो. मृणाल मिरी, अध्यक्ष, आईसीपीआर ने अवार्ड कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम दीप प्रज्जवलन और मंगलाचारण के साथ विश्वविद्यालय के 'कुलगीत' के साथ शुरू हुआ। प्रो. श्री प्रकाश पांडे, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र एवं धर्म ने स्वागत भाषण दिया। अध्यक्ष, कला संकाय और छात्रों ने गौरव वचन सुनाए और प्रो. ए. के. चटर्जी का यशगान किया। आईसीपीआर द्वारा तैयार किया गया प्रशस्ति पत्र प्रो. राकेश चंन्द्रा ने पढ़ा। प्रख्यात और वरिष्ठ विद्वान, प्रो. रामा शंकर त्रिपाठी ने अशोक कुमार चटर्जी को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया, इसके साथ उन्हें एक शाल और 1 लाख रु. का चेक भी भेंट किया गया। इसके बाद, प्रो. ए.के. चटर्जी ने चेतना और दर्शन पर संक्षेप में अपनी बात बड़ी ही सहजता से रखी।

प्रो. मृणाल मिरी ने अध्यक्षीय भाषण दिया और इसके बाद प्रो. एम.पी. सिंह, सदस्य सचिव, परिषद ने धन्यवाद प्रस्ताव पढ़ा।

(प्रशस्ति पत्र)

प्रोफेसर अशोक कुमार चटर्जी को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया जाता है

बौद्ध धर्म पर सर्वत्र प्रशंसित और उत्कृष्टता के पर्याय माने जाने वाले प्रो. ए.के. चटर्जी शानदार अकादमिक करियर के परिणामस्वरूप अध्यापन के क्षेत्र में आए। वे दर्शनशास्त्र विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के तर्कशास्त्र और विश्लेषणात्मक दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर के पद से सेवानिवृत्त हुए। योगाकरा की समझ में उनका योगदान आधुनिक भारतीय दार्शनिक विद्वत्ता के इतिहास में अद्वितीय है। प्रोफेसर डेविड जे, कपपहनाज ने उनके यज्ञोकरा आदर्शवाद पर कहा है ''अशोक कुमार चटर्जी ने योज्ञाकरा के कुछ महत्वपूर्ण और विस्तृत आयाम प्रस्तुत किए हैं। उनकी कृति, योज्ञाकरा आदर्शवाद को दुर्भाग्य से उतना प्रचार नहीं मिल पाया, जितना कि उनके अध्यापक के काम को मिला (टी.आर.वी मूर्ति का द सेंट्रल फिलोसफी ऑफ बुद्धिज्म)। हालांकि मूर्ति के माध्यमिक दर्शन से किसी भी तरीके से कम नहीं है।'' उनके दार्शनिक लेखन का महत्वपूर्ण कोष उनकी भारतीय दार्शनिक विचार की जटिल परंपरा के साथ उनकी शानदार रचनात्मक भागीदारी का चमकदार प्रमाण है।

उनका जन्म 27 नवंबर, 1925 को इलाहाबाद में एक बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने स्कूली पढ़ाई के साथ–साथ स्नातक और स्नातकोत्तर की पढ़ाई बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से की। दसवीं कक्षा केन्द्रीय हिंदू स्कूल, बीएचयू से, बीए, एमए और पीएचडी की पढ़ाई इसके दर्शनशास्त्र विभाग से की। उनका शैक्षिक रिकार्ड शानदार रहा और वे किस्मत के धनी थे कि उन्हें प्रो. टी.आर.वी. मूर्ति शिक्षक के रूप में मिलें। प्रो. चटर्जी बहुभाषी थे और संस्कृत, अंग्रेजी, बंगाली, हिंदी, जर्मन और फ्रेंच पर उनकी अच्छी पकड़ थी। उन्हें दर्शन में उनके चाचा प्रोफेसर ए. सी. मुखर्जी, दर्शनशास्त्र शिक्षक, इलाहाबाद विश्विद्यालय लेकर आए थे। उन्होंने महान प्रोफेसर टी.आर.वी मूर्ति के मार्गदर्शन में अपनी औपचारिक छात्रवृत्ति पूरी की।

वे दर्शनशास्त्र विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में 1947 से 1950 तक सयाजिराव गायकवाड

फेलो थे। प्रो. चटर्जी ने अपना अध्यापन का कार्य 1950 में आगरा विश्वविद्यालय से शुरू किया, यहीं वे दर्शनशास्त्र विभाग के प्रोफेसर भी बनें।

1963 में वे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में चले गए और 1985 में विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र और धर्म के पद से सेवानिवृत्त हुए। जिनको प्रोफेसर चटर्जी का व्याख्यान सुनने को मिला या जिन्हें उनसे पढ़ने का सौभाग्य मिला, वे उन्हें बेहद सम्मान, श्रद्धा और प्यार से याद करते हैं।

प्रोफेसर चटर्जी की प्रकाशित कृतियां– चाहें ये वाल्यूम या छोटे ग्रंथों के रूप में हों या पत्रिकाओं के लिए लिखे गए लेख हों – विद्वता के शानदार प्रमाण और विश्लेषणात्मक प्रयोग और सटीक दार्शनिक अंतर्दृष्टि के रत्न हैं। उनकी प्रकाशित कृतियों में द योज्ञाकरा आइडियलिज्म (1962), रीडिंग ऑन योज्ञाकरा बुद्धिज्म (1971), फैक्ट्स ऑफ बुद्धिष्ट थॉट (1973) और कान्सेप्ट ऑफ साक्षी इन वेदांत (1978) शामिल हैं।

विभिन्न दार्शनिक पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके लेखों में शामिल हैंः ''कान्सेप्ट ऑफ माया'', ''द कान्सेप्ट ऑफ प्रमाण इन फिलोसफी'', ''आर इथिकल स्टेटमेंट्स नॉनकोंजनिटिव?'', ''रीजनिंग इन इंडियन फिलोसफी'', ''मेटाफिजिक्स, सब्जेक्टीविटी एंड माइथ'', ''द माध्यमिक एंड द फिलोसफी ऑफ लैंगवेज'', ''प्रतीत्यसमुत्पाद इन बुद्धिष्ट फिलोसफी'', ''आइडियलिज्म एंड एब्सोल्युटिज्म'', ''एन इंट्रोडक्शन टू योज्ञाकरा बुद्धिज्म'', ''इन्साइट एंड पराडॉक्स इन बुद्धिष्ट थॉट'', ''ट्रूथ एंड ऑब्जेक्टीविटी'', ''मोड्स ऑफ बीइंग'', ''प्रीडिकेट्स'', ''मीनिंग, यूज एंड रिफरेंस'', ''कान्सेप्ट ऑफ सरूपया इन बुद्धिष्ट फिलोसफी'', ''सूत्रतिका थ्योरी ऑफ कउसशन'', ''द कान्सेप्ट ऑफ साक्षी इन अद्वैत वेदांत'', ''टाइप्स ऑफ एब्सोल्युटिज्मः ए रिविजिटेशन'', और ''ओहाःबुद्धिष्ट थ्योरी ऑफ मीनिंग''।

प्रोफेसर चटर्जी विचारकों की परंपरा से आते हैं, जिनकी विद्ता भागीदारी शांत मगर ज्ञान के जीवन के प्रति काफी ऊर्जावान प्रतिबद्धता रही है। जनता की नजर में आना और प्रसिद्धि प्राप्त करना कभी भी उनकी इच्छा नहीं रही। उनके असाधारण योगदान को मान्यता देने और उनके मांगे बगैर उन्हें 1992 में आईसीपीआर राष्ट्रीय विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में मनोनीत किया गया था।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् प्रो. ए. के. चटर्जी, एक महान विद्वान, दार्शनिक, शिक्षक और सर्वगुणसंपन्न इन्सान को वर्ष 2014 का अपना लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड देते हुए खुद को काफी गौरवान्वित और सम्मानित महसूस कर रहा है।

XVIII
हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

परिषद् ने वर्ष 2014–15 के लिए हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया। यह पखवाड़ा परिषद् के कर्मियों की भागीदारी के साथ 17–30 सितंबर 2013 के बीच मनाया गया। इसके तहत कई प्रतियोगियों यथा, श्रुतलेख लेखन, वाद–विवाद, कविता सुनाना, निबंध लेखन आयोजित की गई, ये सभी प्रतियोगिताएं हिंदी में आयोजित की गई। इस पखवाड़े का समापन आमंत्रित अतिथियों, सदस्य सचिव और अध्यक्ष, परिषद् की उपस्थिति में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण के साथ हुआ। अतिथियों में श्री केवल कृष्ण, निदेशक, राजभाषा, और श्रीमती कृष्णा शर्मा, उप–संपादक, दैनिक हिंदुस्तान ने ''हिंदी भाषा में बच्चों का भविष्य सुरक्षित है?'' विषय पर अपनी बात रखी। श्री अनिल कुमार सिंह, मुख्य अतिथि ने भाषा की सहजता एवं सरलता पर अपना व्याख्यान दिया। वाद–विवाद प्रतियोगिता का विषय 'बच्चों के फैसलों में अभिभावकों को हस्तक्षेप करना चाहिए अथवा नहीं' था।

मुख्य कार्यालय द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान निम्नलिखित कर्मियों को पुरस्कार प्रदान किए गएः

1	एमटीएस कर्मियों के लिए सुलेख पद प्रतियोगिता	निम्नलिखित एमटीएस कर्मचारी विजेता रहेः क. श्री गणेश चंद्र भट्ट–प्रथम ख. श्री सुनील कुमार–द्वितीय ग. जयवीर सिंह–तृतीय
2	सुलेख पद प्रतियोगिता (गैर–हिंदी क्षेत्रीय कर्मचारियों के लिए)	क. श्री पी.के. भट्टाचार्य–प्रथम ख. डॉ0 मर्सी हेलन–द्वितीय ग. सूश्री पुष्पा सदाशिवन–तृतीय
3	निबंध प्रतियोगिता (स्नातक श्रेणी के लिए)	श्री दुगेश चौहा (विशेष प्रयास के लिए)
4	निबंध प्रतियोगिता (गैर–स्नातक श्रेणी के लिए)	क. श्री राजेश धनिया–प्रथम ख. श्री गणेश चंद्र भट्ट–द्वितीय ग. श्री जगदेव सिंह–तृतीय
5	हिंदी टंकण प्रतियोगिता	क. श्री राजेश धनिया– प्रथम ख. श्री जगदेव–द्वितीय ग. सुश्री कैलाश सोनी–तृतीय
6	टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता	क. श्री राजेश धनिया–प्रथम ख. सुश्री नीता वर्मा–द्वितीय ग. श्री पी.के. भट्टाचार्य–तृतीय

7	वाग्मिता पाठ प्रतियोगिता	क. सुश्री राकेश भूषण–प्रथम ख. श्री राजेश धनिया–द्वितीय ग. श्री सुनील कुमार–तृतीय
8	कविता पद प्रतियोगिता	क. सुश्री राखा भूषण–प्रथम ख. श्री राजेश धनिया–द्वितीय ग. सुश्री नीता वर्मा–तृतीय
9	चाणक्य प्रतियोगिता	क. श्री अश्वनी मिश्रा–प्रथम ख. .द्वितीय ग. श्री सुनील कुमार–तृतीय

XIX
परिषद् के सदस्य

1. प्रो. मृणाल मिरी, अध्यक्ष (19.09.2012 से)
2. डॉ. मनेन्द्र प्रताप सिंह, सदस्य सचिव (18.11.2013 से)
3. प्रो. ए रघुरामराजु
4. प्रो. राकेश चंद्रा
5. प्रो. शैफाली मोइत्रा
6. प्रो. टी.एन. मदान
7. प्रो. प्रदीप गोखले
8. प्रो. वी. टी. सब्सटीयन
9. प्रो. वनलंघक
10. प्रो. पी.आर. भट्ट
11. प्रो. आर.पी. सिंह
12. प्रो. बी. शांबाशिवा प्रसाद
13. प्रो. संगीथा मेनन
14. प्रो. गोपाल गुरू
15. प्रो. एस.सी. दत्ता राय
16. प्रो. एच.एस. प्रसाद
17. प्रो. बासुदेव चटर्जी
18. श्री जावेद उस्मानी
19. प्रो. वी.एन. झा
20. प्रो. तंद्रा पटनायक
21. प्रो. मिहिर के. चक्रवर्ती
22. प्रो. श्रीकला एम. नायर
23. डॉ. ए.के. गोयल
24. प्रो. प्रताप भानु मेहता
25. प्रो. सैयद अब्दुल सईद
26. श्री टी. वेंकटेश, सचिव, उच्चतर शिक्षा, उत्तर प्रदेश सरकार
27. सचिव (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय)
28. वित्त सलाहकार, (माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय)

शासी निकाय के सदस्य

1. प्रो. मृणाल मिरी, अध्यक्ष (19.09.2012 से)
2. डॉ. मनेन्द्र प्रताप सिंह, (18.11.2013 से)
3. प्रो. राकेश चंद्रा
4. प्रो. शैफाली मोइत्रा
5. प्रो. प्रदीप गोखले
6. प्रो. वनलंघक
7. प्रो. गोपाल गुरू
8. प्रो. बासुदेव चटर्जी
9. प्रो. तंद्रा पटनायक (मई, 2015 में इनका देहांत हो गया है)
10. सचिव, उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
11. वित्त सलाहकार, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा, मानव संसाधन विकास मंत्रालय

अनुसंधान परियोजना समिति के सदस्य

1. प्रोफसर मृणाल मिरी, अध्यक्ष (19.09.2012 से)
2. डॉ. मनेन्द्र प्रताप सिंह, सदस्य सचिव (18.11.2013 से)
3. प्रो. राकेश चंद्रा
4. प्रो. वी. टी. सब्सटीयन
5. प्रो. पी.आर. भट्ट
6. प्रो. वी.एन. झा
7. प्रो. मिहिर कुमार चक्रवर्ती
8. प्रो. कंचन महादेवन
9. प्रो. अमिताभ दासगुप्ता
10. प्रो. जोनरडन गनेरी

वित्त समिति के सदस्य

1.	सदस्य सचिव भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् 36 तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, नई दिल्ली–110 062	अध्यक्ष
2.	निदेशक ए एंड एफ भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् 36 तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, नई दिल्ली–110 062	सदस्य सचिव
3.	प्रोफेसर वनलंघक	सदस्य
4.	सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि	सदस्य
5.	एफए, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि	सदस्य

अनुलग्नक–क

तुलन पत्र

XX
वार्षिक लेखे

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, नई दिल्ली—110062

दिनांक 31 मार्च, 2015 की स्थिति के अनुसार
तुलन पत्र

(राशि रुपए में)

पूंजीगत निधि तथा देयताए	अनुसूची	दिनांक 31 मार्च, 2015 की स्थिति के अनुसार	दिनांक 31 मार्च, 2014 की स्थिति के अनुसार
पूंजीगत निधि	1	43,080,911.78	39,929,048.48
चालू देयताएं तथा प्रावधान	2	68,444,274.07	58,426,706.07
कुल		**111,525,185.85**	**98,355,754.55**
परिसम्पत्तियां			
स्थायी परिसम्पत्तियां, चालू परिसम्पत्तियां,	3	12,796,259.54	11,961,908.74
ऋण तथा अग्रिम	4	98,728,926.31	86,393,845.81
कुल		**111,525,185.85**	**98,355,754.55**

ह0 / —
(श्रीकुमारन एस0)
लेखा अधिकारी

ह0 / —
(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)
सदस्य सचिव

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 20.06.2015

अनुलग्नक–ख

आय तथा व्यय लेखा

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, नई दिल्ली–110062

वर्ष 2014–15 के लिए आय तथा व्यय लेखा

(राशि रुपए में)

आय	अनुसूची	दिनांक 31 मार्च, 2015 की स्थिति के अनुसार		दिनांक 31 मार्च, 2014 की स्थिति के अनुसार	
		योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
प्राप्त अनुदान	5	43,186,000.00	72,404,000.00	46,351,921.00	45,411,000.00
रायल्टी, प्रकाशन आदि से प्राप्त आय	6	-	95,250.00	-	169,487.81
प्राप्त शुल्क/अभिदान	7	-	5,000.00	-	-
अर्जित ब्याज	8	27,947.00	2,292,703.00	27,197.00	1,625,770.00
अन्य आय	9	-	455,107.00	-	87,168.00
स्टॉक में वृद्धि/ (कमी)	10	-	-	-	-
कुल (क)		**43,213,947.00**	**75,252,060.00**	**46,379,118.00**	**47,293,425.81**
व्यय					
वेतन तथा वेतनेत्तर घटक व्यय	11	-	44,675,346.00	-	44,857,817.00
अन्य प्रशासनिक व्यय आदि	12	36,002,893.00	29,988,008.50	44,638,057.00	6,004,861.00
मूल्यह्रास	3	4,941,932.00	982,126.60	4,383,936.00	1,453,923.00
पूर्व अवधि के व्यय	-	-	-	12,000.00	95,105.00
कुल (ख)		**40,944,825.00**	**75,645,481.10**	**49,033,993.00**	**52,411,706.00**
अतिरिक्त आय/ (व्यय) (क–ख)		2,269,122.00	(393,421.10)	(2,654,875.00)	(5,118,280.19)
अधिशे ा शे ा राशि/ **(घाटा) पूंजीगत निधि में ले जाया गया**		**2,269,122.00**	**(393,421.10)**	**(2,654,875.00)**	**(5,118,280.19)**

ह0/–
(श्रीकुमारन एस0)
लेखा अधिकारी

ह0/–
(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)
सदस्य सचिव

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 20.06.2015

अनुलग्नक–ग

अनुसूचियां

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, नई दिल्ली–110062

तुलन पत्र के भाग के रूप में संलग्न 1 से 4 अनुसूचियां

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष	दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष
अनुसूची 1		
पूंजीगत निधि		
अथ शेष	39,929,048.48	47,702,203.67
जमा : वर्ष के दौरान अधिशेष	1,276,162.40	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियां	-	-
जमा/ (घटा) शेष निबल आय/ आय तथा व्यय लेखा से अंतरित (व्यय)	1,875,700.90	(7,773,155.19)
वर्ष के अंत में शेष	**43,080,911.78**	**39,929,048.48**
अनुसूची 2		
चालू देयताएं और प्रावधान		
क. चालू देयताएं		
1. विविध देनदारः		
क) वस्तुओं हेतु	-	923,223.92
ख) व्यय हेतु	10,341,728.07	2,776,389.15
2. अन्य देयताएंः		
क) भुगतान किए जाने वेतन तथा भत्ते	12,562,055.00	11,718,755.00

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष	दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष
ख) अंशदायी भविष्य निधि हेतु किया जाने वाला भुगतान	30,049.00	35,049.00
ग) सामान्य भविष्य निधि हेतु किया जाने वाला भुगतान	461,856.00	356,815.00
घ) एलआईसी –जीएसएलआईसी हेतु किया जाने वाला भुगतान	240.00	2,900.00
ङ) एलआईसी –एसएसएस हेतु किया जाने वाला भुगतान	-	3,465.00
च) मासिक पेंशन तथा अन्य पेशनधारी	408,586.00	338,668.00
छ) अन्य धन प्रेषण	7,500.00	7,500.00
ज) देय टीडीएस	20,213.00	49,338.00
झ) प्रतिभूति जमा राशि	12,600.00	12,600.00
ञ) भुगतान किया जाने वाला एनपीएफ	1,085,745.00	22,502.00
ट) अन्य अध्येतावृत्तियां	214,460.00	214,460.00
ठ) अन्य प्रयोजन	1,509,582.00	2,538,435.00
ड) भुगतान किया जाने वाला समयोपरि भत्ता	2,156.00	2,046.00
ढ) नई भविष्य निधि खाते पर भुगतान किया जाने वाला ब्याज	-	1,000,000.00
ण) शिशु शिक्षण भत्ते हेतु प्रावधान	150,930.00	
ख. प्रावधान		
क) उपदान	26,188,615.00	23,422,539.00
ख) छुट्टी नकदीकरण	15,447,959.00	15,002,021.00
कुल	**68,444,274.07**	**58,426,706.07**

अनुसूची–3
अचल परिसम्पत्तियां

ब्योरा	सकल ब्लॉक				मूल्यह्रास				निबल ब्लॉक		
	दिनांक 31 मार्च, 2014 की स्थिति के अनुसार	03.10.2014 तक परिवर्धन	03.10.2014 के पश्चात् परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 की स्थिति के अनुसार	दिनांक 31 मार्च, 2014 की स्थिति के अनुसार	वर्ष के लिए	वर्ष के दौरान कटौतियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 की स्थिति के अनुसार	दिनांक 31 मार्च, 2015 की स्थिति के अनुसार	दिनांक 31 मार्च, 2014 की स्थिति के अनुसार
1. भूमि	733,770.20	-	-	-	733,770.20	-	-	-	-	733,770.20	733,770.20
2. भवन	9,642,100.00	-	-	-	9,642,100.00	7,083,812.00	255,829.00	-	7,339,641.00	2,302,459.00	2,558,288.00
3. मशीनरी तथा उपकरण	3,856,182.60	-	-	-	3,856,182.60	3,069,255.00	118,040.60	-	3,187,295.60	668,887.00	786,927.60
4. वाहन	1,560,004.21	-	-	-	1,560,004.21	1,196,279.00	54,559.00	-	1,250,838.00	309,166.21	363,725.21
5. फर्नीचर तथा उपकरण	7,665,508.37	-	1,292,994.00	-	8,958,502.37	4,811,700.37	350,034.00	-	5,161,734.37	3,796,768.00	2,853,808.00
6. कार्यालय उपकरण	10,090,323.83	-	901,761.00	-	10,992,084.83	7,179,308.00	336,192.00	-	7,515,500.00	3,476,584.83	2,911,015.83
7. कम्प्यूटर / अनुषंगी उपकरण	5,319,289.50	-	507,268.00	-	5,826,557.50	5,211,091.00	217,100.00	-	5,428,191.00	398,366.50	108,199.00
8. संस्थापित विद्युतीय उपकरण	1,383,405.53	788.00	-	-	1,384,193.53	884,638.00	49,956.00	-	934,594.00	449,599.53	498,767.53
9. ग्रंथालय पुस्तकें / पत्रिकाएं	57,553,745.92	3,855,799.00	175,342.00	-	61,584,886.92	56,517,780.05	4,529,981.00	-	61,047,761.05	537,125.87	1,035,965.87
10. नलकूप तथा जलापूर्ति	383,666.00	-	-	-	383,666.00	272,224.00	12,367.00	-	284,591.00	99,075.00	111,442.00
कुल	98,187,996.16	3,856,587.00	2,877,365.00	-	104,921,948.16	86,226,087.42	5,924,058.60	-	92,150,146.02	12,771,802.14 -	11,961,909.24
दिनांक 31 मार्च, 2014 की स्थिति के अनुसार	94,648,870.16	76,415.00	3,462,711.00	-	98,187,996.16	80,388,228.42	5,837,859.00	-	86,226,087.42	11,961,908.74	14,260,641.74

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष	दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष
अनुसूची 4		
चालू परिसम्पत्तियां, ऋण तथा अग्रिम		
क. चालू परिसम्पत्तियां:		
1. हस्तगत स्टॉक		
(परिषद् द्वारा परिकलित, मूल्यनिर्धारित तथा प्रमाणित लागत के अनुसार)		
आईसीपीआर प्रकाशन का स्टॉक	6,291,441.00	6,291,441.00
जेआईसीपीआर प्रकाशन का स्टॉक	445,250.00	445,250.00
कुल	**6,736,691.00**	**6,736,691.00**
2. विविध देनदार		
क) छह माह से अधिक की अवधि तक बकाया ऋण	712,766.00	727,766.00
ख) अन्य ऋण	-	-
3. हस्तगत नकदी शेष राशि		
क) हस्तगत नकदी	29,242.62	3,773.62
ख) लखनऊ कार्यालय के पास अग्रदाय	13,527.00	13,527.00
4. बैंकों के पास शेष राशि		
अनुसूचित बैंकों में:		
क) बचत खाता		
i) स्टेट बैंक ऑफ पटियाला खाता संख्या 32319 में	3,771,344.21	4,225,846.21
ii) केनरा बैंक खाता संख्या 16377 में	38,967,049.37	30,689,842.37
iii) ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स खाता संख्या .... में	419,365.00	221,117.00
iv) यूनाईटेड बैंक ऑफ इंडिया खाता संख्या .... में	719,715.60	691,768.60
v) हस्तगत चेक	5,224,000.00	
कुल	**49,857,009.80**	**36,573,640.80**
कुल (क)	56,593,700.80	43,310,331.80

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष	दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष
ख. ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसम्पत्तियां		
1. प्राप्त की जाने वाले राशि अथवा नकदी या वस्तु के रूप में वसूल किया जाने वाला अग्रिम		
i) अन्य अग्रिम		
क) शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अग्रिम		
– शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अग्रिम (मार्च, 2002 से पूर्व)	5,884,811.01	5,708,511.01
– शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अग्रिम (अप्रैल, 2002 से मार्च, 2014 तक)	7,525,237.00	21,373,695.00
– शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अग्रिम (वर्ष के लिए)	900,000.00	291,937.00
– शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अग्रिम–दिल्ली (मार्च, 2014 से पूर्व)	3,817.00	
– शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अग्रिम– दिल्ली (वर्ष के लिए)	307,000.00	285,817.00
– शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अग्रिम– लखनऊ (वर्ष के लिए)	3,150,000.00	5,541,460.00
– शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अग्रिम– लखनऊ (मार्च, 2014 से पूर्व)	13,627,150.00	
ख) कर्मचारियों को अग्रिम		
– कर्मचारियों को पिछले वर्ष दिए गए अग्रिम	136,478.00	151,833.00
– कर्मचारियों को दिए गए अग्रिम (वर्ष के लिए)	54,450.00	125,630.00
ग) आकस्मिक अग्रिम		
– पिछले वर्ष के आकस्मिक अग्रिम	604,930.00	604,930.00
– आकस्मिक अग्रिम (वर्ष के लिए)	79,990.00	8,000.00
घ) अग्रिम – अन्य		
– अग्रिम– अन्य (मार्च, 2002 से पूर्व)	-	176,300.00
– अग्रिम – अन्य (अप्रैल, 2002 से मार्च, 2011 तक)	-	4,861,752.00
– अग्रिम– अन्य (वर्ष के लिए)	2,328,037.00	-

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष	दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष
– अग्रिम – अन्य (मार्च, 2014 से पूर्व)	2,401,606.00	
– प्रशासनिक व्यय हेतु आईसीपीआर, लखनऊ को अग्रिम	3,000,000.00	300,000.00
– प्रशासनिक व्यय हेतु आईसीपीआर, एलकेओ को अग्रिम (वर्ष के लिए)	30,000.00	778,037.00
– गांधीरामा सम्मेलन हेतु अग्रिम	-	-
– अग्रिम – अग्रदाय	400.00	
ङ) केलोनिवि– लखनऊ के पास जमा राशि	-	13,016.00
च) केलोनिवि – दिल्ली के पास जमा राशि	434,034.00	71,601.00
छ) टेलीफोन प्राधिकरणों के पास जमा राशि	127,453.00	130,487.00
ज) दिल्ली नगर निगम के पास जमा राशि	348,365.00	348,365.00
झ) ईंधन हेतु जमा राशि	10,000.00	10,000.00
ञ) पूर्वदाय व्यय	131,467.50	761,059.00
ट) एनपीएफ	1,000,000.00	-
ठ) प्रतिदाय योग्य प्रतिभूति जमा राशि	50,000.00	
कुल (ख)	42,135,225.51	41,542,430.01
कुल (क+ख)	98,728,926.31	84,852,761.81

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, नई दिल्ली–110062

आय तथा व्यय लेखे के भाग के रूप में संलग्न 5 से 12 अनुसूचियां

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
अनुसूची 5				
समूह –ञ				
प्राप्त अनुदान				
ट–I				
केन्द्र सरकार				
1) ट– I (घ) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–योजनागत–सामान्य	33,415,000.00	-	4,729,000.00	45,411,000.00
2) ट– I (ङ) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–योजनागत –पूंजीगत	3,466,000.00	-	701,000.00	-
3) ट– I (च) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–योजनागत – सामान्य अ.जा.	6,305,000.00	-	4,791,000.00	-
4) ट– I (च) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–योजनागत–सामान्य अ.ज.जा.	-	-	2,405,000.00	-
5) ट– I (क) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–गैर–योजनागत–वेतन	-	60,513,000.00	31,879,000.00	-
6) ट– I (ख) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–वेतनेत्तर पेंशन	-	11,891,000.00	-	
7) ट– I (ङ) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–योजनागत–सामान्य पूंजीगत अ.ज.जा.	-	-	180,000.00	-
2) अन्य				
1) छ– I (ङ) पूर्व अवधि हेतु समायोजन– योजनागत सामान्य	-	-	969,697.00	-
2) छ–I (छ) पूर्व अवधि हेतु समायोजन–योजनागत सामान्य अ.जा.	-	-	30,000.00	-
3) छ–I (झ) पूर्व अवधि हेतु समायोजन– योजनागत सामान्य अ.ज.जा.	-	-	450,000.00	-
4) छ–I (ट) पूर्व अवधि हेतु समायोजन–योजनागत एनईआर	-	-	42,581.00	-
5) छ– I (ड) पूर्व अवधि हेतु समायोजन– योजनागत एनईआर–अ.जा.	-	-	36,643.00	-
6) छ– I (ण) पूर्व अवधि हेतु समायोजन–योजनागत एनईआर–अ.ज.जा.	-	-	138,000.00	-
कुल	**43,186,000.00**	**72,404,000.00**	**46,351,921.00**	**45,411,000.00**

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
अनुसूची 6				
ट–IV				
1) ट–IV(ख) बिक्री से प्राप्त आय तथा रॉयल्टी–पुस्तकें	-	95,250.00	-	169,487.81
कुल	**-**	**95,250.00**	**-**	**169,487.81**
अनुसूची 7				
ट–V				
1) ट– ट(क) जेआईसीपीआर हेतु आजीवन सदस्यता	-	5,000.00	-	-
कुल	**-**	**5,000.00**	**-**	**-**
अनुसूची 8				
ट– VI				
1) ट– VI (घ) विविध प्राप्तियां– बचत तथा जमा राशियों पर प्राप्त ब्याज	27,947.00	2,292,703.00	27,197.00	1,625,770.00
कुल	**27,947.00**	**2,292,703.00**	**27,197.00**	**1,625,770.00**
अनुसूची 9				
ट– VII				
1) ख–III (क) छुट्टी वेतन हेतु अंशदान	-	67,927.00	-	-
2) ख–III (ख) पेंशन अंशदान	-	91,933.00	-	500.00
3) ट–VI (क) विविध प्राप्तियां– रेप्रोग्राफी सेवाएं	-	32,798.00	-	63,656.00
4) ट–VI (ख) विविध प्राप्तियां– ठीक न किये जा सकने वाले/ अप्रचलित हो चुके उपकरण	-	71,218.00	-	613.00
5) ट–VI (ग) विविध प्राप्तियां– कर्मचारियों को दिए गए अग्रिम पर बयाज	-	18,528.00	-	8,079.00
6) ट–VI (च) विविध प्राप्तियां– अन्य	-	161,553.00	-	14,320.00
7) ट–VI (झ) अध्येतावृत्ति हेतु फार्मों की बिक्री	-	11,150.00	-	-
कुल	**-**	**455,107.00**	**-**	**87,168.00**
अनुसूची 10				
स्टॉक में वृद्धि/ कमी				
क) अंत स्टॉक				
– आईसीपीआर प्रकाशन का स्टॉक	-	6,291,441.00	-	6,291,441.00

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
– जेआईसीपीआर पत्रिकाओं का स्टॉक	-	445,250.00	-	445,250.00
कुल	**-**	**6,736,691.00**	**-**	**6,736,691.00**
क) आरंभिक स्टॉक				
– आईसीपीआर प्रकाशनों का स्टॉक	-	6,291,441.00	-	6,291,441.00
– जेआईसीपीआर पत्रिकाओं का स्टॉक	-	445,250.00	-	445,250.00
कुल	**-**	**6,736,691.00**	**-**	**6,736,691.00**
स्टॉक में वृद्धि / (कमी)	-	-	-	-
अनुसूची 11				
समूह–क				
क–I				
वेतन घटक				
1) क–I (क) अधिकारियों तथा कर्मचारियों को वेतन तथा भत्ते	-	31,746,047.00	-	30,297,043.00
2) क–I (ख) समयोपरि भत्ते	-	23,989.00	-	14,849.00
3) क–I (ग) मानदेय	-	-	-	5,000.00
4) क–I (ङ) बोनस	-	181,911.00	-	182,774.00
5) क– I (छ) छुट्टी यात्रा रियायत के दौरान छुट्टी का नकदीकरण	-	164,657.00	-	217,807.00
6) क– I (ज) शिशु शिक्षण भत्ता	-	150,930.00	-	226,082.00
7) ख–III (क) छुट्टी वेतन अंशदान	-	-	-	178,928.00
8) ख–III (ख) पेंशन अंशदान	-	-	-	36,754.00
समूह–ख				
गैर–वेतन पेंशन				
ख– I				
1) ख– I (क) पेंशन तथा पेंशन से संबंद्ध लाभ	-	3,296,464.00	-	2,616,579.00
2) ख– I (ख) उपदान	-	4,258,530.00	-	5,483,294.00
3) ख– I (ग) छुट्टी का नकदीकरण	-	1,856,813.00	-	3,321,322.00
4) ख– I (घ) पेंशन का कम्युटेशन	-	383,537.00	-	367,747.00
5) ग– I (ग) वाहन	-	15,343.00	-	15,985.00
6) ग–II (क) चिकित्सा बीमा प्रीमियम	-	2,007,901.00	-	911,900.00
7) ग–I (ख) अधिकारियों को यात्रा भत्ता	-	177,214.00	-	351,844.00

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
बी–II				
1) ख–II (क) अंशदायी पेंशन निधि में कर्मचारी का अंशदान	-	58,456.00	-	58,820.00
2) ख –II (ख) अंशदायी पेशन निधि में कर्मचारी के अंशदान पर ब्याज	-	4,595.00	-	5,117.00
3) ख –II (घ) सामान्य भविष्य निधि से संबंद्ध अन्य व्यय	-	60,000.00	-	-
4) ख –II(ङ) एनपीएफ में कर्मचारी का अंशदान	-	288,959.00	-	205,972.00
5) अन्य व्यय				360,000.00
कुल	**-**	**44,675,346.00**	**-**	**44,857,817.00**
				-
अनुसूची 12				
समूह–ग				
ग–I				
1) ग–I (ख) कर्मचारिवृंदों को यात्रा भत्ता	-	86,271.00	-	-
ग–II				
1) ग–II (क) चिकित्सा बीमा प्रीमियम	53,657.00	-	-	-
2) ग–II (ख) अन्य चिकित्सा व्यय	-	3,999.00	-	-
ग–III				
1) ग–III(क) छुट्टी यात्रा रियायत	-	205,576.00	-	-
ग–III				
1) ग–IV (क) विज्ञापन	-	38,849.00	-	94,668.00
ग–V				
1) ग–ट (क) सांविधिक लेखापरीक्षा ुल्क	-	29,995.00	-	-
2) ग–ट (ख) आंतरिक लेखापरीक्षा ुल्क	-	288,891.00	-	181,828.00
ग–VI				
1) ग–VI (क) विद्युत प्रभार (नई दिल्ली)	-	1,128,230.00	-	-
2) ग–VI (ख) विद्युत प्रभार लखनऊ	-	281,698.00	-	1,249,388.00
3) ग–VI (ग) जल प्रभार (नई दिल्ली)	-	72,895.00	-	-
4) ग–VI (घ) जल प्रभार (लखनऊ)	-	12,820.00	-	69,781.00
ग–VII				
1) ग– VII (क) स्टॉफ कार को चलाने पर होने वाला व्यय– (डीएलसी–1993)	-	149,638.00	-	-
2) ग– VII (घ) स्टॉफ कार को चलाने पर होने वाला व्यय– (डीएल/3सी– 0989)	-	74,154.00	-	201,436.00

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
3) ग– VII (ख) स्टॉफ कार की मरम्मत तथा रखरखाव (डीएल–1993)	-	67,278.00	-	
4) ग– VII (ङ) स्टॉफ कार की मरम्मत तथा रखरखाव पर होने वाला व्यय (0989)	-	72,093.00	-	123,040.00
5) ग– VII (ग) स्टॉफ कार बीमा (डीएल–1993)	-	8,398.00	-	
6) ग– VII (च) स्टॉफ कार बीमा व्यय (डीएल/ 3सीबीएम –0989)	-	8,809.00	-	12,941.00
ग–VIII				
1) ग– VIII (क) लेखन सामग्री पर होने वाला व्यय– (नई दिल्ली)	-	343,979.00	-	-
2) ग– VIII (ख) लेखन सामग्री पर होने वाला व्यय– (लखनऊ)	-	63,753.00	-	-
3) ग– VIII (ग) मुद्रण व्यय	-	46,831.00	-	450,339.00
4) ग– VIII (घ) नई दिल्ली स्थित कार्यालय में कम्प्यूटर उपभोज्य सामग्री तथा उपकरण	-	15,900.00	-	-
5) ग– VIII (ङ) लखनऊ स्थित कार्यालय में कम्प्यूटर उपभोज्य सामग्री तथा उपकरण	-	1,755.00	-	12,150.00
ग–IX				
1) ग– IX (क) डाक तथा कोरियर (नई दिल्ली)	-	50,039.00	-	-
2) ग– IX (ख) डाक तथा कोरियर (लखनऊ)	-	10,557.00	-	126,307.00
ग–X				
1) ग– X (क) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत तथा रखरखाव (नई दिल्ली)	-	7,827.00	-	-
2) ग– X (ख) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत तथा रखरखाव (लखनऊ)	-	32,549.00	-	-
3) ग– X (ख) भवन की मरम्मत तथा रखरखाव	-	-	6,650.00	1,465.00
4) ग– X (ग) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत हेतु वार्षिक अनुरक्षण प्रभार (नई दिल्ली)	-	571,815.50	-	-
5) ग– X (घ) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत हेतु वार्षिक अनुरक्षण प्रभार (लखनऊ)	-	143,280.00	-	697,199.00
ग–XI				
1) ग– XI (क) टेलीफोन प्रभार–29901550	-	117,996.00	-	-
2) ग– XI (ख) टेलीफोन प्रभार–29964755– सीएम कार्यालय	-	8,021.00	-	-
3) ग– XI (ग) टेलीफोन प्रभार–29964750 (एमएस)	-	6,920.00	-	-
4) ग– XI (घ) टेलीफोन प्रभार मोबाइल –(एमएस)	-	22,164.00	-	-
5) ग– XI (ङ) टेलीफोन प्रभार– अध्यक्ष मोबाइल	-	13,125.00	-	-
6) ग– XI (च) टेलीफोन प्रभार– निदेशक				

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
(पीएण्डआर) मोबाइल	-	12,703.00	-	-
7) ग– XI (छ) टेलीफोन प्रभार सं0 8004922772 (मोबाइल)	-	5,085.00	-	-
8) ग– XI (ज) टेलीफोन प्रभार–9810223396	-	20,220.00	-	-
9) ग– XI (ञ) टेलीफोन प्रभार–2395349–(लखनऊ)	-	63,890.00	-	276,802.00
ग–XII				
1) ग– XII (ग) अतिथि गृह से संबंधित व्यय	424,839.00	-	-	-
2) ग– XII (क) किराया आईसीपीआर लखनऊ	-	270,000.00	-	300,000.00
ग–XIII				
1) ग– XIII (क) वर्दी (नई दिल्ली)	-	24,825.00	-	-
2) ग– XIII (ख) वर्दी (लखनऊ)	-	22,111.00	-	29,004.00
ग–XIV				
1) ग– XIV (क) आकस्मिताएं (नई दिल्ली स्थित कार्यालय के विविध व्यय)	-	160,574.00	-	-
2) ग– XIV (ख) आकस्मिताएं (लखनऊ स्थित कार्यालय के विविण व्यय)	-	80,087.00	-	222,674.00
3) ग– XIV (घ) सम्पत्ति कर	-	155,258.00	-	-
4) ग– XIV (ङ) डीडीए को भूमि का किराया	-	17,589.00	-	200,245.00
5) ग– XIV (च) कमचारिवृंद प्रशिक्षण शुल्क	-	13,303.00	-	44,944.00
6) ग– XIV (छ) कमचारिवृंद कल्याण व्यय	-	17,854.00	-	9,000.00
7) ग– XIV (ज) संरक्षा हेतु प्रभार	-	408,993.00	-	374,835.00
ग–XV				
1) ग– XV (क) वेबसाइट संबंधी व्यय	-	72,319.00	-	-
2) ग– XV (ख) इंटरनेट कनेक्शन दिल्ली–29964751	-	16,056.00	-	53,675.00
3) ग– XV (ग) इंटरनेट प्रभार–2392636 (लखनऊ)	-	5,673.00	-	-
4) ग– XV (घ) अध्यक्ष का डाटा कार्ड प्रभार	-	11,055.00	-	-
5) ग– XV (ङ) डाटा कार्ड प्रभार (एमएस)	-	12,003.00	-	-
ग–XVI				
1) ग–XVI (क) बागवानी संबंधी व्यय– दिल्ली कार्यालय	-	4,989.00	-	4,822.00
ग–XVII				
1) ग–XVII (ख) जेनसेट को चलाने का व्यय– लखनऊ	-	16,854.00	-	7,750.00
ग–XVIII				
1) ग– XVIII (क) विधिक प्रभार	568,000.00	-	-	-
2) ग– XVIIII (ख) पेशेवर प्रभार	1,171,101.00	-	775,464.00	-
3) ग– XVIII (ग) मजदूरी		21,496.00	-	-

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
ग–XIX				
1) ग– XIX (क) आईआईसी का वार्ि िक अभिदान	-	85,020.00	56,930.00	-
2) ग– XIX (ख) एफआईएसपी/एसआईसीआई सदस्यता	-	15,000.00	-	-
3) ग– XIX (ग) बैंक प्रभार	-	7,853.00	112.00	14,391.00
ग–XX				
1) ग– XX(क) आधिकारिक/गैर आधिकारिक अतिथियों का सत्कार	-	19,484.00	-	-
ग–XXI				
1) ग– XXI (क) परिषद् समिति के सदस्यों को यात्रा भत्ता	-	93,931.00	-	120,641.00
2) ग– XXI (ख) परिषद् समिति सदस्यों को आतिथ्य प्रभार	-	46,208.00	-	36,427.00
3) ग– XXI (ग) सिटिंग शुल्क	-	26,000.00	-	124,000.00
4) ग– XXI (घ) शासी निकाय को यात्रा भत्ता	-	97,921.00	-	425,643.00
5) ग–XXI (ङ) शासी निकाय के सदस्यों हेतु आतिथ्य	-	53,347.00	-	74,580.00
6) ग– XXI (च) शासी निकाय हेतु सिटिंग शुल्क	-	24,000.00	-	-
7) ग– XXI (छ) आरपीसी बैठक हेतु यात्रा भत्ता	-	167,178.00	104,721.00	236,543.00
8) ग– XXI (ज) आरपीसी सदस्यों हेतु आतिथ्य	-	39,915.00	-	27,629.00
9) ग– XXI (झ) आरपीसी सदस्यों हेतु सिटिंग शुल्क	-	19,000.00	-	-
10) ग–XXI (ञ) वित्त समिति की बैठक हेतु यात्रा भत्ता	-	54,434.00	-	23,998.00
11) ग– XXI (ट) वित्त समिति की बैठक हेतु आतिथ्य	-	14,908.00	-	45,066.00
12) ग– XXI (ठ) वित्त समिति के सदस्यों को सिटिंग शुल्क	-	10,000.00	-	-
13) ग–XXI (ड) अन्य समिति के सदस्यों को यात्रा भत्ता	-	55,722.00	1,544.00	48,350.00
14) ग–XXI (ढ) अन्य समिति के सदस्यों को आतिथ्य	-	12,854.00	-	42,928.00
15) ग–XXI (ण) अन्य समिति के सदस्यों को सिटिंग शुल्क	-	8,000.00	12,000.00	-
16) ग–XXI (त) गैर आधिकारिक सदस्यों को यात्रा भत्ता	-	5,004.00	-	2,410.00
17) ग–XXI (थ) गैर आधिकारिक सदस्यों हेतु आतिथ्य	-	13,349.00	-	37,962.00
समूह–घ				
घ–1				
1) घ– I (क) राष्ट्रीय अध्येतावृत्तियां	-	1,717,500.00	2,302,939.00	-
2) घ– I (ख) वरिष्ठ अध्येतावृत्तियां	40,000.00	2,460,000.00	3,076,522.00	-
3) घ– I (ग) सामान्य अध्येतावृत्तियां	866,522.00	5,363,000.00	6,340,079.00	-

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
4) घ– I (घ) कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्तियां	1,592,033.00	13,866,083.00	9,551,065.00	-
5) घ– I (ङ) अध्येतावृत्तियों संबंधी अन्य व्यय	127,396.00	293,255.00	258,627.00	-
6) घ– I (च) अध्येताओं के अभिविन्यास के संबंध में बैठक	150,172.00	-	-	
घ– II				
1) घ–II (क) आईसीपीआर द्वारा आयोजित संगोष्ठियां	981,574.00	-	2,471,196.00	-
2) घ– II (ख) सम्मेलन	9,138.00	-	-	-
3) घ– II (ग) कार्यशालाएं	1,956,477.00	-	874,069.00	-
4) घ– II (घ) अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	287,284.00	-	-	-
5) घ–II (ङ) समीक्षा हेतु बैठकें/अध्येताओं हेतु बैठकें	212,046.00	-	-	-
6) घ– II (ज) अन्य शैक्षणिक व्यय	18,874.00	-	220,000.00	-
घ– III				
1) घ– III (क) पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	1,355,027.00	-	739,874.00	
2) घ– III (क) पुनश्चर्या पाठ्यक्रम संबंधी कार्यशाला सामान्य –एनईआर	-	-	270,000.00	
घ– IV				
1) घ– IV (क) संगोष्ठि हेतु अनुदान	7,072,395.00	-	2,378,009.00	
2) घ– IV (ख) कार्यशालाओं हेतु अनुदान	1,186,411.00	-	-	
3) घ– IV (ग) सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अनुदान– सामान्य अनुसूचित जाति	-	-	360,000.00	
4) घ– IV (क) सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अनुदान– सामान्य अनुसूचित जनजाति	-	-	180,000.00	
5) घ– IV (ग) सम्मेलन/ वार्षिक सत्रों हेतु अनुदान	275,000.00	-	100,000.00	
6) घ– IV (घ) अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हेतु अनुदान	180,000.00	-	-	
7) घ– IV (घ) परियोजना हेतु अनुदान– अनुवाद परियोजना	-	-	1,587,752.00	
घ– V				
1) घ– V (क) यात्रा अनुदान	41,334.00	-	15,572.00	-
2) घ– V (ख) यात्रा अनुदान हेतु अन्य व्यय	4,413.00	-	24,226.00	-
3) घ– V (ग) परामर्श प्रभार	-	-	373,328.00	-
4) घ– V (घ) गांधीरामा संगोष्ठि	-	-	83,811.00	-
घ– VI				
1) घ– VI (क) प्रदर्शनी/ प्रचार	18,836.00	-	-	-
2) घ– VI (ख) पुस्तक मेला	55,000.00	-	66,076.00	-
3) घ– VI (ग) केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग– विद्युत	-	-	108,081.00	-
4) घ– VI (घ) आजीवन सदस्यता–जेआईसीपीआर	-	-	549,950.00	-

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
घ– VII				
1) घ– VII (क) व्याख्यान– राष्ट्रीय	715,478.00	-	-	-
2) घ– VII (ख) व्याख्यान– अंतर्राष्ट्रीय	1,137,422.00	-	1,129,948.00	-
3) घ– VII (ग) व्याख्यान– पत्रिकाएं	260,000.00	-	320,830.00	-
4) घ– VII (घ) व्याख्यान– एनईआर	-	-	154,600.00	-
5) घ– टप्प (ङ) व्याख्यान– योजनागत सामान्य – अनुसूचित जाति	-	-	30,000.00	-
घ– VIII				
1) घ– VIII (क) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तथा शैक्षणिक संबंध	23,077.00	-	46,939.00	-
घ–IX				
1) घ– IX (क) आजीवन उपलब्धि पुरस्कार	262,941.00	-	396,008.00	-
2) घ– IX (घ) परियोजना/ अनुवाद परियोजना	941,024.00	-	-	-
3) घ– IX (ङ) अन्य	5,506.00	-	-	-
घ XI– अनुसूचित जाति				
1) घ– XI (क) अध्येतावृत्ति अनुसूचित जाति	1,761,858.00	-	2,123,791.00	-
2) घ– XI (ख) अध्येतावृत्ति अनुसूचित जनजाति	-	-	199,000.00	-
3) घ– XI (ग) अध्येतावृत्ति–एनईआर–अनुसूचित जाति	-	-	30,000.00	-
4) घ– XI (घ) संगोष्ठि/सम्मेलन अनुसूचित जाति	1,406,167.00	-	2,165,650.00	-
5) घ– XI (ङ) संगोष्ठि/सम्मेलन सामान्य–एनईआर	-	-	1,155,000.00	-
6) घ– XI (च) संगोष्ठि/ सम्मेलन सामान्य– एनईआर– अनुसूचित जनजाति	-	-	20,000.00	-
7) घ– XI (छ) व्याख्यान– अनुसूचित जाति	86,116.00	-	-	-
8) घ– XI (ज) आईसीपीआर विशेष कार्यक्रम अनुसूचित जाति	32,105.00	-	-	-
9) घ– XI – आईसीपीआर विशेष कार्यक्रम अनुसूचित जनजाति	-	-	-	-
10) घ– XI (क) अध्येतावृत्ति– अनुसूचित जनजाति	48,000.00	-	614,192.00	-
11) घ– XI (ख) संगोष्ठि/ सम्मेलन –अनुसूचित जनजाति	1,490,000.00	-	-	-
12) घ– XI (ग) व्याख्यान –अनुसूचित जनजाति	60,000.00	-	-	-
13) घ– XI (छ) आईसीपीआर विशेष कार्यक्रम अनुसूचित जनजाति	400,000.00	-	7,834.00	-
14) घ– XI (ज) आईसीपीआर विशेष कार्यक्रम एनईआर	-	-	60,000.00	-
15) घ– XI (झ) आईसीपीआर विशेष कार्यक्रम– अनुसूचित जाति	-	-	1,199,000.00	-
16) घ– XII (ञ) अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम– सामान्य–				

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		दिनांक 31 मार्च, 2014 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
अनुसूचित जनजाति	-	-	13,325.00	-
17) घ– XII (ट) अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम– सामान्य– अनुसूचित जनजाति	-	-	3,700.00	-
18) घ– XII (ठ) अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम– अन्य	-	-	330,263.00	-
19) घ– XII (ड) अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम– एनईआर	-	-	970,452.00	-
घ– ग^ (एनईआर)				
1) घ– X (क) परियोजना हेतु अनुदान/अनुवाद परियोजना	4,028,990.00	-	219,073.00	-
2) घ– X (ग) पुस्तक अनुदान	699,025.00	-	-	-
3) घ– X (घ) अन्य विशेष कार्यक्रम	10,500.00	-	-	-
4) घ– XI (क) अध्येतावृत्ति सामान्य एनईआर	1,271,025.00	-	-	-
5) घ– XI (घ) अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम– एनईआर	2,017,100.00	-	-	-
समूह–ङ				
ई–I				
1) ई–I (क) प्रकाशन प्रभार				
2) ई–I (ख) उत्पादन व्यय	41,500.00	-	-	-
ई–I (ग) मानदेय	6,000.00	-	-	-
ई–I (घ) वितरकों को भुगतान	210,000.00	-	-	-
ई–I (ङ) समाचार पत्रों/ वा िक रिपोर्ट के अन्य व्यय	170,200.00	-	203,145.00	-
ई–II				
1) ई–II (जेआईसीपीआर संबंधी व्यय)				
2) ई–II (क) उत्पादन संबंधी व्यय	69,066.00	-	-	-
3) ई–II (ख) संपादन संबंधी व्यय	138,022.00	-	-	-
4) ई–II (ङ) अन्य व्यय	64,242.00	-	356,710.00	-
	36,002,893.00	29,988,008.50	44,638,057.00	6,004,861.00

अनुलग्नक–घ

लेखाकरण नीतियां

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, नई दिल्ली–110062

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की महत्वपूर्ण लेखाकरण नीतियां तथा लेखा टिप्पण

लेखाकरण नीतियां

(i) लेखाकरण परिपाटी

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के लेखों को विगत की लागत परिपाटी तथा लेखाकरण के प्रोद्भूत आधार पर तहत तैयार किया जाता है।

(ii) अचल परिसम्पत्तियां तथा मूल्यह्रास

परिसम्पत्तियों का उल्लेख लागत आधार पर किया जाता है। मूल्यह्रास को समय– समय पर यथा संशोधित आयकर नियम, 1961 के तहत विहित दरों पर परिसम्पत्ति की बट्टे खाते मे डाली गई राशि के आधार पर परिकलित किया जाता है।

2000/– रुपए से कम के मूल्य की प्रत्येक अचल परिसम्पत्ति, फर्नीचर तथा उपकरण का शत–प्रतिशत मूल्यह्रास कर क्रय किए जाने व ि में ही दर्शाया जाता है।

विहित दरों पर ग्रंथालय की पुस्तकों पर भी मूल्यह्रास को भी दर्शाया जाता है। तथापि, वर्ष के दौरान परियोजना हेतु खरीदी गई अथवा सब्स्क्राइब की गई पत्रिकाओं पर भी शतप्रतिशत मूल्यह्रास को दर्शाया जाता है।

(iii) प्रकाशन का स्टॉक

चल रहे प्रकाशन कार्य का परिकलन लागत आधार पर किया जाता है। प्रकाशन स्टॉक के मूल्य का निर्धारण निबल वसूली आधार पर किया जाता है।

(iv) सेवानिवृत्ति लाभ

उपदान तथा छुट्टी नकदीकरण हेतु भुगतान के लिए वास्तविक आधार पर व्यवस्था की गई है। तथापि, पेंशन हेतु प्रोद्भूत आधार पर व्यवस्था की जाएगी।

(v) बोनस हेतु प्रावधान

बोनस का नकदी आधार पर लेखा–जोखा रखा जाता है।

(vi) व्यय

सामान्यतः व्यय का प्रोद्भूत आधार पर लेखा–जोखा रखा जाता है।

(vii) राजस्व संबंधी प्रकटन

(क) आईसीपीआर मुख्यतः शत–प्रतिशत आधार पर मानव संसाधन विभाग के अनुदान पर निर्भर है, जिस पर संस्वीकृति के आधार पर विचार किया गया है।

(ख) अनुदान के अलावा, आईसीपीआर को प्रकाशनों की बिक्री, पुराने सामान की बिक्री, रेप्रोग्राफिक सेवाएं प्रदान करने आदि से भी आय होती है। जैसे ही इस प्रकार की आय प्राप्त होती है वैसे ही इस आय का लेखा जोखा रखा जाता है।

(viii) कराधान

आईसीपीआर ने किसी भी प्रकार की आय अर्जित नहीं होने के आधार पर छूट प्रदान करने के लिए आयकर से संपर्क नहीं किया है। चूंकि वह भारत सरकार से प्राप्त अनुदान से ोध कार्य कर रहा है।

(ix) जीपीएफ / सीपीएफ पर अभिदाताओं को देय ब्याज, अपनाई गई नीतियों तथा परिषद् द्वारा पृथक रूप से जमा की गई अभिदान राशि पर अर्जित ब्याज के आधार पर दिया जाता है। तथापि, परिषद् केवल वर्तमान वित्तीय वर्ष के लिए सीपीएफ हेतु नियोजक की हिस्सेदारी पर ब्याज का भुगतान करेगी चूंकि, सीपीएफ हेतु नियोजक की हिस्सेदारी को संबंधित खाते में 31 मार्च, 2015 को जमा कर दिये गये थे। जीपीएफ / सीपीएफ हेतु भुगतान किया जाने वाले ब्याज को परिषद् के अनुदान खाते से नामे नहीं किया जाएगा।

ह0 / –
(श्रीकुमारन एस0)
लेखा अधिकारी

ह0 / –
(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)
सदस्य सचिव

अनुलग्नक–ङ

लेखा टिप्पणी

लेखा टिप्पणी

दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष के लिए लेखा के भाग के रूप में संलग्नक

प्रकाशन के स्टॉक पर बाजार मूल्य के 50 प्रतिशत के आधार पर विचार किया जाता है। आईसीपीआर के प्रकाशनों को विभिन्न निबंधन और शर्तों पर विभिन्न वितरकों/ प्रकाशकों द्वारा विक्रय किया जाता है। तदनुसार, आईसीपीआर के प्रकाशनों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है:–

- शत–प्रतिशत उत्पादन लागत को वहन करते हुए आईसीपीआर द्वारा निकाले गए प्रकाशन;
- आईसीपीआर द्वारा सह–प्रकाशन आधार पर तथा 60:40 अनुपात में उत्पादन लागत को वहन करने तथा लागत मूल्य के 40 प्रतिशत आधार पर विक्रय लाभ को प्राप्त करने की शर्त पर प्रकाशन किया जाता है।

वैसे, आईसीपीआर प्रकाशनों की अथ स्टॉक स्थिति को अंतिम लेखों में निम्न पद्धति के आधार पर शामिल किया गया है।

i) स्टॉक प्रयोजनार्थ हेतु प्रकाशन के कुल लागत मूल्य को पुस्तकों के विक्रय मूल्य के 50 प्रतिशत की दर से शामिल किया जाएगा;

वित्तीय वर्ष 2013–14 से पूर्व के समायोजन, जिन्हें वर्ष 2014–15 के दौरान लेखा बही में शामिल किया गया है, उन्हें पूर्व की अवधि की आय माना गया है।

ii) जीपीएफ, सीपीएफ तथा एनपीएफ खातों के तुलन पत्र तथा प्राप्ति तथा भुगतान खातों को परिषद् द्वारा रखरखाव की गई पुस्तक के आधार पर तैयार किया गया है। दिनांक 31.03.2015 की स्थिति के अनुसार तुलन पत्र तथा प्राप्ति तथा भुगतान खातों में दर्शाई गई शेष राशि को जीपीएफ तथा सीपीएफ के मामले में परिषद् द्वारा रखरखाव की जा रहे बड़े चिट्ठे से मिलान कर लिया गया है।

iii) जहां कहीं भी आवश्यकता महसूस हुई, पिछले वर्ष के आंकड़ों को खातों में पुर्नसमूहबद्ध/ पुनः तैयार किया गया है।

iv) परिषद् द्वारा यथा अनुप्रमाणित 31 मार्च, 2015 को व ांत के समय हस्तगत नकदी तथा हस्तगत स्टॉक की स्थिति ।

v) प्राप्ति तथा भुगतान खाता

शैक्षणिक तथा अन्य अग्रिमों के समक्ष ऋणों तथा अग्रिमों तथा व्यय के समायोजन के संबंध में प्राप्ति और भुगतान खाते तथा आय और व्यय खाते को तैयार करने में निम्नलिखित पद्धति अपनाई गई है:–

क) वित्तीय वर्ष हेतु शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिए प्राप्त किए गए अग्रिमों तथा अन्य अग्रिमों हेतु किए गए सकल भुगतान को प्राप्ति तथा भुगतान खाते के भुगतान में दर्शाया गया है।

ख) प्रत्येक अग्रिम खाते के ऋण पक्ष को प्राप्ति माना जाएगा तथा उसे प्राप्ति तथा भुगतान लेखा में इसी प्रकार

दर्शाया जाता है। अग्रिमों के समक्ष किए गए व्यय को समायोजित करने के लिए उन्हें खाता–बही में जमा किया जाता है। इसी प्रकार, व्यय से इतर प्राप्त शेष राशि को खाते में जमा किया जाता है।

ग) अग्रिम में खाते में दर्शाया गया बकाया परिसम्पत्तियां होती हैं तथा इन्हें तुलन पत्र में दर्शाया जाता है।

घ) अग्रिमों के समक्ष किए गए व्यय को व्यय के विभिन्न शीर्षों के तहत दर्ज किया जाता है यथा संगोष्ठि, बैठक आदि। इन व्यय को आय तथा व्यय खाते में व्यय के रूप में दर्शाया जाता है।

ङ) ऋण तथा अग्रिम के समायोजन को प्राप्ति तथा भुगतान खाते में प्राप्ति के रूप में दर्शाया जाता है चूंकि इन अग्रिमों के समक्ष व्यय को विभिन्न व्यय शीर्षों में दर्शाया जाता है और आय तथा व्यय खाते में व्यय के रूप में दर्शाया जाता है। साथ ही, प्राप्ति और भुगतान खाते में भुगतान की ओर दर्शाया जाता है।

vi) संस्थापित की गई तथा उपयोग में लाई जा रही अचल परिसम्पत्तियों को समिति द्वारा अधिप्रमाणित किया गया है तथा तकनीकी मामला होने के कारण लेखापरीक्षकों द्वारा उस पर विश्वास किया गया है।

मार्च, 2015 के माह के लिए वेतन तथा भत्ते हेतु प्रावधान में से स्रोत पर कर की कटौति नहीं की गई है चूंकि वेतन और भत्तों का भुगतान किए जाने पर इसकी कटौति की जाती है। संपादक अध्येताओं को किए जाने वाले अध्येतावृत्ति के भुगतान से कर की कटौति नहीं की जाती है।

ह0/–
(श्रीकुमारन एस0)
लेखा अधिकारी

ह0/–
(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)
सदस्य सचिव

भारतीय महानियंत्रक एवं अंकेक्षक की पृथक् अंकेक्षण रिपोर्ट–भारतीय दार्शनिक शोध परिषद, नई दिल्ली के 31 मार्च 2015 को समाप्त वर्ष के लेखों पर

हम ने महानियंत्रक एवं अंकेक्षक (कर्तव्य, शक्ति एवं सेवा शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के तहत भारतीय दार्शनिक शोध परिषद, नई दिल्ली के 31 मार्च 2015 के तुलन पत्र एवं इसी तिथि को समाप्त वर्ष के आय एवं व्यय लेखों / आमद एवं भुगतान लेखों का अंकेक्षण किया। हमें 2017–18 तक की अवधि के लिए अंकेक्षण का कार्य सौंपा गया। इन वित्तीय विवरणों की जिम्मेदारी भारतीय दार्शनिक शोध परिषद के प्रबंधन की है। हमारी जिम्मेदारी हमारे अंकेक्षण के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर अपना मत व्यक्त करना है।

2. इस पृथक् अंकेक्षण रिपोर्ट में भारतीय महानियंत्रक एवं अंकेक्षक (सी ए जी) की टिप्पणियां केवल सर्वश्रेष्ठ लेखा प्रक्रिया के वर्गीकरण, लेखा मानक और घोषणा के नियमों आदि से संबद्ध यहां लागू लेखा प्रक्रिया के बारे में है। कानून, नियम और विनियम (प्रोपराइटरी एवं नियामक) के अनुपालन के संबंध में वित्तीय लेन–देन के अंकेक्षण अवलोकन और सक्षमता–सह–प्रदर्शन पहलू, यदि रिपोर्ट की गई हो तो इसकी सूचना अलग निरीक्षण रिपोर्ट/ सीएजी की अंकेक्षण रिपोर्ट में दी जाएगी।

3. हम ने अंकेक्षण भारत में सामान्यतया स्वीकृत अंकेक्षण मानकों पर किया है। इन मानकों के तहत यह आवश्यक है कि हम अंकेक्षण का नियोजन और कार्य इस प्रकार करें कि हमें तर्कसंगत ढंग से यह विश्वास हो कि वित्तीय विवरणों में तथ्यों की गलत अभिव्यक्ति नहीं है। अंकेक्षण के तहत वित्तीय विवरणों की राशियों और घोषणाओं के प्रमाणों का जांच के आधार पर परीक्षण होता है। अंकेक्षण के तहत प्रबंधन द्वारा लागू लेखा सिद्धांतों और महत्वपूर्ण अनुमानों का भी आकलन किया जाता है। साथ ही, कुल मिला कर वित्तीय विवरणों की प्रस्तुति का मूल्यांकन किया जाता है। हमारा मानना है कि हमारे अंकेक्षण से हमारे मत को तर्कसंगत आधार मिला है।

4. हमारे अंकेक्षण के आधार पर हमारी रिपोर्ट यह है कि :

i) हम ने सभी जानकारियां और व्यवख्याएं हासिल कीं जो हमें उपलब्ध ज्ञान और विश्वास से हमारे अंकेक्षण के लिए अनिवार्य थे।

ii) इस रिपोर्ट में जिस तुलन पत्र और आय एवं व्यय लेखों / आमद एवं भुगतान लेखों पर कार्य किया गया है वे भारत सरकार के वित्त मंत्रायल के निर्धारित प्रारूप में तैयार किए गए।

iii) हमारी राय में जहां तक हमारे परीक्षण से स्पष्ट है भारतीय दार्शनिक शोध परिषद ने लेखा बहियों और अन्य संबंधित रिकॉर्डों को आवश्यकता के अनुसार सही रूप में रखा है।

iv) हमारी यह भी रिपोर्ट है कि

क. तुलन पत्र

ख. देनदारियां

क.1.1 चालू देनदारियां और प्रावधान (अनुसूचि 2) – 6.84 करोड़ रु.

ऊपर के विवरण में 2.49 करोड़ रु. की अव्यवहृत राशि शामिल नहीं है जिसके परिणमस्वरूप चालू देनदारियां 2.49 करोड़ रु. कम और पूंजी निधि 2.49 करोड़ रु. अधिक दर्ज है।

ए. 2 संपत्तियां

ए. 2.1. चालू संपत्तियां, ऋण एवं अग्रिम (अनुसूचि 4) – 9.87 करोड़ रु.

आईसीपीआर प्रकाशन के लेखा बंद होने के समय स्टॉक में 62.91 लाख रु. दर्ज है जबकि प्रकाशन स्टॉक पंजी के अनुसार हाथ में स्टॉक की राशि 157.00 लाख रु. है। परिणामतः चालू संपत्तियों, ऋणों एवं अग्रिमों और पंजी निधि में 94.09 लाख रु.कम दर्ज हुआ है।

बी. तुलन पत्र (जेनरल प्रॉविडेंट फंड)

निवेश

जेनरल प्रॉविडेंट फंड का भारत सकार के वित्त मंत्रालय की 14.08.2008 दिनांकित अधिसूचना सं. 5–88/2006–पीआर के अनुसार निवेश नहीं किया गया है।

सी. सहायता अनुदान

परिषद को कथित वर्ष मानव संसाधन विकास मंत्रालय से 11.56 करोड़ रु. का सहायता अनुदान मिला जिसमें 0.07 करोड़ रु. (नियोजित) का अनुदान मार्च 2015 में मिला। इसमें अव्यवहृत बची राशि 1.15 करोड़ रु. (नियोजित : 0.68 करोड़ रु. और अनियोजित : 0.47 करोड़ रु.), निजी प्राप्ति 0.27 करोड़ रु. (अनियोजित) और पूर्व अवधि के समायोजन एवं वापसी की राशि 0.33 करोड़ रु. (नियोजित : 0.24 करोड़ रु. और अनियोजित : 0.09 करोड़ रु.) है। कुल 13.31 करोड़ रु. की निधि से 10.82 करोड़ रु. (नियोजित : 3.79 करोड़ रु. और अनियोजित : 7.03 करोड़ रु.) का उपयोग किया गया परिणामतः 2.49 करोड़ रु. की अव्यवहृत राशि बची है (नियोजित : 1.45 करोड़ रु. और अनियोजित : 1.04 करोड़ रु.)।

डी. प्रबंधन के नाम पत्र : अंकेक्षण रिपोर्ट में नहीं दर्ज की गई त्रुटियां प्रबंधन के नाम पत्र के माध्यम से सदस्य सचिव, भारतीय दार्शनिक शोध परिषद के समक्ष रखी गई हैं ताकि सुधार/ सही करने कदम उठाए जाएं।

v. इससे पूर्व के अनुच्छेद में हमारे अवलोकन को ध्यान में रखते हुए हमारी यह रिपोर्ट है कि इस रिपोर्ट में विचाराधीन तुलन पत्र, आय एवं व्यय लेखों और आमद एवं भुगतान लेखों का बही खातों से मिलान है।

vi. हमारी राय, हमें उपलब्ध जानकारी और हमें दी गई व्यख्याओं के अनुसार कथित वित्तीय विवरण, लेखा नीतियों और लेखा टिप्पणियों के साथ पठित, और ऊपर वर्णित मामलों और एनेक्सर में उल्लिखित अन्य मामलों के अनुसार यह अंकेक्षण रिपोर्ट सामान्यतया भारत में स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के अनुरूप सही और इमानदार दृश्य प्रस्तुत करता है।

क. जहां तक 31 मार्च 2015 को भारतीय दार्शनिक शोध परिषद के काम–काज की स्थिति के तुलन पत्र से इसका संबंध है

ख. जहां तक इसी तिथि को समाप्त वित्त वर्ष के अतिरिक्त (सरप्लस) के आय एवं व्यय लेखे का संबंध है

भारतीय महानियंत्रक एवं अंकेक्षक के लिए एवं उनकी ओर से

स्थान : नई दिल्ली
तिथि : 07.12.2015

अंकेक्षण एवं केंद्रीय व्यय महानिदेशक

पृथक् अंकेक्षण रिपोर्ट का परिशिष्ट

1. आंतरिक अंकेक्षण व्यवस्था की पर्यप्तता

आंतरिक अंकेक्षण प्रकोष्ठ का गठन न तो परिषद् ने किया और न ही मंत्रालय ने यह कार्य किया।

आंतरिक अंकेक्षण का कार्य चार्टर्ड अकाउंटेंट तिमाही आधार पर करते हैं।

2. आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था की पर्यप्तता

बाह्र अंकेक्षण की आपत्तियों पर प्रबंधन की प्रतिक्रिया प्रभावी नहीं है क्योंकि 31.03.2015 की तिथि में 2002–03 से 2011–12 अवधि से संबद्ध 38 अनुच्छेद पर कार्य बाकी है।

3. संपत्तियों के वास्तविक सत्यापन की व्यवस्था

आईसीपीआर मुख्यालय और इसके लखनऊ अकादेमी केंद्र की वर्ष 2014–15 में अचल संपत्तियों का वास्तविक सत्यापन किया गया। सत्यापन समिति की यह रिपोर्ट है कि अचल संपत्तियों (गैर–उपभोग) की पंजी को आईसीपीआर मुख्यालय और इसके लखनऊ अकादेमी दोनों ने सही तरीके से नहीं रखा है।

पुस्तकालय की पुस्तकों और प्रकाशन का वास्तविक सत्यापन हर दो वर्षों के बाद होता है और 2014–15 के लिए यह नहीं किया गया।

4. इन्वेंट्री का वास्तविक सत्यापन

आईसीपीआर के इन्वेंट्री का वर्ष 2014–15 के लिए वास्तविक सत्यापन किया गया है और इसमें किसी त्रुटि की रिपोर्ट नहीं है।

5. बकाया भुगतान में नियमितता

लेखों के अनुसार अनिवार्य किसी बकाया राशि का भुगतान 31.03.2015 को छह माह से अधिक लंबित नहीं था।

अनुलग्नक–च

प्राप्तियों तथा भुगतानों का विवरण

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, नई दिल्ली–110062

31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्तियों तथा भुगतानों संबंधी लेखा

प्राप्तियां	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
I. अथ शेषः				
क) हस्तगत नकदी				
1) हस्तगत नकदी	732.00	3,041.62	397.00	3,220.62
2) अग्रदाय शेष	-	13,527.00	-	38,127.00
ख) बैंकों में शेष राशि				
1) बचत खातों में	16,498,153.49	19,330,420.69	17,635,201.49	11,840,644.88
समूह–क				
वेतन घटक				
1) ए–1(क) अधिकारियों तथा कर्मचारियों को वेतन तथा भत्ते				
समूह–ख				
1) ख–III (क) छुट्टी वेतन अंशदान		67,927.00		
2) ख–III (ख) पेशन अंशदान		91,933.00		
समूह–घ–X				
1) घ–X(ग) पुस्तकों हेतु अनुदान	25,200.00			
समूह–घ–XI (एनईआर)				
1) घ–X(घ) अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम (एनईआर)	100,000.00			
समूह–छ				
छ–1)				
1) छ–I (घ) पूर्व अवधि का समायोजन– वेतनेत्तर		1,200.00		
2) छ–I (ङ) पूर्व अवधि का समायोजनः योजनागत सामान्य	1,042,107.00			
3) छ–I (च) पूर्व अवधि का समायोजन– योजनागत–पूंजीगत	87,381.00		-	
4) छ–I (छ) पूर्व अवधि का समायोजन– योजनागत सामान्य अनुसूचित जाति	55,500.00			
5) छ–I (ट) पूर्व अवधि का समायोजनः योजनागत – एनईआर	88,458.00			
6) छ–I (ण) पूर्व अवधि का समायोजनः योजनागत – एनईआर (अनुसूचित जनजाति)	1,516.00		2,203,913.00	
7) छ–I (झ) अन्य प्रावधान		-		

भुगतान	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
I. व्ययः				
समूह–क				
वेतन घटक				
1) ए–1(क) अधिकारियों तथा कर्मचारियों को वेतन तथा भत्ते	-	27,838,794.00	-	24,915,558.00
2) ए–1(ख) समयोपरि भत्ता	21,833.00	-	12,803.00	
3) ए–1(ङ) बोनस	-	181,911.00	-	182,774.00
4) ए–1(छ) एलटीसी के दौरान छुट्टी नकदीकरण	-	154,481.00	-	-
समूह–ख				
1) ख–I (क) पेंशन और पेशन संबंधी लाभ		2,876,265.00		2,349,982.00
2) ख–I (ख) उपदान		-		
3) ख–I (ग) छुट्टी नकदीकरण		-		474,580.00
4) ख–I (घ) पेंशन कम्यूटेशन		418,681.00		
5) बी–II (क) अंशदायी पेशन निधि में नियोक्ता का अंशदान		58,456.00		58,820.00
6) बी–II (ख) अंशदायी पेशन निधि में नियोक्ता के अंशदान पर ब्याज		4,595.00		5,117.00
7) बी–II (घ) सामान्य भवियनिधि से संबंद्ध अन्य व्यय		60,000.00		
8) बी–II (ङ) एनपीएफ में कर्मचारी का अंशदान		220,363.00		205,972.00
9) ख–III (क) छुट्टी वेतन अंशदान				158,452.00
10) ख–III (ख) पेंशन योगदान			367,747.00	
11) ख–IV (क) मानदेय				5,000.00
12) ख–IV(ख) अन्य व्यय				360,000.00
समूह–ग				
ग–I				
1) ग–I (ख) अधिकारियों को यात्रा भत्ता		177,214.00		
2) ग–I (ख) कर्मचारियों को यात्रा भत्ता		86,271.00		351,844.00
3) ग–I (ग) वाहन भत्ता		15,343.00		15,985.00
ग–II				
1) ग–II (क) चिकित्सा बीमा प्रीमियम	53,657.00		-	
2) ग–II (ख) चिकित्सा बीमा प्रीमियम		1,339,736.00		241,835.00
3) ग–II (ग) अन्य चिकित्सा व्यय		3,999.00		

प्राप्तियां	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष			
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
समूह–झ				
1) ञ– I (ड) अन्य धन प्रेषणों हेतु प्रावधान		7,500.00		
2) ञ– I (म) अन्य प्रावधान				
समूह–ञ				
भारत सरकार से प्राप्त अनुदान				
1) ट– I (क) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान गैर–योजनागत वेतन		60,513,000.00		
ट–I(ख) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–वेतनेत्तर पेंशन		11,891,000.00		
1) ट–I(घ) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान योजनागत वेतन	33,415,000.00		31,879,000.00	45,411,000.00
2) ट– I (ङ) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान योजनागत – पूंजीगत	3,466,000.00		4,729,000.00	
3) ट– I (च) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान योजनागत सामान्य अनुसूचित जाति	6,305,000.00		5,492,000.00	
आईसीपीआर प्रकाशनों तथा पत्रिकाओं से आय				
1) ट–IV(क) बिक्री से प्राप्त आय तथा रॉयल्टी–पुस्तकें		95,250.00		169,487.81
2) ट–V(ख) जेआईसीपीआर की आजीवन सदस्यता		5,000.00	115,050.00	
3) ट–VI(क) विविध प्राप्तियां – रेप्रोग्राफी सेवाएं		32,798.00		63,656.00
4) ट–VI (ख) विविध प्राप्तियां –ठीक न किये जा सकने वाले/अप्रचलित हो चुके उपकरण		71,218.00		613.00
5) ट–VI (ग) विविध प्राप्तिया – कर्मचारियों को दिए गए अग्रिम पर बयाज		16,382.00		7,739.00
6) ट–VI(घ) विविध प्राप्तियां –बचत तथा जमा राशियों पर बयाज		2,292,703.00	27,197.00	1,625,770.00
7) ट–VI(च) विविध प्राप्तियां – अन्य		161,553.00		14,319.00
8) ट–VI (झ) अध्येतावृत्ति प्ररूपों की बिक्री		11,150.00		54,734.00
10) ट–VI(घ) विविध प्राप्तियां – बचत पर बयाज	27,947.00			
क) मासंविमं से अनुदान–सामान्य –पूंजीगत (अ0 ज0 जा0)	-		180,000.00	-
ख) मासंविमं से अनुदान– सामान्य– (अ0 ज0 जा0)	-		2,405,000.00	-

भुगतान	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष			
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
ग–III				
1) ग–II (क) छुट्टी यात्रा रियायत		205,576.00		217,807.00
ग–प्ट				
1) ग–II (क) विज्ञापन		38,849.00		94,668.00
ग–ट				
1) ग–V (क) सांविधिक लेखापरीक्षा शुल्क		29,995.00		
2) ग–V (ख) आंतरिक लेखापरीक्षा शुल्क		85,771.00		35,401.00
ग–VI				
1) ग–VI (क) विद्युत प्रभार (नई दिल्ली)		1,071,360.00		
2) ग–VI (ख) विद्युत प्रभार लखनऊ		281,698.00		1,249,388.00
3) ग–VI (ग) जल प्रभार (नई दिल्ली)		72,895.00		
4) ग–VI(घ) जल प्रभार (लखनऊ)		12,820.00		69,781.00
ग–VII				
1) ग–VII (क) स्टॉफ कार को चलाने पर होने वाला व्यय– (डीएलसी–1993)		149,638.00		
2) ग–VII (घ) स्टॉफ कार की मरम्मत तथा अनुरक्षण पर होने वाला व्यय– (डीएलसी–1993)		67,278.00		
3) ग– VII (ग) स्टॉफ कार बीमा (डीएलसी–1993))		5,884.00		
4) ग– VII (घ) स्टॉफ कार को चलाने पर होने वाला व्यय– (डीएल/3सी–0989)		74,154.00		
5) ग– VII (ङ) स्टॉफ कार की मरम्मत तथा अनुरक्षण पर होने वाला व्यय– (0989)		72,093.00		
6) ग– VII (च) स्टॉफ कार बीमा व्यय (डीएल/3सीबीएम–0989)		7,198.00		335,030.00
ग–VIII				
1) ग–VIII (क) लेखन सामग्री पर होने वाला व्यय– (नई दिल्ली)		343,979.00		
2) ग–VIII (ख) लेखन सामग्री पर होने वाला व्यय– लखनऊ		63,753.00		
3) ग– VIII (ग) मुद्रण व्यय		46,831.00		450,339.00 4)
ग–VIII (घ) नई दिल्ली स्थित कार्यालय में कम्प्यूटर उपभोज्य सामग्री तथा उपकरण		15,900.00		
5) ग– VIII (ङ) लखनऊ स्थित कार्यालय में कम्प्यूटर उपभोज्य सामग्री तथा उपकरण		1,755.00		12,150.00

प्राप्तियां	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष			
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
समूह–ट				
शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अग्रिम				
1) ठ–V (क) अग्रिम–संगोष्ठियां/सम्मेलन	15,000.00			
2) ठ–V(ख) अग्रिम–व्याख्यान	57,500.00			
3) ठ–V (च) अग्रिम–अध्येतावृत्तियां		203,500.00		
4) ठ–V(छ) अग्रिम–आईसीपीआर–विशेष कार्यक्रम	49,000.00			
5) ठ–V(ज) अग्रिम–शैक्षणिक कार्यक्रम–अनुसूचित जाति	23,000.00			
6) ठ–V(ठ) अग्रिम–शैक्षणिक कार्यक्रम– एनईआर अनुसूचित जनजाति	155,000.00			
7) ठ–V (ड) अग्रिम–अन्य शैक्षणिक प्रयोजन (दिल्ली)	282,000.00			50,000.00
8) ठ–V (ढ) अग्रिम– अन्य शैक्षणिक प्रयोजन (लखनऊ)	35,000.00		8,241,104.00	
9) ठ–VI (क) अग्रिम–आकस्मिताएं (विविध)		158,010.00		502,339.00
10) ठ–VI (ग) अग्रिम– अन्य	-	739,108.00		1,482,728.00
11) ठ–VI(घ) अग्रिम–लखनऊ स्थित कार्यालय से संबंधित प्रशासनिक अग्रिम		321,769.00		
अग्रिम– अन्य				
1) ठ–VI (क) अग्रिम–त्योहार		59,400.00		
2) ठ–VI(क) अग्रिम–अग्रदाय		111,600.00	-	332,074.00
3) L-IV(I) Advance-LTC		120,850.00	700.00	
4) ठ–VI (घ) अग्रिम–लखनऊ स्थित कार्यालय से संबंधित प्रशासनिक अग्रिम	32,954.00		14,500.00	
5) ठ–VI (ग) अग्रिम– अन्य	12,150.00	-		
6) ठ–VI (क) अन्य अग्रिमों/प्रतिभूतियों की वसूली			80,500.00	
प्रतिभूतियां तथा जमा राशियां				
1) ठ–VII (क) केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के पास निक्षेप राशि	176,954.00			
2) ठ–VII (ङ) ईंधन हेतु जमा निक्षेप राशि		15,000.00		

भुगतान	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष			
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
ग–IX				
1) ग– IX (क) डाक तथा कोरियर प्रभार (नई दिल्ली)		50,039.00		
2) ग– IX (ख) डाक तथा कोरियर प्रभार (लखनऊ)		10,557.00		126,307.00
ग–X				
1) ग– X (क) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत तथा रखरखाव (नई दिल्ली)		7,827.00		
2) ग– X (ख) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत तथा रखरखाव (लखनऊ)		32,549.00		
3) ग– X (ग) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत हेतु वार्षिक अनुरक्षण प्रभार (नई दिल्ली)		551,843.50		
4) ग– X (घ) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत हेतु वार्षिक अनुरक्षण प्रभार (लखनऊ)		143,280.00		671,881.00
ग–X				
1) ग– XI (क) टेलीफोन प्रभार–29901550		107,877.00		
2) ग– XI (ख) टेलीफोन प्रभार–29964755– सीएम कार्यालय		7,718.00		
3) ग– XI (ग) टेलीफोन प्रभार–29964750 (एमएस)		6,165.00		
4) ग– XI (घ) टेलीफोन प्रभार मोबाइल –(एमएस)		20,142.00		
5) ग– XI (ङ) टेलीफोन प्रभार अध्यक्ष मोबाइल		13,125.00		
6) ग– XI (च) टेलीफोन प्रभार–निदेशक (पीएण्डआर) मोबाइल		11,741.00		
7) ग– XI (छ) टेलीफोन प्रभार सं0 8004922772 (मोबाइल)		5,085.00		
8) ग– XI (ज) टेलीफोन प्रभार–9810223396		20,220.00		
9) ग– XI (झ) टेलीफोन प्रभार–2395349– (लखनऊ)		63,890.00		275,789.00

प्राप्तियां	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
विविध देनदार				
1) ठ–VII(क) विविध देनदार	15,000.00			179,184.00
समूह–ठ				
1) ड–I (ख) समयोजन–पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	17,000.00			
2) ड–I (ग) समयोजन–पूर्व के वर्ष के व्याख्यान हेतु अग्रिम	274,969.00			
3) ड–I (घ) समयोजन–अन्य शैक्षणिक (दिल्ली)	121,500.00			
4) ड–I (ङ) समयोजन–अन्य शैक्षणिक (लखनऊ)	6,788,153.00	52,620.00		
5) ड–II (क) समयोजन–पूर्व के वर्ष के त्योहार अग्रिम		46,875.00		
6) ड–II (ङ) समयोजन–कार खरीदने के लिए पूर्व के वर्ष की अग्रिम राशि		42,720.00		
7) ड–II (घ) समयोजन–स्कूटर खरीदने के लिए पूर्व के वर्ष की अग्रिम राशि		14,400.00		
8) ड–III (क) समयोजन–यात्रा भत्ता		36,590.00		
9) ड–III (ग) समयोजन–पूर्व के वर्ष के अन्य अग्रिम	1,084,905.00			
10) ड–III (घ) समयोजन–पूर्व के वर्ष की आकस्मिक अग्रिम राशि		8,000.00		
समूह–ड				
1) ढ–III (ग) समयोजन–टेलीफोन प्रतिभूति जमा राशि		1,440.00		
समूह–ढ				
1) ण–I (क) आयकर	155,448.00	1,566,931.00	116,472.00	1,302,705.00
2) ण–I (ख) एलआईसी–जीएसएलआईएस		167,997.00		64,021.00
3) ण–I (ग) एलआईसी–एसएसएस		37,548.00		38,115.00
4) ण–I (घ) सीपीएफ		270,000.00		205,000.00
5) ण–I (ञ) एनपीएफ		249,463.00		204,106.00
6) ण–I (ङ) जीपीएफ		4,307,727.00		3,992,070.00
7) ण–I (ज) अन्य धन प्रेषण		102,300.00		234,870.00
8) ण–I (ञ) दुर्घटना बीमा		39,000.00		
अन्य प्राप्तियां				
1) अधिकारियों तथा कर्म–चारिवृंदों को यात्रा भत्ता			22,249.00	

भुगतान	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष		31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष	
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
ग– XII				
1) ग– XII (क) किराया आईसीपीआर लखनऊ		270,000.00		300,000.00
2) ग– XII (ग) अतिथि गृह से संबंधित व्यय	424,839.00	-	-	
ग– XIII				
1) ग–XIII (क) वर्दी (नई दिल्ली)		24,825.00		
2) ग– XIII (ख) वर्दी (लखनऊ)		22,111.00		29,004.00
ग– XIV				
1) ग– XIV (क) आकस्मिताएं (नई दिल्ली स्थित कार्यालय के विविध व्यय)		160,574.00		
2) ग– XIV (ख) आकस्मिताएं (लखनऊ स्थित कार्यालय के विविध व्यय)		80,087.00		218,824.00
3) ग– XIV (घ) सम्पत्ति कर		155,258.00		
4) ग– XIV (ङ) डीडीए को भूमि का किराया		17,589.00		200,245.00
5) ग– XIV (च) कमचारिवृंद प्रशिक्षण शुल्क		13,303.00		44,944.00
6) ग– XIV (छ) कमचारिवृंद कल्याण व्यय		17,854.00		9,000.00
7) ग– XIV (ज) संरक्षा हेतु प्रभार		408,993.00		374,835.00
ग– XIX				
1) ग– XIX (ख) एफआईएसपी/एसआईसीआई सदस्यता		15,000.00		
2) ग– XIX (ग) बैंक प्रभार		7,853.00	112.00	14,391.00
ग– XV				
1) ग–XV(क) वेबसाइट संबंधी व्यय		72,319.00		
2) ग– XV (ख) इंटरनेट कनेक्शन दिल्ली–29964751		13,101.00		
3) ग– XV (ग) इंटरनेट प्रभार–2392636 (लखनऊ)		5,673.00		53,675.00
4) ग– XV (घ) अध्यक्ष का डाटा कार्ड प्रभार		10,212.00		
5) ग–XV (ङ) डाटा कार्ड प्रभार (एमएस)		10,936.00		
ग– XVI				
1) ग– XVI (क) बागवानी संबंधी व्यय– दिल्ली स्थित कार्यालय		4,989.00		4,822.00
ग– XVII				
1) ग– XVII (ख) जेनसेट को चलाने पर व्यय– लखनऊ		16,854.00		
ग– XVIII				
1) ग– XVIII (क) विधिक प्रभार	268,000.00			
2) ग– XVIIII (ख) पेशेवर प्रभार	1,135,606.00			
3) ग– XVIII (ग) मजदूरी		21,496.00	716,464.00	
ग– XX				
1) ग– XX (क) आधिकारिक/गैर–आधारिक आगन्तुकों का सत्कार		19,484.00		

प्राप्तियां	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष				भुगतान	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष			
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत		योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
					ग– XXI				
					1) ग– XXI (क) परिषद् समिति के सदस्यों को यात्रा भत्ता		93,931.00		
					2) ग– XXI (ख) परिषद् समिति का आतिथ्य प्रभार		46,208.00		
					3) ग– XXI (ग) सिटिंग शुल्क		26,000.00	12,000.00	
					4) ग– XXI (घ) शासी निकाय को यात्रा भत्ता		97,921.00		
					5) ग– XXI (ङ) शासी निकाय सदस्यों को आतिथ्य		53,347.00		
					6) ग– XXI (च) शासी निकाय हेतु सिटिंग शुल्क		24,000.00		
					7) ग– XXI (छ) आरपीसी बैठक हेतु यात्रा भत्ता		167,178.00		
					8) ग– XXI (ज) आरपीसी सदस्यों हेतु आतिथ्य		39,915.00	104,721.00	
					9) ग– XXI(झ) आरपीसी सदस्यों हेतु सिटिंग शुल्क		19,000.00		
					10) ग– XXI (ञ) वित्त समिति की बैठक हेतु यात्रा भत्ता		54,434.00		
					11) ग– XXI (ट) वित्त समिति की बैठक हेतु आतिथ्य		14,908.00		
					12) ग– XXI (ठ) वित्त समिति के सदस्यों को सिटिंग शुल्क		10,000.00		
					13) ग– XXI (ड) अन्य समिति के सदस्यों को यात्रा भत्ता		55,722.00		
					14) ग– XXI (ढ) समिति के अन्य सदस्यों का आतिथ्य प्रभार		12,854.00	1,544.00	
					15) ग– XXI (ण) समिति के अन्य सदस्यों को सिटिंग शुल्क		8,000.00		
					16) ग– XXI (त) गैर आधिकारिक सदस्यों को यात्रा भत्ता		5,004.00		1,246,177.00
					17) ग– XXI (थ) गैर आधिकारिक सदस्यों हेतु आतिथ्य		13,349.00		
					18) भवन की मरम्मत तथा अनुरक्षण			6,650.00	1,465.00
					19) जेनसेट हेतु डीजल				7,750.00
					20) पूर्व की अवधि हेतु समायोजन				95,105.00
					समूह–घ				
					1) घ– I (क) राष्ट्रीय अध्येतावृत्तियां				
					2) घ– I (ख) वरिष्ठ अध्येतावृत्तियां		2,460,000.00	3,076,522.00	
					3) घ– I(ग) सामान्य अध्येतावृत्तियां		5,363,000.00	6,340,079.00	
					4) घ– I (घ) कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्तियां		13,866,083.00	9,304,607.00	

प्राप्तियां	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष				भुगतान	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष			
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत		योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
					5) घ– I (ङ) अध्येतावृत्तियों संबंधी अन्य व्यय		293,255.00	800,819.00	
					6) अध्येतावृत्तियां– सामान्य– अनुसूचित जाति		-	2,123,791.00	
					7) अध्येतावृत्तियां– सामान्य– अनुसूचित जनजाति			199,000.00	
					डी–I				
					1) घ– I(ख) वरिष्ठ अध्येतावृत्तियां	40,000.00			
					2) घ– I(ग) सामान्य अध्येतावृत्तियां	866,522.00			
					3) घ– I (घ) कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्तियां	1,592,033.00			
					4) घ– I (च) अध्येतावृत्तियों संबंधी अन्य व्यय	127,396.00			
					5) घ– I (छ) अध्येताओं के अभिविन्यास के संबंध में बैठक	150,172.00			
					6) घ– I (ज) गांधीरामा संगोष्ठि			103,551.00	
					डी–II				
					1) घ– II (क) आईसीपीआर द्वारा आयोजित संगोष्ठियां	981,574.00		2,451,196.00	
					2) घ– II (ख) सम्मेलन	9,138.00			
					3) घ– II (ग) कार्यशालाएं	1,956,477.00		874,069.00	
					4) घ– II (घ) अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	287,284.00			
					5) घ– II (ङ) समीक्षा बैठकें/ अध्येताओं की बैठकें	212,046.00			
					6) घ– II(ज) अन्य शैक्षणिक व्यय	18,874.00		220,000.00	
					डी–III				
					1) घ– III (क) पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	1,355,027.00		739,874.00	
					2) घ– III (क) पुनश्चर्या पाठ्यक्रम संबंधी कार्यशाला सामान्य – एनईआर			270,000.00	
					डी–IV				
					1) घ– IV (क) संगोष्ठि हेतु अनुदान	5,195,795.00			
					2) घ– IV (ख) कार्यशालाओं हेतु अनुदान	1,186,411.00		1,751,009.00	
					3) घ– IV (ग) सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अनुदान– सामान्य अनुसूचित जनजाति			180,000.00	
					4) घ– IV (क) सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अनुदान–सामान्य अनुसूचित जाति			360,000.00	
					5) घ– IV (ग) सम्मेलन/वार्षिक सत्रों हेतु अनुदान	100,000.00		100,000.00	
					6) घ– IV (घ) अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों हेतु अनुदान	180,000.00			

प्राप्तियां	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष				भुगतान	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष			
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत		योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
					घ– V				
					1) घ– V (क) यात्रा अनुदान	41,334.00		15,572.00	
					2) घ– V (ख) यात्रा अनुदान हेतु अन्य व्यय	4,413.00		24,226.00	
					3) घ– V (ग) परामर्श प्रभार			373,326.00	
					घ– VI				
					1) घ– VI (क) प्रदर्शनी / प्रचार	18,836.00			
					2) घ– VI (ख) पुस्तक मेला	55,000.00		66,076.00	
					3) घ– VI (ग) लोक निर्माण विभाग– विद्युता			108,081.00	
					4) घ– VI (घ) पूर्व की अवधि के समायोजन			12,000.00	
					घ– VII				
					1) घ– VII (क) व्याख्यान–राष्ट्रीय	715,478.00			
					2) घ–VII(ख) व्याख्यान–अंतर्राष्ट्रीय	1,137,422.00		1,129,948.00	
					3) घ– VII (ग) व्याख्यान–पत्रिकाएं	260,000.00		320,830.00	
					4) घ– VII (घ) व्याख्यान–एनईआर			154,600.00	
					5) घ– VII (ङ) व्याख्यान–सामान्य –अनुसूचित जाति			30,000.00	
					घ– VIII				
					1) घ– VIII (क) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तथा शैक्षणिक संबंध	23,077.00		46,939.00	
					घ– X				
					1) घ– X (क) परियोजना हेतु अनुदान / अनुवाद परियोजना	1,964,990.00			
					2) घ– X (घ) अन्य विशेष कार्यक्रम	10,500.00		1,816,170.00	
					3) घ– X (ग) पुस्तक अनुदान	-			
					घ– IX				
					आईसीपीआर विशे⌷ा कार्यक्रम				
					1) घ– IX (क) आजीवन उपलब्धि पुरस्कार	262,941.00		396,008.00	
					2) घ– IX (घ) परियोजना / अनुवाद परियोजना	941,024.00		1,587,752.00	
					3) घ– IX (ङ) अन्य	5,506.00			
					घ– XI (एनईआर)				
					1) घ– XI (क) अध्येतावृत्ति सामान्य एनईआर	1,271,025.00			-
					2) घ– XI (घ) अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम– एनईआर	2,117,100.00		970,452.00	
					3) घ– XI (ङ) अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम–सामान्य अनुसूचित जाति			3,700.00	
					4) घ– XI (च) अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम–सामान्य अनुसूचित जनजाति			13,325.00	

प्राप्तियां	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष				भुगतान	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष			
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत		योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
					घ– XI (अनुसूचित जाति)				
					1) घ– XI (क) अध्येतावृत्ति अनुसूचित जाति	1,761,858.00			
					2) घ– XI (ख) संगोष्ठि/सम्मेलन अनुसूचित जाति	1,362,167.00		3,340,650.00	
					3) घ– XI (ग) व्याख्याता– अनुसूचित जाति	86,116.00			
					4) घ– XI (छ) आईसीपीआर विशेष कार्यक्रम– अनुसूचित जाति	32,105.00			
					घ– XI (अनुसूचित जनजाति)				
					1) घ– XI (क) अध्येतावृत्तियां– अनुसूचित जनजाति	48,000.00			
					2) घ– XI (ख) संगोष्ठि/सम्मेलन– अनुसूचित जनजाति	1,410,000.00			
					3) घ– XI (ग) व्याख्याता– अनुसूचित जनजाति	60,000.00			
					4) घ– XI (छ) आईसीपीआर विशेष कार्यक्रम– अनुसूचित जनजाति	400,000.00			
					ई–I				
					प्रकाशन प्रभार				
					1) ई–I (क) उत्पादन व्यय	41,500.00			
					2) ई–I (ख) मानदेय	6,000.00			
					3) ई–I (ङ) वितरकों को भुगतान	210,000.00			
					4) ई–I (च) समाचार पत्रों/वार्षिक रिपोर्ट के संबंध में अन्य व्यय	170,200.00		203,145.00	
					ई–II				
					जेआईसीपीआर व्यय				
					1) ई–II (क) उत्पादन व्यय	69,066.00			
					2) ई–II (ख) संपादन व्यय	138,022.00			
					3) ई–II (ङ) अन्य व्यय	64,242.00		202,210.00	
					समूह–च				
					1) च–I (घ) फर्नीचर और उपकरण	1,292,994.00	-		
					2) च–I (ङ) कार्यालय से संबंधित उपकरण	788.00	-		
					3) च–I (च) कम्प्यूटर, प्रिंटर और संबंधित उपकरण	2,200.00	-		
					4) च–I (ज) पुस्तकालय की पुस्तकें	175,342.00	-		
					5) च–I (झ) पुस्तकालय की पत्रिकाएं	3,855,799.00	-		
					6) च–I (ट) नलकूप और जलापूर्ति	24,457.00	-	3,539,128.00	
					समूह–ज				
					1) ज–I (क) विविध देनदार	211,182.00	131,784.00	7,334.00	74,000.00
					समूह–झ				
					प्रावधान				
					1) ञ–I (द) अन्य अध्येतावृत्तियों				

प्राप्तियां	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष				भुगतान	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष			
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत		योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
					हेतु प्रावधान		-	159,540.00	
					2) ञ–I (म) अन्य प्रावधान	830705		300,000.00	
					3) ञ–I (क) छुट्टी के नकदीकरण हेतु प्रावधान		1,421,051.00		242,740.00
					4) ञ–I (क) उपदान हेतु प्रावधान		1,502,699.00		1,427,895.00
					5) ञ–I (क) वेतन और भत्तों हेतु प्रावधान		2,517,289.00		1,674,804.00
					6) ञ–I (घ) जीपीएफ हेतु प्रावधान		356,815.00		305,904.00
					7) ञ–I (ङ) सीपीएफ हेतु प्रावधान		20,000.00		15,000.00
					8) ञ–I (च) जीएसएलआईएस हेतु प्रावधान		4,973.00		2,527.00
					9) ञ–I (छ) एलआईसी हेतु प्रावधान (एसएसएस)		3,465.00		3,465.00
					10) ञ–I (ज) समयोपरि भत्ते हेतु प्रावधान		2,046.00		
					11) ञ–I (ठ) मासिक पेंशनधारियों हेतु प्रावधान		299,832.00		204,175.00
					12) ञ–I (ड) अन्य धन प्रेषणों हेतु प्रावधान		15,000.00	55,870.00	23,347.00
					15) ञ–I (भ) अन्य शिक्षण शुल्क हेतु प्रावधान				169,683.00
					13) ञ–I (म) अन्य प्रावधान		228,002.00		
					14) ञ–I(य) एनपीएफ हेतु प्रावधान		22,502.00		15,760.00
					समूह–ट				
					शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अग्रिम				
					1) ठ–V (क) अग्रिम–संगोष्ठियां/सम्मेलन	615,000.00			
					2) ठ–V (ख) अग्रिम– व्याख्यान	327,500.00			
					3) ठ–V (च) अग्रिम–अध्येतावृत्तियां		203,500.00		
					4) ठ–V (छ) अग्रिम–आईसीपीआर – विशेष कार्यक्रम	79,000.00			
					5) ठ–V (ज) अग्रिम– शैक्षणिक कार्यक्रम– अनुसूचित जाति	23,000.00			
					6) ठ–V (ठ) अग्रिम–शैक्षणिक कार्यक्रम– एनईआर अनुसूचित जनजाति	155,000.00			
					7) ठ–V (ड) अग्रिम– शैक्षणिक कार्यक्रम (दिल्ली)	428,500.00			
					8) ठ–V (ढ) अग्रिम–शैक्षणिक कार्यक्रम (लखनऊ)	3,185,000.00		8,407,553.00	
					2. अग्रिम– अन्य				
					1) ठ–IV (क) अग्रिम– त्योहार		126,000.00		
					2) ठ–IV (झ) अग्रिम– एलटीसी		120,850.00	700.00	353,195.00
					3) ठ–VI (क) अग्रिम–आकस्मिताएं		238,000.00	14,500.00	
					4) ठ–VI (ख) अग्रिम– अग्रदाय		112,000.00		280,684.00

प्राप्तियां	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष				भुगतान	31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष			
	योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत		योजनागत	गैर–योजनागत	योजनागत	गैर–योजनागत
					5) ठ–VI (ग) अग्रिम– अन्य	964,946.00	739,108.00	1,250,871.00	918,123.00
					6) ठ–VI (घ) अग्रिम– लखनऊ से संबंधित प्रशासनिक व्यय	3,032,954.00	351,769.00		
					7) ठ–VII (ङ) प्रतिभूति– ईंधन		15,000.00		
					8) ठ–VIII (का) ऐसे व्यय जिनका पूर्व भुगतान किया गया है		131,467.50		777,282.00
					9) ट–IV (ट) प्रतिदाय योग्य प्रतिभूति जमा राशि	50,000.00			
					समूह–ठ				
					1) ड– I (ङ)– समायोजन अन्य शैक्षणिक– लखनऊ				
					2) ड–I(ङ)–समायोजन–यात्रा भत्ता		-		
					समूह–ढ				
					धन प्रेषण				
					1) ण–I (क) आयकर	153,773.00	1,597,731.00	53,945.00	1,358,105.00
					2) ण–I (ख) एलआईसी–जीएसएलआईएस		168,077.00		103,437.00
					3) ण–I (ग) एलआईसी–एसएसएस		40,824.00		38,115.00
					4) ण–I (घ) सीपीएफ		270,000.00		205,000.00
					5) ण–I (झ) एनपीएफ		249,463.00		204,106.00
					6) ण–I(ञ) दुर्घटना बीमा प्रीमियम		39,000.00		-
					7) ण–I(ज) अन्य धन प्रेषण		102,300.00		234,870.00
					8) ण–I (ङ) सामान्य भविष्य निधि प्रीमियम		4,307,727.00		3,992,070.00
						-	-	-	
					V. अंत शेष				
					क) हस्तगस्त नकदी				
					1) हस्तगत नकदी	2,699.00	26,543.62	732.00	3,041.62
					2) अग्रदाय शेष		13,527.00	-	13,527.00
					ख) बैंक शेष				
					–अनुसूचित बैंकों में:				
					–बचत खातों में:	24,168,915.49	24,932,558.69	16,498,153.49	19,330,420.69
TOTAL`A'	**70,408,527.49**	**103,278,451.31**	**73,142,283.49**	**67,816,523.31**	कुल 'ख'	**70,408,527.49**	**103,278,451.31**	**73,142,283.49**	**67,816,523.31**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 20.06.2015

ह0/–
(श्रीकुमारन एस0)
लेखा अधिकारी

ह0/–
(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)
सदस्य सचिव

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, बत्रा अस्पताल के निकट, नई दिल्ली–110062

सामान्य भविष्य निधि

दिनांक 31 मार्च, 2015 की स्थिति के अनुसार तुलन पत्र					
देयताएं			परिसम्पत्तियां		
ब्योरा	(रुपए)	(रुपए)	ब्योरा	(रुपए)	(रुपए)
1	2	3	4	5	6
1. **अभिदान**			1. **सावधि जमा**		
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के अनुसार शेष राशि	23,568,931.00		दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के अनुसार शेष राशि	24,684,363.00	
जमाः			जमाः वर्ष 2014–15 के दौरान जमा परिवर्धन	-	
वर्ष 2014–15 के दौरान जमा परिवर्धन	4,644,542.00		वर्ष 2014–15 के दौरान प्रोद्भूत ब्याज	24,684,363.00	
अभिदान पर ब्याज	2,106,967.00				
	30,320,440.00				
घटा :			घटाः वर्ष 2014–15 के दौरान परिपक्व सावधि	-	24,684,363.00
वर्ष के दौरान प्रतिदाय/ वापसी तथा अंतिम निपटारा	3,357,360.00				
पूर्व की अवधि का समायोजन	225,728.00	26,737,352.00	2. **विशेष जमा**		
2. **सामान्य भविष्यनिधि के निवेश से प्राप्त आय**			दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के अनुसार शेष राशि	712,519.00	
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के अनुसार शेष राशि	3,288,398.99		जमाः वर्ष के दौरान परिवर्धन	-	712,519.00
जमा/(घटा):			3. ...की तिथि के अनुसार बैंक शेष राशि		31.03.2015
वर्ष के दौरान पूर्व की अवधि का	225,728.00		–इंडियन बैंक बचत खाता		2,799,082.99
समायोजन अथवा परिवर्धन	145,933.00				
	3,660,059.99				
घटाः					
अभिदान पर ब्याज	2,201,154.00				
पूर्व की अवधि का समायोजन	293.00	**1,458,612.99**			
कुल योग		**28,195,964.99**	**कुल योग**		**28,195,964.99**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 20.06.2015

ह0/–
(श्रीकुमारन एस0)
लेखा अधिकारी

ह0/–
(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)
सदस्य सचिव

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, बत्रा अस्पताल के निकट, नई दिल्ली–110062

सामान्य भविष्य निधि

दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष के दौरान प्राप्तियां तथा भुगतान			
प्राप्तियां		भुगतान	
ब्योरा	(रुपए)	ब्योरा	(रुपए)
1	2	3	4
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के अनुसार अथ शेष	1,460,216.99	वर्ष के दौरान प्रतिदाय/ वापसी तथा अंतिम निपटारा	3,451,547.00
अभिदान राशि तथा अग्रिम राशि का प्रतिदाय	4,644,542.00	सावधि जमा राशि में परिवर्धन	-
परिपक्व सावधि जमा	-	बैंक प्रभार	62.00
बचत खाते पर प्राप्त बैंक का ब्याज	83,943.00	स्रोत पर कर कटौति	-
विशेष जमा राशि पर प्राप्त ब्याज	61,990.00	दिनांक 31 मार्च, 2015 के अनुसार अंत शेष इंडियन बैंक बचत खाता	2,799,082.99
कुल योग	**6,250,691.99**	**कुल योग**	**6,250,691.99**

	ह0/–	ह0/–
स्थान : नई दिल्ली	**(श्रीकुमारन एस0)**	**(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)**
दिनांक : 20.06.2015	लेखा अधिकारी	सदस्य सचिव

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, बत्रा अस्पताल के निकट, नई दिल्ली–110062

अंशदायी भविष्य निधि

दिनांक 31 मार्च, 2015 की स्थिति के अनुसार तुलन पत्र

देयताएं			परिसम्पत्तियां		
ब्योरा	(रुपए)	(रुपए)	ब्योरा	(रुपए)	(रुपए)
1	2	3	4	5	6
1. अभिदान			**1. सावधि जमा**		
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के			दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के		
अनुसार शेष राशि	1,654,876.00		अनुसार शेष राशि	2,977,737.00	
जमाः			जमाः		
पूर्व की अवधि का समायोजन	-		वर्ष के दौरान जमा परिवर्धन	-	
	1,654,876.00		वर्ष के दौरान प्रोद्भूत ब्याज	-	
जमाः				2,977,737.00	
वर्ष 2014–15 के दौरान जमा			घटाः		
परिवर्धन	290,000.00		वर्ष के दौरान परिपक्व सावधि जमा	-	2,977,737.00
अभिदान पर ब्याज	141,148.00				
	2,086,024.00		**2. विशेष जमा**		
घटाः			दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के		
प्रतिदाय/वापसी	893,755.00	1,192,269.00	अनुसार शेष राशि	59,844.00	
			जमाः		
2. अंशदान			बैंकों द्वारा दिया गया ब्याज तथा		
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के			पुनर्निवेश की गई राशि	-	59,844.00
अनुसार शेष राशि	1,351,365.00		4. पूर्व की अवधि का समायोजन		
जमाः			दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के		
नियोक्ता के हिस्से का अंशदान	58,456.00		अनुसार शेष राशि	4,317.00	
अंशदान पर ब्याज	125,143.00		जमाः वर्ष के दौरान परिवर्धन	-	4,317.00
	1,534,964.00		5 31 मार्च, 2015 की तिथि के		
घटाः			अनुसार बैंक में शेष राशि		125,172.40
प्रतिदाय/अंतिम रूप से निपटारा	413,847.00	1,121,117.00			
3. अंशदायी भविष्यनिधि के निवेश से प्राप्त आय					
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के					
अनुसार शेष राशि	1,072,747.40				
जमाः					
वर्ष के दौरान परिवर्धन	42,884.00				
	1,115,631.40				
घटाः	-				
पूर्व की अवधि का समायोजन	251.00				
कर्मचारी के अभिदान पर ब्याज	141,148.00				
नियोक्ता के अभिदान पर ब्याज	120,548.00	853,684.40			
कुल योग		**3,167,070.40**	**कुल योग**		**3,167,070.40**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 20.06.2015

ह0/–
(श्रीकुमारन एस0)
लेखा अधिकारी

ह0/–
(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)
सदस्य सचिव

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, बत्रा अस्पताल के निकट, नई दिल्ली–110062

अंशदायी भविष्य निधि

दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष के दौरान प्राप्तियां तथा भुगतान

प्राप्तियां		भुगतान	
ब्योरा	(रुपए)	ब्योरा	(रुपए)
1	2	3	4
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के अनुसार अथ शेष	1,036,839.40	अंशदायी भविष्य निधि को वापस लिया जाना	1,307,602.00
वर्ष के दौरान अभिदान राशि तथा अग्रिम राशि का प्रतिदाय	290,000.00	दिनांक 31 मार्च, 2015 के अनुसार अंत शेष	125,172.40
अंशदान पर ब्याज	4,595.00		
नियोक्ताश्क हिस्से की अंशदान राशि	58,456.00		
बचत खाते में प्राप्त बैंक का ब्याज	38,064.00		
विशेष निक्षेप राशि पर प्राप्त ब्याज	4,820.00		
कुल योग	**1,432,774.40**	**कुल योग**	**1,432,774.40**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 20.06.2015

ह0/–
(श्रीकुमारन एस0)
लेखा अधिकारी

ह0/–
(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)
सदस्य सचिव

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, बत्रा अस्पताल के निकट, नई दिल्ली–110062

नई पेंशन योजना

दिनांक 31 मार्च, 2015 की स्थिति के अनुसार तुलन पत्र

देयताएं			परिसम्पत्तियां	
ब्योरा	(रुपए)	(रुपए)	ब्योरा	(रुपए)
1	2	3	4	5
1. कर्मचारी का अभिदान			1. दिनांक 31.03.2015 की स्थिति के अनुसार बैंक में शेष राशि	1,182,198.00
जमाः				
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के अनुसार शेष राशि	1,054,002.00			
जमाः				
वर्ष के दौरान परिवर्धन	271,965.00			
	1,325,967.00			
घटाः				
वापसी / अंतिम रूप से निपटारा	867,862.00	458,105.00		
2. नियोक्ता का अंशदान				
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के अनुसार शेष राशि	975,197.00			
जमाः				
वर्ष के दौरान परिवर्धन	258,927.00			
	1,234,124.00			
घटाः				
वापसी / अंतिम रूप से निपटारा	867,862.00	366,262.00		
बैंक में प्राप्त ब्याज				
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के अनुसार शेष राशि	259,266.00			
वर्ष के दौरान परिवर्धन	98,565.00	357,831.00		
कुल योग		**1,182,198.00**	**कुल योग**	**1,182,198.00**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 20.06.2015

ह0 / –
(श्रीकुमारन एस0)
लेखा अधिकारी

ह0 / –
(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)
सदस्य सचिव

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, बत्रा अस्पताल के निकट, नई दिल्ली–110062

नई पेंशन योजना

दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष के दौरान प्राप्तियां तथा भुगतान

प्राप्तियां		भुगतान	
ब्योरा	(रुपए)	ब्योरा	(रुपए)
1	2	3	4
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के अनुसार अथ शेष	2,288,465.00	वापस लिया जाना/ अंतिम निपटारा	
		कर्मचारी का अभिदान	867,862.00
नियोक्ता के हिस्से का अंशदान	258,927.00	नियोक्ता का अंशदान	867,862.00
वर्ष के दौरान कर्मचारी का अभिदान	271,965.00		
बचत खाते पर प्राप्त बैंक का ब्याज	98,565.00	दिनांक 31 मार्च, 2015 के अनुसार अंत शेष	1,182,198.00
कुल योग	**2,917,922.00**	**कुल योग**	**2,917,922.00**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 20.06.2015

ह0/–
(श्रीकुमारन एस0)
लेखा अधिकारी

ह0/–
(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)
सदस्य सचिव

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशनल एरिया, बत्रा अस्पताल के निकट, नई दिल्ली–110062

दिनांक 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष के दौरान प्राप्तियां तथा भुगतान (एफसीआरए)

प्राप्तियां		भुगतान	
ब्योरा	(रुपए)	ब्योरा	(रुपए)
1	2	3	4
दिनांक 01.04.2014 की स्थिति के अनुसार अथ शेष	1,657.00	दिनांक 31 मार्च, 2015 के अनुसार अंत शेष	1,724.00
बचत खाते में प्राप्त बैंक का ब्याज	67.00		
कुल योग	**1,724.00**	**कुल योग**	**1,724.00**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 20.06.2015

ह0/–
(श्रीकुमारन एस0)
लेखा अधिकारी

ह0/–
(डॉ0 एम0 पी0 सिंह)
सदस्य सचिव

XXI
चित्र खण्ड

दर्शन में रसेल की समस्याएं विषय पर कार्यशाला
20–29 अगस्त, 2014, आईसीपीआर शैक्षणिक केन्द्र, लखनऊ

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस
नवंबर 11, 2015, आईसीपीआर शैक्षणिक केन्द्र, लखनऊ

विश्व दर्शन दिवस
20.11.2014

फिलोसॉफी ऑन क्वांटम मैकेनिक्स फॉर फिलोसोफेर्स एंड सोशल साइंटिस्ट्स विषय पर कार्यशाला
1–10 जनवरी, 2014

दिनांक 01 से 10 जनवरी, 2014 को आईपीसीआर अकादमिक केन्द्र में 'फिलोसोफी ऑन क्वेन्टम मेकेनिक्स फॉर फिलास्फर्स एण्ड सोशल साईंटिस्टस्'' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

दिनांक 19 से 31 जनवरी, 2015 के दौरान आईपीसीआर अकादमिक केन्द्र, लखनऊ में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् द्वारा ''अन्नामभामा का तर्क संग्रह'' विषय पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रो0 वी0 एन0 झा।

प्रोफेसर रिचर्ड सोराबजी, आईसीपीआर विजिटिंग प्रोफेसर (विदेश) का व्याख्यान कार्यक्रम
फरवरी 02, 2015

दिनांक 02 फरवरी, 2015 को आईपीसीआर अकादमिक केन्द्र, लखनऊ के सम्मेलन कक्ष में आईपीसीआर के विजिटिंग प्रोफेसर (विदेश) प्रोफेसर रिचर्ड सोराबजी का व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया।

निबंध प्रतियोगिता सह युवा विद्वान संगोष्ठी
16–17 फरवरी 2015

प्रो. सुभाशचंद्र ई. भेलके, आईसीपीआर अतिथि प्राचार्य (भारत) 2014–15,
फरवरी 17, 2015

दिनांक 17 फरवरी, 2015 को आईपीसीआर अकादमिक केन्द्र, लखनऊ के सम्मेलन कक्ष में वर्ष 2014–15 के लिए आईपीसीआर के विजिटिंग प्रोफेसर (इंडियन) सुभाषचंद्र ई0 भेल्के का व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया।

''दलित थ्योरी एण्ड एक्सपीरियंस– दि करेक्ड मिरर'' विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार

दिनांक 11 से 12 मार्च, 2015

आईपीसीआर अकादमिक केन्द्र, लखनऊ के प्रोफेसर राकेश चंद्रा तथा प्रोफेसर गोपाल गुरू सेमिनार के समन्वयक थे।

मानवीय मूल्यों पर दयाकृष्ण : डिवीजन और गतिशीलता विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

16–18 मार्च 2015

दिनांक 16 से 18 मार्च, 2015 को आईपीसीआर अकादमिक केन्द्र, में ''दयाकृष्ण ऑन ह्यूमेन वैल्यू: डिवीजन एण्ड डायनॉमिक्स'' विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित की गई। प्रोफेसर आशा मुखर्जी, विश्व भारती, शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल) इस सेमिनार की समन्वयक थी तथा इस सेमिनार को दयाकृष्ण शैक्षणिक प्रतिष्ठान, शांतिनिकेतन के साथ संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था।

प्रोफेसर मोहिनी मलिक का व्याख्यान कार्यक्रम
आईसीपीआर (विजिटिंग प्रोफेसर भारतीय)
मार्च 19, 2015

दिनांक 19 मार्च, 2015 को आईपीसीआर अकादमिक केन्द्र, लखनऊ में प्रोफेसर मोहिनी मलिक (आईसीपीआर विजिटिंग प्रोफेसर) द्वारा एक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

दिनांक 24 मार्च, 2015 को प्रोफेसर चंदा गुप्ता (आईसीपीआर विजिटिंग प्रोफेसर–इंडियन) का व्याख्यान कार्यक्रम

दिनांक 24 मार्च, 2015 को अपराह्न 2.00 बजे आईपीसीआर अकादमिक केन्द्र के सम्मेलन कक्ष में प्रोफेसर चंदा गुप्ता (आईसीपीआर विजिटिंग प्रोफेसर–इंडियन) का एक व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया।

Indian Council of Philosophical Research

ANNUAL REPORT
2014–2015

Darshan Bhawan
36, Tughlakabad Institutional Area, M.B. Road, New Delhi-110 062

ICPR Annual Report
2014-15

Published by
The Member Secretary
Indian Council of Philosophical Research
Darshan Bhawan
36, Tughlakabad Institutional Area,
M.B.Road
New Delhi-110062
011-29901505, 011-29901506
Email: icpr@bol.net.in

FROM CHAIRMAN'S DESK

It gives me much pleasure in presenting the Annual Report of Indian Council of Philosophical Research for the year 2014-15.

The Annual Report gives an account of programmes carried out by the Council during the year concerned in pursuit of its mandated goals and objectives. This year we were able, as in previous years, to organise our regular academic activities in different parts of the country: activities such as seminars, conferences, workshops, lectures by eminent philosophers both from within our country and abroad and training programmes for our young researchers. We also awarded Fellowships of different categories to deserving scholars. Our Academic Centre in Lucknow has been as active as in previous years and has organized a large number of very significant academic activities.

A far reaching initiative of this year has been the decision to institute special Chairs in different areas of philosophy in Universities in various parts of the country. The initiative has been enthusiastically welcomed by the philosophical community and the Universities.

Mrinal Miri,
Chairman

FOREWORD

The Annual Report (2014-15) of Indian Council of Philosophical Research (ICPR) reflects on all the three wings of our activities viz., academic, administrative, and financial wing. Academic wing mostly operates from the library and the Academic Centre at Lucknow where lecture, seminars, conferences, workshops and study circle meetings are the regular features. ICPR ensured its all-India visibility and effective presence through the scheme of periodic lecture, world philosophy day celebration and lecture programmes of ICPR National Visiting Professors (Indian and overseas). Research Project Committee visualized Chair-professorship and Philosophy Teachers' Meet, each, in the eight geographical zones of the country, viz., North-Western Zone, Northern Zone, North-Eastern Zone, Western Zone, Central Zone, Southern Zone and Coastal India. Apart from this, Foreign Collaboration and Publication divisions of the Council were more active in this year. *JICPR* became e-journal and two issues were in the market. We are working hard to manage its back volumes also.

The activities of the Council used to be administered through website (**www.icpr.in**). Our functions / advertisements were published in the National Dailies and *Employment News.* Virtually, ICPR as a Global Research University devoted to the exclusive field of Philosophy. Research updates and current debates need to be mentioned. Effective monitoring is done by the staff on day-to-day basis. Staff strength is declining due to retirement of staff. Hence it was a challenge for us to meet the target.

There was a cut in grant on both plan and non-plan heads for all the autonomous organizations by the MHRD as a policy decision of the Ministry of Finance, Government of India. We wish the scenario will improve in near future. Meet the author programme, Fellows' meet and international conference, attracted and brought both the young and senior scholars together.

Under the circumstances, the year 2014-15 can be regarded as all successful year.

(Dr. M.P. Singh)
Member-Secretary, ICPR

CONTENTS

	Message from the Chairman	3
	Foreword from Member Secretary	4
	Contents	5
I.	Aims and Objectives	6
II.	Organisational Set up	8
III.	Meetings	9
IV.	Academic Centre, Lucknow (Programmes & Activities)	10
V.	Fellowships	23
VI.	Projects	36
VII.	Publications	38
VIII.	Seminars/Conferences/Workshops/Symposia/Dialogues, etc.	39
	A. ICPR Grants for Seminars/ Conferences/Workshops	39
	B. CPR Grants for Workshops	73
	C. ICPR Organised Seminars	78
	D. ICPR Organised Workshops	80
	E. Meet the Author Programme	81
IX.	Philosophy Teachers' Meet	82
X.	Fellows' Meet	86
XI.	Teaching Logic	92
XII.	Lecture Series	92
XIII.	Lectures by Eminent Indian and Foreign scholars	92
	A. Lectures by Visiting Professors (Overseas)	92
	B. Lectures by Visiting Professors (Indian)	94
	C. Special Lectures Programme	
	D. Lectures by ICPR National Fellows	99
XIV.	Periodical Lectures	100
XV.	World Philosophy Day	107
XVI.	Book Grant of ICPR	115
XVII.	Life Time Achievement Award	119
XVIII.	Celebration of Hindi Pakhawada	122
XIX.	Members of Council, GB, RPC & FC	124
XX.	Note of Annual Accounts	129
XXI.	Photo Section	187

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
ANNUAL REPORT 2014–2015

I. AIMS AND OBJECTIVES

The Indian Council of Philosophical Research set up by the Ministry of Education, Government of India, was registered as a society in March 1977 under the Societies Act, 1860, but it actually started functioning in July 1981 under the Chairmanship of Professor D.P. Chattopadhyaya.

The Council was set up by the Government of India with the following aims and objectives:

- To review the progress of research in Philosophy from time to time;
- To sponsor or assist projects or programmes of research in Philosophy;
- To give financial support to institutions and organizations engaged in the conduct of research in Philosophy;
- To provide technical assistance or guidance for the formulation of research projects and programmes in Philosophy, by individuals or institutions, and/or organize and support institutional or other arrangements for training in research methodology;
- To provide technical assistance or guidance for the formulation of research projects and programmes in Philosophy, by individuals or institutions, and/or organize and support institutional or other arrangements for training in research methodology;
- To indicate periodically areas in and topics on which research in Philosophy should be promoted and to adopt special measures for the development of research in neglected or developing areas in Philosophy;
- To co-ordinate research activities in Philosophy and to encourage programme of interdisciplinary research;
- To organize, sponsor and assist seminars, special courses, study circles, working groups/parties, and conferences for promoting research in Philosophy, and to establish institutes for the same purpose;
- To give grants for publication of digests, journals, periodicals and scholarly works devoted to research in Philosophy and also to undertake their publication;

- To institute and administer fellowships, scholarships and awards for research in Philosophy by students, teachers and others;
- To develop and support documentation services, including maintenance and supply of data, preparation of an inventory of current research in Philosophy and compilation of a national register of philosophers;
- To promote collaboration in research between Indian philosophers and philosophical institutions and those from other countries;
- To take special steps to develop a group of talented young philosophers and to encourage research by young philosophers working in universities and other institutions;
- To advise the Government of India on all such matters pertaining to teaching and research in philosophy as may be referred to it by the Government of India from time to time;
- To enter into collaboration on mutually agreed terms, with other institutions, organizations and agencies for the promotion of research in Philosophy;
- To promote teaching and research in Philosophy;
- Generally to take all such measures as may be found necessary from time to time to promote research in Philosophy; and
- To create academic, administrative, technical, ministerial and other posts in the Council and to make appointments, thereto in accordance with the provisions of the Rules and Regulations.

FUNDING/FINANCE:

The funds of the Council consist of the following:

(a) Grants made by the Government of India for the furtherance of the objectives of the Council;

(b) Contributions from other sources;

(c) Gifts, donations, benefactions, bequests or other transfers;

(d) Receipts of the Council from other sources;

(e) Income from the assets of the Council.

II. ORGANIZATIONAL SET-UP

There are four major bodies vis., Council members' governing body, Research Project Committee, and the Finance Committee which makeup body the main organizational setup of ICPR. The Council which is the highest body of ICPR has a broad-based membership comprising of distinguished philosophers, social scientists, representatives from different statutory bodies, viz., the University Grants Commission, Indian Council of Social Science Research, Indian Council of Historical Research, Indian National Science Academy, the Central Government and the Government of Uttar Pradesh. The Governing Body (GB) and the Research Project Committee (RPC) are the main decision making authorities of ICPR. These authorities are vested with well-defined powers and functions. The Governing Body, consists of Chairman, Member Secretary, not less than three and not more than eight members appointed by the Council, a representative each of the Ministry of Human Resource Development and Ministry of Finance and two nominees of the Government of Uttar Pradesh. It administers, directs and controls the affairs of the Council. The Research Project Committee includes the Chairman, not less than five and not more than nine members appointed by the Council and the Member Secretary. It scrutinizes and sanctions grants-in-aid for the projects and other proposals received or planned by the Council. The Finance Committee scrutinizes the budget estimates and other proposals involving expenditure of the council

The Chairman and the Member Secretary who are appointed by the Central Government are vested with well-defined powers and duties.

During the year under report Professor Mirinal Miri continued as Chairman. Dr. Manendra Pratap Singh continued as the Member Secretary.

The Council has two Directors: 1. Dr. Mercy Helen, Director (Planning and Research) and 2. Dr. Arun Mishra, Director (Academic). Dr. Arun Mishra continued till Nov. 2014. The Council has two Programme Officers, namely, Dr. Sushim Dubey, now at the ICPR Academic Centre, Lucknow and Dr. Saroj Kanta Kar at the Delhi Office. Shri Sreedharan Sreekumaran, who is continuing as Accounts Officer, also handles with the additional duty of Director Incharge (Administration and Finance) till date.

III. MEETINGS

The major bodies of the council apart from time-to-time constituted other committees, met at different times in the year reported, which is as the following.

1. One Council Meetings: 8th Jan., 2015
2. Two Governing Body Meetings: 19th June, 2014 and 8th Jan., 2015.
3. Two Finance Committee Meetings: 18th June 2014 and 7th Jan., 2015.
4. Two Research Project Committee Meetings: 76th RPC – 18th June 2014 and 77th RPC and 77th RPC - 7th Jan 2015.
5. Sub Committee of RPC Meetings: 28th Oct., 2014 and 18th Feb, 2015
6. JICPR Meetings: (I) Agreement between ICPR and Springer on 17th Oct., 2014.
7. Fellowship Selection Committee:
   (1) Two Fellowship Selection Committees for Selection of JRF and GF, held from 26th to 29th May 2014.
   (2) Two Fellowship Selection Committee Meeting for selection of SF JRF held from 10th to 11th December 2014
8. Other Notable Meetings:
   (I) Meeting for Academic Programmes under the Head of SC and ST Budget Allocation for the Year 2014-15 held on 10th June, 2014
   (II) There are periodic meetings of Chairman with staffs and Periodic Meetings of MS with Staffs.
   (III) Meetings for Programmes on Hindi

V. Academic Centre, Lucknow (Programmes and Activities)

Academic Centre of the Council at Lucknow conducted various programmes during the financial year 2014-15.

SL. No.	Category of Activities	No. of Activities
A	Workshops	5
B	Seminars	2
C	Lecture Programme (Overseas)	2
D	Lecture Programme (Indian)	4
E	Other Lectures (World Philosophy Day, National Education Day)	2
F	Young Scholars' Seminar	1
G	Hindi Pakhwada	1

Detail reports of the programmes and activities are as the following:

Workshop on Russell's Problems of Philosophy
20 - 29, August, 2014

The Workshop began on Wednesday August 20, 2014 at 10A.M. After opening remarks by Professor Rakesh Chandra, all the participants introduced themselves in the presence of Dr. Vijay Tankha and Dr. Priyadarshi Jetli in addition to Professor Chandra.

The first session began as per schedule (copy of schedule at the end of the report) with Dr. Vijay Tankha's lecture on Chapter I: 'Appearance and Reality' of *The Problems of Philosophy*. Dr. Tankha set the pace by placing the opening of the book in the context of the roots of Western philosophy and thereby of Russell in Ancient Greek philosophy. There were thirty-first session/teaching hour in the programme. In the last presentations of the participants were taken over the taught theme which was subsequently followed by a question answer period. In all twenty-four participants made presentations. The presentations were of a wide range. Many presentations focused on Russell's distinction between knowledge by acquaintance and knowledge by description and the problem of how we can derive knowledge by description from our knowledge by acquaintance.

In the final 36th session, in the presence of Dr. Sushim Dubey, the Programme Officer of ICPR Academic Centre in Lucknow, each participant gave her/his overall impressions

and assessment of the workshop. Each participant was also given their participation certificate, and the workshop came to an end at about 5:15 P.M. on August 29, 2014.

Report on the workshop on "Philosophy of Mind"
1 – 10 September 2014

A 10 day Workshop on Philosophy of Mind was organised by the Indian Council of Philosophical Research to initiate the participants to the debates and discussions in the philosophy of mind from the contemporary perspective. The course was divided into four different modules: metaphysics of mind, epistemology of mind, semantic problems centring mind and methodology of philosophy of mind. The entire course was designed with the help of inter-active lecture sessions, thought experiments and brain-storming sessions on important issues. The participants were encouraged to raise questions and make presentations on some topics chosen on the basis of class participation. They were provided with ample resource materials, a list of which is appended below.

After the inaugural session of the workshop, the first academic session began. Professor Chatterjee gave an outline of the contemporary approaches to philosophy of mind for three successive sessions of 90 minutes each exposing the participants to the methods and debates and drawing attention to the parallel debates in the Indian philosophical scenario. The last session on the first day was conducted by Dr. Smita Sirker who covered the philosophical problem known as the Mind-Body Dualism and its different varieties. Workshop continued for 10 days. On the last day of the workshop there were interactive discussions on 'what could the Internal be?', 'what is meant by Constitutive Relations, whether the Inner Outer Distinction is sustainable?' and 'what Sense of Self is compatible with the acceptance or non-acceptance of the inner-Outer distinction?'. The course reached its culmination with a valedictory session.

Workshop on "The Makers of Analytic Philosophy"
8-17 October, 2014

The Workshop on "The Makers of Analytic Philosophy" was organized by the ICPR, Academic Centre, and Lucknow under the directorship of Professor R.C.Pradhan from 8

October to 17 October 2014. The objective of the Workshop was to make the participants aware of the developments in analytic philosophy and also to demonstrate the immense value of analysis as a philosophical method in the contemporary times.

The Workshop confined itself to the discussions on the seminal contributions of the founders of analytic philosophy such as Frege, Russell, Moore and Wittgenstein. The concepts of sense, reference, thought, and truth in Frege, the theory of descriptions in Russell , the defence of commonsense and proof of the external world in G.E.Moore and the picture theory of language and meaning , the language-games, rule-following and problems in ethics and religion in Wittgenstein were discussed in the Workshop.

Professor Rakesh Chandra, Department of Philosophy, Lucknow University explained in his lectures the historical development of the method of analysis, its importance and its relevance to our times. Professor Sadhan Chakrabarty, Department of Philosophy, Jadavpur University, discussed the philosophy of G.E. Moore, especially his notions of analysis, commonsense, world, and the Naturalistic Fallacy in Ethics. Professor Amitabh Das Gupta, Department of Philosophy, University of Hyderabad discussed Frege's notions of sense, reference and thought and Russell's Theory of Descriptions. Professor Pradhan, Department of Philosophy, University of Hyderabad discussed Wittgenstein's early and later concepts of language, meaning, world and his views on ethics and religion.

There were twenty-two participants from all over the country, especially from JNU, IIT Bombay, University of Hyderabad, BHU, University of Lucknow, University of Madurai, University of Burdwan and other Universities. The participants took keen interest in the deliberations of the Workshop and actively participated in the discussions. They also made presentations on the topic of their choice.

Professor Rajendra Prasad, the eminent philosopher of India delivered the valedictory address in which he discussed the immense importance of the analytic method in getting clarity of thought and also in avoiding any conceptual confusion, metaphysical or otherwise.

The Academic Co-ordinator, Professor Rakesh Chandra, The Programme Officer, Dr. Sushim Dubey and all the staff members of the ICPR Academic Centre made every

effort to make the Workshop a success.

National Education Day
November 11, 2014

ICPR Academic Centre organized a programme on National Education Day. Prof. Nidhi Bala, Head, Dept. Of Education L.U. and Prof U.S. Vashistha (same Dept) along with Prof. Rakesh Chandra was the guest. Around 31 participants comprising of students, research scholars and faculty members participated in the programme. Various aspects starting with the history of education to current problems etc. were discussed in programme.

World Philosophy Day
November 20, 2014

ICPR Academic Centre organized a programme to commemorate World Philosophy Day on 20th November 2014 as declared by UNESCO world wide.

Professor S.B. Nimse, Vice-Chancellor, Lucknow University was the Chief Guest on the occasion. Professor Pradeep Gokhale (Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi) was invited speaker and the topic of the talk was on "Buddhist Ethics and its Relevance". At the beginning of the Programme Dr. Sushim Dubey, Programme Officer welcomed the Professor S.B.Nimse, Vice Chancellor, Lucknow University and Professor Pradeep Gokhale along with the distinguished guests, scholars and students. Professor Nimse in his address highlighted the general nature of query and analysis with rationality leading to philosophizing. Professor Gokhale in his presentation of paper talked about the core issues in Buddhist Philosophy particularly ethics. Professor Rakesh Chandra spoke about the Ancient Greek Philosopher Socrates and tradition of Philosophy.

Discussion and interactive question and answer followed after the lecture. Programme was coincided with the academic tour of graduation students of Navayuga Kanya Mahavidyalaya. There were around 109 participants in the programme. Programme ended with vote of thanks presented by Dr. Sushim Dubey.

Workshop on "Philosophy on Quantum Mechanics for Philosophers and Social Scientists" January 1-10, 2015

Workshop on "Philosophy on Quantum Mechanics for Philosophers and Social Scientists" was held during 1-10 January 2015 at ICPR Academic Centre, Lucknow. Workshop was conducted by three resource persons as: Professor Bijoy Mukharjee, Department of Philosophy and Religion, Vishwa Bharti, Shantiniketan (Co-ordinator), Professor Prasanto Bandopadhyaya, Department of Philosophy, Montana University, USA and Dr. Rakesh Sengupta (Hyderabad). Intensive session were held on various fundamental topics of Mathematics and their philosophical interpretations were discussed along with the Quantum Physics. Around 16 scholars and teachers participated in the workshop around the country.

Workshop on Tarksangraha of Annambhatta 19th January to 31st January, 2015

A national Workshop on "Tarka-Saṅgraha of Annambhaṁa" was organized by the Indian Council of Philosophical Research between 19th January to 31st January 2015 at ICPR Academic Centre, Lucknow. Prof. V.N.Jha was the Course Coordinator of the Workshop. The Workshop by its nature attracted lots of applications from around the country. Around thirty six participants actively participated in the workshop. The Workshop was mainly intended for Philosophy and allied areas teachers and scholars and reading of basic Sanskrit Philosophical texts having wider prospects like "Tarksangraha of Annambhaṁa" and its close reading was focused. Professor Ujjawala Jha, Centre of Advanced Studies in Sanskrit, Pune University and Professor V.N.Jha were the resource persons who taught the texts. Basic terminology of Sanskrit words which are core to understanding of Indian Philosophy, particularly Nyāya was thoroughly discussed with the reading of the texts "*Tarka-Saṅgraha*".

Workshop was inaugurated on 19th January with the invocation by Professor Jha. Participants were welcomed by Dr. Sushim Dubey, Programme Officer and In-charge Academic Centre. Valedictory session was held on 31st January 2015 in which certificate to the participants were distributed.

Lecture Programme of Prof. P.K.Mohapatra, National Fellow of ICPR January 22, 2015

A Lecture programme of Prof. P.K.Mohapatra, National Fellow of ICPR was held on 22.01.2015 at Conference hall of ICPR Academic Centre, Lucknow. Professor Mohapatra's lecture was focused on two themes on which he prepared his papers. First theme/topic was - “Ethics, Applied Ethics and Indian Theories of Morals” and second theme/topic was on - “Theory of Karma”.

Professor Mohapatra, in detail presented his thought to the audience about various theories of morals. In his lecture he presented reference from ancient texts and anecdotes in Indian Traditions and gave his analyses. After his lecture, now session was opened for the discussion and question answer to the audience. More than thirty six participants were present in the programme.

In the beginning, Professor Rakesh Chandra introduced the speaker to the audiences. Professor Nirupama Shrivastava, former head of the Philosophy Department, Lucknow University chaired the session. Programme was ended by vote of thanks presented by Dr. Sushim Dubey Programme Officer and In-charge of the Centre.

Prof. Richard Sorabji, ICPR Visiting Professor (Overseas) Lecture Programme February 02, 2015

A Lecture programme of Professor Richard Sorabji, ICPR Visiting Professor (Overseas) was held on 02.02.2015 at Conference hall of ICPR Academic Centre, Lucknow. Topic of the lecture was on “Freedom of Conscience Vs Religion and Speech”. Programme started on 2:30 pm by the welcome note by the Dr. Sushim Dubey, P.O. & Centre In-charge. Introduction of the speaker was given by Prof. Rakesh Chandra.

Professor Sorabji in his Lecture elaborated various interpretations of the terms “conscience” and historical meaning attached in Hibru, Roman etc. He described the freedom of Speech and its relation, role and scope as Conscience vis-à-vis religion particularly in Western philosophical traditions. From the Indian tradition, Professor Sorabji gave his examples from ideology of Gandhi and Indian Penal code.

Programme was chaired by Dr. Urvashi Sahani, Director, Study Hall Foundation. Around

38 participants participated in the Lecture programme comprising of scholars, bureaucrats, physicians and teachers of Philosophy and other disciplines. Teacher/ faculty members and scholars from Gorakhpur University also participated in the Lecture Programme. Local News Paper, Hindustan Times (Hindi) Published a news of the Lecture Programme on 03.02.2015.

Essay Competition-cum-Young Scholars' Seminar
16-17 February, 2015

Essay Competition-Cum-Young Scholars' Seminar was organized by Indian Council of Philosophical Research at Its Academic Centre Lucknow. This programme is organized by inviting the entries from young scholars under the age group 25 years. Programme is opened for participation to all subjects' group scholars.

Every year's a topic is decided for the programme and this year topic was "Community, Identity and Individual Right". Topic with brief of programme was circulated in various News Papers at national levels, by letters to the Registrar of the University and Head, Philosophy Departments.

Around 31 entries were given for evaluation, which was the first part of the programme. Professor S.P. Gautam (JNU), Professor Oinam Bhagat (JNU) and Professor Lourdunathan (Madurai) were the evaluators cum judge of the Programme.

Second phase of the programme was personal presentation by the Young scholars who were invited on 16-17 February 2015 at ICPR Academic Centre. Participants actively took part in giving their presentations and onward discussions on the theme.

As decided by Judges, following were the winners of the Programme: First prize (not awarded to any participant), Second Prize (jointly shared by) Mr. Justin Jos Poonjatt and Ms Salma Zafar. Third Prize (Joint) Ms. Ruchika Mann and Mr. Akash Singh. Consolation Prizes – Ms Vandana Upadhyaya, Mr. Ashutosh Vyas, Ms. Hricha Arya, Ms. Arpita Tandon, Ms Swati Gilotra, Mr. Piyush Goyal.

Programme ended with the distribution of participation certificate to scholars, announcement of results and thanking the judges by Dr. Sushim Dubey Programme Officer and Centre In-charge of Academic Centre.

E.Bhelke', ICPR visiting Professor (Indian)
February 17, 2015

A Lecture programme of Prof. Subhaschandra E. Bhelke, ICPR Visiting Professor (Indian) 2014-15 was held on 17.02.2015 at Conference hall of ICPR Academic Centre, Lucknow. Professor Bhelke's lecture was focused on classical Indian Poetics and Performing Arts and on which he delivered his lecture entitled as "Bharatamuni's theory of Rasa and Bhava".

Professor Bhelke, spoke about various aspects of 'Rasa' and 'Bhava' according to Bharatmuni's ***Natyashastra***. He explained that "Rasa is a creation of an artist to enable an appreciator to get an aesthetic experience through relishing it. The creation of Rasa is a transformation of psychic states called Bhavas. Bharatamuni has developed an elaborate theory of Bhavas". After his lecture, now session was opened for the discussion and question answer to the audience in which participants took active parts and sought views and relation with modern theater and performing arts.

In the beginning, Dr. Sushim Dubey welcomed the participants and invited speakers. Professor Rakesh Chandra introduced the speaker to the audiences. Professor Navjivan Rastogi, (Lucknow) chaired the session. Around 37 participants were present during the programme.

National Seminar on Dalit Theory and Experience-The Cracked Mirror
11th - 12th March, 2015

A National Seminar on Dalit Theory and Experience-The Cracked Mirror was organized by the Council at ICPR Academic Centre, Lucknow. Professor Rakesh Chandra and Professor Gopal Guru were the Coordinator of the Seminar.

Inaugural session held on 11.03.2015 at 10:45 at Conference Hall of Academic Centre in which Dr. Sushim Dubey, Programme Officer and In-Charge of Academic Centre welcome the participants and Professor Rakesh Chandra presented the theme of the Programme and already held debate over the Dalit issues concerning with Theory and experiences and Professor Gopal Guru basic contribution to draw the significant issues in early 2002. Programme followed by the Key Note address by Professor Gopal Guru, who elaborated the themes specially related to theory and Practice, experience and egalitarian

inclusion in social sciences. Many of these themes have been discussed in his book “The Cracked Mirror” co-authored with Professor Sunder Sarukkai published by Oxfam University Press in 2012. The prominent points and issues focusing the theme of the Seminar were further elaborately discussed by invited speakers and participants in the seven sessions spreading over both days of which Schedule is attached. Programme concluded with valedictory session thanking all the participants for their active presentations and active participation. Around 30 participants participated in the Programme.

National Seminar on “Daya Krishna on Human Values : Division and Dynamics” 16th - 18th March, 2015

A National Seminar on “Daya Krishna on Human Values: Division and Dynamics” was held at ICPR Academic Centre from 16-18 March 2015. Professor Asha Mukherjee, Vishva-Bharati, Shanti Niketan (W.B.) was co-ordinator of this Seminar and Seminar was jointly organized with Daya Krishna Academic Foundation, Shantiniketan.

Inaugural session was held on 16.03.2015 on 10:30 a.m. at Journal section in which programme officer and in-charge of the Centre welcome the invited participants and the member of Daya Krishna Academic Foundation (DKAF) with flower bouquet. Formal welcome speech read by Professor Asha Mukharjee in which she presented the theme of the programme and spoke about the significant and memorable contribution of the Professor Daya Krishna and issues to be taken up in the Programme. Professor Rakesh Chandra further enlarged the various aspects concerned with the Human Values. Professor Rajendra Prasad, a contemporary to Professor Daya Krishna gave the inaugural address in which he spoke about the fabrics of Values in Human Life and various philosophical interpretations. Presidential address was given by Professor R.S.Bhatnagar, president of the DKAF. Seminar spread in to six academic sessions in three days in which around 37 Scholars actively participated (copy of the Programme is attached).

Valedictory session was held on 18.03.2015 in Journal Section of Academic Centre from 3:00 PM in which Dr. M.P. Singh, Member Secretary, Indian Council of Philosophical Research gave valedictory address. In his valedictory address Professor Singh spoke on his memory and association with Professor Daya Krishna. He also expressed his concern

over the present scenario and declining numbers of students in Philosophical departments in our country. Programme ended with concluding remarks by Professor Asha Mukherjee.

Lecture Programme of Professor Mohini Mullick, ICPR (Visiting Professor Indian) March 19, 2015

A lecture programme of Professor Mohini Mullick (ICPR Visiting Professor Indian) was organized at ICPR Academic Centre, Lucknow on 19.03.2015. Title of the Lecture was "Classical Indian Thought and the Colonial Consciousness". Programme started at 11:30 a.m. at Conference Hall of the Academic Centre. At the outset Professor Rakesh Chandra introduced the speakers to the audience. Professor Mohini Mullick in her lecture draw the attention over the problems of translation and presentation of Concept of Classical Indian thought as are being read in the English language today. She showed her concern as "we look at the work of contemporary Indian philosophers, and their understanding of classical texts—we are naturally interested in works that are today described as Indian philosophy—to see how distortion has crept into our understanding of our own reflective traditions. Not individual authors (though individual works have of necessity to be cited) but the phenomenon of an enduring colonial consciousness is what is sought to be put under the lens". Interesting discussion, question and answer followed after the lecture. Professor Nishi Pandey, Head, Department of English, Lucknow University was chairing the session and she summed up the important points of the Lecture. Programme ended with the vote of thanks given by Dr. Sushim Dubey, Programme Officer and In-Charge of the Centre. Around 34 participants participated in the Lecture Programme.

Professor Chhanda Gupta (ICPR Visiting Professor-Indian) Lecture Programme March 24, 2015

A Lecture Programme of Professor Chhanda Gupta (ICPR Visiting Professor – Indian) was held on 24.03.2015 at 2:00 PM at Conference Hall of ICPR Academic Centre, Lucknow. The topic of the lecture was on "Family: Haven or Prison". Professor Gupta a retired professor from Jadavpur University was working on Social and Political Philosophy for

long and she elaborated and presented the socio-philosophical analysis of the concept of family. She spoke about the two views on family prevailing as 'pro-family' and 'anti-family' and examined each of them. Other core areas concerning with the issue, covered in her lecture were – 'essensialised, universalized and timelessly idealized utopian visions of a basic social formation', 'Functionalist image of a conjugal haven home' etc.

At the beginning of the Programme Professor Rakesh Chandra introduced the speaker to the audience and Dr. Sushim Dubey, Programme Officer and In-charge of the Centre welcomed the speaker and audience. Dr. Alok Tandon chaired the session, who summarized the important points covered in the lecture. Discussions and questions/views follow after the lecture programme.

Raj Bhasha Hindi Sangosthi
March 30, 2015

The programme on Hindi on the theme "Hindi kā Svarūpa Sampark Bhāshā ke Rūp mein" was organised on 26th March 2015. All the officials of ICPR Academic Centre have participated in the event with great enthusiasm. Prof. Sisir Kumar Pandey, H.O.D, Dept. of Hindi, Rashtriya Samskruta Sansthan, Lucknow, was invited as the chief guest and acted as judge for the event of a friendly oratorical competition. At the outset Dr. Sushim Dubey, Programme Officer of the Academic Centre, initiated the debate and issues related with "Hindi as a Language of Communication". Prof. Pandey enlightened the participants on the theme of the event. Then the oratorical competition on the theme was conducted, where Sri Pankaj Rastogi came with first prize, Rs. 1,000/-, Ms. Ritika Bisht got the second prize, Rs. 700/-, and the third prize of Rs. 500/- could not go away from Sri Krishna Kumar. The event was encouraging as well as enlightening.

V. FELLOWSHIPS

The main objective of ICPR Fellowship scheme is to facilitate research in philosophy at various levels by providing financial support to scholars, especially the young scholars, to be engaged on a whole time basis, in research projects on the themes of their choice. The themes of research generally fall under the major areas of investigation in the field of philosophy and related disciplines as identified by the Council . Some of them as the following.

- Theories of Truth and Knowledge.
- Basic Values Embodied in Indian Culture and their relevance to National Reconstruction.
- Normative Inquiries (Ethics and Aesthetics).
- Interdisciplinary Inquiries (Ethics and Aesthetics).
- Philosophy, Science and Technology.
- Philosophy of Man and the Environment.
- Social and Political Philosophy and Philosophy of Law.
- Comparative and Critical Study in the Philosophical Systems/Movements
- Religion.
- Logic, Philosophy of Mathematics and Philosophy of Language.
- Metaphysics.
- Philosophy of Education.
- Philosophy of Social Sciences.

The Council invites applications for fellowships (excluding the National Fellowships) through advertisements in leading National Dailies. Copies of the advertisements are also sent to the Heads of Departments of Philosophy of the universities in the country. Details of various categories of fellowships are given below.

National Fellowships

National Fellowships are awarded to eminent scholars who have made outstanding contribution in the field of Philosophy. The amount of fellowship was fixed as Rs.55,000/- per month with an annual contingency of Rs.60,000/-. These fellowships are awarded on the basis of nominations without inviting applications, and purely on the basis of merit and eminence, regardless of age and official status of the scholars. The fellowships are awarded for the tenure of two years.

The Council did not award national fellowships for the year 2014-15. However, the National Fellows, awarded in last year (2013-14): **Prof. Sukharanjan Saha,** and **Prof. P. K Mohapatra,** are continuing on their work on "*Select Studies in Sankara's Philosophy as in his Commentary on Vedānta Aphorisms*" and "*A Study in Indian Ethics: An Applied Ethical Perspective*", respectively.

Senior Fellowships

Senior Fellowships are usually awarded to the scholar who have publications of a very

high order to their credit. These fellowships are meant for well-known senior professional scholars in philosophy who have made significant contributions to philosophy and related disciplines of study as it is evident from publications of their research papers and books. The fellowship amount is Rs.40,000/- per month, and a contingency grant of Rs.40,000/- per annum. The fellowship is offered for a period of two years.

Two Senior Fellows, out of the selected ones in 2014-15, have joined to the fellowships and are engaged in their research work. They are **1. Prof. Mr. Ramesh Chandra Das,** working on *Wittgenstein's Philosophy of Mathematics: a Study on "Remarks on the Foundations of Mathematics"*; and **2. Prof. Mrs. Meera Gautam** working on *"Suddhādvaita Darśan Ke Pustimargiya Kāvya Mein Paryyāvaran Kā Viśleshan"*

Senior Fellows of last year (2013-14), are also continuing with their works as the following. **1. Dr. Ranjan K. Ghosh** is working on *Literature and Philosophy: Contemporary Discourse;* **2. Dr. Manjula Saxena** is working for the project *Dhvani and Sphota Theories: Their Relevance in Arts and Aesthetics* (submitting a first draft of manuscript, which is under process); **3. Prof. R. S. Bhatnagar** is also working on the project *Our Mind;* 4. and **Prof. Prabal Kumar Sen** is engaged with writing on *Siddhãntabindu.*

General Fellowships

The General Fellowships are awarded to scholars who have shown significant promise and competence in independent research as it is evident from their publications in the form of books and/or research articles. The award of this category of fellowship is given for post-Doctoral Research and research of similar order on the basis of quality of the candidates' research works, and publications of (books or articles). After scrutiny, the eligible candidates are called for interview to assess the merit of the scholars and there project proposal Ph.D. degree is not an essential requirement for this category of fellowship only for the scholar who has experience and promising research output. The fellowship amount in this category is Rs.28,000/- per month and contingency grant is Rs.20,000/- per annum. The fellowship is offered for a period of two years.

The following scholars were awarded General Fellowship for the year 2014-15 with their respective research topics, on which they are continuing the research work. Some of them have been completed and some others resigned as mentioned against them.

GENERAL FELLOWSHIPS 2014-15

Sl. No.	File No. Category	Name of the Fellows	Title of Research Project	Remarks
1	1-8 OBC	*Dr. Mr Arulappan M*	*"Sartre's Existentialistic Ethics: A Critical Study"*	
2	1-9 GEN	Dr. Mr. Biraj Mehta Rathi	"Martha Nussbaum's Cosmopolitanism: A Critical Study"	
3	1-11 NER OBC	Mr. Konthoujam Nongpok Chingkhei Nganba	" A Philosophical Appraisal on Right to Self-Determination Movement with Special Reference to Manipur"	
4	1-12 OBC	Ms. P Nithiya	"The Philosophical and Educational Thought of John Dewey"	
5	1-13 SC	Dr. Mr. Sanjay Kumar Ram	"Dr. B. R. Ambedkar ke Samajik-nyaya ki Avadharana ka Adhyayan"	
6	1-14 GEN	Mr. Sikandar Jamil	A Study Of Kripke's Critique On Kant's Epistemic Foundations	
7	1-15 GEN	Dr. Mr. Walter Menezes	"Viveka in Indian Philosophy : Retrieving the Trans-empirical Pramana in Sankara's Jnana-Marga "	
8	1-33 GEN	Dr. Mr. Chandra Shekhar Vyas	" A Philosophical Groundwork on Business Ethics"	
9	1-34 GEN	Dr. Ms. Hemlata Jain	Haribhadrasuri krita 'Śāstravārtāsamuchchaya' evam Yaśovijaya Krita'Syādvādkalpalata' tīkā ke Ālok mein Śbdārtha	

			- Mīmāmsā	
10	1-36 OBC	Dr. Ms. Neetu Singh	"Phenomenological Study of Education with Special Reference to Existential Values"	
11	1-37 OBC	Dr. Mr. Sajnesh E.V	"Representing The Problem of Real And The Unreal-Philoso -phizing In The Context of New Media"	
12	1-38 GEN	Dr. Ms. Shweta Jain	"Nāgārjuna krita 'Upāyahridaya' kā Dārśanik Anuśīlan"	Resigned
13	1-39 OBC	Dr. Mr. Vishwanath Dhital	"Udayanāchāry krita 'Lakshanāvallyā tattvamīmāmsīyamanuśīlanam"	

The following scholars were awarded General Fellowship during the year 2013-2014 to work on the research projects. Some of them completed and some others resigned as mentioned against their names.

GENERAL FELLOWSHIPS 2013-14

SL.No.	F. No. & Category	Name of the Fellows	Title of Research	
1.	1-8 GEN	Ashutosh Tripathi	Vāchaspatimishra kā Bhāratīya Darshan mein Avadāna	
2.	1-9 OBC	Jeetendra Yadav	Prem Ki Avadhārna Kā Darshanik Smikshātmaka Adhyayan	Resigned
3.	1-10 OBC NER	Khangembam Romesh Singh	On Concern of Moral Theory and Environmental Issues	
4.	1-11 SC	Narendra Kumar Boudha	Āmbedkar Kā Hindu Dharm Ke Darshanik Mahānishkraman	

5.	1-12 GEN	P.I. Devaraj	Implication of Neo-Vedanta In The Social Philosophy of The Renaissance Thinker's of Kerala	
6.	1-13	Rajesh Kumar Tripathi GEN	Śābdabodha: Nyāya Darshan Bhartrhari ke Paridrśya mein Ek Tulnātmak Samīkshā	
7.	1 -14 GEN	Rishabh Kumar Jain,	Jain Dharma Ki Khandanātmak Yojanā: Bhava Sena krit Vishwatatva Prakāsh Ke Viśesh Sandarbh mein	
8.	1-15 GEN	Shruti Rai	A Study of Trika Philosophy of Cognition	Resigned
9.	1-16 SC	Snehlata Kusum	Bhāratīya Samskruti ke Vikāsh mein Rāmāyan aur Mahābhārat kā Yogdān: Swāmī Vivekānand kī drsti	Resigned
10.	1-17 GEN	Ms.Uma Dhar	Contemplative Neuroscience : A Philosophical Assessment	
11.	1-18 GEN	Anoop Pati Tiwari	Radhakrishnan Krta Dhārmik Anubhuti kā Dhārmik Vahulatāvād ke Ālok mein Samīksātmak Adhyayan	
12.	1-19 GEN	Mayavee Singh	Liberal Equality and Ethics	

JUNIOR RESEARCH FELLOWSHIPS 2014-15

Junior Research Fellowships

The candidate for a Junior Research Fellowship should have secured at least 55 per cent marks in post-graduation. This condition, however, is relaxable to the candidates where papers/articles have been published in reputed journal in philosophy.

Registration to Ph.D. programme in Philosophy or allied areas of study is required to be

eligible to avail this fellowship. Institutional affiliation is essential for Junior Research Fellowship.

The fellowship carries a grant of Rs.16,000/- per month and a contingency grant of Rs.15,000/- per annum. There is no provision for pay protection in this category of fellowship.

The Junior Research Fellowships are awarded for a period of two years. However, if the work done by the fellow during his/her tenure is found publication worthy, the fellowship may be extended to the third year in such exceptional cases.

JUNIOR RESEARCH FELLOWSHIPS 2014-15

SL.No.	F. No. & Category	Name of the Fellows	Title of Research	Remarks
1	1-16 GEN	Mr. Gautam Mishra	"Aurobindo, Tagore evam Vivekanand ke Śaikshanik Darśan mein Svatantratā kī Avadhārana"	
2	1-17 OBC	Ms. Hricha Arya	"Tatvopaplavasing kā Samīkshātmak Adhyayan"	
3	1-18 OBC	Mr. Kacha Jignesh Kanjibhai	"Srimad Bhagavad gita ke Naitik Sanskrutik Ayam Evam Unki Samakaleen Prastutata : Ek tulnatmak Adhyanan"	
4	1-19 GEN	Ms. Laxmi Sharma	"Vyākarana Darśane Prathita Prameyānām Nagesa Drstya Svarūpavimarśah"	
5	1-20 OBC	Ms. Maneesha Praveen	"Bhātta Mīmāmsā Navya Nyāya Darśanayoh Padārthānām Tulanātmakamshyayanam"	
6	1-21 SC	Ms. Neetu Majhwar	"Vedānta Darśan mein Bhakti ki Vibhinna Swaroopon ki Samasamayik Prasangikta"	

7	1-22 OBC	Mr. Nikesh Kumar	"Vedanta Parampara ko Madhva, Nimbark aur Vallabh ki Den"
8	1-23 GEN	Mr. Paran Goswami	"Ethical Claims within the Deterministic Metaphysics of Spinoza : A Study"
9	1-24 NER OBC	Ms. Phanjoubam Linthoingambi	"Situating 'Freedom' in Sartre's early and Later Philosophy"
10	1-25 GEN	Mr. Poulosiju K.F.	"The View of Vallabhacharya on Magnitude of Bhakti : A Philosophical Study"
11	1-26 OBC	Ms. R. Savithiri	"Consciousness In Visishtadvaita and Dvaita"
12	1-27 GEN	Mr. Rajiv Ranjan Pandey	"Trigunatit Yoga (Bhagvadgita Ke Sandarbha Mein)"
13	1-28 OBC	Mr. Ram Kishore	"Bauddha Samkhy-Yoga Evam Bhagavadgita ke Sandarbh mein Dukh ka Darsanik Visleshana"
14	1-29 GEN	Ms Ridhyee Chatterjee	"A Critical Study of Discourses of Justice in Contemporary Environmental Ethics"
15	1-30 OBC	Mrs. Rukhsana Khatoon	"Islam Dharma Darsan mein Iswar O Manushya ke Svarup ka Adhyayan"
16	1-31 OBC	Ms. S.Susila Mary	"Inter-Religious Harmony in the Teachings of Swami Vivekananda and Christianity"
17	1-32 SC	Ms. Vijaya S.M. Indira	"Issues in Environmental Ethics: Indian Philosophical Perspective"
18	1-40 GEN	Ms.Affiefa Liyaqat	"An Analytical Study of the Concept of Violence"

19	1-41 GEN	Mr. Ajay Sinwar	"Svami Vivekanand ke dvara Pratipadit Vyavaharik Vedant darsan ka Parisilan evam Vartaman Prasangikakata"
20	1-42 GEN	Mr. Anand Shanker Tiwari	"Visva Santi ke Sandarbh mein Buddha evam Gandhi ke Darsan ka Samikshatmak Adhyayan"
21	1-43 GEN	Mr. Ashwin Jayant	"Phenomenological Hermeneutics of Technological Praxis : A Conceptual Investigation"
22	1-44 OBC	Mr. Awadhesh Yadav	"Sri Aurobondo ke Samagra Yoga"
23	1-45 GEN	Mr. Charanjeet Singh	"J. Krishnamurti's Concept of Freedom: A Systematic and Critical Study"
24	1-46 GEN	Ms. Ekta Saini	" A Philosophical Investigation of Internal History of Human Experience with Special Reference to Mircea Eliade's Understanding of Religion"
25	1-47 GEN	Mr. Gopal Kumar	"Baba Saheb Dan Bhimarav Ambedkar Aur Lokanayak Jayaprakas Narayan ke Smajdarsan ka Tulanatmak Adhyayan"
26	1-48 GEN	Mr Hadule Dhanraj Subhash	"Bhagavan Rajnis (Oso) ke Saikshika Vichar: Ek Darsanik Adhyayan"
27	1-49 OBC	Mr. Jagdeep Singh	"Cultural Conflict and Social Harmony : A Philosophical Analysis with Special Reference to Georg Simmel"

28	1-50 GEN	Ms. Jagriti Rai	"Narivadi paristhitikiy Naitikata ka Samikshatmak Sarvekshan"
29	1-51 OBC	Mr. K.S. Venkatesh Babu	"Karma Yoga in Vethathiri Maharishi's Philosophy and Bhagavat Gita- A Comparative Study"
30	1-52 OBC	Ms. Kamana Sharma	"Nyay Evam Bauddha Darsano mein Artha kI Avadharna ka Tulnatmak Adhyayan"
31	1-53 OBC	Ms. Krishna Singh	"Sri Aurobindo Darsa mein Manav Ekata ki Avadharana ka Samikshatmak Adhyayan"
32	1-54 GEN	Ms. Minakshi Singh	" A Critical Study of Liberal and Communitarian Discourses on Multiculturalism"
33	1-55 GEN	Mr. Mudasir Ahmed Tantray	"Mind, Logic and Language : A Philosophical Study"
34	1-56 GEN	Mujahidul Hoque	Politics of Terrorism: A Philosophical Study
35	1-57 OBC	Ms. Mumun Das	"Phenomenological and Scientific Approaches to Consciousness: a study With Special Reference to Jean-Paul Sartre and David Chalmers".
36	1-58 GEN	Nasir Ahmad Shah	"Seyyed Hossein Nasr on Modernism : A critical Study"
37	1-59 GEN	Ms. Rajlaxmi Ghosh	"Textuality and Sexual Difference : Reading as Re-Writing"
38	1-60 GEN	Mr. Rajesh Kumar Singh	"Nyayaratnagranthasya Samikshatmakmadhyayanam"

39	1-61 SC	Ramasare Prasad	“Sant Gadge ke Manavvad mein Paryyavaraniya Chetana”
40	1-62 OBC	Ms. Rambhateri	“Valmiki Ramayan evam Mahabharat mein naitik mulyon ka Darsanik Vivechan”
41	1-63 GEN	Ms. Ruchitra Chandel	"Educational Philosophy of Paulo Freire: A Phenomenogical Reading"
42	1-65 GEN	Ms. Sakina Khazir	“Feminist Reconstruction of Epistemology : A Critical Study”
43	1-66 GEN	Shri Sandeep Painuly	“Sankhyasara granthena Saha Gunamayitikayastulanatmak -madhyayanam”
44	1-67 GEN	Ms. Sandhya Dubey	“Yogvasishta evam Patanjal Yogadarsan ka Tulanatmak Adhyayan”
45	1-68 OBC	Mr. Sanjeev Kumar Shah	“Paryyavaraniya Naitikata ke Sandarbh mein Mahatmagandhi ke Vichar”
46	1-69 GEN	Ms. Seema Verma	“Samkhyakarikayah Svaminarayanabhashyasya Samikshatmakmadhyayanam”
47	1-70 GEN - PC	Ms. Shweta Baranwai	“Nimbarkvedant visishtadvaita Vedantayoyh Tulnatmakmadhyayanam”
48	1-71 OBC	Ms. Soumya. A.S	“David John Chalmers Non-reductive theory of Consciousness–An Exploration”
49	1-72 OBC	Ms. Sujata Patel	“Bharatiya Darsan Vargikarana Dhraranam Samikshatmakmadhyayanam”

50	1-73 OBC	Ms Trishna Pallabi Lekharu	"The Postmodern Perspective of Ethics: A Critical Study of its Conflict with the Christian View".

The following scholars were awarded Junior Research Fellowship during the year 2013-2014 to work on the research projects. Some of them completed and some others resigned as mentioned against their names.

JUNIOR RESEARCH FELLOWSHIPS 2013-2014

SL.No.	F. No. & Category	Name of the Fellows	Title of Research	Remarks
1.	1-20 GEN	Abir Kumar Das	The Philosophy of Bhartrhari : Some Problems	
2.	1-21 GEN	Alphonse P. K.	Towards an Aesthetic of Sensation: Deleuze's Move Beyond Art	Completed
3.	1-22 GEN	Amit Kumar	Devarāj ki Dārshanik Drsti	
4.	1-23 GEN	Apurvakumar Tripathi	Apurvakumar Tripathi Ramanujacharya on Difference and Identity	
5.	1-24 GEN	Bijaya Prasanna Mahapatra	Phenomenology, Hermeneutics and Language: A Critical Reflection on Gadamer's Philosophy	
6.	1-25 OBC	E. Jegadeeswaran	Understanding Human Dignity: A Comparative Study of B.R. Ambedkar And E.V.R. Periyar	
7.	1-26 GEN	Geeta Vijay Pal	Bharatiya Tatvajnannu Itihas Lekhan : M. Hiriyanna Ane Narmadashankar Mehtana Sandarbhama	

8.	1-27 GEN NER	Hirajyoti Kalita	Tagore's Philosophy Of Man : A Study	
9.	1-28 GEN NER	Jayashree Deka	Ascriber Contextualism of Epistemic Contextualism	Resigned
10.	1-29 OBC	K. Vengadachalam	Sri Aurobindo's Conception of Consciousness : A Critical Study	
11.	1-30 OBC	Kumar Rishabh	Nyaya Aur Samant Ka Darshnik Avalokan Marxvad Evam̀ Anya Ke Pariprekshya Mein	
12.	1-31 GEN	Mane Pradeepkumar Pandurang	Swami Vivekananda on Buddhism and his Sarvajanika Dharma : A Philosophical Study	
13.	1-32 GEN	Sandeep Kummr Chaurasia	Hathayoga Pradipika ka Darshanic Vivechana	
14.	1-33 GEN	Sanjit Chakraborty	Mind And World: Beyond the Externalism / Internalism Debate	
15.	1-34 OBC	Santhosh Kumar K	Conceptualising Intersubjectivity in Friedrich Nietzsche and Emmanuel Levinas	
16.	1-35 GEN	Selim Babu	Perception and Sense Data : A Study Into the Mind World Relation	
17.	1-36 GEN	Shitanshu Pandey	Nyayabindu ki Jñana Mimam̀siyaAvadharaṅa ka Samikṙatmak Adhyayan	
18.	1-37 GEN	Sreejith K. K.	The Achievement Thesis And the Credit Thesis : Examining Some Virtue-Theoretic Approaches Towards Knowledge	
19.	1-38 GEN	Sreetama Misra	Solidarity Rights and the Prospect of 'Planetary-Global"	Resigned

	NER		Ethics; A Philosophical Inquiry	
20.	1-39 GEN	Subhankari Pati	An Examination of Justice and Right With Special Reference to Aristotle and Rawls	Completed
21.	1-40 OBC	Sujatha K	Intersubjectivity Life-World and Social Context in Edmund Husserl's Phenomenology	
22.	1-41 OBC	Tharique Hussain K A	A Critique of Deep Ecology from Gandhian Perspective	
23.	1-42 GEN	Vichitra Narayan Pandey	Aesthetics of Rabindranath Tagore	
24.	1-43 SC	Vijayanand V.	Ambedkar's Approach to Indian Philosophy : A Critical Study	
25.	1-44 GEN	Debanjali Mukherjee	Moral Status of Animals : A Critical Exploration	
26.	1-45 GEN	Gyanesh Kumar Tripathi	Nyaya Vedantabhimata Pramana Svarupa Vivechana	
27.	1-46 GEN	Pankaj Pandey	Bharatiya Darshan mein Sabdartha Vichara	
28.	1-47 OBC & PC	Amrit Lal Vishwakarma	Sri Aurobindo Ka Samaj Darsan: Ek Samikshatmak Addhayan	
29.	1-48 GEN	Arun Garg	"A Comparative Study of the Philosophical Views of Edmund Husserl and Ludwig Wittgenstein on the Foundations of Mathematics.	
30.	1-49 SC	Biman Karmakar	Concept Of Soul In Naya-Vaisesika Philosophy: Some Observations.	
31.	1-50 SC	Bindu Kumri	Samkhya Darsan mein Pramana Mimamsa	

32.	1-51 GEN	Jaydev Sharma	"Origins of the Varnashrma Dharma: A Psycho-philosophical Iinterpretation with an Aurobindonian Perspective"
33.	1-52 GEN	Jeyeeta Majumdar	"The Paradox of Solipsism in Husserl's Phenomenology: a Critical Study"
34.	1-53 NER	Kakali Bezbaruah	"Sankaracarya's Commentary On The Bhagavad Gita – A Critical Study"
35.	1-54 GEN	Lalit Saraswat	"Philosophical Perspective On Biology Of Consciousness"
36.	1-55 GEN	M. Jyothimani	Advaita Vedanta: A New Interpretation
37.	1-56 GEN	Malcom R. Printer	"Benefits of Vipassana Meditation for All Ages – A Philosophical Perspective
38.	1-57 OBC	Mukesh Kumar Behera	Democratization of Technology: A Critical Study on Andrew Feenberg
39.	1-58 GEN	Munish Kumar Mishra	Acharya Samkaramisra Krita Kanada Rahasyasya Samikshatmakamadyayanam
40.	1-59 GEN	N. Shridhar	Vaisesika-darsanasya katipaya-siddhantanam vaijñanikaritya vimarsah
41.	1-60 OBC	Nidhi Chaudhary	Jivagoswami Pranita Krama Sandarbha Ki Darsanik Mimamsa
42.	1-61 OBC	Parul	Vaishashiksutropaskar Nirupit Vishesh Gun Samikshanam
43.	1-62	Pankoj Kanti Sarkar	Environmental Ethics And

	SC		Future Generation: Some Observations	Resigned
44.	1-63 GEN	Rakesh Kumar Singh	Question Of Being: A Critical Reflection Of Heidegger,s Philosophy	
45.	1-64 OBC	Rakhi Debnath	Revisiting the Tale of Jaques Derrida's Deconstruction : A Critical Study	
46.	1-65 SC	Rohit Sudhakar Gaekwad	"Astittavavadi Tattavadnyanatil Mratyu Sankalpna : Ek Tattvik Chikista"	
47.	1-66 GEN	Saurabh Todariya	Temporality, Freedom and Repetition: A Study of Martin Heidegger's Philosophy	
48.	1-67 GEN	Shankar Dutt	Chatuhu Sutri Paryantayaha Shivarkamanideepikayaha Sameekshatmakmadhyayanam	
49.	1-68 OBC	Sharda Vandana	Marx evam Manavendra Nath Raya ke Bhautikvad ka Tulnatmak Adhyayan	
50.	1-69 GEN	Sima Devi	Manavatavad : Ek Darsanik Adhyayan (Swami Vivekanand ke Visesh Sandarbh mein)	
51.	1-70 GEN	Shweta Singh	Moral Generalism and Particularism: A Critical Analysis	
52.	1-71 GEN	Sonika Verma	Converging Stories In Ecocriticism : A Study Of Race, Class, Gender And Literary Ecologies	
53.	1-72 SC	Surjit Kumar	Heidegger's Concept Of Art: A Critical Analysis	Resigned

54.	1-73 GEN	Surya Prakash Pandey	Gandhi Darsan Me Ahimsa Ki Avdharna Ke Vividh Ayam Evam iska Samkalin Punarmulyankan
55.	1-74 OBC	Terence Mukhia	Impact of Christianity upon the Lepcha and Tamang Tribal Communities in the Darjeeling District (1841-2012) – A Philosophical Perspective
56.	1-75 GEN	Vikash Kumar Singh	Sankar ki Maya ki Avadharana ka Swami Vivekanananda aur Shri Aurobindo ke Alok mein Darsanik Anusilan
57.	1-76 GEN	Zaid Ahmad Siddiqui	Ideology Of Aesthetics In Rabindranath Tagore

VI. PROJECTS

Under its scheme for projects the Council provides financial grants for project through institutions to individual scholars on the basis of merit of their proposals. The proposals are invited throughout the year. The proposals are put up for assessment periodically two to three times in a year. The evaluation reports are kept in Research Project committee (RPC) for final approval and then the financial grants are provided to the grantee as per the terms and conditions of the council to carry out the projects. Sometimes, proposals are also directly evaluated by the RPC. In some cases, the Council also commissions some specific projects, if competent body of ICPR approves the same. The manuscripts of the projects are put up for evaluation and subsequently taken for possible publications.

In the year 2014-15, following projects were granted for financial assistance.

SL.No.	Name of the Grantee	Title	Budget and Time Span
1.	Dr. Lipi Mukhopadhyay	**An Explorative Study of Socio-economic and Cultural Changes in Descendants of**	Rs. 1.55 lakhs

2.	Dr. C. Poulose	**Sri Ramakrishna Paramahansa Culture, Tradition and Contemporary Changes: Rediscovering the Meaning and Relevance of Guru Tradition in Indian Cultural Tradition**	6 months Rs.13.33 lakhs 2 years.
3.	Dr. Hemanta Kumar Kalita	**Understanding Tribal Religion and World Religion in The Context Of Lower Assam Of North East India**	Rs2.00 lakhs 2 years
4.	Dr. Alok Tandon	**Living Together : Rethinking Identity And Difference In Modern Context**	Rs.1.50 lakhs 2 years
5.	Dr. Abha Singh	**Concept of Freedom in Buddhism and Existentialism**	Rs.2.00 lakhs 6 months
6.	Dr. Atreyee Mukherjee	**Empathy: Different Perspectives**	Rs.2.00 lakhs 2 years
7.	Dr. Gyan Prakash	**Traversing the territory of comparative philosophy**	Rs.2.00 lakhs 2 years
8.	Dr. Prashant Bagad	**Gandhi's Critique Of Modernity In Hind Swaraj: A Philosophical Study**	Rs.1.50 lakhs 3 years.
9.	Dr. Lalima Dhar Charkaborti, New Delhi and Co investigator Dr. P.G. Dhar Chakraborti	**Philosophy of Rabindra Sangeet**	Rs.6.00 lakhs 2 years
10.	Dr. Reena Patra	**Ethnic Identity Nationalism & Culture: Phenomenological Grounding for otherness in North East India**	Rs.10.00 lakhs 2 years
11.	Dr. Preeti Singh	**Sufism – A Study Of Its Historical Perspectives And Elements Of Communal Harmony In An Age Of Conflict**	Rs.10.00 lakhs 2 years

12.	Professor George Karuvelil	**Realism And Relativism: Towards An Epistemology For The Post Modern World**	Rs.2.63 lakhs

VII. PUBLICATIONS

Publication of books in philosophy and its allied discipline of study is one of the prominent activities of the Council for publication, the Council considers the manuscripts produced by projects, fellowships, seminars and workshops sponsored by it, apart from the theme taken for publication by its Research Project Committee. Under its publication programme, the Council has considered to publish the following in the financial year 2014-15.

SL.No.	Name & Designation of the Author/Editor	Title of the Volume	Co-publisher, ISBN & Price of the Book
1.	Professor A. D. Sharma and Sachhidananda Mishra,(Ed.) and K. N. Jha. (tr. In Hindi)	**Nyayadarshan** (Nyāyasūtra-Nyāyabhāsya) Mahāmohopādhyāya Phanibhushan Tarkvagishkrita Bangla Vyākhyana sanbalita	M/s D.K. Printworld ISBN 978-81-246-0809-8 Rs. 1050/-
2.	Prof. Tapti Maitra	**Advaita Metaphysics: A Contemporary Perspective**	M/s D.K. Printworld ISBN 978-81-246-0747-3 Rs. 425/-
3.	Prof. Sujata Miri and Prof. Karilemla	**Ao Naga World-View: A Dialogue**	M/s D.K. Printworld ISBN 978-81-246-0808-1 Rs. 465/-
4.	Manashi Dasgupta Ed. By Probal Dasgupta	**On Love and Friendship in the Indian Context and Sigmund Freud**	M/s D.K. Printworld

ISBN 978-81-
246-0809-8
Rs. 550/-

VIII
SEMINARS/CONFERENCES/ COLLOQUIA / WORKSHOPS/SYMPOSIA /DIALOGUES

ICPR organises national and international seminars on a variety of themes in the field of philosophy and interdisciplinary studies in order to provide an opportunity for scholars to state their research, express their views and interact with other scholars, In addition, the Council gives grant to philosophy departments in Indian universities to organise seminar/ symposia/workshops/dialogues. During the year 2014-2015 under report, the Council released some grants to different institutions for organising the programmes, as well as organised some programmes as the following.

A. ICPR Grants for Seminars/ Conferences/Workshops, etc.

SL. No.	Name of the Organizer	Title of the Seminar	Budget under Sanction
1.	The Principal, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi, New Delhi	International Conference on **Asiatick Society: Indology and Indologist During late 18th and 19th Centuries**	Rs. 5,00,000/-
2	Dr. R. Ahmed , Department of Persian, Gauhati University, Gopinath Bardoloi Nagar, Guwahati- 781014	National seminar on **Philosophical Wisdom of Umar Khayam & Its impact on Eastern & Western Philosophical Circles'**	Rs. 5,50,000/-
3.	Dr. S. Lourdunathan, Department of Philosophy, Arul Anandar (Autonomous) College, Karumathur, Madurai 625 514.	National seminar **Perspectives Of Identity And Relationality In The Changing Patterns Of Democratic and Theocratic Society**	Rs. 2,40,000/-

4.	Dr. Manisha Barua, Department of Philosophy , Gauhati University, Guwahati 781014 Assam	Seminar on **The Neo Vedantism of Dr. Radhakrishnan-An appraisal**	Rs. 2,75,000/-
5.	Dr. Om Prakash Bharatiya, Associate Professor, Department of Sociology, Faculty of Social Science, BHU, Varanasi 221005	Seminar on **Social Philosophy of Dr. Ambedkar**	Rs. 2,00,000/-
6.	Professor Dr. Ashoka Kumar Tarai, School of Philosophy and Culture, SMVD University, J&K.	Seminar on **Enhancing Research skills in Philosophy**	Rs. 2,61,000/-
7.	Principal, Loyola College, Chennai.	Seminar on **Shrines and Pilgrimages: Philosophical Perspectives**	Rs. 1,00,000/-
8.	Ms Shimi CM, Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Ernakulam 683574	Seminar on **Multiculturalism and the Politics of Recognition: Philosophical Dimensions of Issues Related to Multiculturalism in Contemporary India**	Rs. 2,60,000/- (including additional amount of Rs. 60,000/-)
9	Professor Prakash Chandra Mohapatra, Reader in Philosophy, Choudwar College, Choudwar, PO- Kapaleswar, Dist. Cuttack – 754071.	Seminar on **Moral Philosophy of Professor P.K. Mohapatra**	Rs. 1,00,000/-
10	Professor G. Mishra, Department of Philosophy, Chepauk Campus,	National seminar on **"Doing Philosophy – Innovation and Transcending the Tradition from**	Rs. 3,70 ,000/-

	University of Madras, Chennai-5	**Within: Contributions of Srinivasa Rao to Contemporary Philosophical Thought"**	
11	Swami Suparnananda, Ramakrishna Mission Institute of Culture, Gol Park ,Kolkata 700 029	National seminar on **Cultural Heritage**	Rs. 5,00,000/-
12	Professor R.B.S. Verma, Department of Social work, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun, Nagaur Rajasthan 341306	National seminar on **Tribal rights: Philosophical Base, Problems and Prospects**	Rs. 3,00 ,000/-
13	Dr. Arati Barua, Associate Professor, Philosophy, Deshbandhu College,	International seminar on **Self, World and Morality: Schopenhauer and Indian Philosophy with a special Kalkaji, New Delhi reference to the Upanishads (Oupnik'hat)**	Rs. 5,00,000/-
14	Dr. Apaar Kumar, Assistant Professor of Philosophy, Manipal Centre of Philosophy & Humanities, Dr. TMA Pai Planetarium Complex, Manipal University, Manipal -576 104	National seminar on **Rethinking Svaraj**	Rs. 3,42,000/-
15	Dr. Babu M.N. Asst. Professor Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Kerala 683574,	Seminar on **Contemporary Re -readings of Indian Aesthetics: A Vision From The South**	Rs. 3,00,000/-
16	Dr. Muhammad Saheer, Department of Education, Vishva Bharati,	National seminar on **Sufism and Indian Spiritual Tradition: Sustaining the Education of Heart**	Rs. 2,80,000/-

	Santiniketan 731235		
17	Dr. Raghunath Ghosh and Dr. Laxmikanta Padhi, Department of Philosophy, University of North Bengal, Raja Rammohunpur, Darjeeling, WB 734 013	National seminar on **Philosophy of Religion Conflicts and Perspectives from 27 to 29 November 2014**	Rs. 3,50 ,000/-
18	Dr. S. Lourdunathan, Associate Professor & HOD, Department of Philosophy. Arul Anandar College, Karumathur 625514 Madurai, Tamil Nadu	National seminar on **Dalit Self: Philosophical Investigations**	Rs. 5,00,000/-
19	Dr. Sashinungla, Associate Professor, Faculty of Arts, Department of Philosophy, Centre of Advanced Study, Jadavpur University, Kolkata 700 032	National seminar on **Dalit Epistemology and Feminism**	Rs. 4,23500/-
20	Dr. Rakesh Soni, Department of Philosophy, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak, (Lalpur–Pondki) Campus Tehshil Pushparajgarh, Distt. Anuppur, M.P.	National seminar on **Understanding the Tribal Culture**	Rs. 5,00,000/-
21	Dr. Nani Bath Rajiv Gandhi University, Rono Hills Doimukh 791112.	National seminar on **Philosophy, Social Science and Tribes**	Rs. 5,00,000/-
22	Professor Prasenjit Biswas, NEHU, Shillong	Round Table on **South East Asian Tribal World: Views and Philosophy**	Rs. 5,00,000/

23	Professor P.S.Ramakrishnan, President, Indian Academy of Social Sciences; Iswar Saran Ashram Campus, Allahabad 211 004	**XXXVII Indian Social Science Congress**	Reimburseme-nt case (?)
24	Dr. Md. Sirajul Islam, Professor and Head, Department of Philosophy and Religion, Visva Bharati, Santiniketan, 731235	National seminar on **Women Issues in Philosophy and Religion**	Rs. 2,25,000/-
25	Dr. Raj Kumar Modak , Assistant Professor in Philosophy, Sidho Kanho Birsha University, Purulia, West Bengal	Ten days workshop on **Philosophy Through the Analysis of Language**	Rs. 4.75,000/-
26	Professor Pandikattu Kuruvilla, Jnana Deepa Vidyapeeth , Institute of Philosophy and Religion, Ramwadi, Nagar Road, Pune 411 014	Seminar on **Democratic We: A Philosophical Search For Human Development And Pluralistic Nationhood**	Rs. 3,05,380/-
27	Professor R.P. Singh, President, Indian Academy of Social Sciences, Iswar Saran Ashram Campus, Allahabad	National seminar on **XXXVIII Indian Social Science Congress**	Rs. 3,00 ,000/-
28	Dr. Dominic Meyieho, Assam Don Bosco University, Airport Road, Azara , Guwahati 781017	International conference on **Asian Values and Human Future**	Rs. 2,00,000/-

29	Professor Franson Manjali, School of Language, Literature and Culture Studies , Jawaharlal Nehru University, New Delhi 110067	International seminar on **Philosophy, Language and the Political: Re-evaluating Post Structuralism**	Rs. 1,00,000/-
30	Professor Prajit K. Basu Dept. of Philosophy University of Hyderabad	**International Seminar 'Intentionality Normativity and Objectivity'**	
31	Professor Ranjan Kumar Panda Dept. of Philosophy HSS, IIT, Bombay	**International Conference report on "Self-Knowledge and Moral Identity"**	Rs. 4,13,000/-
32	Dr. Bhangya Bhukya, Dept. of History, University of Hyderabad	**Revisiting Adivasi Autonomy: Self, Home and Habitat**	Rs. 5,00,000/-

Select-Reports on Some of the Above Mentioned Events

Report of the ICPR National Seminar on "Doing Philosophy – Innovation and Transcending the Tradition from Within: Contributions of Srinivasa Rao to Contemporary Philosophical Thought" organized at the Department of Philosophy, University of Madras during 13-15 March 2015

Report by
Profesor G. Mishra

A Three day Seminar on the above topic was organized in the Library Hall of the Department of Philosophy, University of Madras. Professor R. Gopalakrishnan, Former Head chaired the Inaugural session with Professor Mrinal Miri as the Chief Guest.

The purpose of the seminar is to critically appreciate and evaluate Srinivasa Rao's writings, his creative genius and his contribution to Advaita and other systems of Western

as well as Indian thought. Most of the scholars who presented papers delved into one or the other aspect of Prof. Rao's thematic interpretation while a few traditional scholars emphatically elucidated the traditional trends and reflections on those topics.

In the Inaugural session, Prof. G. Mishra officially welcomed the delegates, dignitaries, participants and other invitees. In the presidential address, Dr. R. Gopalakrishnan presented the personality traits, academic acumen, uncompromising attitude, personal interaction, fraternal mobility etc. of Prof. Srinivasa Rao. Prof. Mrinal Miri in his inaugural address expressed his association with Prof. Rao and appraised of his writings which are pertinent to the present seminar.

In the first academic session, two eminent scholarly speakers exuberantly exemplified the doctrinal expositions of Advaita Vedanta. Prof. N. Veezhinathan, in his first key-note speech asserted that without a fair understanding of the concept of maya, none can either realize the reality of Brahman or know the nature of jiva. The traditional view of the Advaita both from the theoretical side and from the practical perspective have been authentically emphasised by him. Swami Paramananda Bharati in his second key-note address held that solutions for all doubts arising in the minds of intellectuals, students and ascetics cannot be available in a single place of the scriptures which contain mutually contradictory statements. Only in the bhasyas one can find the solutions to all doubts. He made a hermeneutical approach to study and understanding of the scriptural texts.

Dr. Mani Dravid validated the traditional position of the prasthanakaras, like Vacaspati Misra and Prakasatman and held the position that Mulavidya is logically valid in Advaita. Sri Goda Venkateswara Sastri, while discussing the Vivarta vada of Advaita with reference to the relation between Brahman and Maya, dealt extensively with the agreement and disagreement on the nature of the world with a detailed focus on the commentators of the Prastanatraya. Emmanuel Uppamthadathil presented his paper as a critical appraisal to Prof. Srinivasa Rao's views on the theories of perceptual error.

The evening session was devoted to the release of two books. Professor M. Anandakrishnan released the book "Philosophy and Education" by Professor Miri. Professor Bijoy Boruah and Dr. G. Vedaparayana spoke about the book. The Second book "Vedante without Maya" edited by G. Mishra was released by Professor Mrinal Miri and the copies were received by Dr. C.L.Ramakrishnan, Swami Paramananda Bharathi and

Professor V. Swaminathan.

The second day stated with the paper presented by Prof. V. Swaminathan who gave a vivid picture of Sri Rama Sastri's Critique of Nagesa's refutation of avidya and Anirvacaniya khyati. At length, he discussed the chosen theme from several standpoints.

Dr. Rupa Bandopadyaya presented her paper on Advaita theory of perceptual illusion: with special reference to Srinivasa Rao. She argued that the nature of illusion is in the metaphysical and epistemological arena in Advaita and presented the views of Prof. Srinivasa Rao on this topic. Dr. Anil Kumar Tiwari highlighted the theories of perceptual error according to Buddhism and the reflections of Prof. Srinivasa Rao in his book 'Perceptual Error: The Indian Theories'. He made a sincere survey of the viewpoints of Prof. Rao and explored the reasons leading to such observation.

Dr. Bijoy Boruah had made a scholarly presentation on the theme 'The Non-Intentionality of I-consciousness' and insisted that the non-intentionality thesis is true as far as the case of self-consciousness is concerned. He analyzed certain key-points like 'me consciousness, 'I' transformer as me, critical analysis of self-acquaintance'. 'me awareness', 'me identity', 'Experience is ground in existence' 'I-am-ness' 'I am aware of being I am' etc. Prof. U. A. Vinayakumar dealt with the review of C. Ram Prasad on the book of 'Advaita: A critical study' by Srinivasa Rao and attempted to show that Rao was essentially on the right track.

Sri Ira Schepetin reviewed the development of Advaita from Sankaracarya to Swami Saccidanandendra Saraswati by focusing on self-realization as the most valuable and important phenomenon. He asserted that ignorance is not maya, but ignorance is the cause by maya. Sankara never believed in mulavidya. Sri Sasidhara Sastri presented his views on the nature of the world and exerted the scholars to view Advaita from the karya-karana angle that from the karana stand-point there is no vyavaharika and from the karya standpoint, it is; and they are not contradictory. Intellect which is the karya can seldom discover the karana, the ultimate.

Dr. Varun Kumar Tripathi highlighted the two treatments of ignorance as interpreted by Prof. TRV. Murti and Prof. Srinivasa Rao. He attempted to establish that Prof. Rao, though departed from the conventional views like those of TRV Murti, is yet within the framework of Advaita. Dr. R. Murali has critically analyzed and evaluated the concept of

corruption as discussed by Prof. Rao in his upcoming book 'Philosophy for you'.

The third day of the seminar started in the paper presented by Dr. John Grimes who presented his views on ignorance, omniscience, creation, one and the many, subject-object dichotomy, liberation etc., from the Advaita point of view, criticizing the views of Saccidanandendra Saraswati.

Prof. P.K. Mukhopadhyaya's paper was read out by Prof. R. Gopalakrishnan in which the former appreciated Prof. Rao's endeavor along with other contemporary scholars in making critical appraisal of the traditional Indian Philosophical Views.

Dr. S. Lourdunathan attempted to revisit the reflective augmentation of Prof. Rao from his work 'Philosophy For You'. The sense of being Philosophical besides being cultural, social, political and moral is the crux of his theme wherein he reiterated that on being philosophical means engaging critical sense of being social, cultural etc. without losing ethico-philosophic sense.

Prof. Pradeep Gokhale expressed a few reflections on the Indian theories of perceptual error as analyzed by Prof. Rao. His reflections are mainly concerned with valid knowledge, invalid knowledge, metaphysical error, and the like.

Dr. Uma Devi, in her paper on 'The Concept of Sarvatmabhava in Sankara's thought' attempted to show the method of arriving at the meaning of the Mahavakhyas to establish the notion of Sarvatmabhara as the feeling of oneness with the whole world.

Ms. M. Jyothimani, Research Scholar, Department of Philosophy highlighted the understanding of tradition and interpretation in the context of contribution of Swami Paramananda Bharati to the contemporary Indian thought.

Prof. Haramohan Mishra presented his views on Advaita exegesis as an appraisal of Srinivasa Rao's interpretation. He has pointed out several shortcomings in the criticism of the traditional Advaita from the personal understanding of Prof. Rao.

On the whole, there were nine academic sessions besides Inaugural and valedictory session as well as the Book-release functions. All the papers were highlighting some aspect of Professor Srinivasa Rao's contribution, sometimes justifying the stand taken by Rao and at times criticizing his views seen from the angle of tradition.

The well-presented papers were followed by discussions, clarifications, elucidations etc.

The Valedictory session was presided by Professor Rama Rao Pappu (Miami University USA) and Valedictory address was delivered by Professor V. Swaminathan. The Seminar ended with a vote of thanks by the Director, Professor. G. Mishra.

Report of the seminar on Shrines and Pilgrimages : Philosophical Perspectives

The Department of Philosophy, Loyola College in association with Satya Nilayam Research Institute organized a two day international seminar on 'Shrines and Pilgrimages: Philosophical Perspectives" on 16-17 January, 2014. Below is the short report of the seminar The seminar was conducted as per schedule (see the schedule attached along with this letter). We began the inaugural function at 9.30 a.m. at Manersa Hall, Satya Nilayam. After the invocation Dr. E.P.Mathew, the Head, Department of Philosophy Loyola College welcomed the gathering. This was followed by the Presidential address by Dr. Albert Muthumalai. Professor Dr. S. Panneerselvam, the Head, Department of Philosophy, University of Madras delivered the key note address, while Dr. Joshua Kalapathy, the Head, Department of Philosophy, Madras Christian College offered felicitations. Dr. Lawrence Fernandes, the convener of the seminar shared with the members the dynamics of the seminar.

The inauguration function was followed by coffee break. In the morning session two papers and at the noon session three papers were presented. The post lunch session was at 2 p.m., during which three papers were presented. The day's program ended with tea and snacks at 4.15 p.m.

The second day of the seminar was held at Lawrence Sundaram Auditorium in Loyola College. The program began with invocation at 9.30 a.m. in the third session of the seminar three papers and in the fourth session two paper presentations were done. Post lunch session was at 2 p.m. with two papers and the valedictory program was arranged at 3.30 p.m. with the valedictory address by Rev Fr Francis Jayapathy SJ, Rector of Loyola College, Chennai and Felicitation by Rev Dr. Joseph Antony Samy. With vote of thanks by Sch Joel the program came to an end by 4.15 p.m. Tea and snacks followed. Apart from the students of the Department of Philosophy and other departments from Loyola College and the Research Scholars of Satya Nilayam Research Institute, we had students of Philosophy from the departments of Philosophy from Vivekananda College, Chennai,

Madras Christian College, Chennai, Department of Philosophy, University of Madras. All the speakers and chairpersons were presented with a mementoes. The speakers from outstation were provided board and lodge at Satya Nilayam and the travel arrangements to Satya Nilayam and Loyola College was made by seminar organizers.

This seminar provided an opportunity to reflect on the important theme on Shrines and Pilgrimages. Different aspects was reflected philosophically during this seminar. Scholars were from different parts of the country providing diversity to the seminar and a multiple ways of looking at the same reality. There was a great satisfaction for the theme, the way it was organized, the hospitality and logistics of the seminar.

Report on the National Seminar on 'The Arts in the Cultural Heritage of India' held on 27 & 28 October 2014.

The two-days National Seminar on 'The Arts in The Cultural Heritage of India: Revisiting Themes in The Cultural Heritage of India' based on Volume VII, Part I & Part II, was organized by the Ramakrishna Mission Institute of Culture, Gol Park, Kolkata - 700 029, on 27 and 28 October 2014. The objective of the Seminar was to bring the attention of the younger scholars and the general leadership to the value and impact of the volume. The Indian Council of Philosophical Research, New Delhi extended the financial support. In response to the invitations by the Institute, a good number of brilliant scholars conversant with the subject participated in the National Seminar and presented their papers. One booklet containing brief bio-notes of the participants and the abstracts of the papers of the participants were circulated among the participants.

The seminar was inaugurated on Monday, 27 October 2014 at 10.00 a.m. in the Shivananda Hall of the Institute. After the Vedic Chanting by the monks of the Institute, Swami Suparnananda, Secretary, Ramakrishna Mission. Institute of Culture, Gol Park, Kolkata, felicitated the participants present at the dais. Swami Suparnananda also gave the Welcome Address. Revered Swami Prabhanandaji Maharaj, Vice President, The Ramakrishna Math and the Ramakrishna Mission, Belur Math gave the Presidential Address, Mr. H. N. Ramachandran, Secretary to Dr. Kapila Vatsyayan, Editor of Volume VII of the Cultural Heritage of India, presented the words from Dr. Kapila Vatsyayan as

she could not participate due to her ailment. Swami Bhajananandaji Maharaj, Asstt. Secretary of the Ramakrishna Math and Ramakrishna Mission gave the Keynote Address. Prof. Sabyasachi Bhattacharya, former Vice-Chancellor, Visva-Bharati University, Santiniketan and the Co-ordinator of this Seminar gave an introduction to the conference. Vote of Thanks was proposed by Swami Yadavendrananda, In-charge, Centre for Indological Studies and Research, Gol Park, Kolkata.

Before the inaugural session of the Seminar a group photo of the participants present was taken in front of the Shivananda hall. Four books namely (i) Indian Traditions in search of Unity through Music (ii) Concept of Spirituality in Art: Past, Present and Future (iii) Swami Vivekananda's vision of Future Society and (iv) Rethinking the Cultural Unity of India, were released by Srirnat Swami Prabhanandaji Maharaj, Vice President, The Ramakrishna Math and Ramakrishna Mission, Belur Math. All the books are Institute's publications. The Academic Sessions of the National Seminar began on the same day i.e. 27 October 2014 after completion of the Inaugural Session. There were five academic sessions in all. Each session was conducted by a coordinator. Presentation of each paper was followed by discussions. The fifth academic session ended with the Summing-up of the proceedings by Prof. Hemadri Chatterjee. The Vote of Thanks was proposed by Swami Yadavendrananda. Participants/Resource persons and observers were provided with reading materials in a suitable folder. The inaugural and academic sessions were recorded and videoed. The total number of Resource Persons/Participants, Guest Observers and Observers were 25, 26 and 130 respectively. The total numbers of Resource Persons, Participants, Guest Observers and Observers, staffs, volunteers, supporting hands of this Seminar were approximately 220.

Report on Social Philosophy of Dr. B. R. Ambedkar

In joint collaboration of ICPR, New Delhi & Department of Sociology, Varanasi two days (15th - 16th November 2014) National Seminar on "Social Philosophy of Dr. B. R. Ambedkar" was organised. On the first day of the Seminar in the Inaugural Session from 11:00 A.M- 01:00 P.M. welcome address was delivered by Prof. Sohan R. Yadav, Head, Department of Sociology, Banaras Hindu University, Varanasi. He focused on the social philosophy of Dr. B. R. Ambedkar that how he tried to establish social equality. For him development can be gained only when on the basis of social, economical, political &

religious there is no difference in any human being. The role played by Dr. B.R. Ambedkar for the upliftment of the marginalized section cannot be forgotten by Indian history. He has been regarded as one of the doyens devoted to seeking equality and justice in Indian society. Prof. R. R. Jha, Dean, Faculty of Social Sciences, Banaras Hindu University chaired the Inaugural Session. Indian Society is undergoing a sea change and there is a tremendous socio-economic transformation taking place within it, but it has also given rise to a kind of mechanism which discriminate its people on the basis of identity, accepts oppression and exploitation of certain sections of the society. Hence, caste and caste based discrimination continues to be a reality. The doctrine of inequality is the core and heart of the caste system. The Indian constitution has certain important provisions to safeguard and promote the interests of Scheduled Caste, Scheduled Tribes and Minorities. Not only this oppressed people of our age-old Hindu society and culture had to have some movements and fought against the inhuman and humiliating behaviour of the upper caste Hindus.

Chief guest Prof. I. S. Chauhan, Former Vice Chancellor, Barkatullah University, Bhopal told about the philosophical views of Dr. Ambedkar. His ideology was occupied with social amelioration, political enlightenment, spiritual awakening and economic well-being of the masses. He had a deep faith in fundamental human rights, in the equal rights of man and women, in the dignity of individual, in socio and economic justice, in the promotion of social progress and better standard of life with peace and security in all spheres of human life. Probably Dr. Ambedkar is the first person who seriously thought about social equality an inclusive Indian society as an essential feature for the emergence of a healthy nation-state and democracy. But most of his intellectual peers focused on economic, political and spiritual equality and ignored social inequalities. Key note address was delivered by Prof. Badri Narayan, G. B. Pant Social Sciences Research Institute, Jhusi, Allahabad, talked about the upliftment of the weaker section of the society with Dalit Perspective. Dr. Ambedkar's thought; ideas and philosophy of democratic and egalitarian society are symbiotically related. He did not think only about betterment of Dalits but also fought relentlessly to see India as a fully democratic and welfaristic society. Dr. Ambedkar may be a messiah of Dalits across India but he also diffused modem values to all Indian people. He fought for parity and equality for all people. To him India cannot succeed to become a welfare state if it does not address and annihilate the old, perennial

caste system. He held that modem-contemporary Indian society was beset with fathomless hierarchies and caste contradictions which hinder its growth, progress, development and change. These forces and outfits hindered nation building and renaissance among all people. Hence, Dr. Ambedkar'ts ideas on law, liberty, equality and fraternity based on democratic, secular and rational values may usher in social justice and democratic society in India.

Special Guest Prof. Pradeep Gokhale, Br. B. R. Ambedkar Research Professor Central University Tibbatan, Saranath, Varansi, focused on the theme that how Dr. Ambekar imagined about reating an environment based on social justice. Social justice involves the creation of just and fair social order just and fair to one and all. To make the social order just and fair for every member of the community, it may be necessary for them who are privileged to make some sacrifices. In this sense, Social justice is a revolutionary ideal. It includes both the economic justice and social justice. Social justice in India is the product of social injustice our Caste system and social structure is the fountain head for social injustice. It is unfortunate that even sixty-seventh years after independence social justice is still a distant dream not within the reach of the masses. Ambedkar was the chief architect of the Indian Constitution. He was fully aware of the pattern and problems of the Indian society. He tried to achieve social justice and social democracy in terms of one man-one value. He treated social justice as a true basis for patriotism and nationalism. Ambedkar did not accept the theories of social justice as propounded by the Varna system, the Aristotelian order, Plato's scheme, Gandhian sarvoday order and not even the proletarian socialism of Marx. Thereafter, lunch from 2:00 P.M- 06:00 P.M participants presented that research papers in 11 parallel technical sessions.

On the second day of the seminar from 10:30A.M.-Ol:00P.M Special Lecture Session was organised. Prof. J. K. Tiwary, Former Head, Department of Sociology, Banaras Hindu University, Varanasi Chaired the session. He pointed out the basic philosophical roots of Dr. B.R. Ambedkar. Ambedakar's philosophy was occupied with social amelioration, political enlightenment, spiritual awakening and economic well-being of the masses. He had a deep faith in fundamental human rights, in the equal rights of man and women, in the dignity of individual, in socio and economic justice, in the promotion of social progress and better standard oflife with peace and security in all spheres of human life. His study of social facts enriches his political philosophy. Dr B. R. Ambedkar left an

indelible mark on Indian polity, society and economy with a broad range of scholarly work and rigorous political activism. While much is known heard and written about his political, social and economic writings, there has been relatively less of an attempt at understanding the philosophical underpinnings and theoretical origins of his worldview. Dr. Pitamber Dass, Department of Philosophy, Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi, focused on the philosophical roots of Dr. Ambedkar. India, while passing through the process of development is in the quest for finding our ways for a better and just socio-economic order. The search for a new model of socio-economic order is the need of the hourDr B. R. Ambedkar left an indelible mark on Indian polity, society and economy with a broad range of scholarly work and rigorous political activism. While much is known, heard and written about his political, social and economic writings, there has been relatively less of an attempt at understanding the philosophical underpinnings and theoretical origins of his worldview.

His worldview was informed by not only a scholarly interest but a personal experience of discrimination and marginalization. The deep sense of injustice felt by him motivated Dr. Ambedkar to challenge all oppressive institutions of society. Throughout his life he was passionately critical of the Hindu caste system which was the basis of social, cultural, economic and political subjugation of those considered "lower castes". In his struggle against caste based discrimination, Ambedkar held that emancipation of Dalits in India was possible only through the three-pronged approach of "education, agitation and organization". His works are deeply embedded in a secular and modem understanding of human society. Moreover, they are also impressed by a strong' sense of humanism and a belief in human dignity and worth. Prof. H. S. Jha, Head, Department of Sociology, Dr. Shakuntala Mishra Rehabilitation University, Lucknow, told about Relevance of Thoughts of Dr. Ambedkar in Present Times. There is a unified theme running through Ambedkar's multifaceted and diverse contributions. The economic philosophy underlying is best captured.in his own phrase: Bahujan Hitaya Bahujan Sukhay (i.e., Greatest Good to the largest number of people). Ambedkar philosophy is couched in social, religious and moral considerations. The focal point of philosophy is the oppressed and the depressed. The philosophy aims at giving life to those who are disowned, at elevating those who are suppressed, and ennobling those who are downtrodden and granting liberty, equality and justice to all irrespective of their castes. According to B. R.

Ambedkar, "Society is always composed of Classes. Their basis may differ. They may be economic or intellectual or social, but an individual in a society is always a member of a class. This is a universal fact and early Hindu society could not have been an exception to this rule, and, as a matter of fact, we know it was not. So what was the class that first to make itself into the caste, for class and caste, so to say, are next door neighbors, and it is only the span that separates the two, A Caste is an Enclosed class. All the people of the society should be treated with an open view that all are Human beings so there is no difference on caste basis. This was the basic notion of the thoughts of Dr. Ambedkar.

Dr. Pramod Bagde, Department of Philosophy, Banaras Hindu University, Varanasi, focused on the causes responsible for the discrimination on the basis of caste, gender, creed, & religion. Ambedkar was against the concept of Hindu social system and did not like Hindu religion. Ambedkar believed that conversion of religion to give social justice in the name Buddha religion and he observed that Buddhism is the best way to be adopted to promote peaceful social livelihood. To quote Ambedkar by discarding my ancient religion which stood for inequality and oppression today I am reborn, I have no faith in the philosophy of incarnation; and it is wrong and mischievous to say that Buddha was an incarnation of Vishnu. I am no more a devotee of any Hindu god or goddess. I will not perform Shrardha. I will strictly follow the eighty-fold path of Buddha. Buddhism is a true religion and I will lead a life guided by the three principles of knowledge, right path and compassion and also he quoted that, the world owes much to rebels who would dare to argue in the face of the polite and insist that he is not infallible. I do not care for the credit, which every progressive society must give to its rebels. I shall be satisfied if I make the Hindus realize that they are the sick men of India and that their sickness is causing danger to the health and happiness of other Indians. On the same day from 2:00P.M- 4:00P.M in Valedictory Session welcome address by given by Prof. Sohan R. Yadav , Head, Department of Sociology, Banaras Hindu University, Varanasi. Chief Guest Prof. Nandu Ram, Former Dean, school of Social Sciences, JNU, New Delhi focused on the philosophy of Dr. Ambedkar. Supported by philosophical elements, Dr. Ambedkar's Ideology constructs the moral, social and legal foundations of Hindu society. The role played by Dr. B.R.Ambedkar for the upliftment of the marginalized section cannot be forgotten by Indian history. He has been regarded as one of the doyens devoted to seeking equality and justice in Indian society: He had a deep faith in fundamental human rights, in the equal

rights of man and women, in the dignity of individual, in socio and economic justice, in the promotion of social progress and better standard of life with peace and security in all spheres of human life. Special Guest Prof. Kiriti pandey, Former Head, department of Sociology, Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur delivered lecture on the theme of Social Justice given Dr. Ambedkar.

Social justice has significance in the context of Indian society which is divided into Castes and Communities and they create walls and barriers of exclusiveness on the basis of superiority and inferiority such inequalities pose serious threat to Indian democracy. The concept of social justice takes within its sweep the objective of removing inequalities and affording equal opportunities to all citizens in social, economic and political affairs. Social justice involves the creation of just and fair social order just and fair to one and all. To make the social order just and fair for every member of the community, it may be necessary for them who are privileged to make some sacrifices. In this sense, Social justice is a revolutionary ideal. It includes both the economic justice and social justice. It aims in removing all kinds of inequalities and affording equal opportunities to all citizens in social as well as economic affairs. Thus the aim of social justice is remove all kinds of inequalities based upon Caste, race, sex, power, position, wealth and brings about equal distribution of the social justice is a balance between social rights and social controls. Chair Person Prof. M. Salim, Faculty of Social Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi The strategy adopted by Dr. Ambedkar encompasses constitutional safeguard, legislative measure, public policy measure, spiritual aspect and tireless battle for social justice and removal of oppression. This has a significant bearing on our present day society and polity. However, currently there is a need for reinterpretation of values of humanism, democracy, equality and liberty in Indian context. Even after more than six decades of independence India still finds difficult to answer some pertinent questions and attend to inherited problems: Does the Hindu society treat Dalits as equal to other citizens of our society? Why Dalits still languished in poverty, malnutrition and hunger? What does social justice mean to Dalits and is it only ornamental to our Constitution or has some significant bearing on us? Why does caste system persist even after 65 years ofIndian's independence and what is Ambedkar perspective on it? Why social exclusion persists in Indian society based upon caste, gender, age and religion? Answers to these complicated issues are only addressed by Dr. Ambedkar.

REPORT ON FIVE DAY WORKSHOP ON "ENHANCING RESEARCH SKILLS IN PHILOSOPHY" 16th – 20th FEBRUARY, 2015

A five day workshop was organized by School of Philosophy & Culture, Shri Mata Vaishno Devi University from 16th to 20th February, 2015. The event was fully sponsored by Indian Council of Philosophical Research (ICPR). The main objective of organizing this event was to bring out certain workable thesis for doing systematic research in philosophy, since there is a prevailing confusion regarding the methods and objectives of research in the discipline of philosophy.

Around fifty outstation participants from all over India and ten local participants attended in the programme. There were total nineteen brain storming lectures except the inaugural and valedictory sessions. There were nine resource persons including some of renowned thinkers of India. The following people were the resource persons.

1. Prof. Priyadarsi Jetli
2. Prof. Bijoy Boruah
3. Prof. Nirmalnshu Mukherji
4. Prof. Ashok Vohra
5. Prof. P. R. Bhat
6. Dr. Gopal Sahu
7. Dr. Varun K. Tripathi
8. Dr. Anil K. Tewari
9. Mr. Sumanta Sarathi Sharma

Inaugural Session:

The inaugural session of the workshop was scheduled at 10.00 am on 16th Feb, 2015. Dr. Varun K. Tripathi, I/C Director of Philosophy & Culture, delivered welcome address. He welcomed all the delegates and participants who came from different parts of country. He assured everyone a better stay at Shri Mata Vaishno Devi University.

Mr. Ashoka Kumar Tarai, Organizing Secretary of the Workshop, presented the theme of the workshop. In his presentation, he mentioned that the employability of philosophy students is in great way diminishing in India. There is a negligence of mainstream towards the philosophy community. Training in academic philosophy is required since the whole community of philosophy cannot afford to do unsystematic way of doing philosophy. He justified the need for this workshop in the end.

Prof. P. Jetli one of the resource persons of the workshop addressed the gathering by explaining how philosophy can be done rigorously by one's own self motivation. He rejected the idea of having an objective way of doing philosophy. He assured that all his lectures in the workshop would try to show that there cannot be a particular research methodology that philosophy should strictly follow or philosophers should follow.

Honorable vice chancellor of SMVD University, Prof. Sudhir K. Jain graced the occasion with his noble thoughts. He discussed about the utility of the subject philosophy. There is a strong need for philosophy and for philosophers to guide the society for its betterment. He argued that it is possible only if philosophy is done rigorously. He finally assured that this kind of event in philosophy is highly demanded to spread the wisdom among young minds among philosophy community. Dr. Anil K. Tewari, Asst. Professor, School of Philosophy & Culture, delivered the vote of thanks speech.

16-02-2015 (Day-1)

The first lecture of the workshop was by Mr. Sumanta Sarathi Sharma, Asst. Professor, School of Philosophy & Culture, and S.M.V.D University. The title of Mr. Sharma's presentation was "Formatting and Citations: Some Issues". He discussed about the technical issues related to research in philosophy such as referencing, bibliography, citations etc. He also enlightened the participants about the standard ways of referencing for writing a thesis or dissertation.

There were two lectures delivered by Prof. P. Jetli, former Faculty of Delhi University, and Prof. Nirmalnshu Mukherji, retired Professor from Delhi University respectively in the post lunch session of the first day of the workshop. Prof. Jetli lectured on "Is the Scientific Method Eurocentric". In this presentation, he gave a history of scientific method in philosophical research. The significance of scientific method in philosophical research was highlighted in the presentation.

The second lecture of the post lunch session of the first day of workshop was by Prof. Nirmalnshu Mukherji. The title of his presentation was "Problems of Philosophizing in India". Prof. Mukherji traced some of the important points that he raised long before in an article "Academic Philosophy in India" published in EPW in March, 2002. He discussed about the failure of quality philosophical work by Indian Philosophers. Philosophers from India can make a mark in academic world by involving Indian content.

17-02-2015 (Day-2)

The first lecture of pre-lunch session was by Prof. N. Mukherji. The title of his lecture was "Language and Embodied Mind". In his lecture he claimed that language is embodied. Idea of unity is the product of mind-body dualism. Thereby he discussed how language is actually a product of brain. In relation to this, Buddhist theory of Pratitya Samutpada was also explained.

The second lecture of pre-lunch session was presented by Prof. Ashok Vohra, retired professor of Delhi University. Prof. Vohra lectured on "Impossibility of a universal method in Philosophy-I". Prof. Vohra in his lecture stated that the research work in philosophy has no recipe; in other words there is no particular method in philosophy which can be followed while doing a research work. The method of writing varies with variation of the problem in philosophy. There are different methods like linguistic method, dialectical method, descriptive method etc. One has to choose a method while writing in accordance with the problem one has taken. But a method which one chooses should dissolve the problem.

The first lecture of post lunch session was delivered by Prof. Bijoy Boruah, Professor at IIT Delhi. His lecture was on "Apriori or Armchair Philosophizing". Prof. Boruah explained some traditional philosophy of west and east. He analyzed some of important apriori arguments of philosophy such as ontological argument of St. Anselm, Cogito ergo sum argument of Descartes and Wittgenstein's private language argument.

The second lecture of the post lunch session was again by Prof. Vohra who continued his earlier lecture. In his continuation, he discussed in philosophy there are 'n' numbers of questions but every question can be answered and every answer can again be questioned. So while writing one must raise the questions and try to answer them from one's own point of view. A good writing is that in which writer answers the question or provide a

solution to the problem in one's own word and try to give reason that why this solution is most appropriate. In the end, he explained all the nuances that one faces while working for his/her research works.

18-02-2015 (Day-3)

The first lecture of pre-lunch session was presented by Prof. Boruah. The title of the lecture was "Innovative Comparative Philosophy". He discussed many contemporary philosophical researches which are comparative in nature in India and in West. There is a need for understanding different philosophical traditions. This can be philosophically challenging unless one compares one system of thought with the other. It was also desired that interdisciplinary research should be encouraged by young research scholars in philosophy.

The second lecture of pre-lunch session was by Prof. P. Jetli. He lectured on "Philosophy as Lakatosian Research Programme". He, in his presentation, described about the methods of Kuhn and Popper. There is no particular method in Philosophy as there are various problems in philosophy. So, there is no hard and fast method which can be universalized in order to undertake a research work. The method in philosophy originates only after doing philosophy and not by mere learning. First a researcher has to learn from various resources like, books (primary and secondary), journals etc and after learning one has to apply the learnt things in one's writing. In order to undertake a research one has to first find a problem in the area of one's interest. Interest is the main factor in the arena of doing a philosophical research. When a problem is chosen then one has to find out the literature directly related to one's problem. A researcher has to make his best attempts to solve the problem.

The first lecture of post-lunch session was presented by Mr. Sumanta Sarathi Sharma. He lectured on "The Classical notion of Validity and Soundness in Deductive Logic". In this, he explained the difference between invalidity, validity and soundness in deductive logic. The difference between syntactic and semantic notion was discussed. A few restrictions were also explained in order to clarify the difference between the syntactic notion of validity and the semantic notion of soundness.

The second lecture of post-lunch session was by Dr. Anil Tewari, Asst. Professor, Shri Mata Vaishno Devi University. He lectured on "Methods of Analysis in Indian

Philosophy". In classical India, the philosophers usually adopt a common pattern of reasoning (vādavidhi, lit. 'the method of discussion'): They would first describe their opponent's viewpoint. The opponent's position is technically called pūrva-pakṅa. After the necessary exposition, the pūrva-pakṅa is refuted by rigorous argumentation. The refutation is called khaṅṅana. Once the opponent's position is refuted, the proponents advance their own position which is then called uttara-pakṅa or siddhānta. This method of argumentation may descriptively be called pūrvapakṅa-khaṅṅanapūrvaka-siddhāntapratipādana method.

19-02-2015 (Day-4)

Prof. Jetli delivered the first lecture of the pre-lunch session. The title of his lecture was "How to Write Philosophical Works-I". He in his lecture addressed many issues and challenges for doing philosophical research. Writing a research paper is a skill. This skill involves pointing out a problem, defining the said problem and providing the solution of the problem through good arguments. Prof. Jetli suggested that one should work three continuous hours a day to read and write with concentrated mind. A researcher must set one day a week of eight continuous hours of working. The craft of writing is to first read a journal and then write.

The second lecture of the pre-lunch session was presented by Dr. Varun K. Tripathi, Asst. Professor, Shri Mata Vaishno Devi University. He lectured on "Issues in Moral Epistemology". Dr. Tripathi discussed the contemporary researches on moral epistemology. The basic question that he dealt with 'can we ever know or have some justification for believing, whether anything is morally right or wrong, just or unjust, virtuous or vicious, noble or base, good or bad'? In relation to this he explained different philosophical responses by Foundationalism, Coherentism, and Contextualism etc.

The first lecture of the post-lunch session was by Dr. Anil K. Tewari. The title of his lecture was "Prasanga: A Philosophical Approach". Prasaṅga is the method of logical inquiry which is developed by Nāgārjuna (c. 2nd century CE), the founder of the Mādhyamika Buddhism. In this method, the opponent's philosophical position is shown to be absurd by exposing the contradictions inherent in the position, and the ultimate objective of such analysis is to point out the limitations associated with the conceptual understanding of

what is real. It is therefore plausible to say that the prasaṅga method of argumentation signifies a logically rigorous activity of philosophizing.

The second lecture of post-lunch session was presented by Prof. Jetli who continued his earlier lecture "How to Write Philosophical Works-II". Prof. Jetli worked out eight ways writing a philosophical paper such as (1) research, (2) reading, (3) re-reading, (4) rigor, (5) reasoning, (6) recursion, (7) revision, (8) re-writing. There must be a convincing story which motivates the readers or attract them to read the whole paper. In order to become a good writer one must practice writing which requires reading. One should read articles as much as one can to grab the information, then one should write the exegesis of an article that one has read.

20-02-2015 (Day-5)

The first lecture of the last day of the workshop was by Professor P.R. Bhat from IIT Bombay. He delivered on "Ordinary Language Philosophy". He discussed the history of ordinary language philosophy and its emergence in the academic philosophy. The tradition of ordinary language runs from the time of Wittgenstein. Ordinary language is useful while writing a philosophical paper as ordinary language as compared to complex language which works in a simple and ordinary way that is accessible to a layman's understanding. In philosophy we should make things or our writing understandable to others. It is not necessary to adopt complex writing. Ordinary language writing is easy to write as well as easy to read. Language is a tool to communicate or express our ideas to others.

The second lecture of the pre-lunch session was delivered by Dr. Gopal Sahu, Associate Professor, University of Allahabad University. He lectured on "Writing a Philosophy Paper: Skills, Steps and Structure". He discussed many nuances of writing a philosophical paper in his lecture. He also explained different skills for writing such as (1) Subject skills: one must know authors, books, periods and historical development in the field of research. Thereby one must be familiar with philosophical idioms and language; there must be identification of arguments, ordering, formalization of argument, evaluation of argument, identification of fallacy in the argument and naming the fallacy in the argument. (2) Reading skill: One must read all the articles, books related to the topic. (3) Writing skill: It involves clarity, lucidity, simplicity while writing. (4) Formatting skill:

Familiarity with different referencing styles like MLA, APA etc.

The first lecture of post-lunch session was by Prof. P.R. Bhat. He lectured on "Thought Experiment Method". He explained about the significance of thought experiment methods in philosophical researches particularly in contemporary days. Though experiment can be used and is usually used to criticize other established philosophical theories. Thinkers like Putnam, Hobbes etc conduct many thought experiment in order to criticize other theories. Prof. Bhat claimed that thought experiment method not only helps one in finding defects in opposite views but also help to defend one's own thesis.

The last lecture of the workshop was by Dr. Gopal Sahu. He lectured on "Inventing Counter Examples through Thought Experiments". He discussed about the relevance of counter examples in philosophical researches. Thereby he claimed that counter examples can be produced through thought experiments.

The technical sessions ended with all these nineteen lectures presented by different scholars in different philosophical areas. All these lectures were highly beneficial to the participants who shared their views at end of the programme.

Valedictory Session:

The weel long programme came to end with the valedictory session which was held at 4.30pm on 20th February, 2015. The Dean Faculty of Humanities and Social Sciences was the chief guest of the valedictory session. Prof. P.R. Bhat, Prof. P. Jetli and Dr. Gopal Sahu who were the resource persons of the workshop graced the occasion.

Mr. Ashoka Kumar Tarai, Organizing Secretary of the workshop, delivered the welcome speech. All the resource persons who were present in the occasion congratulated the School of Philosophy for organizing this event which they expressed a much needed workshop for the young researchers in philosophy.

Prof. V.K. Bhat, Dean Faculty of Humanities and Social Sciences expressed his gratitude to all the participants who joined this programme from different parts of the country. He spoke about the relevance of philosophy in different disciplines. He explained how some great mathematicians in history of civilization in the end of their career had become philosophers.
Dr. Varun K. Tripathi delivered vote of thanks. All the participants then were presented

the certificates.

Report on conference on "Self, World and Morality: Schopenhauer and Indian Philosophy with a special reference to the Upanishads (Oupnek'hat)"

The Conference was Organized by Department of Philosophy, Deshbandhu College, University of Delhi Jointly with lDSS (Indian Division of Schopenhauer Society), JNU Sanskrit Studies Center & MMB (Max Mueller Bhavan). A large number of foreign scholars from Germany and France and Australia and many scholars from all over India assembled at the Convention' Center JNU during 23-25 Feb 2015 to pay their tribute and respect in memory of the Western philosopher who carried the wisdoms of the Upanishads and the Buddhist ideals to the Western world.

Dr. Arati Barua, Director, IDSS welcomed the gathering and Dr Ramnath Jha, JNU and co-ordinator of the Conference gave a thematic view of the conference. Besides the students, the teachers of Deshbandhu College as well as JNU and other institutions also participated in the conference.

Inaugurating the seminar Prof S K Sopory, the Vice Chancellor, JNU paid high tributes to Schopenhauer in his inaugural speech. On the occasion, Dr. Bijorn. Lipprandt from U of Mainz, delivered a special speech on behalf of Professor Matthias Kossler, President of the Schopenhauer Gesellschaft, Germany. Prof V N Jha, former Director of Advanced Study centre in Sanskrit, University of Pune, delivered the key note address and appreciated the efforts of IDSS and Sanskrit Studies center of JNU in giving due recognition to the great admirer of Indian philosophy and culture Arthur Schopenhauer.

Report of the International Seminar 'Intentionality Normativity and Objectivity' held between 8 - 10 January, 2015 at Department of Philosophy, University of Hyderabad.

In this International Seminar, titled "Intentionality, Normativity, and Objectivity", the attempt has been to enquire into three themes separately and also to seek how these themes come together. The themes of Intentionality, Normativity, and Objectivity cut across several sub-areas of Philosophy like Philosophy of Mind, Epistemology,

Philosophy of Cognitive Science, and Philosophy of Science to name a few. The thrust of the seminar has been to relook at these concepts in the light of the present research but also to ask how the features of objectivity impinge on the features of normativity in general and vice versa. Some of the papers in the seminar addressed in what way the features of normativity are important to characterize the features of intentionality. The seminar began with the keynote address by Prof. Akeel Bilgrami, an eminent philosopher, on Values and Agency. He elucidated how agency is possible by virtue of values that are constitutive of the world. The papers in the next two sessions focussed on the normativity associated with the Cartesian Linguistic erected on the Kantian Foundations and the Chomskian Linguistics providing an explanation of language. The papers also looked at the normativity associated with the deGettierized account of knowledge and the influence of Praxis in understanding Marx.

The papers in sessions III and IV focussed on moral agents: Individual and Collective, ethics, culture and value in interpretations ofWittgenstein, normativity built into linguistic representation through the route of intentionality and plausibility of Searle an response to menatlese, and consciousness with its normative and objective bound.

The papers in session V focussed on the normativity that connects being and knowing, the objectivity that is associated with the Real and the Rational and their inter concept mapping, and the varieties of no rrnativity and objectivity associated with Marxian and Heideggarian accounts of Technology.

The seminar ended with a valedictory function presided over by the pro-Vice Chancellor, Prof. E. Haribabu, and a vote of thanks proposed by Mr. A. V. Wazalwar, thanking the ICPR, for its generous sponsorship

Colloquium on Philosophy, Language and the Political : Reevaluating Poststructuralism

To deliberate on the thought and practice of Poststructuralism that flourished in the last five decades, an International Colloquium on Philosophy, Language and the Political: Reevaluating Post-structuralism was held at lawaharlal Nehru University (JNU) on io", n". and 12th December, 2014. The academic event was supported by JNU, L'Institut Francais, New Delhi, ICSSR (Northern Region), New Delhi, and ICPR, New Delhi. Welcoming the participants from within and outside India, Franson Manjali, the main

Coordinator, briefly presented the context and the relevance of the Colloquium. The inaugural session was chaired by Ayesha Kidwai, Chairperson of Centre ofLingusitics. Marc Crepon of Ecole Normal Superieure, Paris, delivered the inaugural lecture, The Invention of the Idiom: The. Event of the Untranslatable. Crepon's paper focused on the relevance of the idiom in the context of the use, ordinary or scholarly, of language, and on being sensitive about all the elements that have historically sedimented in it. The paper dwelt on the task of displacing and overcoming them as part of the singularity of one's ethico-political existence. Crepon's main point of reference was Derrida's seminal work, Monolingualism of the Other, OR *the Prosthesis of Origin.*

This was followed by twelve sessions in which 23 scholars presented papers. The first of these had Paul Patton, University of New South Wales, Sydney and Aniruddha Chowdhary of IIAS, Shimla, speaking. Patton's paper Poststructuralism and Political Normativity: The Case of Deleuze, addressed the common criticism against poststructuralist thought, that it did not pay attention to the normative principles relating to contemporary society and government. Patton argued that, though this criticism has some relevance in relation to Deleuze and Guattari's Anti- Oedipus and A Thousand Plateaus, it overlooked the sense in which there is a formal normativity implicit in Foucault, Derrida and Deleuze's own works and that the later works of Deleuze and Guattar engaged directly with explicitly political concepts and norms that make up liberal constitutional states. The second paper, Singular History: Finitude, Temporality and Historicity in Early Heidegger by Chowdhury, explored the notion of historicity, central to the argument of Heidegger's Being and Time. He contended that finitude and singularity remained inseparable in Heidegger's analysis of historicity and historical repetition.

The second session began with a paper by Rustam Singh, Eklavya Institute, Bhopal, entitled Not This, Not That, Maurice Blanchot and Poststructuralism. Blanchot, according to him was at the very center of the Poststructuralist movement and this could be seen in the former's views on language, the work, and the fragmentary.

The last session of the day had papers by AchiaAnzi, JNU, who discussed Michel Foucault's essay "This is not a Pipe" that interprets the famous painting by the Belgian artist Rene Magritte, His paper titled This is (not) a pipe offered a reading of Foucault's essay, intended to be a critique of modem art with reference to Magritte's painting. He

highlighted the significance of the painting "This is a Pipe" by British graffiti artist Bansky that challenges Magiritte's painting. J ean-Luc Nancy's live video talk titled Jouis Anniversaire! "*Scenes of Inner Life" for the Tenth Toolbox Go to War?' The Political Legacy of Post structuralism,* Cusset discussed poststructural thinkers' antiprescriptive and antitotalizing stances as that which fit in addressing today's global fuzzy and political situation. Aiming to interconnect certain works, he referred to three key notions namely, friendship, becoming, and vitalism discussed by Derrida, Deleuze and Guattari, and Nietzsche, respectively. Biswas's paper Foucault and Derrida on Truth and Meaning: A Semantic,' Political and Ethical Reapprisal, was centered on the ideas of justice, subject, truth, and meaning. Biswas juxtaposed Derridean and Foucauldian positions on justice and subject. He also elucidated Derrida's conception of truth primarily as a minimal avowal of justice in the constitutive powerlessness of oneself as a 'third party'. In his paper, Remembering the "The Purloined Letter" from the Event Horizon: Letters to My Love of Travel, Chatterjee pointed to the need for revisiting to the Edgar Allan Poe's story "The Purloined Letter" in understanding the debate between Derrida and Lacan that unfolds in a series of letters. He wanted to show how language and travel can be brought together to understand Being through the notion of travelogy.

The first session of the third and final day had three papers. Anup Dhar of Ambedkar University, Delhi, raised the pertinent question "What it is to reevaluate poststructuralism?" His paper, Cryptonomy: Deconstruction, Psychoanalysis, Politics, was concerned with the question of the political in psychoanalysis and psychoanalytic or the crypto-analytic that is addressed in Derrida's "Geopsychoanalysis" and the rest of the world. In her paper, The Body of Knowledge: Notes on the Stigma text, Sandhya Devesan Nambiar of Delhi University, investigated the category of the "animal called man", in which she posited the particular category as a problem. She closely followed and discussed Derrida's views in his "The Animal that therefore I Am" and "The Beast and the Sovereign." In this context, she highlighted the Heideggerian notion of Mitsein and the Deleuzian idea of becoming-animal. Meanwhile, providing an alternative reading of Derrida, Sourav Kargupta, of CSSS, Kolkata, in his paper, Deconstruction after Marx, or two ways of thinking an Outside, touched upon the theoretical placement of the preface in both supplementing and pre-empting the text. With regard to the Marxian 'use-value' he viewed how both Jacques Derrida and Gayatri Chakravorty-Spivak read the Marxian

'use-value' and its implications in their own works on deconstruction.

The tenth session of the colloquium, which comprised papers by Anirban Das, CSSS, Kolkata, and Siby K. Geroge, lIT, Mumbai. Analyzing a fundamental opposition between the inductive mode of reasoning active in empiricism and the irrefutable logic of deductions of Reason, Das, in his paper, The Science Question in Poststructuralism: Ethics and Politics of the Real, addressed the question of how faith and scientific knowledge remain intertwined. In reading this relationship through Derridean perspective, he discussed the questions of the original ethnicity of being human and its relations to the generality of the structure of writing and of the trace. George's paper Constitutive Theories of Language and the Politics of Change, explored the constitutive theory of language in which word and being are considered to be intertwined, where responsive power of language is emphasized. Analyzing this idea with reference to Heidegger.

International Conference report on "Self-Knowledge and Moral Identity"

The International Conference/Symposium on "Self-knowledge and Moral Identity" was held during 13-16 January, 2015, at VMCC, Indian Institute of Technology Bombay. The conference was marked by discussion on several themes that provide an outline of a kind of constitutive account of self-knowledge and moral identity. The major discussion was around the complexity lies in the very mode of knowing and comprehending the knowledge and the importance to build up our moral identity in terms of the normative interpersonal relationship that exist in a societal living. The first day of the conference (fully funded by ICPR) began with welcome speech by Professor D. Parthasarathy, Head of the Department, Humanities and Social Sciences, IIT

Bombay. Professor Ranjan K Panda, Convenor of the seminar gave schematic introduction, theme and the importance of the debate on self-knowledge. Professor R C Pradhan gave inaugural lecture. Professor Pradhan explored the nature of self-knowledge from a normative standpoint to highlight those features of our knowledge of ourselves which border on the metaphysical and moral, as well as some of the problems relating to the contemporary debates on self-knowledge and show the limitations of the Cartesian approach to self-knowledge by arguing that the idea of self-knowledge is largely determined by our metaphysical notion of self. The inaugural session was chaired

by Professor Akeel Bilgrami, one of the Indian born eminent philosophers.

14 JANUARY, 2014

The first technical session of the day was chaired by Professor RC Pradhan and the first speaker was Professor Akeel Bilgrami, Sidney Morgenbessor Professor of Philosophy, Columbia

University, who speak on "Liberalism and the Concept of Identity". His lecture links the concept of identity in politics with philosophical issues in practical reason, and then try and show why liberalism finds it so hard to cope with identity politics by revealing the underlying tension in their moral psychologies. The second speaker of the same session was Professor Amitabha Dasgupta, Professor of Philosophy, University of Hyderabad and his paper entitled " Self-conception and self-knowledge: A Mapping of the Moral Dimension of the Self. In his paper he says that the discussion on self-knowledge finds a prominent place both in tradition and contemporary philosophy. His paper argues that self-knowledge can be viewed as having two parts. The first may be called self-conception which implies a representation of the self as having a set of properties, such as, self as thinking, reasoning and emotion expressing being. The other part of self-knowledge involves having particular pieces of information that we form about ourselves at the background of some version of self-conceptions. This paper seeks to show that these two aspects of self-knowledge together form the morally constitutive nature of the self.

The second session of the same day was chaired by Professor Vikram Singh Sirola, HSS, IIT, Bombay. Two research papers were presented by Dr. Geeta Ramana, University of Mumbai "The Moral and the Transparent of Self " and Roshni, HSS IIT Bombay "The nature of Self-Knowledge in Krishnachandra Battacharya" respectively; followed by discussion with the participants. The third technical session after lunch break of the day was chaired by Prof. Pravesh Jung Golay, HSS, IIT Bombay and broadly focused on conscious agency and locating moral values. Two papers were presented in this session. Prof. C. D. Sebastian chaired the fourth session and a paper titled " Self-Knowledge and Selfrealization in Ancient Platonism" was presented for discussion by Dr. Paulina Remes, Uppsala University, Sweden. The last session of the day was continued with Professor K. Narayana chairing the session and commenced with Dr. Nirmalya Narayan Chakraborty's paper "Self-Knowledge: The Moral Dimension", followed by another

research paper " Self to Moral Self: The Continuum Person, Personal Identity and Moral Identity" by Dr. Vineet Sahu, IIT Kanpur. The day was ended with cultural programme "Rabindra Sangeet".

15 JANUARY, 2014

The first technical session of the day three started with the paper of Prof. Carol Rovane, Columbia University, New York chairing the session by Professor Manidipa Sen, JNU New Delhi. The next session was chaired by Professor P. R. Bat. This session was organized with having two research papers. The first paper was on "Understanding Collective Moral Responsibility Through the Karmic World", presented by Smita Sirker, Jadavpur University, Kolkata. The other paper was presented by Piotre Makowski, Adam Mickiewicz University, Poland. The title of the paper was " Shared Agency: Intentions, Reasons and Propensities to Act". The third session of the day was chaired by Professor Rakesh Chandra, Lucknow University and began with the paper on "The Quest for the Selfhood and the Moral Identity" by Dr. Anupam Yadav, BITS Pilani. The second paper was by Professor Ranjan K Panda, HSS, IIT Bombay entitled "Quest for Identity: Walking on the Lane of Normativity". The session after lunch of the day was chaired by Professor Carol Rovane, Columbia University, New York and a paper entitled "Is Self-Knowledge Possible" was presented by Professor K Srinivas, School of Humanities, Pondicherry University. The most interesting and vibrant discussion of the day was the **Symposium** on the book **"Self-Knowledge and Resentment"** by Professor Akeel Bilgrami published by Harvard University Press, 2006. The discussants of the symposium were: 1) Professor Manidipa Sen, JNU New Delhi, 2) Professor Rakesh Chandra, 3) Dr. Nishad Patnaik, The New School, New York City, 4) Vineet Sahu, IIT Kanpur. Akeel Bilgrami's book Self-Knowledge and Resentment not only offers an intricate and novel account of the special character of self-knowledge, but is also an interesting book about the fact-value distinction, the problem of free will, and the nature of agency and intentionality. According to Bilgrami, self-knowledge is special in virtue of two features: authority and transparency. He argues that self-knowledge of our intentional states is special among all the knowledges we have because it is not an epistemological notion in the standard sense of that term, but instead is a fallout of the radically normative nature of thought and agency. Four themes or questions are brought together into an integrated philosophical position: What makes self-knowledge different from other forms of knowledge? What

makes for freedom and agency in a deterministic universe? What makes intentional states of a subject irreducible to its physical and functional states? And what makes values irreducible to the states of nature as the natural sciences study them? To claim that self-knowledge is special and fundamentally different from knowledge of the external world is plausible and attractive. The primary aim of the book is to show that the best way of providing a philosophical vindication of this claim is to endorse a number of what Bilgrami calls 'integrations': an integration of agency with value, of intentionality with agency, and of intentionality with value. In four long chapters Bilgrami provides a 'conceptual basis' for authority and transparency by means of these integrations, resulting in a normative account of self-knowledge which altogether avoids epistemological notions such as 'justification' or 'entitlement’. After rejecting broadly Cartesian and Wittgensteinian theories of self-knowledge, Bilgrami turns to the main rival theory, the causal-perceptual model, which construes self-knowledge in terms of causal mechanisms that connect second-order beliefs and first-order attitudes. Against this, Bilgrami argues that the relationship between second-order beliefs and first-order attitudes is not merely causal and contingent, but constitutive and conceptual. The book is neatly structured. Chapter 1 presents the claims of transparency and authority and gives some of Bilgrami's reasons for thinking that no perceptual or inferential account of self-knowledge can give them appropriate weight. Chapters 2-3 offer the 'conceptual basis' for transparency. The argument for this view is based on P.F. Strawson's influential paper 'Freedom and Resentment. Chapters 4-5 do the ‘conceptual basis’ for authority. . Bilgrami considers a 'completely passive' being and argues that it cannot possibly be a thinker. Being wholly passive, such a being lacks the first-person point of view of reasoning and deliberation. Such a being can at best 'exemplify rationality', and it is concluded that agency is a necessary condition for thought, intentionality and self-knowledge. Bilgrami then argues for the even more ambitious claim that intentional states are themselves normative states. The argument for this view is based on Kripke's considerations on rule-following and Moore's open question argument. Intentional states entail certain commitments; so, Bilgrami argues, mental states cannot be identified with disposition. Chapter 6 provides a summary and draws out some broader implications of the book's view. The book concludes with two appendices. The first presents Bilgrami's take on the relation between self-knowledge as understood by the constitutive view he defends and the bynow-familiar cases where self-knowledge seems to fail, or to require self-investigation and

third person insight. The second one briefly suggests a 'reorientation' of the debate between externalists and internalists concerning reasons for action in light of Bilgrami's portrayal of intentional states as commitments. All in all, Bilgrami's book provides many interesting arguments woven together in an intricate approach to the notion of self-knowledge, and it provides an important and careful account of a normative and anti-naturalist approach to agency and intentionality. The day's interactive and discussion among the participants and speakers ended with the symposium, but followed by cultural programme and conference dinner.

16 JANUARY, 2014

The first session of day four/last day of the conference was chaired by Professor Nirmalya N Chakraborty, Rabindra Bharati University, Kolkata and two papers were presented in this session: 'Is Self-Knowledge Possible' by Prof. K. Srinivas, Dept. of Philosophy, Pondicherry University and 'On Moral Agency in the Vedantic and Buddhist Tradition' by Dr. Saroj Kanta Kar, Programe Officer, new Delhi. There was an inquisitive paper by Manidipa Sen from JNU New Delhi. Her paper was titled "Agency and First-Person Authority: Revisiting the Commitment Model of Self-Knowledge". Two papers by Dr. Nishad Patnaik from The New School, New York City-Indeterminacy and Identity: Kant and Husserl on Moral Consciousness and Sanjit Chakraborty from Jadavpur University-Revisiting Self-Knowledge and Externalism were presented in the next session which was chaired by Professor K Srinivas, Pondicherry University. The third session of the day was chaired by Costica Bradatan and the first paper of this session was presented by Professor Bhagat Oinam, JNU New Delhi. The title of the paper was "Problematizing Self-Identity Claim"; a discussion followed the presentation. The other paper of this session entitled "Attitude and Normativity" was presented by Tadeusz Ciecierski from Institute of Philosophy, University of Warsaw, Poland. Dr. Costica Bradatan, Associate Professor of Philosophy, Texas Tech University, USA presented his paper "Self-Knowledge and Failure" in the fourth session after lunch break of the day four. The session was chaired by Professor Bhagat Oinam from JNU New Delhi. Bradatan's piece is the only paper of this session. The remaining two technical sessions of the day was organized with presentation of four papers, but unfortunately one presenter Dr. Deepa Mishra CHM College was absent. The other three papers were presented; discussion followed the presentations.

The conference on "Self-Knowledge and Moral Identity" ended with the response of the

participants and vote of thanks by Professor D.Parthasarathy, Head, Department of Humanities and Social Sciences, IIT Bombay and concluding remarks by Professor P. R Bhat, HSS, IIT Bombay. A decision was taken to produce the proceedings of the conference. The conference came to the end with High Tea.

Report on Seminar on Revisiting Adivasi Autonomy: Self, Home and Habitat

The seminar was held on the University of Hyderabad Campus between 19-21 February, 2015. We have received an overwhelming response from the participants. But we have limited the total presentation to 18 papers apart from an inaugural session and a panel discussion. The inaugural session was presided by Pro. Aloka Parasher Sen, Dean of School of Social Sciences, University of Hyderabad. Dr. Alpa Shah, London School of Economic, delivered the key note address which highlighted and underlined the importance of adivasi autonomy in the globalised world. Care was taken to invite paper from all parts of the India; there were papers on Jharkhand, Chattishgarh, Orisha, Maharashtra, Madhya Pradesh, Bihar, North East India, Tamil Nadu, Kerala and of course from Andhra Pradesh and Telangana. The focus was mainly on 5th Scheduled Areas.

There was intense discussion on every paper presentation. The Key note address had indeed set a tone for the seminar and the same was taken up further by Prof. Archana Prasad and Dr. Bodhi. Dr. Bodhi actually highlighted the trends of enthnocentricism in existing writings on adivasis of India. Dr. Raju Naik has brought out the autonomy articulated in oral history of the adivasis of Telangana. Dr. Jagannath and Mr. Vincent Ekka focused on identity politics and the question of adivasi autonomy. Prof. Rekha Pandey and Dr. Srinivas explored the absent of adivasi autonomy question in our modern education. Dr. Shashank Kela and Mr. Sujit Kumar brought out how modern administrative system broken the traditional adivasi political institutions and system. Prof. Devenathan and Dr. Shamrao interrogated the globalisation process in India and its impact on the adivasi home and habitats. Dr. C Lakshmanan and Dr. Ramdas have shown how adivasis are being missed out from development process. Dr. Sanjukta Das Gupta problematised the relation between Dikus and adivasis in colonial Chotanagpur and how this continues to reflect in adivasi and non-adivasi relations, Whereas Dr. V.J. Vargis

shows how the process of migration weakening the adivasi autonomy in Kerala. Dr. Uma Maheshwari explored the displacement of adivasis in Polavaram region of Andhra Pradesh. Dr. Bipin Jojo focused on mining and displacement of adivasis in Jharkahnd.

B. ICPR Grants for Workshops conducted by Institutions and Individuals

SL. No.	Name of the Organizer	Title of the Workshop	Budget under sanction
1	Professor P.J. Mahanta, Tezpur University Napaam , Tezpur 784 028, Assam	**Workshop** on **Community, Culture , Politics and Democracy**	Rs. 5,00,000/-
2	Prof. Anil Kumar Tiwari, School of Philosophy and Culture, SMVD University, J&K.	Textual **Workshop** on **Shankara Advaita Philosophy**	Rs. 5,00,000/-
3	Professor Ramesh C. Bharadwaj, Department of Sanskrit, University of Delhi	Ten days Workshop on **Mimamsa: Philosophy of Language (With Reference To Other Schools Of Indian Philosophy)**	Rs. 2,00,000/-

Report of ICPR, New Delhi sponsored Textual Workshop on Samkara Advaita Vedanta (16th to 31st March 2015)

The School of Philosophy and Culture (SOPC) of Shri Mata Vaishno Devi University (SMVDU), Katra organized a 16-Day "Textual Workshop on Śāṅkara Advaita Vedānta" from 16th – 31st March 2015. The Workshop was sponsored by Indian Council of Philosophical Research (ICPR), New Delhi. The chief guest of the inaugural session was Prof V. Verma, the then Officiating Vice Chancellor, SMVDU, and the guest of honour was Prof. V. N. Jha, Director and resource person of the Workshop. Prof. V. K. Bhat, Dean, Faculty of Humanities and Social Sciences, SMVDU, presided over the inaugural session. Dr. Varun K. Tripathi (Director, SOPC) welcomed the guests and participants. Dr. Anil K. Tewari (Coordinator of Workshop) introduced the concept note of the Workshop. In his

address, Dr. Tewari highlighted the need of such programmes to fill the yawning gap between the ancient wisdom contained in the Indian philosophical texts in Sanskrit and its modern understanding based on secondary sources and borrowed language. The resource person Prof Jha expressed his deep concern over the neglect of the time-tested wisdom of Indian intellectual tradition in the modern education of India. He said that there is no alternative to learn this wisdom in its original source, primarily in Sanskrit language. Prof. Bhat, in his delivery, remarked that the richness of Sanskrit language cannot be captured in totality in any other language. The chief guest Prof. Verma highlighted the importance of indigenous languages especially Sanskrit. In his witty remark, he said that his own knowledge of the traditional wisdom of India is based on the articles of Speaking Tree due to lack of Sanskrit. He also said that no culture can flourish if it is oblivious to its own tongue, the indigenous language. Altogether 52 persons including research scholars and faculty members of philosophy and Sanskrit and some persons of general interest participated in the Workshop. It is conspicuous that the opportunity could be opened to only 50 participants out of 92 applicants.

The Sanskrit text which was selected by Prof. Jha for the Workshop was the Vedāntaparibhāṁā of Dharmarājādhvarīndra (c. 17th century AD). This text, which belongs to the Vivaraṅa School of Śāṅkara Advaita Vedānta, is an introduction to the Advaita philosophy. It is written in the terse language of the Navya-Nyāya which was developed in circa 10th century AD for precise communication in Sanskrit language. After the necessary introduction of the Advaita tradition and the Navya-Nyāya language, Prof. Jha undertook the guidance of text reading. He went into great details of the linguistic and philosophical nuances of the first section of the text which is on 'perception'. The focal point of discussion was how an occurrence of cognition is characterized as perceptual cognition. What are the metaphysical and epistemic conditions, according to the Advaita philosophy, leading to perceptual cognition? Since the text is written in a dialogical form—the cherished style of Indian scholastic tradition, the discussion on the issue proceeded in view of the dialogue between the Nyāya and the Advaita philosophy. As a befitting accord to the discussion was a cultural tour of the participants to Krimchi Temples near Udhampur. The tour guide was a renowned Hindi and Dogri writer Prof. Shiv Nirmohi from Panthal village near SMVDU. These temples are believed to have been established almost in the same period when the propounder of

the Advaita philosophy Śāṅkarācārya lived (i.e. 7th or 8th century AD). The Workshop concluded on 31st of March 2015 and the valedictory session was graced by Hon'ble Vice-Chancellor of SMVDU Prof. Sudhir Kumar Jain. A brief report of the event was presented by the Coordinator of Workshop Dr. Anil Tewari. The Vice-Chancellor felicitated the resource person Prof. V. N. Jha and applauded his effort for the learning of Sanskrit language and philosophy. The participants were awarded with certificates of participation and appreciation of merit. The vote of thanks was delivered by Director of the School Dr. Varun Tripathi.

Report on
National Workshop on Mīmāṃsā Philosophy of Language

(As depicted in the tradition of Vyākaraṅa, Nyāya,
Kāvyaśastra and Buddhist Philosophy)
Sponsered by ICPR, Govt. of India, New Delhi

The National workshop on Mīmāṅ sā Philosophy of Language was conducted by the Department of Sanskrit, University of Delhi in collaboration with Indian Council for Philosophical Research (ICPR), Govt. of India, New Delhi from **09.02.2015 to 19.02.2015** at Room No. 11, First floor, Social Science Ext. Building, University of Delhi. This workshop aimed to understand the structure of language. As by understanding the structure of language one could understand the structure of reality. Philosophy of language provides a comprehensive discourse on contemporary philosophical theories of meaning. To understand the theory of meaning one requires a framework for specifying the truth conditions of sentences on the basis of their syntactic structure and representational concepts of their parts. Keeping in mind this framework the insight on 'semantics-Pragmatics' approach had been made which is the focus of intense contemporary investigation.

The inaugural session of the workshop was conducted on 9.2.2015. Prof. V. N Jha, Former Director, Centre for Sanskrit Studies (CASS), University of Pune, Maharashtra was the chief guest and the session was presided by Prof. Surya Kant Bali, National Professor, Ministry of Human Resource Development (MHRD), Govt. of India, New Delhi. The president and chief guest of the inaugural session were welcomed by the Director of the Workshop, Prof. Ramesh Chandra Bharadwaj, Head, Department of Sanskrit, University

of Delhi, Delhi. Prof. Bharadwaj highlighted in his welcome address about the programme in details. Prof. V N Jha highlighted in his inaugural speech to enhance the knowledge regarding the relevance of the text Nyāya - Ma? jari (śabdkhaṅda). The session was very much informative as it gets the participants introduced with the text. This text is an encyclopaedia of logic, metaphysics, ethics and theology. It helped us to maximize our knowledge and grow as an individual by studying the theory. Prof. Surya Kant Bali expressed in his presidential remarks about the importance of Sanskrit language and to propagate the same.

Out of 110 registered participants, 103 participants (teachers and research scholars) from the University of Delhi and Rashtriya Sanskrit Sansthan successfully attended and completed the national workshop.

In the first session of the workshop, Prof. V N Jha talked about the relevance of Indian Philosophical texts with reference to the text Nyāya - Ma? jari (śabdkhaṅda). After his valuable discussion, the questions were raised by the participants and the same has been solved by the esteemed scholar Prof. Jha.

On the second day(10.2.2015) of the workshop, the Apoha theory was taught by Prof. H.S. Prasad, Head, Department of Philosophy, University of Delhi. The Apoha theory is an approach to the problem of universals, the problem of the one over the many. The problem is one of explaining how it is possible, when we see a pot, to think of it as a pot and call it by the name "pot" a name that applies to many other particular pots. What is one thing, being-a-pot, that this particular shares with many other particulars? Is these really such a thing in the world? Over and above the individual pots, or is it just a mental construction of some sort? To hold the first alternative is to be a realist above universals, to hold the second is to be a nominalist. The Apoha theory is a distinctive Buddhist approach to being a nominalist.

The afternoon session on the second day, the Nyāya - Ma? jari text reading started and the same has been facilitated by Prof. Jha. The text with right earnestness tries to establish the hypothesis of Naiyāyikas that (śabda is a distinct source of knowledge. The knowledge derived from the sentence of a trustworthy person, is true. Though it is indirect yet it is not inferential. He refutes the view that verbal knowledge is an inference. The concept has been taught which further cleared the semantics structure and its application in one's life.

On the third day of the workshop (11.02.2015), Shabdashakti Prakashika was taught by Prof. Piyush Kant Dixit. In the post lunch session on third day, Nyāya - Ma? jari started at 02.00 pm by Prof. V.N. Jha. Moving further with the text. He meets the objection of the Buddhists who hold that verbal knowledge is not true. In order to prove the thesis of the Naiyāyikas that the truth of the Vedas is not self-evident, he raises the fundamental problem i.e. whether or not the truth of knowledge is self-evident.

He also discussed the other aspects of the problem, i.e. whether or not the factors to which a piece of knowledge owes its origin are responsible for its truth. After having discussed all the rival views he arrives at the conclusion that the truth of a piece of knowledge is not self-evident. A factor in addition to the recognized factors of a piece of knowledge is required to bring about a piece of true knowledge.

On 12.02.2015 there was a last session for the Nyāya - Ma? jari text which began at 10.00 am. The reading of the text enhanced the sentential theories which keep in the development of language, thinking and meaning in an individual to lead a better life.I n the afternoon session, Dr. Ram Salahi Dwivedi discussed and taught Paramalaghumanjuśa (Mīmāṅ sā - Purvakhandah) śakti-nirupanam.

On 13.2.2015, Prof. Reva Prasad Dwivedi and Prof. S. Dwivedi welcomed by Prof. Ramesh C. Bharadwaj Head of Department. The Day started with the introduction of the text Kavyaprakāśa (Pancama Ullasah).This session led by experienced teachers, complement the learning and provides additional practical knowledge and advice. Post-lunch session was followed by the text Dhatvarthavicharah with Prof. S.K. Sharma, Former Professor & Head, J.N. Vyas, Jodhpur University. He was welcomed by the Department Head, with a little introduction about the text, we started thorough reading.

On the sixth day of the workshop Day (14.02.2015), Dhatvarthavicharah was taught by Prof. S K Sharma followed by the interactive session. The participants asked the questions related to the texts and same has been answered by the resource person.

Post lunch session started at 02.00 pm with Prof. Reva Prasad Dwivedi & Prof. S. Dwivedi. They taught the text Kavyaprakasa. The teaching-learning environment was full of smiling faces.

On the seventh day of the workshop 15.02.2015, the bright Sunday started with innovative learning of Dhatvarthavicharah with Prof. S.K. Sharma.

At 01.00 pm everybody enjoyed lunch and get refreshed for Kavyaprakash (Pancamaullasah) with Prof. R.P. Dwivedi and Prof. S. Dwivedi.

On 16.02.2015, the new day started with Tea at 10.00 am and store various informative session. Mīmāṅ sā Text Khandadeva-granthasarah (Bhattanaya Sabdabodhaprakarah) was taught by Prof. Devadatta Govind Patil, Pune, Maharashtra. In the afternoon session, Vedānta - Paribhaśa (Agamaparichhedah) was taught by Prof. R.K. Bhatt, Former Professor and Head, Department of Vedanta, Shankaracharya Sanskrit Vishwavidyalaya, Kalady, Kerala.

On 17.2.2015,Mīmāṅ sā Text Khandadevagranthasarah was taught by Dr. Devadatta Govind Patil and Vedānta - Paribhaśa (Agamaparichhedah) was taught by Prof. R.K. Bhatt.

On tenth day of the workshop, Mīmāṅ sā Text Khandadevagranthasarah was taught by Dr. Devadatta Govind Patil and Vedānta - Paribhaśa (Agamaparichhedah) was taught by Prof. R.K. Bhatt

C. ICPR Organised Seminars conducted at Indian Council of Philosophical Research, Academic Centre, Lucknow

SL. No.	Name of the Organizer	Title of the Workshop	Budget under sanction
1	ICPR, Academic Centre, Lucknow	2 days seminar on **Dalit in Theory and Practice: Cracked Mirror**	Rs. 5,00,000/-
2	ICPR, Academic Centre, Lucknow	Seminar on **Daya Krishna on Human Values: Divisions and Dynamics**	Rs. 5,00,000/-
3	Coordinatorship of Professor Rakesh Chandra, Lucknow	**Education Day** on **11.11.14**	Rs.35000/-
4	Coordinatorship of Professor Rakesh Chandra, Lucknow	**Young Scholars Essay Competition**	As noted above

SL. No.	Name of the Organizer	Title of the Workshop	Budget under sanction
5.	Co-ordinatorship of Professor Benedikt Loewe and Profesor Mihir Kr. Chakraborty At Indian National Science Academy premises in New Delhi	**International Conference on Cultures of Mathematics IV**	March 22 to 25, 2015

Detail Reports of Sl. No. 1- 4 is available in Secion IV above.

INTERNATIONAL CONFERENCE ON CULTURES OF MATHEMATICS IV
New Delhi

REPORT by Professor Mihir Kr. Chakraborty

The International Conference on Cultures of Mathematics IV was organized by Indian Council of Philosophical Research from March 22 to 25, 2015 at the Indian National Science Academy premises in New Delhi. The previous conference, the 3rd one, was organized in Guangzhou, China from 9 to 12 November, 2012. Two Indian speakers had been invited; Professor Amita Chatterjee, renowned Professor of Philosophy and myself. There I made a tentative proposal to hold the 4th meeting in India. Subsequently, in one of the RPC meetings, I proposed to hold such a conference under the sponsorship of ICPR and that was accepted. Professor Nirmalya Narayan Chakrabarti was the Member Secretary at that time. Professor Benedikt Loewe on one side and ICPR under the leadership of Professor Mrinal Miri and present Member Secretary Dr. Manendra Pratap Singh on the other, took initiative to make the conference successful. And it was indeed a success.

The total number of speakers was 23 of which 5 were Indians from Indian Institutions. One speaker was an NRI. Foreign scholars hailed from countries like Austria, France, Germany, Japan, England, USA, Argentina, Belgium and Scotland. There had been some invited participants from Indian institutions. It was not a big audience but the purpose was also not to attract crowd but to generate interest in the newly developing area overlapping mathematics, philosophy and culture. A look into the programme will shed light on the wide range of topics discussed. It should be mentioned that all the speakers were physically present that is, no talk was through web network. After each talk there had been serious interactions. As an instance, after a very interesting lecture by Kenji Ito from Japan a host of questions were asked by Albrecht Heefer, Ramasubramaniam, Amil Simenov, Benedikt Loewe, R.C.Das , Medeline and Mihir

Chakraborty. Sunita Bhatuk's presentation was of a different kind. She spoke on the domestic art form in south India called Kolam and the intrinsic mathematics present in its practice. Videos had been used in the presentation enriching the content as well as rendering liveliness – this form of presentation was an essentiality for the content not a show for attraction. However, most of the talks were quite attractive.

In the inaugural session Prof. Mrinal Miri spoke on the interplay of mathematics and philosophy. Prof. Benedikt Loewe gave an introduction to the idea, history and organization of the conference. The other speakers were Mr. Vaibhav Agrawal of German House, New Delhi and Mihir Kr. Chakraborty.

There had been a valedictory session where it was proposed that the next meeting may be held in Buenos Aires, Argentina. Member Secretary, Dr. Singh thanked all who took initiative and participated in the conference. All the participants appreciated ICPR's organization and hospitality.

The only little shortcoming that may be mentioned is that more participants could be invited. The programme being the first of its kind it could attract more people who would be genuinely interested in the theme if we could give the conference a wider publicity.

D. ICPR Organised Workshops conducted at Indian Council of Philosophical Research, Academic Centre, Lucknow, under the directorship as given below.

S.No.	Under the Directorship of	Title of the Workshop	Budget under sanction
1	Professor P.J. Mahanta, Tezpur University Napaam , Tezpur 784 028, Assam	10 days workshop on **Philosophy of Mind**	Rs. 5,00,000/-
2	Professor R.C .Pradhan	10 days workshop on Makers of **Analytic Philosophy**	Rs. 5,00,000/-
3	Professor Priyadarshi Jetley	**10 days workshop on Reading Russell's Problems of Philosophy**	Rs. 5,00,000/-
4	Professor Bijoy Mukherjee	**10 days workshop on Philosophy of Mathematics (Quantum Mechanics for Philosophers and Social Scientist)**	Rs. 5,00,000/-

5	Professor V.N. Jha	**13 days workshop on Tarkasangraha**	Rs.6,00,000/-

Detail Reports of Sl. No. 1- 5 is available in Secion IV above.

A. Meet the Author Programme

SL. No	The Authors	Text of the Author
1	Kanchana Mahadevan	Between Feminity and Feminism, ICPR&D.K Printworld, 2013.
2	Nirmalangshu Mukherjee	The Primecy of Grammar, MIT Publications, 2010 (PHI Learning Pvt., Ltd, India, 2011.)

Report on
Meet the Author – Professor Kanchana Mahadevan

An ICPR Meet the Author programme took place on March 25th 2015 at Seminar hall of IIC, New Delhi at 2.00 p.m. Kanchana Mahadevan's book, "Between Feminism Feminity" was presented and discussed. The event began with an introductory talk by Professor Mahadevan on the book. She discussed on various themes which she had covered in her book. For instance, she spoke on women's rights vis-a-vis equal rights issues of re-marriage, protectionism, reliance. There was an exposition of the Social Reformers and the philosophers like Susan, Rawls who talked about the concepts on Freedom, Care, Social Justice, Restructuring the society etc. Other philosophers like Simon de Baeauvoise, Martha Nausbaum were also discussed. She brought in Tarabai Schinde, Zanabai and Pandita Ramabai and gave their views based on the theme she covered in her book. There was a threadbare discussion on her talk. The main discussants of her book were Professor Lata Chhatre and Professor Vaijayanti Belsare from Pune. They spoke on the Concept of Care from Buddhist point of view and on Feminine ethics. There were many other participants from University of Delhi, and JNU and from Kolkata and the discussion was very interesting.

After the talks by the author and the discussants, the participants asked questions to the author on various issues. Thus, the programme went on very well to the satisfaction of all the participants. The event ended with a vote of thanks by Dr. Manendra Pratap Singh, Member Secretary of the Council, which was followed by a high tea.

Report on Meet the Author Programme on Nirmalangshu Mukherjee's Book on The Primecy of Grammar

The event of Meet the Author programme took place on 24th August 2015 at India International Centre, New Delhi. Professor Mrinal Miri's book "Philosophy and Education" brought out by Oxford University Press was discussed. The programme started with a Welcome by Dr. Manendra Pratap Singh, Member Secretary of the Council. Professor S.P. Gautam presided over the session.

There was a gathering of around 30 scholars. Professor Miri gave an exposition of his book and stated that the book is not a treatise on philosophy and education but was a work wherein the author brought out some desperate topics to stretch them together. Issues like, "Why is Education important", "what are values and value of Education", "Aim of enhancing self", "Development of Education", "Teacher-Learner relationship"," Music as a means for enhancement of self" were important. Music emanates emotion and it is able to express subtleties that language cannot express. "What is Autonomy in higher education- Institutions of Education", "Place of Humanities in Higher Education system", "Technology as skill development", etc., were also the focal points.

There were very interesting feedback and review of the book made by Dr. Raj Ayyar, Professor Rakesh Chandra, Professor Mohini Mullick and Professor Gurucharan Das. Also there were threadbare discussions on various queries rasied by the audience, like, Dr. Shashi Matilal, Dr. Malabika Majumdar, Dr. Ranjan Ghosh, Dr. Aggarwal etc. There were good responses given by the author, Professor Miri, on all the queries raised.
The whole event was quite thought provoking and extremely beneficial for not only philosophy scholars, but also for educationists and social scientists.

IX
PHILOSOPHY TEACHERS' MEET

Philosophy Teachers' Meet was a novel programme of the Council. It focusses on methodological and pedagogical issues in teaching philosophy. These are as important as the philosophical issues, and should be resolved time to time, to help teaching philosophy contemporaneous and applied. Keeping this in view, the Council organises teachers' meet in different parts of the Country. This year, the Council resolved to organize

Philosophy Teachers' Meet in the following universities:

1. Acharya Nagarjuna University, Nagarjuna Nagar
2. Shri Mata Vaishno Devi University, Sub Post office , Katra
3. The Mathura College, Madhurai
4. A N Sinha Institute of Social Studies, Patna

A sum of Rs.4.00 lakhs each had been sanctioned for above Meets and Rs.5.00 lakhs also sanctioned to the institutes as given below.

5. Cotton College State University, Guwahati
6. Dibrugarh University, Dibrugarh

This year, the Council resolved to organise Philosophy Teachers' Meet in the following places spread all over the country:

1. Mata Vaishno Devi University, Jammu, Jammu & Kashmir.
2. Patna University, Patna, Bihar
3. R.D. University, Jabalpur, Madhya Pradesh
4. Acharya Nagarjuna University, Guntur, Andhra Pradesh
5. Madura College, Madurai, Tamil Nadu

A sum of Rs.4.00 lakhs each was sanctioned for these Meets. The Meets could not be organised in this financial year, and are pending for the next financial year.

Report of North-Western Zone Philosophy Teachers' Meet
25th – 27th Feb. 2015
Organized by
School of Philosophy & Culture
Shri Mata Vaishno Devi University, Katra, J&K

The School of Philosophy and Culture (SOPC), Shri Mata Vaishno Devi University (SMVDU) Katra organized a three-day "North-Western Zone Philosophy Teachers' Meet" on the theme "The Future of Philosophy in Indian Higher Education" from 25th to 27th Feb. 2015. The event was sponsored by Indian Council of Philosophical Research (ICPR), New Delhi. The Meet was inaugurated by Prof. Sudhir K. Jain, Vice Chancellor of SMVDU while the guests of honor on the occasion of inauguration were Dr. M. P. Singh, Member Secretary, ICPR New Delhi, Prof. Ved Kumari Ghai (Padma Shri), Retd.

Professor of Sanskrit, University of Jammu and Prof. V. K. Bhat, Dean, Faculty of Humanities and Social Sciences, SMVDU. Dr. V. K. Tripathi (Director, SOPC) welcomed all guests while Dr. Anil K. Tewari (Coordinator) introduced the concept note of the Meet. In his address on the occasion, Dr. Singh, MS, ICPR, highlighted the efforts of ICPR for promotion of the philosophy discipline across country. He pointed out various programs and scholarships which are sponsored by ICPR. He also informed regarding various facilities available at the academic center of the Council in Lucknow and told about the activities undertaken by the center. He urged the scholars present to take the benefit of the facilities and activities.

Prof. Ghai, in her address, emphasized the relevance of philosophy in modern times. She said that the discipline not only has the cultural relevance but also makes us humble while formulating our opinion on various issues of contemporary relevance. Prof. Bhat remarked a close affinity between philosophy and mathematics in his speech. Prof. Jain, VC, SMVDU, appreciated the efforts of the faculty members of the School for organizing such events for the promotion of philosophy in the north-western region particularly in Jammu and Kashmir. While recalling his discussions with the faculty members and PhD students of philosophy during his PhD training at IIT Kanpur, he pointed out the influences and benefits of those interactions in his own training. He also emphasized the need of Philosophy in every walk of life. Dr. P. P. Singh from Government College for Women, Parade, expressed his concern over the situation of philosophy in J&K and pointed out that despite many constraints related to the availability of regular teachers of philosophy hundreds of students opt for Philosophy in higher education in the state of J&K at UG level in different colleges of the State. Informing that there is only one university (i.e. SMVDU) that offers PhD in Philosophy in the State, he expressed his concern over the State Govt.'s callousness in filling the vacant positions in Philosophy at College levels. The session concluded with a vote of thanks proposed by Mr. S. S. Sharma, Asst. Prof., SOPC.

The Meet concluded on 27th Feb. 2015 evening at 5pm with the valedictory session. The session was chaired by Prof. Kisor Kumar Chakrabarti and the guests of honor were Prof. P. Jetli and Prof. S.C. Bhelke. Dr. V.K. Tripathi welcomed the guests and audience. A brief report of the Meet was presented by Dr. Anil K. Tewari, Coordinator. The guests of honor expressed their opinion on the proceedings of the Meet. They remarked commonly that

such Meets are good initiatives of ICPR, New Delhi for an academic interaction of philosophy teachers of the region. It also provides opportunity for them to get the benefit of the ideas of senior scholars of our country. The event concluded with a vote of thanks by Mr. Sumanta S. Sharma, Asst. Prof., SOPC.

There were altogether 6 academic sessions apart from inauguration session. Total 18 papers were presented by the renowned scholars coming from various reputed institutions. Their presentation details are given below:

S.N.	Name	Institution	Title of Presentation
1	Prof. Godabarisha Mishra	University of Madras, Chennai	In Between Philosophy and Darshana: What and How of Indian Philosophy
2	Prof. S. C. Bhelke	University of Pune, Pune	Bharatamuni's Theory of Rasa
3	Dr. Chandana Chakrabarti	Davis and Elkins College, W. Virgenia, USA	Buddha, Hume and James on the Stream of
4	Prof. Kisor K. Chakrabarti	Davis and Elkins College, W. Virgenia, USA	Psycho-Physical Dualism: East and West
5	Prof. Ram Bahadur Shukla	Jammu University, Jammu	मूल्य–मीमांसा के परिप्रेक्ष्य में मोक्ष की समीक्षा
6	Prof. Godabarisha Mishra	Madras University, Chennai	Breaking the Boundaries: Inter and Trans Disciplinary Relevance of Philosophy
7	Prof. Kiran Bakshi	Principal, GCW, Gandhi Nagar, Jammu	Applied Philosophy
8	Prof. S. C. Bhelke	University of Pune, Pune	Bharatamuni's Theory of Bhava

S.N.	Name	Institution	Title of Presentation
9	Dr. Chandana Chakrabarti	Davis and Elkins College, W. Virgenia, USA	The Nyaya Theory of Truth
10	Prof. Franson D. Manjali	JNU, New Delhi	Dialogics of the Ethics of Intersubjectivity
11	Prof. Kisor K. Chakrabarti	Davis and Elkins College, W. Virgenia, USA	Proflem of Induction: East and West
12	Prof. Manidipa Sen	JNU, New Delhi	Self-Knowledge and Agency
13	Prof. Franson D. Manjali	JNU, New Delhi	Nationalism, Colonialism and Modern Linguistic Studies
14	Prof. Priyedarshi Jetli	TISS, Mumbai	Abduction as a Form of Inference
15	Prof. Manidipa Sen	JNU, New Delhi	Phenomenal and Intentional Contents of Consciousness
16	Prof. Priyedarshi Jetli	TISS, Mumbai	Knowledge as an Activity
17	Dr. P.P. Singh	GCW, Parade, Jammu	Philosophy in J&K
18	Prof. B. Labh	Jammu University, Jammu	Assimilative Strength of Buddhism

X
Fellows' Meet 2014
(2nd to 4th April 2014)

Fellows' Meet is a programme of the Council, where the Junior and General Fellows are invited to present their progress in research and to interact with the experts in their fields of research. The Fellows' Meet 2014, was held from 2nd to 4th April 2014 at the Committee room of SS – I, JNU in collaboration with Centre for Philosophy, Studies in Social Sciences, JNU. The proceedings went on as planned and programmed well ahead. The meet was inaugurated with the Welcome Address of Prof. Mrinal Miri, Honourable Charman of

ICPR and Prof. S. P. Gautam, Senior faculty in philosophy, JNU. The fellows and the resource persons were invited and the need of the meet is also deliberated upon. Dr. Mercy Helen. Director (P&R) extended vote of thanks on the Hon'ble Chairman's address. The meet has opened up for sessions.

The meet was conducted with the participation of the following invited resource persons, who have illumined the fellows on their areas of research.

1. Prof. Biswambhar Pahi, at present Senior Fellow of ICPR and formerly faculty of Philosophy, University of Rajasthan;
2. Prof. P. K. Mohapatra, at present Senior Fellow of ICPR and formerly faculty of Philosophy, Utkal University;
3. Prof. Rakesh Chandra, faculty of Philosophy, University of Lucknow;
4. Prof. Amita Chaterjee, at present Senior Fellow of ICPR and formerly faculty of Philosophy, Jadavpur University, who has joined from the 2nd day of the meet;
5. Dr. Manendra Pratap Singh, Member Secretary, ICPR,

Besides the resource persons, Hon'ble Chairman has made his presence sometimes in between the sessions. Dr. Manendra Pratap Singh, Member Secretary, ICPR Dr. Mercy Helen, Director (P&R), Dr. Arun Mishra, Director (A), and Dr. S. K. Kar, (P.O), and concerned staffs of ICPR were also present in all the sessions. There were occasional visits of Accounts Officer to look after proceedings. The staffs of account section have also arrived at the venue to distribute the TA at the appropriate time. The entire office of ICPR was involved in different occasions for logistics and other preparations for the Meet.

As mentioned in the programme schedule (provided below), each session has one Orientation Lecture of about 45 minutes by Resource person which was followed with discussion of about 15 minutes. Thereafter presentation of Fellows on topics related to their research work under ICPR fellowship was followed. There were 41 fellow participates. As directed before, almost all the fellows have been prepared and presented their written documents regarding their research at their scheduled turn. After 15 minutes of presentation by each fellow on his / her topic of research, often by use of the multimedia facilities, the resource persons have interacted on the issues involved and provided their valued tips and suggestions for the betterment of the research work of the concerned presenter. This was the way of the meet for all the sessions for the 3 days of the meet.

The first (morning) session on 2nd April, was initiated with 1st Orientation Lecture delivered by Prof. P.K. Mohapatra on research in Moral Discourse and Indian Ethics, which distributing a handout to the fellows. This is followed by Tea session and then presentation by 7 fellows on their research topics.

The second (afternoon) session on 2nd April was initiated with 2nd Orientation Lecture delivered by Prof. Rakesh Chandra on research in. This is followed by Tea session and then presentation by 6 fellows on their research topics.

The third (forenoon) session on 3rd April was initiated with 3rd Orientation Lecture delivered by Proof Biswambhar Pahi on research in Western Epistemology and Logic. This is followed by Tea session and then presentation by 9 fellows on their research topics.

The fourth (afternoon) session on 3rd April was initiated with 4th Orientation Lecture delivered by Prof. Biswambhar Pahi on research in Indian Epistemology and Logic. This is followed by Tea session and then presentation by 7 fellows on their research topics.

The fifth (forernoon) session on 4th April was initiated with 5th Orientation Lecture delivered by Prof. Amita Chatterjee on research in Epistemology and the turns it takes with advancement of knowledge ¬

This is followed by Tea session and then presentation by 6 fellows on their research topics.

The sixth (afternoon) session on 4th April was initiated with 6th Orientation Lecture delivered by Dr. Manendra Pratap Singh on research in Philosophy. This is followed by Tea session and then presentation by 6 fellows on their research topics.

Different sessions were chaired in turn by Prof. S.P. Gautam, Prof. P.K. Mohapatra, Prof. Rakesh Chandra, Prof. Amita chatterjee and Prof. B. Pahi, and Dr. Manendra Pratap Singh. All of them have provided their suggestions to the fellows and participated in the discussions. Dr. Arun Mishra, Director (A) also participated in the discussions on topic related to Indian Epistemology as and when the issues have arisen.

At the valedictory session, 4 fellows were invited to provide the feedback. They were Mr. Lalit Saraswat, Mr. Sanjeet Chakraborty, Ms. Sweta Singh and Mr. P.I. Devraj. Each of them have spoken on the merits and usefulness of the meet. Mr. Devraj have pleaded that similar meets in forms of seminars or workshops may be conducted in every 6 months, so that all the fellows can present each of their chapters on each of the occasions, and the

discussions and feedbacks can be so useful for enhancing the qualities of their research leading to its completion in time.

The valedictory address was delivered by Prof. S.P. Gautam of JNU touching all the sessions and most of the vital issues of the meet. The Participation Certificates were distributed by Prof. Pahi and Prof. Gautam amidst the flash lights of the photographers and smiling participants.

There were total 6 Orientation Lectures, 2 sessions of Addresses (as stated above) and 41 presentations by the Fellows on different topics (as given below). There were written feed-backs from all the fellows besides general feed-back from four fellows at the valedictory session. The presentations of the fellows have always become vibrant and the resource persons' lectures and interactions have been so intricate and lengthy that time has always become insufficient, making the sessions to over-run till 6 P.M.

Names of Participants of ICPR Fellows' Meet 2014 and Title of their Research Presentation

SL. No.		Name of the Fellows	Title of the Presentations of Paper Related to the Project Under ICPR Fellowship
1.		Abir Kumar Dash	Bhartruhari on Sabdabrahma: Some Critical observations
2.		Alphonso P. K.	Aesthetic of Sensation
3.		Amit Kumar	Dr. Nand Kishore Devraj ke darshan me Dharm ki Avdharana
4.		Apurva Kumar Tripathi	Shankar our Ramanuja ka Karyakarana Vichar
5.		Arun Garg	Some Philosophical views on Foundations of Mathematics
6.	SC	Biman Karmakar	Theory of Soul in Nyāya- Vaiśeṅika Philosophy
7.	SC	Bindu Kumari	Sāmkya darshan me Pramana Mimamsa
8.		E. Jegadeeswaran	Views on Human Dignity: B.R. Ambedkar and E.V.R. Periyar
9.		Gyanesh Tripathi	Pramanya : Svatah Grahya Paratova

SL. No.		Name of the Fellows	Title of the Presentations of Paper Related to the Project Under ICPR Fellowship
10.		Jaydev Sarma	Varna Vyavastha: oriogins, Growth and Decay from Sri Aurobindo's Perspective
11.		Jayeeta Majumdar	Descartes and Husserl: Doubt and Reduction – A Note
12.		K. Vengadachalam	Sri Aurobindo's theory of Causation
13.		Komaljeet Kaur	Comparison of Hobbes and Rawls in the Light of social Contract Theory
14.		Kumar Rishabh	Marx ke Nyaya Siddhant ka Darshanic Avalokan
15.		Lalit Saraswat	Philosophical Perspective of Causation of Consciousness
16.		M. Jyothimani	Advaita Vcedanta : A New Interpretation
17.		Mane Pradeepkumar Pandurang	Vivekananda's Conception of Buddhism
18.		Manoj Panda	The Content of Perception and Reasons for Empirical Thought
19.		Mukesh Behera	A Critical Examination of Philosophy of Technoloigy
20.		Munish Kumar Mishra	Nyaya-vaisesika Darshan ke Anusar Dravyasvarupa Vimarshah
21.		N. Sridhar Padmanabhan	Vaisesika Darsanasya Viajnanikaritya vimarsshah
22.	SC	Narendra Boudha	Ambedkar ka hindu Dharma se Darshanik Mahabhiniskraman
23.		Nidhi Chaudhuri	Jivagoswami rachit Kramasandarbh: darshansastriya Adhyayan
24.		P. I. Devaraj	Social Philosophy of Contemporary Thinkers of Kerala: A Bird's Eye View

SL. No.		Name of the Fellows	Title of the Presentations of Paper Related to the Project Under ICPR Fellowship
25.		Pankaj Pandey	Bharatiyua Darshan me Sabdartha – Ek vihangavalokan
26.	SC	Pankoj Kanti Sarkar	Anthropocentrism: Some Philosophical observation
27.		Parul	Dravyon va Gunon ki lakshan Sameeksha
28.		Rakesh Kumar Singh	Being, Temporality and Language: A critical Reflection of Martin Heidegger's Philosophy
29.		Risabh Kumar Jain	Bhavasen krit visvatattvaprakas me varnit Charvak mata Khandan
30.		Sharda Vandana	Naitik vadi Darshanik Chintan
31.		Sangeeta Basu	Senses of extension
32.		Sanjit Chakraborty	Theory of Meaning: Revisiting Frege
33.		Shankar Dutt	Shri Apyaya Dikshita ka gyan Karma Samanvaya
34.		Shweta Singh	Moral Space in Particularism- Empty Space
35.		Sima Devi	Vivekanand ke Anusar Manavatavad ka Darshanik Adhyayan
36.		Sreejith K.K.	Addressing the Challenge from testimonial Knowledge to virtue epistemology
37.	NER	Sreetama Misra	Solidarity Rights: Meaning and Prospects
38.		Terence Mukhia	Impact of Christianity on Lepcha and Tamang Tribal Philosophies
39.		Uma Dhar Singh	Compassion Meditation
40.		V. Vijay Anand	Ambedkar's Interpretation of Indian Philosophy
41.		Zaid Ahmad Siddiqui	Aesthetics and its Relation to Political Philosophy

XI
TEACHING LOGIC

Teaching logic is a programme for North Eastern Region ICPR provides sum of Rs.60,000/per annum for appointment of a junior teacher to teach logic to +2 students. For a Teaching Logic from the selected applicants from NER, the following colleges received the grants.

1. Principal, JB College, Jorhat 785001, Assam for NER
2. Principal, Pachhunga University College, Aizawal -796001, Mizoram for NER

XII
Lecture Series

The Council sanctioned a series of lectures with Rs.50,000/- for each lecture programme, conducted at Academic Centre, Lucknow.

Series of Lectures on Makers of **Modern Indian Philosophy**	**ICPR Academic Centre, Lucknow.**	**Speakers**
Amita Chatterjee	19.3.2015	Prof. B.N Shah
D. N. Chakraborty	20.3.2015	Prof. Kalidas Bhattacharya

Detail report is provided in the section IV on Programmes at Lucknow.

XIII
LECTURES BY EMINENT SCHOLARS – VISITING PROFESSORS

With a view to acquaint Indian scholars with the recent thoughts of leading philosophers as well as to provide opportunities for interaction with them, every year the Council organises National Lectures by Professors and eminent scholars from India and from abroad. Under this scheme, each invited scholar delivers a series of three lectures at least three to four different universities in India. Following are some of programmes that happened in the year 2014-15.

A. Lectures by Visiting Professors (Overseas)

SL.No.	Name of Lecturer	Name of University/Date	Title of the Lecture	Grant
1.	Professor Richard Sorabji, Visiting Professor (Overseas)	Prof. Hari Shanker Prasad, Head, Department of Philosophy, Delhi University, Delhi-110 007		15,000/- (Grant) S.O. dated 2.2.2015

2	- do -	Prof. Vijay Tankha, Head, Department of Philosophy, St. Stephen's College, University Enclave, Delhi- 110 007		35,000/- (Grant) 20.1.2015
	- do -	Programme Officer, Indian Council of Philosophical Research, 3/9, Vipul Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226 001	2,Feb,2015	
3.	Professor Purushottama Bilimoria Visiting Professor (Overseas)	Professor S.P. Gautam, Professor & Chairperson, Centre for Philosophy, JNU, New Delhi- 110 067		35,000/- (Grant) 17.12.2014
4	- do -	Dr. Md. Sirajul Islam, Head, Department of Philosophy & Religion, Visva Bharati, Santiniketan- 731235	1. Tagore, Gandhi between Lhyotard and Habermas (On Education). 2. Secularism and its Disenchantment. January 9-10, 2015	35,000/- (Grant) 17.12.2014
5	- do -	Professor Sreekala M. Nair, Head, Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Kerala- 683 574		35,000/- (Grant) 17.12.2014
6	- do -	Professor Kanchana Mahadevan, Head, Department of Philosophy, University of Mumbai, Vidyanagari Campus, Mumbai- 400 098	1. Thinking Emotions: Do Indian Aesthetic Theories Get it ? 2. Gandhi and Tagore between	35,000/- (Grant) 17.12.2014

			Lyotard and Habermas, Educating Techno-culture and Creativity. January 19 and 21, 2015	
7	- do -	Professor Dilipkumar Shantidan Charan, Head, Department of Philosophy, Gujarat University, Ahmedabad- 380 009		35,000/- (Grant) 17.12.2014

Reports on the lecture programmes conducted by Academic Centre, Lucknow are placed in Section IV.

B. Lectures by Visiting Professors (Indian)

SL. No.	Visiting Professor	Places of Lectures	Title	Grants
1.	Professor S.C. Bhelkey, Visiting Professor (Indian)	Dr. Jagadish Patgiri, Associate Professor, Department of Philosophy, Cotton College, Guwahati-781 001		35,000/- (Grant)
2	- do -	Professor Sreekala M. Nair, Head, Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Kerala- 683 574		35,000/- (Grant)
3	- do -	Programme Officer, Indian Council of Philosophical Research, 3/9, Vipul Khand, Gomti Nagar,		35,000/- (Advance) 8.1.2015

		Lucknow- 226 001		
4	Professor S. Panneerselvam Visiting Professor (Indian)	Dr. Md. Sirajul Islam, Head, Department of Philosophy & Religion, Visva Bharati, Santiniketan- 731235		35,000/- (Grant) 14.1.2015
5	- do -	Prof. Sreekala M. Nair, Head, Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Kerala- 683574		35,000/- (Grant) 2.12.2014
6	- do -	Professor S.P. Gautam, Professor & Chairperson, Centre for Philosophy, JNU, New Delhi- 110 067		35,000/- (Grant) 4.3.2015
7	- do -	Professor Kanchana Mahadevan, Head, Department of Philosophy, University of Mumbai, Vidyanagari Campus, Mumbai- 400 098	Phenomenology of Consciousness A Shift from Language to Discourse: Gadamer, Recoeur and Heberemas. 23-24, March,2015	35,000/- (Grant) 4.3.2015
8.	Professor Mohini Mullick, Visiting Professor (Indian)	Dr. Krishna Bhattacharya, Head, Department of Philosophy, Tripura University, Agartala, Tripura (West) – 799 001		35,000/- (Grant) 24.2.2015
9	- do -	Professor K. Gopinathan, Head, Department of Philosophy, Calicut University, Kozhikode,	Classical Indian thought and the Colonial Consciousness.	35,000/- (Grant) 5.12.2014

		Malappuram- 673 635, Kerala	23, Fev. 2015	
10	- do -	Professor U.A. Vinay Kumar, Head, Department of Philosophy, Goa University, Goa- 403 206	Dharma, Law and Religion	35,000/- (Grant) 5.12.2014
11	- do -	Programme Officer, Indian Council of Philosophical Research, 3/9, Vipul Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226 001		35,000/- (Advance) 5.12.2014
12	Prof. Amita Chatterjee & Prof. N.N. Chakraborty	Programme Officer, Indian Council of Philosophical Research, 3/9, Vipul Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226 001	Lectures on Makers of Modern Indian Philosophy by Dr. Amita Chatterjee on Prof. B.N. Shah and by N.N. Chakraborty on Prof. Kalidas Bhattacharya	1,30,000/- (Advance) 4.3.2015
13	Professor Chhanda Gupta.	Professor Prajit K. Basu, Head, Department of Philosophy, Central University of Hyderabad, Hyderabad- 500 046	Family: Heven or Prison Two Voices of Liberalism: For and Against the Family October 20-21, 2014	35,000/- 12.9.14 D-VII (A)- Lecture National.
14	- do -	Md. Sirajul Islam, Head, Department of Philosophy & Religion, Visva Bharati,	Jan. 29, 2015	35,000/- dated 5.1.2015

		Santiniketan- 731 235		D-VII (A)- Lecture National.
15	- do -	Programme Officer, Indian Council of Philosophical Research, 3/9, Vipul Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226 010		35,000/- dated 5.1.2015 D-VII (A)- Lecture National.
16	Prof. Rajendra Prasad	Programme Officer, Indian Council of Philosophical Research, 3/9, Vipul Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226 010	29 May 2014	

Reports on the lecture programmes conducted by Academic Centre, Lucknow are placed in Sectio IV.

Brief Report on ICPR Visiting Fellow Lecture Program of Prof. S. Panneerselvam

The Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady has organized the ICPR National Fellow Lecture Program of Prof. S. Panneerselvam on 4th December 2014. The program was held in the Language Lab, Academic Block I of the Main Campus of the University. At 10.30 am the program commenced with an invocation rendered by the Dept. of Music. Prof. Sreekala M.Nair, Head, Dept. of Philosophy welcomed the gathering. This was followed by the Presidential Address delivered by Honab'le Vice Chancellor Dr. M.C. Dileep Kumar. In his presidential address he briefed the academic programs initiated by University and highlighted the leading role the Dept. of Philosophy takes in the State of Kerala for the development of the discipline. This was followed by the first lecture delivered by Prof. Panneerselvam on "Hermeneutical Turn in Philosphy: East West Perspectives". In this lecture he sketched the development of Hermeneutics. He viewed that the Development of Hermeneutics in the West is to be understood as an art of avoiding misunderstanding

(Schleiermacher). Dilthey in similar tone holds that there is no presupposition less understanding. All interpretation is grounded in a fore-sight and fore-conception (Heidegger). He also reiterated the role of historicity, tradition, community and interpretation in hermeneutics. The lecture was followed by intense floor discussion. In the post lunch session Prof. Panneerselvam took up the theme "From Language to Discourse: Ricoeur, Habermas & Derrida". Here he briefed the philosophical (Gadamer), Radical (Ricoeour), Critical (Habermas), and Deconstructive (Derrida) discourses. For Gadamer, hermeneutics is entered on a theory of interpretation, of the transmission of the stored up riches of the tradition, of the dynamics of that transmission. Tradition is the finite unfolding of an infinite content, a history of finite actualization of an essentially inexhaustible, or infinite truth. The hermeneutical process explains what happens in understanding. For Dilthey and David E.Linge, understanding ~ is essentially a self-transposition wherein the knower negates the temporal distance. The presentation was followed by floor discussion. Dr.P.K.Sasidharan, Asso.Professor, Dept. of Philosophy delivered the vote of thanks.

Brief Report on ICPR National Fellow Lecture Program of Prof. Subashchandra Bhelke

The Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady has organized ICPR National Fellow Program of Prof. Subhash Chandra Bhelke on 16^{th} January 2015. The program was held in the Language Lab, Academic Block I of the Main Campus of the University. At 10.30 am the program commenced with an invocation rendered by the Dept. of Music. Dr. P.Unnikrishnan, Asst. Professsor, Dept. of Philosophy welcomed the gathering. This was followed by the Presidential Address delivered by Prof. Sreekala M. Nair, Head, Dept. of Philosophy. In her presidential address she briefed the annual academic programs of the Department and highlighted the leading role the Dept. of Philosophy takes in the State of Kerala for the development of the discipline. Briefing on the topic of the lecture program she gave a historical sketch of the evolution of the Theory of Rasa and Bhava in Indian Aesthetics.

The first lecture of Prof. Bhelke titled The Theory of Rasa in Bharata's Natyasastra was centered on analyzing the famous Rasasutra in Natyasastra. Discussing on the connotation and denotation of the Sutra, Prof. Bhelke pointed out that according to

Bharata Rasa is an aesthetic object to be relished to get the aesthetic pleasure. For him the meaning of life lies in enjoyment - enjoyment not on the sensuous level but on a higher level. There is no line of demarcation between beauty and sublime but there is a continuity between them on horizontal and vertical levels. The concept of the world, understanding the nature of the art as depiction and creation, the purpose of art and the concept of Rasa all indicate to a fact that the aesthetic experience is an experience of beauty and sublime together.

Bharata's doctrine on Rasa was developed by his successors making his theory applicable to various art-forms as they got developed in the course of time. The lecture was followed by elaborate floor discussion. In the post lunch session Prof. Bhelke picked up the theme The Theory of Bhava in Natyasastra. He pointed out that Abhinvagupta in his commentary on Natyasastra, called Abhinavabharati maintains that a responsive reader has within him latent impressions of emotions experienced previously. When he reads or witnesses a clear representation of appropriate vibhava, anubhava and sancaribhava, these latent impressions are evoked and developed to such a pitch, that they are realized. In their universal form, devoid of personal or individual qualities-sadharanikarana. In this impersonalized state, the feelings are always pleasurable, and are enjoyed in the form of rasa, through an exuberance of sattvaguna. According to him rasa is a- suggested sense and manifests itself through a process of suggestion- instruments of suggestion being vibhavas, anubhavas and such. The experience of rasa is transcendental- lokottara in nature. It is not experienced by all- but only by some who have the special capacity of sahrdayatva. This enjoyment takes place in those individuals who have predominant sattva over other two gun as and who constantly seek it through literature. It is of the nature of ananda and is almost identical with Brahmanubhavah.

The presentation was followed by floor discussion. Fr.Sijo Sebastian, esearch Scholar, Dept. of Philosophy delivered the vote of thanks. The program came to a close by 4 pm.

C. Lectures by ICPR National Fellows

SL. No.	Name of Speaker	Places of Lecture	Title of the Lectures	Date
1.	Prof. P. K. Mohapatra, National Fellow, ICPR, 2013-2014	Department of Philosophy, HSS, IIT, Bombay	Personal Identity and Bodily Continuity: A Critique of Bernard Wiliams on the Criteria	29.11.2014

2.	Do	Do	Karma, Rebirth and Personal Identity	20.11.2014
3.	Do	ICPR Academic Centre, Lucknow	Ethics, Applied Ethics and Indian theories of Morals	22.01.2015
4.	Do	ICPR Academic Centre, Lucknow	Karma as a theory of Retributive Morality	23.01.2015

XIV
PERIODIC LECTURES

ICPR organises Periodic Lectures every year by different Colleges for the promotion of philosophy among the young students of different cities of India on a low cost budget. Senior scholars of the local area are requested to lecture to the young scholars and teachers, so as to enable them to be benefited by the lectures. During the year 2014-15 Council gave financial assistance of Rs.10,000/- each to some college institutes for organising Periodic Lectures in different places, the details of which are given below.

Sl. No.	**Details of the Proposer & Events (as Reported)**	**Topic of the Lectures No.Date of & Name of Speakers (as Reported)**
1.	Dr. Rama Rani, Head, Department of Philosophy, C.M.P. College, Mahatma Gandhi Marg- 211 002, Allahabad.	1. Nature of Consciousness. – Prof. D.N. Dwivedi. 2. Freedom, Rights & Duties. -- Prof. S.K. Seth 3. ICT and Skill Development. – Prof. K.K. Bhutani. February 2, 14 and 24, 2015
2.	Dr. John Peter Vallabadoss, Department of Philosophy, Vijnananilayam Degree College, Janampet, Vijayarai PO- 534 475, Eluru, W.B. Dt. Andhra Pradesh.	1. Conflict Resolution and Peace Making : Gandhian Perspective. -- Dr. Sambasiva Prasad 2. Conflict Situations and Need for Peace. -- Dr. B. Sambasiva Prasad January 19, 2015
3.	Dr. S. Manikandan, Assistant Professor, Department of	1. Understanding of Ahimsa – A Jaina Perspective. -- Dr. Priyadarshana Jain

	Philosophy, Agurchand Manmull Jain College, Meenambakkam, Chennai- 600 114	2. Fundamentals of Shaiva Siddhanta. -- Dr. R. Gopalakrishnan 3. Swami Vivekananda's Message to Youth. - Dr. S. Krishnan February 11, 2015
4.	Mrs. Suman Mahajan, Associate Professor, MCM DAV College for Women, Sector- 36/A, Chandigarh- 160 036	1. Explanation and Understanding. -- Prof. Asha Maudgil. 2- भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता–डॉ० धर्मानन्द शर्मा 3- भारतीय संस्कृति और हमारा पर्यावरण–डॉ० सुधीर बवेजा February 19, 2015
5.	Dr. G. Jayamanikya Shastri, Assistant Professor, Sanskrit and Indian Culture Department, SCSVMV University, Enathur, Kanchipuram- 631 561	Lecture Series on "Nature and Validity of Mamansa Sastra". 1. Pratyaksa, Anumana and Upamama Pramana-s. -- Dr. G. Srinivasu 2. Pramana-s viz. Sabda, Arthapatti and Annupalabdhi of Mimansa Darshna. -- Dr. K.V. N.K. Prasad February 27, 2015
6.	Dr. Ajimon C.S., Assistant Professor, Department of Nyaya, Govt. Sanskrit College, Trippunithura, Ernakulam- Kerala.	1. Nyaya and other Systems of Indian Philosophy. -- Dr. C. Rajendran. 2. Can we haveKnowledge at all ? Some Reflections on Indian Skepticism. -- Prof. Sreekala M. Nair March 10, 2015
7.	Mrs. Prabha Saud, Associate Professor, Department of Philosophy, Chhayagaon College, Chhayagaon, Dist. Kamrup- 781 124, Assam.	Philosophical Tradition of Assam.
8.	Dr. Atul Madhukarrao Mahajan, Assistant Professor, Department of Philosophy, Renuka Kala Mahavidyalaya, Besa Near Bank of India, Konark Colony, Besa,	Non-Naturalism : G.E. Moore.

	Nagpur- 440 034, Maharashtra.	
9.	Dr. (Maj.) Madan Mohan Das, Head, Department of Philosophy, Salipur College, P.O. Salipur, Dist. Cuttack- 754 202, Odisha.	1. Niskamakarma of Bhagvad Gita. -- Swami Sadananda Sareaswati. 2. Environmental Ethics : Its Awareness & Relevance. -- Dr. Basant Kr. Dash February 2, 2015 and March 26, 2015
10.	Dr. Bindu R., Head, Department of Philosophy, Sree Naraayana College, Kollam- 691 001 Kerala.	Relevance of Karma theory in the Present Society. Arguments and Argumentations : Indian and Western Perspectives.
11.	Dr. Basant Kumar Dash, Head, Department of Philosophy, Rama Devi Women's Autonomous College, Bhubaneswar- 751 022, Odisha.	1. The Basic Concerns of Philosophy. -- Prof. Ganesh Prasad Das. 2. Indian Philosophical Studies. -- Prof. Bijayananda Kar February 25, 2015
12.	Dr. Desh Raj Sirswal, Head, Department of Philosophy, Post-Graduate Govt. College for Girls, Sector- 11, Chandigarh- 160 011	1. Our Environment : Our Responsibility. -- Dr. Sudhir Baweja. 2. Value and Society . Re-discovering the Primacy of Cultural Context. -- Prof. Geeta Manaktala 3. Virtues in Sikhism. -- Dr. Paramvir Singh February 11, 2015
13.	Dr. R. Anbazhagan, Assistant Professor, Department of Saivasiddhanta Philosophy, School of Religion, Philosophy and Humanist Thought, Madurai Kamaraj University, Palkalai Nagar, Madurai- 625 021	The Philosophy of Vedanta.
14.	Dr. Amita Pandey, Associate Professor, Iswar Saran Degree College, Allahabad University, Allahabad-	1. Sukhwadi Nitishastra. -- Prof. J.S. Tiwari 2. Prof. Sangam Lal Pandey Ki Gyan Mimansa. -- Prof. D.N. Diwevedi. 3. Baudh Darshan aur Vedanta Darshan. -- Prof. R.L. Singh

		January 22, 2015 and February 6, 2015
15.	Dr. Usha Kushwaha, Associate Professor, Department of Philosophy, Vasant Kanya Mahavidyalaya, Kamachha, Varanasi- 221 010	1. Bhartiya Darshan Ka Swarupa. -- Prof. Rajeev Ranjan 2. Adhunik Yug Mein Bhartiya Darsan Ki Upyogita.-- Prof. Devvarit Chaubey 3. Bhartiya Prachya Vidya-Sir William Jones Ki Drishti Se.–Dr. Omprakash Kajeriwal February 18-19, 2015
16.	Dr. Rohtas Kumar, Associate Professor, Department of Philosophy, Govt. (PG) College, Jind- 126 102, Haryana.	
17.	Dr. Bhaskar Chandra Sahoo, Head, Department of Philosophy, Choudwar College, Choudwar, Dist. Cuttack- 754 071, Odisha.	1. Gandhi's Approach to Justice -- An Exercise in Applied Ethics. -- Dr. P.K. Mohapatra. 2. Ethics and Animals. -- Prof. S.K. Mohanty March 25, 2015
18.	Mr. C. Sugirdharajan, Head, Department of Philosophy, St. Joseph's College (Arts & Science), Kovoor, Chennai- 600 128.	"Reconsidering Indian Philosophy for the 21st Century". 1. Indian Philosophy from the 21st Century. -- Dr. S. Paneerselvam 2. Indian Philosophy : Issues and Relevance. -- Prof. G. Mishra. 3. Indian Philosophy and Humanism : A Pragmatic Approach. -- Dr. Krishnan. 4. Indian Philosophy : Modern, kPostmodern and Post Postmodern. -- Dr. K. Joshua April 17, 2015
19.	Mrs. Kalpana Choudhury, Head, Department of Philosophy, Tihu College, Tihu- 781 371, Dist. Nalbari,	Sankaradeva's Philosophy of Consciousness. -- Dr. Nilima Sharma

	Assam.	March 18, 2015
20.	Dr. Rajasree Roy, Head, Department of Philosophy, Lakshmibai College, (University of Delhi), Ashok Vihar Phase-III, Delhi- 110 052.	The Significance of Buddhism in Today's World. -- Prof. H.S. Prasad and Prof. H.P. Gangnegi February 2, 2015
21.	Dr. Asangpou, Head, Department of Philosophy, Arya Mahila P.G. College, Chetganj, Varanasi – 221 001	1. Philosophy and Darshan. -- Prof. P.K. Mukhopadyyaya 2. Philosophy and the Values of Life. – Prof. S.P. Vyas 3. Chinese Buddhism. – Prof. A.K. Rana April 17 & 20, 2015
22.	Mr. Swapan Chandra Barman, Department of Philosophy, Cooch Behar College, 2 No. Kalighat Road, Cooch Behar- 736 101	1. Truth, Languagte and Reality. – Prof. Kanti Lal Das 2. The Difference BetweenIndian and Western Logic. – Prof. Amal Kr. Harh. February 18-19, 2015
23.	Prof. J.S. Dubey, Head, Department of Philosophy, Govt. Hamidia College, Bhopal- 16, (M.P.)	1- संस्कृति एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा. —— डा० अरुण कुमार सिंह 2- प्राचीन भारत में मानवाधिकार का विधिक स्वरूप . —— डा० अरुण कुमार सिंह December 30, 2014
24.	Dr. Chandrima Bhar, Assistant Professor, Department of Philosophy, Asutosh College, 92 S.P. Mukherjee Road, Kolkata- 700 026,	Gender and Identity. Feminist Epistemology.
25.	Dr. Tripti Dhar, Head, Department of Philosophy, Vvekananda College, 269, Diamond Harbour Road, Thakurpukur, Kolkata- 700 063.	1. Nyaya Concept of Knowledge. -- Dr. Gangadhar Kar 2. The Concept of Knowledge. -- Dr. Proyash Sarkar April 17, 2015

26.	Dr. C.V. Babu, Assistant Professor, Department of Philosophy, Zakir Husain Delhi Collelge, Jawahar Lal Nehru Marg, New Delhi- 110 002.	
27.	Dr. Krishna Mani Pthak, Head, Department of Philosophy, Hindu College, University of Delhi, Delhi- 110 007.	1. Revisiting the Encounter between Eastern and Western Philosophy : A view from Philosophy of Science. – Prof. Dhruv Rana February 12, 2015
28.	Dr. Bibhuti Bhusan Nayak, Assistant Professor, Department of Philosophy, Prabhat Kumar College, Contai, Purba Medinipur-721 401, West Bengal.	1. Sabda as a Source of knowing : Some Reflections. – Prof. Raghunath Ghosh 2. The Madhyamika Polemic – against Pramana-Prameya Dichotomy. – Dr. Dipayan Pattanayak March 4, 2015
29.	Dr. M. Vasugi, Head, Department of Philosophy, Pachaiyappa's College, Channai- 600 030.	1. Philosophical Analysis of Astrology and Astronomy. -- Pavalar P. Senthamil Selvam Che Guevare. 2. Philosophizing and Criticizing. – Dr. K.L. Madhavn. March 3, 2015 and March 12, 2015
30.	Dr. Beena Isaac, Head, Department of Philosophy, University of Kerala, Thiruvananthapuram-	1. Epistemological Dimensions of Philosophy. -- Dr. K.S. Radhakrishnan 2. Cyber Ethics : Problems and Perspectives. – Sri N. Vinaya Kumaran Nair March 18-19, 2015
31.	Dr. Koyel Ghosh and Pankoj Kanti Sarkar, Assistant Professor, Department of Philosophy, Debra Thana Sahid Kshudiram Smriti Mahavidyalaya, Paschim	1. Indian Philosophy and its Relevance Today. – Prof. R.N. Ghosh 2. Predicate Logic. – Mr. Ramdas Sirkar

	Medinipur, Gangaramchak, Chakshyampur, Dist.– Paschim Medinipur- 721 124, W.B.	3. Evolution and Development of Morality. – Dr. Laxmikanti Padhi 4. Importance of Hetyavasa in Indian Logic. – Mrs. Sukla Chakroborty. February 19-20, 2015
32.	Dr. T. K. Badrinath, Assistant Professor, Department of Philosophy, Ramakrishna Mission Vivekananda College (Autonomous), Mylapore, Chennai- 600 004	1. Elements of Integration in Hinduism. – Dr. C.V. Radhakrishnan 2. Behavior Disorders and Therapies. – Dr. A. Appan Ramanujan March 13, 2015
33.	Mrs. Punyamoni Baruah, Assistant Professor of Philosophy, Haflong Government College, Haflong, Dima Hasao, - 788 819, Assam.	1. Purusarthas: The Indian Quest for Values. – Prof. Adarusupally Nataraju February 24, 2015
34.	Dr. Ramakanta Nanda, Head, Department of Philosophy, Godavaris Mahavidyalaya, Banpur, Dist. Khurdha- 752 031, Odisha.	Seminar on "Professional Ethics". 1.Professional Ethics of Doctors. – Prof. H. Sahoo. 2.Professional Ethics – A Study on Euthanasia. – Miss. Ananya Das February 19, 2015

Reports from some other grantees are not yet received, and they are not cited herewith.

Specimen Report of the ICPR Sponsored Periodic Lectures

The Department of Philosophy, Prabhat Kumar College, Contai, Purba Medinipur (WB) organized the ICPR sponsored Periodic Lectures on "The Concept of Pramana in Indian Philosophy: A Reappraisal" on 4th March, 2015 in the Seminar Hall of the college. More than two hundred participants from different colleges and universities participated in the said programme including the faculty members and students of our college. Two eminent living Philosophers from two different Universities viz, (1) Dr. Raghunath Ghosh

,Professor, Department of Philosophy,North Bengal University, Darjeeling(WB) and (2) Mr. Dipayan Pattanayak, Associate Professor, Department of Philosophy, Jadavpur University, Jadavpur (WB) were invited as Resource Persons. The Programme started with the Inaugural song by the students of the Department of Philosophy, Prabhat Kumar College, Contai at 10.30am. It was inaugurated by the former Professor & the member of the Governing Body Prof. Anup Kumar Maity as Chief Guest, Welcome address by Dr. Amit Kumar De, Teacher-in- Charge of the College and basic information regarding the Programme by Dr. Bibhuti Bhusan Nayak, Convener or organizer of the Programme. Professor Raghunath Ghosh had delivered a very nice and thought provoking lecture on the topic" Sabda as a Source of Knowing: Some Reflections". In his lecture Professor Ghosh tried to present different sources of knowing admitted by various Schools of Indian Philosophy and its justifiability as a valid source of knowledge. He mainly focused on Naiyayika's arguments in favour of admitting Verbal Testimony or Sabda as a valid source of Cognition (Pramana): its composition, Classifications, Methodology and Critical analysis of the Concept with concrete examples which were appreciatory plausible and understandable by our undergraduate students of our College. Professor Dipayan Pattanayak delivered his lecture on the topic "The Madhyamika polemic against Pramana-Prameya dichotomy". Professor Pattanayak had highlighted the objections raised by the Madhyamika Philosophers, Nagarjuna in particular against the Pramana-Prameya dichotomy which are generally accepted by other schools of Indian Philosophy. He firstly discussed the two concepts i.e, Pramana and Prameya through his simple vocabulary and definitions by adhering different classical views of Indian Philosophers and showing its relevance in the Indian Epestimology. The Programme was ended with the vote of thanks given by the Head of the Department Dr. Soumya Kanti Sinha at 4.30 p.m.

(Dr. Amit Kr. De) (Dr. Bibhuti Bhusan Nayak), Teacher-in-Charge Organizer of the Programme, P.K. College, Contai Dept. of Philosophy, P.K. College, Contai, West Bengal.

XV
WORLD PHILOSOPHY DAY

As per the declaration of the UNESCO, the "International Philosophy Day" is usually observed in one of the days of third week of November in order to commemorate the birthday of Socrates. Accordingly, the Council sent circulars to all Departments of

Philosophy to celebrate the day by organising a lecture progamme or a symposium, a seminar or a panel discussion or any other programme. The following institutions celebrated the day in a befitting manner with the financial assistance of Rs. 20,000/- each from the Council during the year 2014-15.

SL. No.	Details of the Proposers & Date of Events As Reported	Topic of the Lectures & Name of Speakers as Reported
1.	Dr. S. Veerapandian, Professor and Head, Department of Philosophy, Annamalai University, Annamalai Nagar- 608 002 Chidambaram, Tamil Nadu.	Social and Political Philosophy.
2.	Dr. Prabhu Venkataraman, Associate Professor, Department of HSS, Indian Institute of Technology Guwahati, Guwahati- 781 039, Assam.	1.The Influence of Philosophy in Day to Day Life – Prof. Sibnath Sarma December 1, 2014
3.	Dr. E.K. Rajamohanan, Head, Department of Philosophy, Maharaja's College, Ernakulam	One day Seminar on "Ethics : New Perspectives". 1. Preamble of Constitution : Ethics and Beyond. – Sree Kaleeswaram Raj. 2. Medical Ethics : Ethical Issues in Euthanasia. — Dr. K.S. David. 3. The Philosophy of Vedanta and Indian Ethos. – Dr. P.V. Ramankutty. 4. Environmental Ethics – A Global Perspective. – Dr. Sreekumar. 5. Ethics of Civil Disobedience. – Sri Deleep Raj December 30, 2014
4.	Dr. E. Ananda Vijayasarathy, Associate Professor in Philosophy, Ramakrishna Mission Vivekananda College, Mylapore, Chennai- 600 004	One Day Seminar on "Critical Thinking and Philosophizing". November 29, 2011
5.	Prof. Nava Kumar Handique, Director i/c., Centre for Studies in Philosophy, Dibrugarh University, Dibrugarh, Assam- 786 004	Values Embodied in Indian Culture Dec., 4, 2014

6.	Dr. Kanchana Mahadevan, Head, Department of Philosophy, University of Mumbai, Jnaneshwar Bhavan, Vidyanagari Campus, Kalina, Santacruz (East), Mumbai- 400 098	Seminar on "Comparative and Critical Study of Philosophical Systems/ Movements and Religions". 1. Dr. Vinay Kumar. 2. Dr. William Edelglass. 3. Dr. V.M. Puranik 4. Dr. C.D. Sebastian. December 8, 2014
7.	Dr. Md. Sirajul Islam, Head, Department of Philosophy & Religion, Visva Bharati, Santiniketan- 731 235	One Day Seminar on "Metaphysics in Indian Philosophy and Religion". November 27, 2014
8.	Dr. S. Guru Alias Vasuki, Assistant Professor in Education, V.O. Chidambaram College of Education, Thoothukudi- 628 008 Tamilnadu (State)	Seminar on "Theories of Truth and Knowledge". 1. Truthful Teacher and Learner. – Fr. Dr. Kumar Raja. 2. Knowledge Based Society. – Sri Hanumanthrao. 3. Knowledge and Truth for Happy Life. – Dr. V. Thamodharan. 4. Equity in Education. – Dr. A. Francis. December 23, 2014
9.	Dr. Sohanpal Singh Arya, Head, Department of Philosophy, Gurukul Kangri University, Haridwar (U.A.)- 249 404	Basic Values Embodied in Indian Culture and their Relevance to National Reconstruction.
10.	Dr. Harishchandra Govind Navale, Department of Philosophy, Savitribai Phule Pune University, Ganeshkhind Road, Pune- 411 007.	1. Business Ethics. 2. Professional Ethics. 3. Management Ethics.
11.	Dr. Amal Kr. Harh, Department of Philosophy, Cooch Behar Panchanan Barma University, Central Farmers's Hostel, U.B.K.V., P.O. Pundibari,	Seminar on "Truth and Knowledge : An East-West Perspectives". November 24, 2014

	Dt. Cooch Behar- 736 165, W.B.	
12.	Dr. Dominic Meyieho, Assistant Professor, Department of Philosophy, Assam Don Bosco University, Airport Road, Azra, Guwahati- 781 017, Assam.	1. Reason, Normativity and the Philosophical Responsibility : A Renewed Call to Alterity. – Prof. Prasanjit Biswas. 2. Quest for a Place of One's Own : Locating Ethics in the Age of Globalization. – Prof. Archana Barua.. November 28, 2014
13.	Dr. Rajni Sinha, Head, Department of Philosophy, Moolji Jetha College, Jalgaon- 425 002	Problem of Induction in Indian Epistemology. – Prof. Meenal Katarniker. December 9, 2014
14.	Dr. Syamala K., Assistant Professor, Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Payyannur Regional Center, Edat. P.O., Payyannur, Kannur- 670 327	Analytical Trends in Eastern & Western Thought: A Critical Appraisal. – Dr. K. Srinivas. December 12, 2014
15.	Dr. Neelam Kumari, Senior Assistant Professor, Department of Philosophy, S.M. College, Bhagalpur, T.M. Bhagalpur University, Bhagalpur- 812 001.	1. Social Philosophy of Mahatma Gandhi. – Dr. Usha Sinha 2. Philosophy and Social Reconstruction. – Prof. Ramji Singh 3. Secularism and Indian Society.- Prof. Amarnath Jha 4. अध्यात्म एवं विज्ञान – प्रो० शैलेश कुमार सिंह November 22, 2014
16.	Dr. Amarnath Jha, Head, Department of Philosophy, L.N. Mithila University, Darbhanga- 846 008, Bihar.	1. Basic Values of Indian Culture. 2. Middle Path of Buddhism and its Relevance to National Reconstruction. 3. Basic Values Embedded in Upanisads and its Relevance to National Reconstruction.

		4. Practical Vedanta of Swami Vivekananda and National Reconstruction.
17.	Smt. Suman Bera, Assistant Professor, Department of Philosophy & Life – World, Vidyasagar University, Midnapore- 721102, W.B.	1. Ethics, Culture and Globalization. – Prof. N.N. Chakroborty 2. Aponare Die Rochili Re Ki E. – Prof. Somnath Chakraborty. November 27, 2014
18.	Mr. Devartha Morang, Assistant Professor, Department of Philosophy, Biswanath College, Biswanath Charali, Sonitpur- 784176, Assam.	Philosophy of Man and Environment.
19.	Mrs. Melody Lalnunsangi Darlong, Head, Department of Philosophy, Ambedkar College, Fatikroy, Unakoti, Tripura- 799 290.	Regional Seminar on "Philosophy of Man and Environment". December 27, 2014
20.	Dr. Suchitra Das, Co-ordinator Jain Chair, Utkal University of Culture, Sardar Patel Hall Complex, Unit-II, Bhubaneswar- 751 009.	November 20, 2014
21.	Dr. B.R. Shantha Kumari, Head, Department of Philosophy, Pondicherry University, Puducherry- 605 014.	1. Indian Philosophy & The Future of Psychology. – Dr. Matthijs Cornelissen. November 21, 2014
22.	Dr. S.K. Mishra, Head, School of Studies in Philosophy, Vikram University, Ujjain- 456 010.	Seminar on "Philosophy in the Modern World". January 27, 2015
23.	Dr. Abha Singh, Head, Post Graduate Department of Philosophy, A.N. College, Patna- 800 013	Seminar on "Ethics of Globalization". December 4, 2014
24.	Dr. K. Gopinathan, Head, Department of Philosophy, University of Calicut- 673 635	Subject and Subsatance in the New Cinemas of India , Nov., 18,2014

25.	Dr. E.P. Mathew, Head, Department of Philosophy, Loyola College (Autonomous), Chennai- 600 034.	"Self and Corruption". 1. Beyond the Phenomenology of Transcendental Self. – Prof. V.C. Thomas. 2. Corruption and Markets. – Dr. E.P. Mathew. November 20, 2014
26.	Dr. Purbayan Jha, Assistant Professor, Department of Philosophy, University of Gour Banga, P.O. Mokdumpur, Dist. Malda- 732 103, W.B.	"Corruption and Human Beings: A Philosophical Approach". 1. Professor Tapan Kr. Chakraborti 2. Prof. Ranjana Mukherjee 3. Prof. Raghunath Ghosh. December 23, 2014
27.	Dr. Bijaya Kumar Nayak, Head, Department of Philosophy, Udayanath Autonomous College of Science & Technology, AT/PO Adaspur, Dist. Cuttack- 754 011.	1. Value of Nature. – Prof. Saroj Kumar Mohanty 2. Life and Death of Man. – Prof. Ganesh Prasad Das December 27, 2014
28.	Dr. Rajjan Kumar, Head, Department of Applied Philosophy, MJP Rohilkhand University, Bareilly-243 006	"Problems of Avidya in Indian Philosophy". November 28, 2014
29.	Prof. Sreekala M. Nair, Head, Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Kerala- 683 574	Basic Values Embodied in Indian Culture and Their Relevance to National Reconstruction.
30.	Dr. Rajeevan E, Assistant Professor, Department of Philosophy, Govt. Brennen College, Thalassery, Kannur (Dist.), Kerala- 670 106	1. Environment : A Free Thought. – Prof. T. Sobheendran. 2. Political Dynamics of Environmental Issues : A case study. – Sri T. Gangadharan 3. Eco-spiritualism and Eastern Philosophy. – Dr. M. Ramakrishnan. November 27, 2014
31.	Dr. Shriprakash Pandey, Head, Department	Ethics of Globalization.

	of Philosophy & Religion, Banaras Hindu University, Varanasi- 221 005	
32.	Dr. Sudha Choudhary, Head, Department of Philosophy, University College of Social Sciences & Humanities, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur- 313 001	State Level Workshop on "Philosophy Society & Philosopher". 1. Understanding Man. – Prof. Bhagat Oinam. November 17 & 25, 2014
33.	Dr. Gurjit Singh, Department of Philosophy, Govt. Rajindra Collelge, Bathinda- 151 001.	Applied Ethics : A Special Reference to Whistle Blowing. – Dr. Kumar Neeraj Sachdev November 20, 2014
34.	Dr. Swagata Ghosh, Assistant Professor, Department of Philosophy, University of North Bengal, Raja Rammohunpur, Dist. Darjeeling-734 013.	Ethics and Globalization. – Dr. Barada Laxmi Panda November 20, 2014
35.	Dr. Madhucchanda Sen, Assistant Professor, Department of Philosophy, Jadavpur University, Kolkata-700 032	1. Critical Thinking and the Future of the Humanities. – Prof. Supriya Chaudhuri and Prof. Ranjan Mukhopadhyay November 20, 2014
36.	Prof. G.C. Tripathi, Director, B.L. Institute of Indology, Vijay Vallabh Jain Temple, G.T. Karnal Road, P.O. Alipur, Delhi- 110 036.	Pramana-mimamsa in the Hindu-Buddhist and Jain Traditions of Logic – A Comparative approach.
37.	Prof. Dr. Kiran Bakshi, Principal, Department of Philosophy, GCW, Gandhi Nagar, Jammu.	A Seminar and an Inter-College Symposium on "Sports Ethics". December 4, 2014
38.	Sri Parna Chandra Dash, Head, Department of Philosophy, Balugaon College, Balugaon, D. Khordha- 752 030, Odisha.	The Role of Philosophy in the Changing Social Scenario.
39.	Dr. Anupam Jash, Assistant Professor, Department of Philosophy, Bankura	Seminar on "Basic Values Embodied in Indian Culture and its Relevance

	Christian College (Affiliated to University of Burdwan), P.O. + Dist. Bankura,- 722 101, W.B.	to National Reconstruction". November 20, 2014
40.	Dr. Debananda Bhattacharyya, Associate Professor, Department of Philosophy, Tinsukia College, Tinsukia- 786 125, Assam.	Philosophy, Life and Values. — Prof. Sibnath Sarma. February 5, 2015
41.	Dr. K. Joshua, Head, Department of Philosophy, Madras Christian College, Tambaram, Chennai-600 059, Tamil Nadu.	Intercultural Philosophy and Social Transformation. – Dr. E.P. Methew November 28, 2014
42.	Dr. Abid Gulzar, Assistant Professor (Persian), Centre of Central Asian Studies, University of Kashmir, Srinagar- 190 006, J&K, India.	National Seminar on "Lal Ded and Nund Reshi – As Torch Bearers of Universal Brotherhood". December 3-4, 2014
43.	Dr. R.K. Behera, Associate Professor, Head, Department of Philosophy, Patkai Christian College, Chumukedima, Seithekema- 797 103	1.Philosophizing and its Value. — Dr. Kh. Gokulchandra 2. Self and Corruption. – Dr. Tuisem A. November 27, 2014
44.	Mrs. Suman Mahajan, Associate Professor, MCM DAV College for Women, Sector- 36/A, Chandigarh- 160 036	1. Philosophy & Literature. – Prof. S.P. Gautam. 2. Art : The Medicine for the Corrupt Consciousness. – Dr. Shivani Sharma 3. Understanding Feminist Political Philosophy in the Troubled Times of Neo-Liberal Globalization. – Mr. Lallan Baghel. 4. A Brief Historical Epistemology of Understanding Globalizataion. – Prof. Rajiv Lochan November 20-21, 2014
45.	Prof. Rakesh Chandra, Head, Department of Philosophy, University of Lucknow, Lucknow- 226 007.	Buddhist Ethics and its Relevance. – Dr. Pradeep Gokhale. November 20, 2014

46.	Dr. Sudhakar Jally, Coordinator, Department of Philosophy, Utkal University, Vanivihar, Bhubaneswar- 751 004, Odisha.	9 Lectures all in the area of Vedanta, Pancharatra and Sakta Samhita.

Reports from some other grantees are not received, and they are not cited herewith.

XVI
BOOK GRANT 2014-15

Sl.No.	Name & Address of the Recipients
1	Head, Centre for Studies in Philosophy, Dibrughar University, Dibrughar-786004
2	Head, Department of Philosophy Ramakrishna Mission, Vivekananda College, Mylapore, Chennai-600004
3	Head, Department of Sanskrit, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady P.O Ernakulam District, Kerala-683574
4	Head, Department of Philosophy, Maharaja'sCollege, Ernakulam-682011
5	Head, Department of Philosophy, Kurukshetra University, Kurukshetra
6	Secretary, Vadakke Madham Brahmaswam Vedic Research Centre, Thrissur-680001 , Kerala
7	Head, Guru Govind Singh Department of Religion Studies, Punjabi University, Patiala-147002
8	Vice Chancellor, Cooch Behar Panchanan Barma University, West Bengal-736165
9	Head, Department of Comparative Dravidian Literature and Philosophy, Draviddian University Kuppam-517425 (A.P)
10	Assistant Professor in Philosophy, Sidho Kanho Birsha University, Purulia, West Bengal
11	Head, Department of Philosophy, ICFAI University , 6th Mile Sovima Village, Kohima Road, Dimapur, Nagaland-797112
12	Head, Department of Philosophy, Assam Don Bosco University, Guwahati, -781017

13 Head, Department of Philosophy, Govt. Brennen College, Thalassery, Kannur Dist., Kerala-670106

14 Head, Department of Philosophy, Moolji Jaitha College, Jalgaon-600004

15 Head, Department of Logic and Philosophy, Udayanath Authonomous College of Science and Technology, Prachi Jnanapitha, P.O.-Adaspur Dist, Cuttack-754011

16 Head, Department of Philosophy, Bankura Christian College, P.O.+Dist. Bankura-722101 (WB)

17 Head, Department of Philosophy, Sitalkuchi College, Coochbehar, West Bengal-736158

18 Head, Department of Philosophy, Chhaygaon College, Chhaygaon, Dist. Kamrup (Assam)-781124

19 Head, Department of Philosophy, Goalpara College, Goalpara, Assam

20 Principal, Patkai Christian College Churrvkedimo, Nagaland-797103

21 Head, Department of Philosophy, Renuka Kala Mahavidyalaya, Manewada Road, Besa, Near Bank of India, Nagpur-

22 Principal, Debra Thana sahid Kshudiram Smriti Mahavidyalaya P.O. Chakshyampur Dist. Paschim Medinipur-721124 (WB)

23 Head, Department of Philosophy, Iswar Saran Degree College, Central University of Allahabad, 10/18E/1 Howther Road, George Town Allahabad

24 Head, Department of Philosophy, A.M.Jain College, Meenambakkam, Chennai-600114

25 Head, Department of Philosophy, Balugaon College, Balugaon Dt. Khordha-752030 (Odisha)

Details of the Books given in Book Grant

Sl. No.	Name of the Book	Price of the Books
1.	Natural Science of the Ancient Hindu	Rs.200/-
2.	Sattavisayak Anviksa	Rs.250/-

3.	Philosophical Reflection	Rs.300/-
4.	India Intellectual Tradition	Rs.420/-
5.	Towards Critique of Cultural Reason	Rs.225/-
6.	A Study of Patanjali	Rs.225/-
7.	Philosophy and Religion	Rs.360/-
8.	Karma Causation and Retributive Morality	Rs.400/-
9.	A Critical Survey of Phenomenology and Existentialism	Rs.425/
10.	The Primacy of the Political	Rs.250/-
11.	Phenomenology and Indian Philosophy	Rs.380/-
12.	Tolerance	Rs.150/-
13.	The Philosophy of Tamil Siddhas	Rs.227/-
14.	Social Action and Non-Violence	Rs.125/-
15.	Madhyamika Sunyata	Rs.250/-
16.	The Philosophy of Yash Dev Shalya	Rs.600/-
17.	Antaryapati	Rs.350/-
18	Wittgenstein: New Perspective	Rs.300/-
19.	Philosophy of Value Oriented Education	Rs.325/-
20.	Gangesa on the Upadhi	Rs.250/-
21.	Good Teachers and Good Pupil	Rs.600/-
22.	Philosophy of Science, Phenomenology and other Essays	Rs.800/-
23.	Buddhist Thoughts and culture in India	Rs.300/-
24.	Parampara	Rs.450/-
25.	P.J.Chaudhury on Multi Aspects of Philosophy	Rs.700/-
26.	Discussion and Debate in Indian Philosophy	Rs.450/-
27.	Hetroclitic Fragements and Heretical Comment	Rs.250/-
28.	The Philosophy of Suresh Chandra	Rs.400/-

29.	Parkarna Pancikka	Rs.750/-
30.	Narayana Guru	Rs.350/-
31.	Philosophical paper of Prof. J.N.Chub	Rs.650/-
32.	An Alysis in Sankara Vedanta	Rs.240/-
33.	Author & Subject Index of JICPR Vol.1-XX	Rs.335/-
34.	Philosophy, Culture and Value	Rs.280/-
35.	The Central Problems of Bhartrhari's Philosophy	Rs.530/-
36.	Inter Civilization Dialogue of Peace	Rs.435/-
37.	Tradition and Truth	Rs.490/-
38.	Ethics, Language & Tradition	Rs.550/-
39.	Russia Looks at India	Rs.700/-
40.	Gandhi and Applied Spirituality	Rs.895/-
41.	Implications of the Philosophy of Kant	Rs.695/-
42.	Inhabiting Human Languages:	Rs.450/-
43.	Advaita: A Contemporary Critique	Rs.695/-
44.	Between Feminity and Feminism	Rs.600/-
45.	Nagariki Pllaton Ki Poltiya Ka Hindi Anuvada	Rs.900/-
46.	Advaita Metaphyiscs	Rs.425/-
47.	Philosophy of Life	Rs.400/-
48.	Language, Knowledge and Ontology	Rs.225/-
49.	Recent Development of Analytic Philosophy	Rs.650/-
50.	Nyayabhasyavarttika	Rs.625/-
51.	Nyayavarttikatatparyaparisuddhi	Rs.680-
52.	Mimansamanjari	Rs.375/-
53.	Gautmiyanyayadarsanam	Rs.460/-
54.	Jnangrarbh's Commentary of Just Maitrey	Rs.250/-

55.	Kaundabhatta's	Rs.300/-
56.	Language, Testimony & Meaning	Rs.250/-
57.	The Philosophy of G.R. Malkani	Rs.375/-
58.	Fundamental of Logic	Rs.450/-
59.	Realism: Responses & Reactions	Rs.850/-
60.	Knowledge, Truth & Realism	Rs.250/-
61.	Paksata	Rs.350/-
62	The Paradox of Being Human	Rs.350/-
63	The Nature of Philosophy	Rs.450/-
64.	AO Naga World View	Rs.625/-
65.	Nyayadarshan (Nyayasutra-Nyayabhasya)	Rs.1050/-
	Total for Each Recipient	Rs.28897-

XVII
ICPR LIFE TIME ACHIEVEMENT AWARD 2014 -15

The Life Time Achievement programme took place at Banaras Hindu University, Varanasi on 27th November 2014. Professor Mrinal Miri, Chairman ICPR, chaired the Award function. The programme started with Mangalacharana and lighting of the lamp with a Welcome song of the University's 'Kulgeet'. Professor Shri Prakash Pandey, Head, Department of Philosophy and Religion gave welcome address. The Dean of Faculty of Arts and the Students recited the Gaurava Vachana and spoke laudatory words about Professor A.K. Chatterjee. A Citation prepared by the ICPR was read out by Professor Rakesh Chandra. A very eminent and senior distinguished scholar, Professor Rama Shankar Tripathi presented the Life Time Achievement Award and the Citation to Professor Ashok Kumar Chatterjee honouring him with a shawl and a cheque worth Rs.1.00 lakh. Thereafter, Professor A.K. Chatterjee spoke briefly in the modest manner on Consciousness and Philosophy.

The Presidential Address was delivered by Professor Mrinal Miri followed by a Vote of Thanks by Professor M.P. Singh, Member Secretary of the Council.

(Citation)

HONORING PROFESSOR ASHOK KUMAR CHATTERJEE

LIFE-TIME ACHIEVEMENT AWARD OF THE INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

An acclaimed authority on Buddhism, and a scholar par excellence Professor A.K. Chatter came to teaching in the wake of a brilliant academic career. He retired as Professor of Logic and Analytic Philosophy in the Department of Philosophy of Banaras Hindu University. His contribution to the understanding of Yagacara is unparalleled in the history of modern Indian Philosophical scholarship. Professor David J. Kapupahana's has the following to say on his The Yogacara Idealism. "Ashok Kumar Chatterjee... has produced one of the few detailed and significant treatments of Yogacara. His work, The Yogacara Idealism has not, unfortunately, enjoyed the same publicity as his teacher's work (T.R.V. Murti's The Central Philosophy of Buddhism). Yet it is no way second to Murti's treatment of Madhyamika Philosophy". His considerable corpus of philosophical writings is a shining testimony to his marvelously creative engagement with the complex tradition of Indian philosophical thought.

Born on 27th November 1925 in Allahabad in a Bengali Brahmin family, he did his schooling as well as undergraduate and post-graduate studies in Banaras Hindu University: matriculation from Central Hindu School of BHU, and BA, MA and PhD from its Department of Philosophy. His academic record is uniformly brilliant, and he had the good fortune of having Professor T.R.V. Murti as his teacher. Professor Chatterjee is a polyglot with masterly command over Sanskrit, English, Bengali, Hindi, German and French. He was initiated into philosophy by his uncle, Professor A.C. Mukherjee, a philosophy teacher of great eminence from Allahabad University. He completed his formal studentship under the guidance of the formidable Professor T.R.V. Murti.

He was Sayajirao Gaekwad Fellow from 1947 to 1950 in the Department of Philosophy,

Banaras Hindu University. Professor Chatterjee began his teaching career in Agra University in 1950 where he rose to become the Head of its Department of Philosophy. He moved to Banaras Hindu University in 1963, and retired in 1985 as the Head of its Department of Philosophy and Religion. Those who had the good fortune of hearing Professor Chatterjee lecture or being taught by him, remember him with great respect, awe and love.

Each of Professor Chatterjee's published works - whether in the form of substantial volumes or small treatises and articles written for Journals - is a tour de force of scholarship and gem of analytic rigour and acute philosophical insight. His published writings include, The Yogacara Idealism (1962), Readings on Yogacara Buddhism (1971), Facts of Buddhist Thought (1973) and The Concept of Sakshi in Vedanta (1978).

Articles published by him in various philosophical journals include: "Concept of Maya", "The Concept of Pramana in Philosophy", "Are Ethical Statements Noncongnitive?", "Reasoning in Indian Philosophy", "Metaphysics, Subjectivity and Myth", "The Madhyamika and the Philosophy of language", "Pratityasamutapada in Buddhist Philosophy", "Idealism and Absolutism", "An Introduction to Yogacara Buddhism", "Insight and Paradox in Buddhist Thought", "Truth and Objectivity", "Modes of Being", "Predicates", "Meaning , Use and Reference", "Concept of Sarupya in Buddhist Philosophy", "Sautrantika Theory of Causation", "The Concept of Sakshi in AdvaitaVedanta", "Types of Absoloutism: A Revisitation", and "Aoha : Buddhist Theory of Meaning".

Professor Chatterjee belongs to the tradition of thinkers whose scholarly engagement has been one of quiet but resolutely energetic commitment to the life of the intellect. To be in the public eye or seek fame has never been his desire. In recognition of his very significant contribution, and absolutely without his seeking, he was nominated as ICPR National Visiting Professor in 1992.

Indian Council of Philosophical Research is honored and privileged to confer its Life-Time Achievement Award for the year 2014 on Professor A.K. Chatterjee, a distinguished scholar, philosopher, teacher and a human being of greatly endearing qualities.

XVIII
CELEBRATION OF THE HINDI PAKHAWARA

The Council has observed celebration of Hindi Pakhawara for the year 2014-15. The event was observed by participation of the staffs of Council from 17-30 September 2013. There are competitions i.e. dictation writing, debates, essay-writing, poetry reciting – all in Hindi. The event was concluded by distribution of prizes for the winners of the above mentioned competitions in the presence of the invited guests, Member Secretary and Chairman of the Council. Among the guests Shri Keval Krishna, Director, Rajbhasha, and Smt. Kshama Sarma, Deputy Editor, Dainik Hindustan spoke on Hindi bhasha mein Bachchon the bhavishya Surakshit hai? Shri Anil Kumar Singh the Chief Guest delivered lecture on Bhasha ki Sahajata evam Saralata. The debate completion was organised on Bachchon ke Phaishlo mein Abhibhavakon ka hastakshep karana chahiye athva nahi.

During the Hindi Pakhawara Programme Organising by the Head Quather office following

1	Sulakh Padh Competition for MTS employee	Following employee MTS are the winner a. Shri Ganesh Chandra Bhatt –First b. Shri Sunil kumar -Second c. Jayveer Singh –third
2	Sulakh Padh Competition for (Non Hindi regional employee)	a. Shri P.K. Bhattacharya –First b. Shri Dr. Mercy Helen-Second c. Ms. Pushpa sadasivan –third
3	Nibandh Competition for (Graduate Category)	Shri Dugesh Chauha (for Special efforts)
4	Nibandh Completion for (Non-Graduate Category)	a. Shri Rajesh Dhaniya –First b. Shri Ganesh Chandra Bhatt-Second c. Shri Jagdev Singh –third
5	Hindi typing Competition	a. Shri Rajesh Dhaniya –First b. Shri Jagdev-Second c. Ms. Kailash Soni–third
6	Noting and Drafting Competition	a. Shri Rajesh Dhaniya –First b. Ms. Neeta Verma-Second

		c. Shri P.k. Bhattacharya-Third
7	Elocution Text Competition	a. Ms. Rakha Bhushan –First b. Shri Rajesh Dhaniya -Second c. Shri Sunil Kumar-Third
8	Kavita Padh competition	a. Ms. Rakha Bhushan –First b. Shri Rajesh Dhaniya -Second c. Ms. Neeta Verma -Third
9	Channikaya Competition	a. Shri. Ashwani Mishra –First b. -Second c. Shri Sunil Kumar-Third

XIX
MEMBERS OF THE COUNCIL

1. Professor Mrinal Miri, Chairman (from 19.09.2012)
2. Dr. Manendra Pratap Singh, Member Secretary (from 18.11.2013)
3. Professor A. Raghuramaraju
4. Professor Rakesh Chandra
5. Professor Shefali Moitra
6. Professor T.N. Madan
7. Professor Pradeep Gokhale
8. Professor V.T.Sebastian
9. Professor Vanlalnghak
10. Professor P.R. Bhat
11. Professor R.P. Singh
12. Professor B. Sambasiva Prasad
13. Professor Sangeetha Menon
14. Professor Gopal Guru
15. Professor S.C. Dutta Roy
16. Professor H.S.Prasad
17. Professor Basudev Chatterji
18. Shri Jawed Usmani
19. Professor V.N.Jha
20. Professor Tandra Patnaik
21. Professor Mihir K. Chakraborty
22. Professor Sreekala M.Nair
23. Dr. A.K. Goyal
24. Professor Pratap Bhanu Mehta
25. Professor Syed Abdul Sayeed
26. Shri T. Venkatesh, Secretary, Higher Education, Government of Uttar Pradesh
27. The Secretary (Department of Higher Education Ministry of HRD)
28. The Finance Adviser (Department of Secondary and Higher Education Ministry of HRD).

MEMBERS OF THE GOVERNING BODY

1. Professor Mrinal Miri, Chairman (from 19.09.2012)
2. Dr. Manendra Pratap Singh, Member Secretary (from 18.11.2013)
3. Professor Rakesh Chandra
4. Professor Shefali Moitra
5. Professor Pradeep Gokhale
6. Professor Vanlalnghak
7. Professor Gopal Guru
8. Professor Basudev Chatterji
9. Professor Tandra Patnaik (Passed away in May 2015)
10. Secretary, Department of Higher Education, MHRD
11. Financial Adviser, Secondary and Higher Education, MHRD

MEMBERS OF THE RESEARCH PROJECT COMMITTEE

1. Professor Mrinal Miri, Chairman (from 19.09.2012)
2. Dr. Manendra Pratap Singh, Member Secretary (from 18.11.2013)
3. Professor Rakesh Chandra
4. Professor V.T.Sebastian
5. Professor P.R. Bhat
6. Professor V.N.Jha
7. Professor Mihir K. Chakraborty
8. Prfoessor Kanchan Mahadevan
9. Professor Amitabh Dasgupta
10. Professor Jonardon Ganeri

MEMBERS OF THE FINANCE COMMITTEE

1.	Member Secretary Indian Council of Philosophical Research 36 Tughlakabad Institutional Area, New Delhi – 110 062	Chairman
2.	Director A& F Indian Council of Philosophical Research 36 Tughlakabad Institutional Area, New Delhi – 110 062	Member Secretary
3.	Professor Vanlalnghak	Member
4.	Representative of Secretary MHRD	Member
5.	Representative FA, MHRD	Member

ANNEXURE - A

BALANCE SHEET

XX
ANNUAL ACCOUNTS

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 2015

(Amount in Rs.)

CAPITAL FUND & LIABILITIES	SCHEDULE	AS AT 31.03.2015	AS AT 31.03.2014
Capital Fund	1	43,080,911.78	39,929,048.48
Current Liabilities and Provisions	2	68,444,274.07	58,426,706.07
TOTAL		**111,525,185.85**	**98,355,754.55**
ASSETS			
Fixed Assets	3	12,796,259.54	11,961,908.74
Current Assets, Loans & Advances	4	98,728,926.31	86,393,845.81
TOTAL		**111,525,185.85**	**98,355,754.55**

(SREEKUMARAN S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. SINGH)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 20.06.2015

ANNEXURE - B

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR 2014-2015

(Amount in Rs.)

INCOME	SCHEDULE	AS AT 31.03.2015		AS AT 31.03.2014	
		Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
Grant received	5	43,186,000.00	72,404,000.00	46,351,921.00	45,411,000.00
Income from Royalty, Publication etc.	6	-	95,250.00	-	169,487.81
Fees/Subscription Received	7	-	5,000.00	-	-
Interest Earned	8	27,947.00	2,292,703.00	27,197.00	1,625,770.00
Other Income	9	-	455,107.00	-	87,168.00
Increase/(Decrease in in stock)	10	-	-	-	-
TOTAL (A)		**43,213,947.00**	**75,252,060.00**	**46,379,118.00**	**47,293,425.81**
EXPENDITURE					
Salary & Non Salary Compnent exp.	11	-	44,675,346.00	-	44,857,817.00
Other Administrative Expenses etc.,	12	36,002,893.00	29,988,008.50	44,638,057.00	6,004,861.00
Depreciation	3	4,941,932.00	982,126.60	4,383,936.00	1,453,923.00
Prior period Expenses	-	-	-	12,000.00	95,105.00
TOTAL (B)		**40,944,825.00**	**75,645,481.10**	**49,033,993.00**	**52,411,706.00**
Excess of Income/ (Expenditure) (A -B)		2,269,122.00	(393,421.10)	(2,654,875.00)	(5,118,280.19)
Balance being Surplus/ **(Deficit) Carried to Capital Fund**		**2,269,122.00**	**(393,421.10)**	**(2,654,875.00)**	**(5,118,280.19)**

(SREEKUMARAN S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. SINGH)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 20.06.2015

ANNEXURE - C

SCHEDULES

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

SCHEDULES 1 TO 4 ATTACHED TO & FORMING PART OF BALANCE SHEET

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015	YEAR ENDED 31.03.2014
SCHEDULE 1		
CAPITAL FUND		
Opening Balance	39,929,048.48	47,702,203.67
Add: Additions during the year	1,276,162.40	-
Less: Deductions during the year	-	-
Add/(Deduct) : Balance of net income/ (Expenditure) transferred from the Income and Expenditure Account	1,875,700.90	(7,773,155.19)
Balance at the year-End	**43,080,911.78**	**39,929,048.48**
SCHEDULE 2		
CURRENT LIABILITIES & PROVISIONS		
A. CURRENT LIABILITIES		
1. Sundry Creditors:		
a) For Goods	-	923,223.92
b) For Expenses	10,341,728.07	2,776,389.15
2. Other Liabilities:		
a) Pay & Allowances Payable	12,562,055.00	11,718,755.00

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015	YEAR ENDED 31.03.2014
b) CPF Payable	30,049.00	35,049.00
c) GPF Payable	461,856.00	356,815.00
d) LIC-GSLIS Payable	240.00	2,900.00
e) LIC-SSS Payable	-	3,465.00
f) Monthly Pension & Other Pensioners	408,586.00	338,668.00
g) Other remittances	7,500.00	7,500.00
h) TDS Payable	20,213.00	49,338.00
i) Security Deposit	12,600.00	12,600.00
j) NPF Payable	1,085,745.00	22,502.00
k) Others Fellowship	214,460.00	214,460.00
l) Others Purpose	1,509,582.00	2,538,435.00
m) O.T.A Payable	2,156.00	2,046.00
n) Interest on NPF A/c Payable	-	1,000,000.00
o) Provison for Children Allowance	150,930.00	
B. PROVISIONS		
a) Gratuity	26,188,615.00	23,422,539.00
b) Leave Encashment	15,447,959.00	15,002,021.00
TOTAL	**68,444,274.07**	**58,426,706.07**

SCHEDULE 3
FIXED ASSETS

DESCRIPTION	GROSS BLOCK				DEPRECIATION				NET BLOCK		
	As at 31.03.2014	Additions upto 03.10.14	Additions After 03.10.14	Deductions during the year	As at 31.03.2015	As at 31.03.2014	For the year	Deductions during the year	As at 31.03.2015	As at 31.03.2015	As at 31.03.2014
1. Land	733,770.20	-	-	-	733,770.20	-	-	-	-	733,770.20	733,770.20
2. Building	9,642,100.00	-	-	-	9,642,100.00	7,083,812.00	255,829.00	-	7,339,641.00	2,302,459.00	2,558,288.00
3. Machinery & Equipment	3,856,182.60	-	-	-	3,856,182.60	3,069,255.00	118,040.60	-	3,187,295.60	668,887.00	786,927.60
4. Vehicles	1,560,004.21	-	-	-	1,560,004.21	1,196,279.00	54,559.00	-	1,250,838.00	309,166.21	363,725.21
5. Furniture & Fixtures	7,665,508.37	-	1,292,994.00	-	8,958,502.37	4,811,700.37	350,034.00	-	5,161,734.37	3,796,768.00	2,853,808.00
6. Office Equipment	10,090,323.83	-	901,761.00	-	10,992,084.83	7,179,308.00	336,192.00	-	7,515,500.00	3,476,584.83	2,911,015.83
7. Computer/ peripherals	5,319,289.50	-	507,268.00	-	5,826,557.50	5,211,091.00	217,100.00	-	5,428,191.00	398,366.50	108,199.00
8. Electric Installation	1,383,405.53	788.00	-	-	1,384,193.53	884,638.00	49,956.00	-	934,594.00	449,599.53	498,767.53
9. Library Books/ Periodicals	57,553,745.92	3,855,799.00	175,342.00	-	61,584,886.92	56,517,780.05	4,529,981.00	-	61,047,761.05	537,125.87	1,035,965.87
10. Tubewells & Water supply	383,666.00	-	-	-	383,666.00	272,224.00	12,367.00	-	284,591.00	99,075.00	111,442.00
TOTAL	98,187,996.16	3,856,587.00	2,877,365.00	-	104,921,948.16	86,226,087.42	5,924,058.60	-	92,150,146.02	12,771,802.14 -	11,961,909.24
As at March 31,2014	94,648,870.16	76,415.00	3,462,711.00	-	98,187,996.16	80,388,228.42	5,837,859.00	-	86,226,087.42	11,961,908.74	14,260,641.74

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015	YEAR ENDED 31.03.2014
SCHEDULE 4		
CURRENT ASSETS, LOANS & ADVANCES		
A. CURRENT ASSETS:		
1. Stock in Hand		
(At cost as taken, valued and certified by the Council)		
Stock of ICPR Publications	6,291,441.00	6,291,441.00
Stock of JICPR Journals	445,250.00	445,250.00
TOTAL 6,736,691.00	**6,736,691.00**	
2. Sundry Debtors		
a) Debts outstanding for a period exceeding Six Months	712,766.00	727,766.00
b) Other Debts	-	-
3. Cash Balance in Hand		
a) Cash in Hand	29,242.62	3,773.62
b) Imprest Balance with Lucknow Office	13,527.00	13,527.00
4. Bank Balances:		
With Scheduled Banks:		
a) Savings Account		
i) With State Bank of Patiala S.B. A/c No.32319	3,771,344.21	4,225,846.21
ii) With Canara Bank S.B. A/c No.16377	38,967,049.37	30,689,842.37
iii) With Oriental Bank oc Commerce- S.B. A/c No.	419,365.00	221,117.00
iv) United Bank of India-S.B. A/c No.	719,715.60	691,768.60
v) Cheques in hand	5,224,000.00	
TOTAL	**49,857,009.80**	**36,573,640.80**
TOTAL (A)	56,593,700.80	43,310,331.80

	YEAR ENDED 31.03.2015	YEAR ENDED 31.03.2014
B. LOANS, ADVANCES AND OTHER ASSETS		
1. Advances recoverable in cash or in kind or for value to be received		
i) Other Advance		
a) Advance for Academic Programs		
- Advance for Academic Programs (Prior to Mar'02)	5,884,811.01	5,708,511.01
- Advance for Academic Programs (April'02 to Mar'14)	7,525,237.00	21,373,695.00
- Advance for Academic Programs (For the year)	900,000.00	291,937.00
- Advance for Academic Programs- Delhi (Prior to Mar'14)	3,817.00	
- Advance for Academic Programs- Delhi (For the year)	307,000.00	285,817.00
- Advance for Academic Programs- Lucknow (For the year)	3,150,000.00	5,541,460.00
- Advance for Academic Programs- LKO (Prior to Mar'2014)	13,627,150.00	
b) Advance to Employees		
- Old year Advance to Employees	136,478.00	151,833.00
- Advance to Employees (For the year)	54,450.00	125,630.00
c) Contingency Advance		
- Old year Contingency Advance	604,930.00	604,930.00
- Contingency advance (For the year)	79,990.00	8,000.00
d) Advance -Others		
- Advance -Others (Prior to Mar'02)	-	176,300.00
- Advance -Others (April'02 to Mar'11)	-	4,861,752.00
- Advance -Others (For the year)	2,328,037.00	-

	YEAR ENDED 31.03.2015	YEAR ENDED 31.03.2014
- Advance -Others (Prior to Mar'14)	2,401,606.00	
- Advance to ICPR, LKO for Admin. Expenses	3,000,000.00	300,000.00
- Advance to ICPR, LKO for Admin. Expenses (for the year)	30,000.00	778,037.00
- Advance to Gandhirama Seminar	-	-
- Advance-Imprest	400.00	
e) Deposit with CPWD-Lucknow	-	13,016.00
f) Deposit with CPWD-Delhi	434,034.00	71,601.00
g) Deposit with Telephone Authorities	127,453.00	130,487.00
h) Deposit with MCD	348,365.00	348,365.00
i) Deposit for Fuel	10,000.00	10,000.00
j) Prepaid Expenses	131,467.50	761,059.00
k) NPF	1,000,000.00	-
l) Security Deposit Refundable	50,000.00	
TOTAL (B)	42,135,225.51	41,542,430.01
TOTAL (A+B)	98,728,926.31	84,852,761.81

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

SCHEDULES 5 TO 12 ATTACHED TO & FORMING PART OF INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015		YEAR ENDED 31.03.2014	
	Plan	**Non-Plan**	**Plan**	**Non-Plan**
SCHEDULE 5				
Group -J				
Grant Received				
K-I				
Central Government				
1) K-I(D) Grand Received From (MHRD) Plan- General	33,415,000.00	-	4,729,000.00	45,411,000.00
2) K-I(E) Grant Received From (MHRD) Plan Capital	3,466,000.00	-	701,000.00	-
3) K-I(F) Grants Received From (MHRD) Plan General SC	6,305,000.00	-	4,791,000.00	-
4) K-I(F) Grants Received From (MHRD) Plan General ST	-	-	2,405,000.00	-
5) K-I(A) Grant Received From(MHRD) Non Plan Salary	-	60,513,000.00	31,879,000.00	-
6) K-I(B) Grant Recd. From (MHRD)- Non Salary Pension	-	11,891,000.00	-	
7) K-I(E) Grant Received From (MHRD) Plan General Capital-ST	-	-	180,000.00	-
2) Others				
1) G-I(E)-Prior period adj.Plan General	-	-	969,697.00	-
2) G-I(G)-Prior period adj.Plan General SC	-	-	30,000.00	-
3) G-I(I)-Prior period adj.Plan General ST	-	-	450,000.00	-
4) G-I(K)Prior period adj.Plan NER	-	-	42,581.00	-
5) G-I(M)Prior period adj.Plan NER-SC	-	-	36,643.00	-
6) G-I(O)Prior period adj.Plan NER-ST	-	-	138,000.00	-
Total	**43,186,000.00**	**72,404,000.00**	**46,351,921.00**	**45,411,000.00**
SCHEDULE 6				
K-IV				
1) K-IV(B)Sales Proceeds & Royalty-Book	-	95,250.00	-	169,487.81
Total	**-**	**95,250.00**	**-**	**169,487.81**

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015		YEAR ENDED 31.03.2014	
	Plan	**Non-Plan**	**Plan**	**Non-Plan**
SCHEDULE 7				
K-V				
1) K-V(A) Life Membership-JICPR	-	5,000.00	-	-
Total	**-**	**5,000.00**	**-**	**-**
SCHEDULE 8				
K-VI				
1) K-VI(D) Misc.Receipts Intt. on Saving and Deposits	27,947.00	2,292,703.00	27,197.00	1,625,770.00
Total	**27,947.00**	**2,292,703.00**	**27,197.00**	**1,625,770.00**
SCHEDULE 9				
K-VII				
1) B-III(A) Leave Salary Contributions	-	67,927.00	-	-
2) B-III(B) Pension Contribution	-	91,933.00	-	500.00
3) K-VI(A) Misc. Receipts-Reprography Services	-	32,798.00	-	63,656.00
4) K-VI(B) Misc. Receipts-Unserviceable/obsolete	-	71,218.00	-	613.00
5) K-VI(C) Misc. Receipts Interest on Advance to Empl	-	18,528.00	-	8,079.00
6) K-VI(F) Misc. Receipts Others	-	161,553.00	-	14,320.00
7) K-VI(I) Sale of Fellowship Forms	-	11,150.00	-	-
Total	**-**	**455,107.00**	**-**	**87,168.00**
SCHEDULE 10				
increase/decrease in stock				
a) Closing Stock				
- Stock of ICPR Publications	-	6,291,441.00	-	6,291,441.00
- Stock of JICPR Journals	-	445,250.00	-	445,250.00
Total	**-**	**6,736,691.00**	**-**	**6,736,691.00**
a) Opening Stock				
- Stock of ICPR Publications	-	6,291,441.00	-	6,291,441.00
- Stock of JICPR Journals	-	445,250.00	-	445,250.00
Total	**-**	**6,736,691.00**	**-**	**6,736,691.00**
Increase/(Decrease) in stock	-	-	-	-

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015		YEAR ENDED 31.03.2014	
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
SCHEDULE 11				
Group-A				
A-I				
Salary Components				
1) A-I(A) Pay & Allowances to Officers and Staff	-	31,746,047.00	-	30,297,043.00
2) A-I(B) Over Time Allowances	-	23,989.00	-	14,849.00
3) A-I(C) Honorarium	-	-	-	5,000.00
4) A-I(E) Bonus	-	181,911.00	-	182,774.00
5) A-I(G) Leave Encashment During LTC	-	164,657.00	-	217,807.00
6) A-I(H) Childrens Education Allowance	-	150,930.00	-	226,082.00
7) B-III(A) Leave Salary Contributions	-	-	-	178,928.00
8) B-III(B) Pension Contribution	-	-	-	36,754.00
Group-B				
Non Salary Pension				
B-I				
1) B-I(A) Pension & Pensionery Befefits	-	3,296,464.00	-	2,616,579.00
2) B-i(B) Gratuity	-	4,258,530.00	-	5,483,294.00
3) B-1(C)Leave Encashment	-	1,856,813.00	-	3,321,322.00
4) B-I(D) Pension Commutation	-	383,537.00	-	367,747.00
5) C-I(C) Conveyance	-	15,343.00	-	15,985.00
6) C-IIA) Medical Insurance Premium	-	2,007,901.00	-	911,900.00
7) C-I(B) Travelling Allowances to Officers	-	177,214.00	-	351,844.00
B-II				
1) B-II(A) Employer's Contribution to CPF	-	58,456.00	-	58,820.00
2) B-II(B) Interest on Employer' Contribution to CPF	-	4,595.00	-	5,117.00
3) B-II(D) Other Expenses Related with GPF	-	60,000.00	-	-
4) B-II(E) Employer's Contribution to NPF	-	288,959.00	-	205,972.00
5) Other Expenses				360,000.00
Total	**-**	**44,675,346.00**	**-**	**44,857,817.00**
				-
SCHEDULE 12				
GROUP-C				
C-I				
1) C-I(B) Travelling Allowances to Staff	-	86,271.00	-	-
C-II				

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015		YEAR ENDED 31.03.2014	
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
1) C-II(A) Medical Insurance Premium	53,657.00	-	-	-
2) C-II(B) Other Medical Exp.	-	3,999.00	-	-
C-III				
1) C-III(A) Leave Travel Concession	-	205,576.00	-	-
C-IV				
1) C-IV(A) Advertisements	-	38,849.00	-	94,668.00
C-V				
1) C-V(A) Statutory Audit Fee	-	29,995.00	-	-
2) C-V(B)- Internal Audit Fee	-	288,891.00	-	181,828.00
C-VI				
1) C-VI(A) Electricity Charges (New Delhi)	-	1,128,230.00	-	-
2) C-VI(B) Electricity Charges Lucknow	-	281,698.00	-	1,249,388.00
3) C-VI(C) Water Charges (New Delhi)	-	72,895.00	-	-
4) C-VI(D) Water Charges (Lucknow)	-	12,820.00	-	69,781.00
C-VII				
1) C-VII(A) Staff Car Running Exp.-(DLC-1993)	-	149,638.00	-	-
2) C-VII(D) Staff Car Running Exp. -(DL/3C-0989)	-	74,154.00	-	201,436.00
3) C-VII(B) Staff Car Repair & Maint. (DL-1993)	-	67,278.00	-	
4) C-VII(E) Staff Car Repair & Maint. Exp (0989)	-	72,093.00	-	123,040.00
5) C-VII(C) Staff Car Insuracne (DL-1993)	-	8,398.00	-	
6) C-VII(F) Staff Car Insurance Exp. (DL/3CBM-0989)	-	8,809.00	-	12,941.00
C-VIII				
1) C-VIII(A) Stationery Expenses -(New Delhi)	-	343,979.00	-	-
2) C-VIII(B) Stationery Expenses (LKO)	-	63,753.00	-	-
3) C-VIII(C) Printing Expenses	-	46,831.00	-	450,339.00
4) C-VIII(D) Computer Consumable & Accessioer of ND	-	15,900.00	-	-
5) C-VIII(E) Computer Consumable & Accessories LKO	-	1,755.00	-	12,150.00
C-IX				
1) C-IX(A) Postage & Courier (New Delhi)	-	50,039.00	-	-
2) C-IX(B) Postage & Courier (Lucknow)	-	10,557.00	-	126,307.00

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015		YEAR ENDED 31.03.2014	
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
C-X				
1) C-X(A) Repair & Maint. of Office Equipment (ND)	-	7,827.00	-	-
2) C-X(B) Repair & Maint. Office Equipment (LKO)	-	32,549.00	-	-
3) C-X(B) Repair & Maint. Building	-	-	6,650.00	1,465.00
4) C-X(C) AMC Charges of Office Equipment (ND)	-	571,815.50	-	-
5) C-X(D) AMC Charges of Office Equipments (LKO)	-	143,280.00	-	697,199.00
C-XI				
1) C-XI(A) Telephone Charges-29901550	-	117,996.00	-	-
2) C-XI(B) Telephone Charges-29964755-CM Office	-	8,021.00	-	-
3) C-XI(C) Telephone Charges-29964750(MS)	-	6,920.00	-	-
4) C-XI(D) Telephone Charges-Mobil (MS)	-	22,164.00	-	-
5) C-XI(E) Telephone Charges Chairman Mobile	-	13,125.00	-	-
6) C-XI(F) Telephone Charges-Director (P&R) Mobile	-	12,703.00	-	-
7) C-XI(G) Telephone Charges No.-8004922772 (Mobile)	-	5,085.00	-	-
8) C-XI(I) Telephone Charges-9810223396-	-	20,220.00	-	-
9) C-XI(J) Telephone Charges-2395349-(Lucknow)	-	63,890.00	-	276,802.00
C-XII				
1) C-XI(C) Guest House Related Expenses	424,839.00	-	-	-
2) C-XII(A) Rent ICPR Lucknow	-	270,000.00	-	300,000.00
C-XIII				
1) C-XIII(A) Liveries (ND)	-	24,825.00	-	-
2) C-XIII(B) Liveries(LKO)	-	22,111.00	-	29,004.00
C-XIV				
1) C-XIV(A) Contingencies (Misc Exp. of ND)	-	160,574.00	-	-
2) C-XIV(B) Contingencies (Misc. Exp. of Lko)	-	80,087.00	-	222,674.00
3) C-XIV(D) Property Tax	-	155,258.00	-	-
4) C-XIV(E) Ground Rent to DDA	-	17,589.00	-	200,245.00
5) C-XIV(F) Staff Training Fee	-	13,303.00	-	44,944.00
6) C-XIV(G) Staff Welfare Expenses	-	17,854.00	-	9,000.00

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015		YEAR ENDED 31.03.2014	
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
7) C-XIV(H) Security Charges	-	408,993.00	-	374,835.00
C-XV				
1) C-XV(A) Website Expenses	-	72,319.00	-	-
2) C-XV(B) Internet Connection Delhi-29964751	-	16,056.00	-	53,675.00
3) C-XV(C) Internet Charges-2392636 (Lko)	-	5,673.00	-	-
4) C-XV(D) Data Card of Chairman	-	11,055.00	-	-
5) C-XV(E) Data Card Charges (M.S)	-	12,003.00	-	-
C-XVI				
1) C-XVI(A) Horticulture Exp. Delhi Office	-	4,989.00	-	4,822.00
C-XVII				
1) C-XVII(B) Running Exp of Genset LKO	-	16,854.00	-	7,750.00
C-XVIII				
1) C-XVIII(A) Legal Charges	568,000.00	-	-	-
2) C-XVIII(B) Professional Charges	1,171,101.00	-	775,464.00	-
3) C-XVIII(C) Wages		21,496.00	-	-
C-XIX				
1) C-XIX (A) Annual Subscription to IIC	-	85,020.00	56,930.00	-
2) C-XIX (B) FISP/SICI Membership	-	15,000.00	-	-
3) C-XIX(C) Bank Cahrges	-	7,853.00	112.00	14,391.00
C-XX				
1) C-XX(A) Hospitality to Official Guests/Non	-	19,484.00	-	-
C-XXI				
1) C-XXI(A) Ta to Council Committee Members	-	93,931.00	-	120,641.00
2) C-XXI (B)- Hospitality to Council Committee Memb.	-	46,208.00	-	36,427.00
3) C-XXI(C) Sitting Fee	-	26,000.00	-	124,000.00
4) C-XXI(D) TA to Governing Body	-	97,921.00	-	425,643.00
4) C-XXI(E) Hospitality to GB Members	-	53,347.00	-	74,580.00
5) C-XXI(F) Sitting Fee to Governing Body	-	24,000.00	-	-
6) C-XXI(G) TA to RPC Meeting	-	167,178.00	104,721.00	236,543.00
7) C-XXI(H) Hospitality to RPC Members	-	39,915.00	-	27,629.00
8) C-XXI(I) Sitting Fee RPC Member	-	19,000.00	-	-
9) C-XXI(J) TA to Finance Committ Meeting	-	54,434.00	-	23,998.00
10) C-XXI(K) Hospitality to Finance Committe Meeting	-	14,908.00	-	45,066.00

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015		YEAR ENDED 31.03.2014	
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
11) C-XXI(L) Sitting Fee Finance Committe Members	-	10,000.00	-	-
12) C-XXI(M) TA to Other Committee Member	-	55,722.00	1,544.00	48,350.00
13) C-XXI(N) Hospitality to Other Committee Memb.	-	12,854.00	-	42,928.00
14) C-XXI(O) Sitting Fee to Other Commttee Members	-	8,000.00	12,000.00	-
15) C-XXI(P) TA to Non-Official Members	-	5,004.00	-	2,410.00
16) C-XXI(Q) Hospitality to Non Official Members	-	13,349.00	-	37,962.00
Group-D				
D-I				
1) D-I(A) National Fellowships	-	1,717,500.00	2,302,939.00	-
2) D-I(B) Senior Fellowships	40,000.00	2,460,000.00	3,076,522.00	-
3) D-I(C) General Fellowhips	866,522.00	5,363,000.00	6,340,079.00	-
4) D-I(D) Junior Research Fellowships	1,592,033.00	13,866,083.00	9,551,065.00	-
5) D-I(F) Other Expenses of Fellowhips	127,396.00	293,255.00	258,627.00	-
6) D-I(G) Fellows Orientation Meet	150,172.00	-	-	
D-II				
1) D-II(A) ICPR Organised Seminars	981,574.00	-	2,471,196.00	-
2) D-II(B) Conference	9,138.00	-	-	-
3) D-II(C) Workshops	1,956,477.00	-	874,069.00	-
4) D-II(D) International Conference-	287,284.00	-	-	-
5) D-II(E) Review Meets/fellow's Meet	212,046.00	-	-	-
6) D-II(H) Other Academic Exp.	18,874.00	-	220,000.00	-
D-III				
1) D-III(A) Refresher Courses	1,355,027.00	-	739,874.00	
2) D-III(A) Refresher Courses workshop general-NER	-	-	270,000.00	
D-IV				
1) D-IV(A) Grants for Seminar	7,072,395.00	-	2,378,009.00	
2) D-IV(B) Grants for Workshop	1,186,411.00	-	-	
3) D-IV(C) Grants for all academic programme-General-SC	-	-	360,000.00	
4) D-IV(A) Grants for all academic programme-General-ST	-	-	180,000.00	

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015		YEAR ENDED 31.03.2014	
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
5) D-IV(C) Grant for Conference/Annual Sessions	275,000.00	-	100,000.00	
6) D-IV(D) Grant for International Conference	180,000.00	-	-	
7) D-IV(D) Grant for Project-Transalation project	-	-	1,587,752.00	
D-V				
1) D-V(A) Travel Grant	41,334.00	-	15,572.00	-
2) D-V(B) Other Expenses on Travel Grant	4,413.00	-	24,226.00	-
3) D-V(C)Consultation charges	-	-	373,328.00	-
4) D-V (D)Gandhirama Sminar	-	-	83,811.00	-
D-VI				
1) D-VI(A) Exhibition/Publicity	18,836.00	-	-	-
2) D-VI(B) Book Fair	55,000.00	-	66,076.00	-
3) D-VI(C) CPWD Electrical	-	-	108,081.00	-
4) D-VI (D) Life membership-JICPR	-	-	549,950.00	-
D-VII				
1) D-VII(A) Lectures-National	715,478.00	-	-	-
2) D-VII(B) Lectures-International	1,137,422.00	-	1,129,948.00	-
3) D-VII(C) Lectures- Periodical	260,000.00	-	320,830.00	-
4) D-VII(D) Lectures- NER	-	-	154,600.00	-
5) D-VII(E) Lectures- Plan General-SC	-	-	30,000.00	-
D-VIII				
1) D-VIII(A) International Collaborations & Academic Linkage	23,077.00	-	46,939.00	-
D-IX				
1) D-IX(A) Life Achievement Awards	262,941.00	-	396,008.00	-
2) D-IX(D) Project/Translation Project	941,024.00	-	-	-
3) D-IX(E) Others	5,506.00	-	-	-
DXI-SC				
1) D-XI(A) Fellowships SC	1,761,858.00	-	2,123,791.00	-
2) D-XI(B) Fellowships ST	-	-	199,000.00	-
3) D-XI(C) Fellowship-NER-SC	-	-	30,000.00	-
4) D-XI(D)) Seminar/conferences SC	1,406,167.00	-	2,165,650.00	-
5) D-XI(E) Seminar/conferences General-NER	-	-	1,155,000.00	-
6) D-XI(F) Seminar/conferences General-NER-ST	-	-	20,000.00	-
7) D-XI(G) Lectuers-SC	86,116.00	-	-	-

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2015		YEAR ENDED 31.03.2014	
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
8) D-XI(H) ICPR Special Programm SC	32,105.00	-	-	-
9) D-XI -ICPR Special Programme-ST	-	-	-	-
10) D-XI(A) Fellowships-ST	48,000.00	-	614,192.00	-
11) D-XI(B) Seminar/conference-ST	1,490,000.00	-	-	-
12) D-XI(C) Lectures-ST	60,000.00	-	-	-
13) D-XI(G) ICPR Special Programme -ST	400,000.00	-	7,834.00	-
14) D-XI(H) ICPR Special Programme -NER	-	-	60,000.00	-
15) D-XI(I) ICPR Special Programme -SC	-	-	1,199,000.00	-
16) D-XII(J) Other Academic programme general-ST	-	-	13,325.00	-
17) D-XII(K) Other Academic programme general-ST	-	-	3,700.00	-
18) D-XII(L) Other Academic programme -Others	-	-	330,263.00	-
19) D-XII(M) Other Academic programme -NER	-	-	970,452.00	-
D-XI(NER)				
1) D-X(A) Grants for Project/translation Project	4,028,990.00	-	219,073.00	-
2) D-X(C) Book Grant	699,025.00	-	-	-
3) D-X(D) Other Special Programme	10,500.00	-	-	-
4) D-XI(A) Fellowship General NER	1,271,025.00	-	-	-
5) D-XI(D) Other Academic Programmes NER	2,017,100.00	-	-	-
Group-E				
E-I				
1) E-I((A) Publication Expenses)				
2) E-I(B) Production Expenses	41,500.00	-	-	-
E-I(C)) Honurarium	6,000.00	-	-	-
E-I(D) Payment to Distributors	210,000.00	-	-	-
E-I(E) Other Expenses of New Letter/ Annul Report	170,200.00	-	203,145.00	-
E-II				
1) E-II (JICPR Expenses)				
2) E-II(A) Production Expenses	69,066.00	-	-	-
3) E-II(B) Editorial Expenses	138,022.00	-	-	-
4) E-II(E) Other Expenses	64,242.00	-	356,710.00	-
	36,002,893.00	29,988,008.50	44,638,057.00	6,004,861.00

ANNEXURE - D

ACCOUNTING POLICIES

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

Significant Accounting Policies and notes on accounts of Indian Council of Philosophical research, New Delhi.

ACCOUNTING POLICIES

(i) Accounting Convention

The accounts of the ICPR are prepared under the historical cost convention and on accrual basis of accounting.

(ii) Fixed Assets and Depreciation

Fixed Assets are stated at cost. Depreciation is provided on the written down value of the assets, at the rates prescribed under the Income Tax rules, 1961, as amended from time to time.

All fixed assets, furniture and fixtured purchased less than Rs. 2000/- each are provided in the year of purchase by providing 100% depreciation.

Depreciation is also provided on library books at the prescribed rates. However 100% depreciation is provided for the journals procured/ subscribed by the Project during the year.

(iii) Stock of Publications

Publications work under process is valued on cost basis. Publication stock is valued on net realizable basis.

(iv) Retirement Benefits

Provision for payment of gratuity and leave encashment has been made on actuarial basis. Provision for pension will however be made on accrual basis.

(v) Provision for Bonus

Bonus is accounted for on cash basis.

(vi) Expenditure

Expenditure is, normally, accounted for an accrual basis.

(vii) Revenue Recognition

(a) The ICPR mainly depends on 100% grants from the Ministry of HRD, which has been taken into account on sanction basis.

(b) Over and above the grant, the ICPR is also having income from the sale of publications, sales from obsolete items, reprographic services etc. These are accounted for as and when right to receive such income is established.

(viii) Taxation

ICPR has not approached Income Tax Department for exemption on the presumption that no income has been earned by the ICPR as it is carrying research work for which grant is received from the Government of India.

(ix) Interest payable to the subscribers of GPF/CPF are payable, as per the policy followed and against only the interest earned against the subscriptions deposited by the Council deposited by the Council separately. However the Council will pay interest only to the CPF against the employers share of CPF for the current financial year only since the employers' share of CPF was deposited in the respective account on 31 March 2015. The Interest payable for GPF/CPF will not debitable against the grant account of the Council.

(Sreekumaran S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. Singh)
Member Secretary

ANNEXURE - E

NOTES TO ACCOUNTS

NOTES ON ACCOUNTS

Annexed to and forming part of the accounts for the year ending March 31, 2015

Stock of publication is considered at 50% of the market price. Publications of the ICPR are handled by various distributors/publishers on various terms and conditions. Accordingly publications of the ICPR are classified in three categories:

- Publications brought out by the ICPR by absorbing 100% production cost;
- Publications brought out by the ICPR on co-publication basis on agreement to share the production cost on 60:40 basis and to receive the sales-proceeds@40% of the cost price.

As such the opening stock position of the ICPR publications has been taken in the final accounts in the following method:

i. The total cost price of the publications will be taken for stock purpose @50% of the sale price of the books;

   Prior period adjustments made in the Books of Account during the year 2014-15 pertaining prior to financial year 2013-14 have ben treated in the books as prior period income.

ii. Balance Sheet and Receipt and Payment Account of GPF, CPF and NPF accounts have been prepared as per the Cash Book maintained by the Council. The balances reflected in the balance sheet and receipt and payment account as on 31.03.2015 are tallied with the broadsheet maintained by the council in case of GPF and CPF account.

iii. Previous Year figures have been regrouped/recast wherever necessary in the account.

iv. Cash in hand and Stock in hand at the closing hours of 31st March 2015 as certified by the Council.

v. Receipt & Payment Account

   Following methodology has been followed in the preparation of Receipt and Payment and Income and Expenditure account regarding adjustment of loans and

advances and expenditure incurred against academic and other advances.

a) The gross payments made for advance for academic programs and other advances during the financial year are taken at payment side of receipt and payment account.

b) The credit side of each advance account is treated as receipt and shown as such in the receipt and payment account. The expenses incurred against the advances are credited in the ledger to adjust the advance. Similarly the balance received over and above the expenses is also credited in the account.

c) The balance outstanding in the advance account is asset and the same is shown in the Balance Sheet.

d) The expenses incurred against the advances are booked under different expense heads viz., seminar, meetings etc. These expenses are shown in the Income and Expenditure account as expense.

e) The adjustment of loans and advances is shown as receipt in Receipt and payment account because expenses against these advances are shown under different expense head and taken in Income and Expenditure account as expense and in Receipt & payment account also on the payment side.

vi) Fixed assets installed and put to use have been certified by the Society and relied upon by the auditors, being a technical matter.

Tax has not been deducted at source from provision for pay & Allowances for the month of March'15 as the same is deducted when payment of Pay & Allowances is made. Also tax is not deducted from payment of fellowship to Editorial Fellows.

(Sreekumaran S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. Singh)
Member Secretary

Separate Audit Report of the Comptroller & Auditor General of India on accounts of Indian Council of Philosophical Research, New Delhi for the year ended 31st March 2015

We have audited the attached Balance Sheet of the Indian Council of Philosophical Research (ICPR) New Delhi as at 31st March 2015 and the Income & Expenditure account/Receipts & Payments account for the year ended on the date under Section 20 (1) of the Comptroller & Auditor General's (Duties, Powers & Conditions of Service Act 1971). The audit has been entrusted for the period up to 2017-18. These financial statements are the responsibility of the Indian Council of Philosophical Research's management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

2. This Separate Audit Report contains the comments of the Comptroller & Auditor General of India (CAG) on the accounting treatment only with regard to classification, conformity with the best accounting practices, accounting standards and disclosure norms etc. Audit observations on financial transactions with regard to compliance with the Law, Rules & Regulations (Propriety and Regularity) and efficiency-cum-performance aspects etc. If any, are reported through Inspection Reports/CAG's Audit Reports separately.

3. We have conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. These standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free from material misstatements. An Audit includes examining on a test basis, evidences supporting the amounts and disclosure in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by management, as well as evaluating the overall presentation of financial statements. We believe that our audit provides a reasonable basis for our opinion.

4. Based on our audit, we report that:

i) We have obtained all the information and explanations, which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of our audit.

ii) The Balance Sheet and Income and Expenditure Account/Receipts and Payments account dealt with by this report have been drawn up in the format prescribed by the Government of India, Ministry of Finance.

iii) In our opinion, proper books of accounts and other relevant records have been

maintained by the Indian Council of Philosophical Research as required in so far as it appears from our examination of such books.

iv) We further report that:

A. Balance Sheet

A.1 Liabilities

A.1.1 Current Liabilities & Provisions (Schedule 2) - Rs. 6.84 crore

The above does not include unutilized grants of Rs. 2.49 crore resulting in understatement of Current Liabilities and overstatement of Capital Fund by Rs. 2.49 crore .

A.2 Assets

A.2.1 Current Assets, Loans & Advance (Schedule 4) - Rs. 9.87 crore

In the accounts closing stock of ICPR publication has been shown as Rs. 62.91 lakh whereas as per the publication stocks register the stock in hand was Rs. 157.00 lakh (excluding stock at Academic Centre of ICPR at Lucknow information regarding which was not furnished to audit). This resulted in understatement of Current Assets, Loans & Advances and Capital Fund by Rs. 94.09 lakh.

B. Balance Sheet (General Provident Fund)

Investment

Investment of General Provident Fund were not made as per the pattern prescribed by the Government of India, Ministry of Finance vide notification no. 5-88/2006-PR dated 14.08.2008.

C. Grant in aid

The Council received grant in aid of Rs. 11.56 crore (Plan: Rs. 4.32 crore and Non Plan: Rs. 7.24 crore) during the year from the Ministry of Human Resource Development out of which grant of Rs. 0.07 crore (Plan) was received in March 2015. It had an unspent balance of Rs. 1.15 crore (Plan: Rs. 0.68 crore and Non Plan: Rs. 0.47 crore), own receipts of Rs. 0.27 crore (Non-Plan) and prior period adjustments and refunds of Rs. 0.33 crore (Plan: Rs. 0.24 crore and Non-Plan: Rs. 0.09 crore). Out of the total funds of Rs. 13.31 crore it utilized Rs. 10.82 crore (Plan: Rs. 3.79 crore and Non Plan: Rs. 7.03 crore) leaving an unspent balance of Rs. 2.49 crore (Plan: Rs. 1.45 crore and Non Plan: Rs. 1.04 crore).

D. **Management letter:** Deficiencies which have not been included in the Audit Report have been brought to the notice of the Member Secretary, Indian Council of Philosophical Research through a management letter issued separately for remedial/corrective action.

v Subject to our observation in the preceding paragraphs, we report that the Balance Sheet, Income and Expenditure Account and Receipts and Payments Account dealt with by this report are in agreement with the books of accounts.

vi In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said financial statements read together with the Accounting Policies and Notes on Accounts, and subject to the significant matters stated above and other matters mentioned in Annexure to this Audit Report give a true and fair view in conformity with accounting principles generally accepted in India.

a In so far as it relates to the Balance Sheet of the state of affairs of the Indian Council of Philosophical Research at 31st March 2015 and

b In so far as it relates to Income and Expenditure Account of the surplus for the year ended on that date.

For and on behalf of the C&AG of India

Place: New Delhi

Dated: 07.12.2015

Director General of Audit

Central Expenditure

Annexure to Separate Audit Report

1. Adequacy of internal audit system

- The Council had neither established its own internal audit wing nor was it being conducted by the ministry.
- Internal Audit is conducted by Chartered Accountant on quarterly basis.

2. Adequacy of internal control system

- The Management's response to external audit objections is not effective as 38 paras pertaining to the period from 2002-03 to 2011-12 were outstanding as on 31.03.2015.

3. System of physical verification of assets

- The physical verification of fixed assets of ICPR headquarters and its Academic Centre at Lucknow for the year 2014-15 had been conducted. The verification committee had reported that the Fixed Assets (non-consumbale) register had not been maintained properly by both the ICPR headquarters and its Academic Centre.
- Physical verification of library books and publication is conducted after every two years and was not conducted during 2014-15.

4. System of physical verification of inventory

- The physical verification of inventory of ICPR for the year 2014-15 had been conducted and no material deficiency was reported.

5. Regularity in payment of dues

- As per accounts on payment over six months in respect of statutory dues was outstanding as on 31.03.2015.

ANNEXURE - F

STATEMENT OF RECEIPTS & PAYMENTS

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi -110062

RECEIPTS & PAYMENTS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED MARCH 31ST, 2015

RECEIPTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
I. Opening Balances:				
a) Cash in Hand				
1) Cash in Hand	732.00	3,041.62	397.00	3,220.62
2) Imprest Balance	-	13,527.00	-	38,127.00
b) Bank Balances				
1) In Savings Accounts	16,498,153.49	19,330,420.69	17,635,201.49	11,840,644.88
Group-A				
Salary Components				
1) A-I(A) Pay & Allowances to Officers and Staff				
Group-B				
1) B-III(A) Leave Salary Contributions		67,927.00		
2) B-III(B) Pension Contribution		91,933.00		
Group D-X				
1) D-X(C) Book Grant	25,200.00			
Group D-XI(NER)				
1) D-X(D) Other Academic Programme (NER)	100,000.00			
Group-G				
G-1				
1) G-I(D) Prior Period Adjustment-Non salary		1,200.00		
2) G-I(E) Prior Period Adjustment-Plan General	1,042,107.00			
3) G-I(F) Prior Period Adjsutment: Plan Capital	87,381.00		-	
4) G-I(G) Prior Period Adjustment: Plan Gerneral SC	55,500.00			
5) G-I(K) Prior Period Adjustments : Plan - NER	88,458.00			
6) G-I(O) Prior Period Adjustment:Plan -NER(ST)	1,516.00		2,203,913.00	
7) J-I(I) Other Provisions		-		

PAYMENTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
I. Expenses:				
Group-A				
Salary Components				
1) A-I(A) Pay & Allowances to Officers and Staff	-	27,838,794.00	-	24,915,558.00
2) A-I(B) Over Time Allowances -	21,833.00	-	12,803.00	
3) A-I(E) Bonus	-	181,911.00	-	182,774.00
4) A-I(G) Leave Encashment During LTC	-	154,481.00	-	-
Group-B				
1) B-I(A) Pension & Pensionery Befefits		2,876,265.00		2,349,982.00
2) B-I(B) Gratuity		-		
3) B-I(C) Leave Encashment		-		474,580.00
4) B-I(D) Pension Commutation		418,681.00		
5) B-II(A) Employer's contribution to CPF		58,456.00		58,820.00
6) B-II(B) Interest on Employer's contribution to CPF		4,595.00		5,117.00
7) B-II(D) Other Expense related with GPF		60,000.00		
8) B-II(E) Employe's contribution to NPF		220,363.00		205,972.00
9) B-III(A) Leave Salary Contribution				158,452.00
10) B-III(B) Pension Contribution				367,747.00
11) B-IV(A)Honorarium				5,000.00
12) B-IV(B) Other Expenditure				360,000.00
Group-C				
C-I				
1) C-I(A) Travelling Allowances to Officers		177,214.00		
2) C-I(B) Travelling Allowances to Staff		86,271.00		351,844.00
3) C-I(C) Conveyance		15,343.00		15,985.00
C-II				
1) C-II(A) Medical Insurance premium	53,657.00		-	
2) C-II(B) Medical Insurance Premium		1,339,736.00		241,835.00
3) C-II(C) Other Medical Exp.		3,999.00		

RECEIPTS	YEAR ENDED 31.03.2015		YEAR ENDED 31.03.2015	
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
Group-I				
1) J-I(M) Provision for Other Remittances		7,500.00		
2) J-I(Y) Other Provisions				
Group-J				
Grant from Government of India				
1) K-I(A) Grant Received From(MHRD) Non Plan Salary		60,513,000.00		
K-I(B) Grant Recd. From (MHRD)-Non Salary Pension		11,891,000.00		
1) K-I(D) Grand Received From (MHRD) Plan-General	33,415,000.00		31,879,000.00	45,411,000.00
2) K-I(E) Grant Received From (MHRD) Plan Capital	3,466,000.00		4,729,000.00	
3) K-I(F) Grants Received From (MHRD) Plan General SC	6,305,000.00		5,492,000.00	
Income from ICPR Publication & Journals				
1) K-IV(A) Sales Proceeds & Royalty-Book		95,250.00		169,487.81
2) K-V(B) Life Membership-JICPR		5,000.00	115,050.00	
3) K-VI(A) Misc Receipts-Reprography Service		32,798.00		63,656.00
4) K-VI(B) Misc. Receipts-Unserviceable/obsolete		71,218.00		613.00
5) K-VI(C) Misc. Receipts Interest on Advance to Empl		16,382.00		7,739.00
6) K-VI(D) Misc.Receipts Intt. on Saving and Deposits		2,292,703.00	27,197.00	1,625,770.00
7) K-VI(F) Misc. Receipts Others		161,553.00		14,319.00
8) K-VI(I) Sale of Fellowship Forms		11,150.00		54,734.00
10) K-VI(D) Misc Receipts Intt.on Saving	27,947.00			
a) Grant From Ministry of HRD Gen Capital (ST)	-		180,000.00	-
b) Grant From Ministry of HRD Gen (ST)	-		2,405,000.00	-

PAYMENTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
C-III				
1) C-III(A) Leave Travel Concession		205,576.00		217,807.00
C-IV				
1) C-IV(A) Advertisements		38,849.00		94,668.00
C-V				
1) C-V(A) Statutory Audit Fee		29,995.00		
2) C-V(B)- Internal Audit Fee		85,771.00		35,401.00
C-VI				
1) C-VI(A) Electricity Charges (New Delhi)		1,071,360.00		
2) C-VI(B) Electricity Charges Lucknow		281,698.00		1,249,388.00
3) C-VI(C) Water Charges (New Delhi)		72,895.00		
4) C-VI(D) Water Charges (Lucknow)		12,820.00		69,781.00
C-VII				
1) C-VII(A) Staff Car Running Exp.-(DLC-1993)		149,638.00		
2) C-VII(B) Staff Car Repair & Maint Exp.-(DLC-1993)		67,278.00		
3) C-VII(C) Staff Car Insuracne (DL-1993)		5,884.00		
4) C-VII(D) Staff Car Running Exp. -(DL/3C-0989)		74,154.00		
5) C-VII(E) Staff Car Repair & Maint. Exp (0989)		72,093.00		
6) C-VII(F) Staff Car Insurance Exp. (DL/3CBM-0989)		7,198.00		335,030.00
C-VIII				
1) C-VIII(A) Stationery Expenses -(New Delhi)		343,979.00		
2) C-VIII(B) Stationery Expenses (LKO)		63,753.00		
3) C-VIII(C) Printing Expenses		46,831.00		450,339.00
4) C-VIII(D) Computer Consumable & Accessioer of ND		15,900.00		
5) C-VIII(E) Computer Consumable & Accessories LKO		1,755.00		12,150.00

RECEIPTS	YEAR ENDED 31.03.2015				PAYMENTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan		Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
Group-K **Advance for** **Academic Programs**					**C-IX**				
1) L-V(A) Advance-Seminar/Conference	15,000.00				1) C-IX(A) Postage & Courier (New Delhi)		50,039.00		
2) L-V(B) Advance-Lectures	57,500.00				2) C-IX(B) Postage & Courier (Lucknow)		10,557.00		126,307.00
3) L-V(F) Advance-Fellowship		203,500.00			**C-X** 1) C-X(A) Repair & Maint. of Office Equipment (ND)		7,827.00		
4) L-V(G) Advance -ICPR Special Programmes	49,000.00				2) C-X(B) Repair & Maint. Office Equipment (LKO)		32,549.00		
5) L-V(H) Advance-Academic Programmes-SC	23,000.00				3) C-X(C) AMC Charges of Office Equipment (ND)		551,843.50		
6) L-V(L) Advance Academic Progammes -NER ST	155,000.00				4) C-X(D) AMC Charges of Office Equipments (LKO)		143,280.00		671,881.00
7) L-V(M) Advance-Other Academic Purpose (Delh)	282,000.00			50,000.00	**C-X**				
8) L-V(N) Advance Other Academic Purpose (LKO)	35,000.00		8,241,104.00		1) C-XI(A) Telephone Charges-29901550		107,877.00		
9) L-VI(A) Advance-Contingency(Misc)		158,010.00		502,339.00	2) C-XI(B) Telephone Charges -29964755- CM Office		7,718.00		
10) L-VI(C) Advance-Others	-	739,108.00		1,482,728.00	3) C-XI(C) Telephone Charges-29964750(MS)		6,165.00		
11) L-VI(D) Advance-Lucknow Related Adm. Advance		321,769.00			4) C-XI(D) Telephone Charges-Mobil (MS)		20,142.00		
Advance-Others									
1) L-IV(A) Advance-Festival		59,400.00			5) C-XI(E) Telephone Charges Chairman Mobile		13,125.00		
2) L-VI(A) Advance-Imprest		111,600.00	-	332,074.00					
3) L-IV(I) Advance-LTC		120,850.00	700.00		6) C-XI(F) Telephone Charges-Director(P&R) Mobile		11,741.00		
4) L-VI(D) Advance - Lucknow Related Adminustrative	32,954.00		14,500.00						
5) L-VI(C) Advance-Others	12,150.00	-			7) C-XI(G) Telephone Charges No.-8004922772 (Mobile)		5,085.00		
6) L-VI A) Recovery of other advance/ securities			80,500.00		8) C-XI(I) Telephone Charges -9810223396-		20,220.00		
Security & Deposits									
1) L-VII(A) Deposit with CPWD	176,954.00								
2) L-VII(E) Security-Fuel		15,000.00			9) C-XI(J) Telephone Charges -2395349- (Lucknow)		63,890.00		275,789.00

RECEIPTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
Sundry Debotrs				
1) L-VII(A) Sundry Debotrrs	15,000.00			179,184.00
Group-L				
1) M-I(B) Adjustment- Refresher Courses	17,000.00			
2) M-I(C) Adjustment- Old Year Lecture Adv.	274,969.00			
3) M-I(D) Adjustment- Other Academic- (Delh)	121,500.00			
4) M-I(E) Adjustment- Other Academic(LKO)	6,788,153.00	52,620.00		
5) M-II(A) Adjustment- Old year Festival Advance		46,875.00		
6) M-II(E) Adjustment- Old year Car Advance		42,720.00		
7) M-II(D) Adjustment- Old year Scooter Advance		14,400.00		
8) M-III(A) Adjustment- TA		36,590.00		
9) M-III(C) Adjustment- old year Other Advance	1,084,905.00			
10) M-III(D) Adjustment- old year Contigency Advance		8,000.00		
Group-M				
1) N-III(C) Adjustment- Telephone Security		1,440.00		
Group-N				
1) O-1(A) Income Tax	155,448.00	1,566,931.00	116,472.00	1,302,705.00
2) O-1(B) LIC-GSLIS		167,997.00		64,021.00
3) O-1(C) LIC-SSS		37,548.00		38,115.00
4) O-1(D)-CPF		270,000.00		205,000.00
5) O-I (J)-NPF		249,463.00		204,106.00
6) O-I-(E) GPF		4,307,727.00		3,992,070.00
7) O-1(H)-Other remittances		102,300.00		234,870.00
8) O-1(J)-Accidental Insurance		39,000.00		
Other Receipts				
1) TA to Officers & staff			22,249.00	

PAYMENTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
C-XII				
1) C-XII(A) Rent ICPR Lucknow		270,000.00		300,000.00
2) C-XII(C) Guest Houe related expenses	424,839.00	-	-	
C-XIII				
1) C-XIII(A) Liveries (ND)		24,825.00		
2) C-XIII(B) Liveries(LKO)		22,111.00		29,004.00
C-XIV				
1) C-XIV(A) Contingencies (Misc Exp. of ND)		160,574.00		
2) C-XIV(B) Contingencies (Misc. Exp. of Lko)		80,087.00		218,824.00
3) C-XIV(D) Property Tax		155,258.00		
4) C-XIV(E) Ground Rent to DDA		17,589.00		200,245.00
5) C-XIV(F) Staff Training Fee		13,303.00		44,944.00
6) C-XIV(G) Staff Welfare Expenses		17,854.00		9,000.00
7) C-XIV(H) Security Charges		408,993.00		374,835.00
C-XIX				
1) C-XIX (B) FISP/SICI Membership		15,000.00		
2) C-XIX(C) Bank Cahrges		7,853.00	112.00	14,391.00
C-XV				
1) C-XV(A) Website Expenses		72,319.00		
2) C-XV(B) Internet Connection Delhi-29964751		13,101.00		
3) C-XV(C) Internet Charges- 2392636 (Lko)		5,673.00		53,675.00
4) C-XV(D) Data Card of Chairman		10,212.00		
5) C-XV(E) Data Card Charges (M.S)		10,936.00		
C-XVI				
1) C-XVI(A) Horticulture Exp. Delhi Office		4,989.00		4,822.00
C-XVII				
1) C-XVII(B) Running Exp of Genset LKO		16,854.00		
C-XVIII				
1) C-XVIII(A) Legal Charges	268,000.00			
2) C-XVIII(B) Professional Charges	1,135,606.00			
3) C-XVIII(C) Wages		21,496.00	716,464.00	
C-XX				
1) C-XX(A) Hospitality to Official Guests/Non		19,484.00		

RECEIPTS	YEAR ENDED 31.03.2015				PAYMENTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan		Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
					C-XXI				
					1) C-XXI(A) Ta to Council Committee Members		93,931.00		
					2) C-XXI (B)- Hospitality to Council Committee Memb.		46,208.00		
					3) C-XXI(C) Sitting Fee		26,000.00	12,000.00	
					4) C-XXI(D) TA to Governing Body		97,921.00		
					5) C-XXI(E) Hospitality to GB Members		53,347.00		
					6) C-XXI(F) Sitting Fee to Governing Body		24,000.00		
					7) C-XXI(G) TA to RPC Meeting		167,178.00		
					8) C-XXI(H) Hospitality to RPC Members		39,915.00	104,721.00	
					9) C-XXI(I) Sitting Fee RPC Member		19,000.00		
					10) C-XXI(J) TA to Finance Committee Meeting		54,434.00		
					11) C-XXI(K) Hospitality to Finance Committe Meeting		14,908.00		
					12) C-XXI(L) Sitting Fee Finance Committe Members		10,000.00		
					13) C-XXI(M) TA to Other Committee Member		55,722.00		
					14) C-XXI(N) Hospitality to Other Committee Memb.		12,854.00	1,544.00	
					15) C-XXI(O) Sitting Fee to Other Commttee Members		8,000.00		
					16) C-XXI(P) TA to Non-Official Members		5,004.00		1,246,177.00
					17) C-XXI(Q) Hospitality to Non Official Members		13,349.00		
					18) Repair & Maint. Of Building			6,650.00	1,465.00
					19) Diesel for Genset				7,750.00
					20) Prior period adjustment				95,105.00
					Group-D				
					1) D-I(A) National Fellowships		1,717,500.00	2,302,939.00	
					2) D-I(B) Senior Fellowship		2,460,000.00	3,076,522.00	
					3) D-I(C) General Fellowships		5,363,000.00	6,340,079.00	
					4) D-I(D) Junior Research Fellowships		13,866,083.00	9,304,607.00	
					5) D-I(F) Other Exp. of Fellowships		293,255.00	800,819.00	
					6) Fellowships-General-SC		-	2,123,791.00	

RECEIPTS	YEAR ENDED 31.03.2015				PAYMENTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan		Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
					7) Fellowships-General-ST			199,000.00	
					1) D-I(B) Senior Fellowships	40,000.00			
					2) D-I(C) General Fellowhips	866,522.00			
					3) D-I(D) Junior Research Fellowships	1,592,033.00			
					4) D-I(F) Other Expenses of Fellowhips	127,396.00			
					5) D-I(G) Fellows Orientation Meet	150,172.00			
					6) D-I(H)Gandhi Rama Seminar			103,551.00	
					D-II				
					1) D-II(A) ICPR Organised Seminars	981,574.00		2,451,196.00	
					2) D-II(B)- Conference	9,138.00			
					3) D-II(C) Workshops	1,956,477.00		874,069.00	
					4) D-II(D) International Conference	287,284.00			
					5) D-II(E) Review Meets/ fellow's Meet	212,046.00			
					6) D-II(H) Other Academic Exp.	18,874.00		220,000.00	
					D-III				
					1) D-III(A) Refresher Courses	1,355,027.00		739,874.00	
					2) D-III(B) Refresher Courses Workshop General-NER			270,000.00	
					D-IV				
					1) D-IV(A) Grants for Seminar	5,195,795.00			
					2) D-IV(B) Grants for Workshop	1,186,411.00		1,751,009.00	
					3) D-IV(C) Grants for all academic programme Gen-ST			180,000.00	
					4) D-IV Grants for all academic programme Gen-SC			360,000.00	
					5) D-IV(C) Grant for Conference/Annual Sessions	100,000.00		100,000.00	
					6) D-IV(D) Grant for International Conference	180,000.00			
					D-V				
					1) D-V(A) Travel Grant	41,334.00		15,572.00	
					2) D-V(B) Other Expenses on Travel Grant	4,413.00		24,226.00	
					3) D-V(C) Consultation charges			373,326.00	

RECEIPTS	YEAR ENDED 31.03.2015				PAYMENTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan		Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
					D-VI				
					1) D-VI(A) Exhibition/Publicity	18,836.00			
					2) D-VI(B) Bookfair	55,000.00		66,076.00	
					3) D-VI(C) PWD-Electrical			108,081.00	
					4) D-VI(D) Prior period adjustment			12,000.00	
					D-VII				
					1) D-VII(A) Lectures-National	715,478.00			
					2) D-VII(B) Lectures-International	1,137,422.00		1,129,948.00	
					3) D-VII(C) Lectures-Periodical	260,000.00		320,830.00	
					4) D-VII(D) Lectures-NER			154,600.00	
					5) D-VII(E) Lectures-General-SC			30,000.00	
					D-VIII				
					1) D-VIII(A) International Collaborations & Academic	23,077.00		46,939.00	
					D-X				
					1) D-X(A) Grants for Project/ translation Project	1,964,990.00			
					2) D-X(D) Other Special Programme	10,500.00		1,816,170.00	
					3) D-X(C) Book Grant	-			
					D-IX				
					ICPR Special Programmes				
					1) D-IX(A) Life achievement award	262,941.00		396,008.00	
					2) D-IX(D) Project/Translation Project	941,024.00		1,587,752.00	
					3) D-IX(E) Others	5,506.00			
					D-XI(NER)				
					1) D-XI(A) Fellowship General NER	1,271,025.00			-
					2) D-XI(D) Other Academic Programmes NER	2,117,100.00		970,452.00	
					3) D-XI(E) Other Academic Programmes General-SC			3,700.00	
					4) D-XI(F) Other Academic Programmes General-ST			13,325.00	
					D-XI(SC)				
					1) D-XI(A) Fellowships SC	1,761,858.00			
					2) D-XI(B) Seminar/ conferences SC	1,362,167.00		3,340,650.00	
					3) D-XI(C) Lectuers-SC	86,116.00			
					4) D-XI(G) ICPR Special Programm SC	32,105.00			
					D-XI(ST)				
					1) D-XI(A) Fellowships-ST	48,000.00			

RECEIPTS	YEAR ENDED 31.03.2015				PAYMENTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan		Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
					2) D-XI(B) Seminar/ conference-ST	1,410,000.00			
					3) D-XI(C) Lectures-ST	60,000.00			
					4) D-XI(G) ICPR Special Programme -ST	400,000.00			
					E-I				
					Publication Expenses				
					1) E-I(A) Production Expenses	41,500.00			
					2) E-I(B) Honurarium	6,000.00			
					3) E-I(E) Payment to Distributors	210,000.00			
					4) E-I(F) Other Expenses of New Letter/ Annul Report	170,200.00		203,145.00	
					E-II				
					JICPR Expenses				
					1) E-II(A) Production Expenses	69,066.00			
					2) E-II(B) Editorial Expenses	138,022.00			
					3) E-II(E) Other Expenses	64,242.00		202,210.00	
					Group -F				
					1) F-I(D) Furniture & Fixtures	1,292,994.00	-		
					2) F-I(E) Office Equipment	788.00	-		
					3) F-I(F) Computers,Printer & Peripherals	2,200.00	-		
					4) F-I(H) Library Books	175,342.00	-		
					5) F-I(I) Library-Periodicals	3,855,799.00	-		
					6) F-I(K) Tubewell & Water Supply	24,457.00	-	3,539,128.00	
					Group- H				
					1) H-I(A) Sundry Creditors	211,182.00	131,784.00	7,334.00	74,000.00
					Group- I				
					Provisions				
					1) J-I(R) Provision for Fellowship Others		-	159,540.00	
					2) J-I(Y) Other Provision	830705		300,000.00	
					3) J-I(A) Provision for Leave Encashment		1,421,051.00		242,740.00
					4) J-I(A) Provision for Gratuity		1,502,699.00		1,427,895.00
					5) J-I(A) Provision for Pay & Allowances		2,517,289.00		1,674,804.00
					6) J-I(D) Provision for GPF		356,815.00		305,904.00
					7) J-I(E) Provision for CPF		20,000.00		15,000.00
					8) J-I(F) Provision for GSLIS		4,973.00		2,527.00
					9) J-I(G) Provision for LIC (SSS)		3,465.00		3,465.00
					10)J-I(H) Provision for OTA		2,046.00		
					11)J-I(L) Provision for Monthly Pensioners		299,832.00		204,175.00

RECEIPTS	YEAR ENDED 31.03.2015				PAYMENTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan		Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
					12)J-I(M) Provision for Other Remittances		15,000.00	55,870.00	23,347.00
					15)J-I(X) Provision for other tution fee				169,683.00
					13)J-I(Y) Other Provisions		228,002.00		
					14)J-I(Z) Provision for NPF		22,502.00		15,760.00
					Group -K				
					1. Advance for Academic Programs				
					1) L-V(A) Advance-Seminar/ Conference	615,000.00			
					2) L-V(B) Advance-Lectures	327,500.00			
					2) L-V(F) Advance-Fellowship		203,500.00		
					3) L-V(G) Advance -ICPR Special Programmes	79,000.00			
					4) L-V(H) Advance-Academic Programmes-SC	23,000.00			
					5) L-V(L) Advance Academic Progammes-NER ST	155,000.00			
					6) L-V(M) Advance-Other Academic Purpose (Delh)	428,500.00			
					7) L-V(N) Advance Other Academic Purpose (LKO)	3,185,000.00		8,407,553.00	
					2. Advance-Others				
					1) L-IV(A) Advance-Festival		126,000.00		
					2) L-IV(I) Advance-LTC		120,850.00	700.00	353,195.00
					3) L-VI(A) Advance-Contigency		238,000.00	14,500.00	
					4) L-VI(B) Advance-Imprest		112,000.00		280,684.00
					5) L-VI(C) Advance-Others	964,946.00	739,108.00	1,250,871.00	918,123.00
					6) L-VI(D) Advance -Lucknow Related Adminustrative	3,032,954.00	351,769.00		
					7) L-VII(E) Security-Fuel		15,000.00		
					8) L-VIII(A) Prepaid Expense		131,467.50		777,282.00
					9) K-IV(K) Security deposit refundable	50,000.00			
					Group -L				
					1) M-I(E)-Adjustment Other Academic-LKO				
					2) M-II(H)-Adjustment-TA		-		
					Group -N				
					Remittances				
					1) O-1(A) Income Tax	153,773.00	1,597,731.00	53,945.00	1,358,105.00
					2) O-1(B) LIC-GSLIS		168,077.00		103,437.00
					3) O-1(C) LIC-SSS		40,824.00		38,115.00
					4) O-1(D)-CPF		270,000.00		205,000.00
					5) O-I(I) NPF		249,463.00		204,106.00
					6) O-1(J)-Accidental Insurance premium		39,000.00		-

RECEIPTS	YEAR ENDED 31.03.2015				PAYMENTS	YEAR ENDED 31.03.2015			
	Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan		Plan	Non-Plan	Plan	Non-Plan
					7) O-1(H)-Other remittances		102,300.00		234,870.00
					8) O-I(E) General Provident Fund		4,307,727.00		3,992,070.00
						-	-	-	
					V. Closing Balances:				
					a) Cash in Hand				
					1) Cash in Hand	2,699.00	26,543.62	732.00	3,041.62
					2) Imprest Balance		13,527.00	-	13,527.00
					b) Bank Balances				
					With Scheduled Banks:				
					- On Savings Accounts	24,168,915.49	24,932,558.69	16,498,153.49	19,330,420.69
TOTAL`A'	**70,408,527.49**	**103,278,451.31**	**73,142,283.49**	**67,816,523.31**	TOTAL`B'	**70,408,527.49**	**103,278,451.31**	**73,142,283.49**	**67,816,523.31**

PLACE : NEW DELHI
DATE : 20.06.2015

(SREEKUMARAN S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. SINGH)
Member Secretary

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

336, Tughlakabad Institutional Area, Near Batra Hospital, New Delhi - 110 062

GENERAL PROVIDENT FUND

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 2015

LIABILITIES			ASSETS		
Particulars	**(Rs.)**	**(Rs.)**	**Particulars**	**(Rs.)**	**(Rs.)**
1	2	3	4	5	6
1. Subscription			**1. Fixed Deposit**		
Balance as on 01.04.2014	23,568,931.00		Balance as on 01.04.2014	24,684,363.00	
Add:			Add: Addition during the year	-	
Addition during the year 2014-15	4,644,542.00		Interest Accured 2014-15	24,684,363.00	
Interest on subscription	2,106,967.00		Less: FDR Matured -2014-15	-	24,684,363.00
	30,320,440.00				
Less:			**2. Special Deposit**		
Refund/Withdrawl and final settlement during the year	3,357,360.00		Balance as on 01.04.2014	712,519.00	
Prior period adjustment	225,728.00	26,737,352.00	Add: Addition during the year	-	712,519.00
2. Income Retained from Investment of GP Fund			3. Balance at Bank as on		31.03.2015
Balance as on 01.04.2014	3,288,398.99		-Indian Bank S.B. A/c		2,799,082.99
Add/(Less):					
Prior period adjustment	225,728.00				
Addition during the year	145,933.00				
	3,660,059.99				
Less:					
Interest on Subscription	2,201,154.00				
Prior period adjustment	293.00	**1,458,612.99**			
Grand Total		**28,195,964.99**	**Grand Total**		**28,195,964.99**

PLACE : NEW DELHI
DATE : 20.06.2015

(SREEKUMARAN S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. SINGH)
Member Secretary

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tughlakabad Institutional Area, Near Batra Hospital, New Delhi - 110 062

GENERAL PROVIDENT FUND

RECEIPTS & PAYMENTS FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2015

RECEIPTS		PAYMENTS	
Particulars	**(Rs.)**	**Particulars**	**(Rs.)**
1	2	3	4
Opening Balance as on 01.04.2014	1,460,216.99	Refund/Withdrawls and final Settlement during the year	3,451,547.00
Subscription and refunds of advance	4,644,542.00	Addition to FDR	-
FDRs Matured	-	Bank Charges	62.00
Bank interest received on S.B. A/c	83,943.00	TDS	-
Interest received on Special Deposit	61,990.00	Closing Balance as on 31.03.15 Indian Bank S.B. A/c	2,799,082.99
Grand Total	**6,250,691.99**	**Grand Total**	**6,250,691.99**

PLACE : NEW DELHI
DATE : 20.06.2015

(SREEKUMARAN S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. SINGH)
Member Secretary

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

336, Tughlakabad Institutional Area, Near Batra Hospital, New Delhi - 110 062

CONTRIBUTORY PROVIDENT FUND

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 2015

LIABILITIES			ASSETS		
Particulars	**(Rs.)**	**(Rs.)**	**Particulars**	**(Rs.)**	**(Rs.)**
1	2	3	4	5	6
1. Subscription			**1. Fixed Deposit**		
Balance as on 01.04.2014	1,654,876.00		Balance as on 01.04.2014	2,977,737.00	
Add:			Add:		
Prior period Adjustment	-		Addition during the year	-	
	1,654,876.00		Intt. accrued during the year	-	
Add:				2,977,737.00	
Addition during the year	290,000.00		Less:		
Interest on subscription	141,148.00		FDR matured During the year	-	2,977,737.00
	2,086,024.00				
Less:			**2. Special Deposit**		
Refund/Withdrawl	893,755.00	1,192,269.00	Balance as on 01.04.2014	59,844.00	
			Add:		
2. Contribution			Interest allowed by Bank and		
Balance as on 01.04.2014	1,351,365.00		Reinvested	-	59,844.00
Add:			4. Prior period adjustments		
Employer's Share of			Balance as on 01.04.2014	4,317.00	
Contribution	58,456.00		Add: Addition during the year	-	4,317.00
Interest on contribution	125,143.00		7. Balance at Bank		
	1,534,964.00		As on 31.03.2015		125,172.40
Less:					
Refund/Final Withdrawal	413,847.00	1,121,117.00			
3. Income Retained from Investment of CP Fund					
Balance as on 01.04.2014	1,072,747.40				
Add:					
Addition during the year	42,884.00				
	1,115,631.40				
Less:	-				
Prior period adjustments	251.00				
Intt on Employee's subscription	141,148.00				
Intt on Employer's Contribution	120,548.00	853,684.40			
Grand Total		**3,167,070.40**	**Grand Total**		**3,167,070.40**

PLACE : NEW DELHI
DATE : 20.06.2015

(SREEKUMARAN S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. SINGH)
Member Secretary

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tughlakabad Institutional Area, Near Batra Hospital, New Delhi - 110 062

CONTRIBUTORY PROVIDENT FUND

RECEIPTS & PAYMENTS FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2015			
RECEIPTS		**PAYMENTS**	
Particulars	**(Rs.)**	**Particulars**	**(Rs.)**
1	2	3	4
Opening Balance as on 01.04.14	1,036,839.40	CPF withdrawn	1,307,602.00
Subscription and refunds of advance During the year	290,000.00	Closing Balance as on 31.03.15	125,172.40
Interest on contribution	4,595.00		
Employer's share of contribution	58,456.00		
Bank interest received on S.B. A/c	38,064.00		
Bank interest received on Special	4,820.00		
Grand Total	**1,432,774.40**	**Grand Total**	**1,432,774.40**

PLACE : NEW DELHI
DATE : 20.06.2015

(SREEKUMARAN S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. SINGH)
Member Secretary

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

336, Tughlakabad Institutional Area, Near Batra Hospital, New Delhi - 110 062

NEW PENSION FUND

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 2015

LIABILITIES			ASSETS	
Particulars	**(Rs.)**	**(Rs.)**	**Particulars**	**(Rs.)**
1	2	3	4	5
1. Employees Subscription			1. Balance at Bank	
Add:			As on 31.03.2015	1,182,198.00
Balance as on 01.04.2014	1,054,002.00			
Add:				
Addition during the year	271,965.00			
	1,325,967.00			
Less:				
Withdrawal/Final settlement	867,862.00	458,105.00		
2. Employer's Contribution				
Balance as on 01.04.2014	975,197.00			
Add:				
Addition during the year	258,927.00			
	1,234,124.00			
Less:				
Withdrawal/Final settlement	867,862.00	366,262.00		
Bank Interest				
Balance as on 01.04.2014	259,266.00			
Addition during the year	98,565.00	357,831.00		
Grand Total		**1,182,198.00**	**Grand Total**	**1,182,198.00**

PLACE : NEW DELHI
DATE : 20.06.2015

(SREEKUMARAN S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. SINGH)
Member Secretary

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tughlakabad Institutional Area, Near Batra Hospital, New Delhi - 110 062

NEW PENSION FUND

RECEIPTS & PAYMENTS FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2015			
RECEIPTS		**PAYMENTS**	
Particulars	**(Rs.)**	**Particulars**	**(Rs.)**
1	2	3	4
Opening Balance as on 01.04.14	2,288,465.00	Withdrawal/Final settlement	
		Employee subscription	867,862.00
Employee Subscription during the year	258,927.00	Employer's contribution	867,862.00
Employer's share of contribution	271,965.00		
Interest Recd. On S.B. A/c	98,565.00	Closing Balance as on 31.03.15	1,182,198.00
Grand Total	**2,917,922.00**	**Grand Total**	**2,917,922.00**

PLACE : NEW DELHI
DATE : 20.06.2015

(SREEKUMARAN S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. SINGH)
Member Secretary

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tughlakabad Institutional Area, Near Batra Hospital, New Delhi - 110 062

RECEIPTS & PAYMENTS (FCRA) FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2015

RECEIPTS		PAYMENTS	
Particulars	**(Rs.)**	**Particulars**	**(Rs.)**
1	2	3	4
Opening Balance as on 01.04.2014	1,657.00	Closing Balance as on 31.03.15	1,724.00
Bank interest received on S.B. A/c	67.00		
Grand Total	**1,724.00**	**Grand Total**	**1,724.00**

PLACE : NEW DELHI
DATE : 20.06.2015

(SREEKUMARAN S.)
Accounts Officer

(Dr. M.P. SINGH)
Member Secretary

XXI
Photo Section

Workshop on Russell's Problems of Philosophy
20 29, August, 2014, ICPR, Academic Centre, Lucknow

National Education Day
November 11, 2015, ICPR, Academic Centre, Lucknow

World Philosophy Day
20 11 2014

Workshop on Philosophy on Quantum Mechanics for Philosophers and Social Scientists "
1 10 January 2014

Workshop on "Philosophy on Quantum Mechanics for Philosophers and Social Scientists" was held during 1-10 January 2014 at ICPR Academic Centre

A national Workshop on “Tarka-Saṅgraha of Annambhaṁa” was organized by the Indian Council of Philosophical Research between 19th January to 31st January 2015 at ICPR Academic Centre, Lucknow. Prof. V.N.Jha

Prof. Richard Sorabji, ICPR Visiting Professor (Overseas) Lecture Programme
February 02, 2015

A Lecture programme of Professor Richard Sorabji, ICPR Visiting Professor (Overseas) was held on 02.02.2015 at Conference hall of ICPR Academic Centre, Lucknow.

Essay Competition Cum Young Scholars' Seminar

16-17 February 2015

Prof. Subhaschandra E. Bhelke, ICPR Visiting Professor (Indian) 2014-15
February 17, 2015

A Lecture programme of Subhaschandra E. Bhelke, ICPR Visiting Professor (Indian) 2014-15 was held on 17.02.2015 at Conference hall of ICPR Academic Centre, Lucknow.

National Seminar on Dalit Theory and Experience-The Cracked Mirror

11th - 12th March 2015

ICPR Academic Centre, Lucknow. Professor Rakesh Chandra and Professor Gopal Guru were the Coordinator of the Seminar.

National Seminar on "Dayakrishna on Human Values: Division and Dynamics"

16th 18th March 2015

A National Seminar on "Dayakrishna on Human Values: Division and Dynamics" was held at ICPR Academic Centre from 16-18 March 2015. Professor Asha Mukharjee, Vishv-Bharati, Shanti Niketan (W.B.) was co-ordinator of this Seminar and Seminar was jointly organized with Daya Krishna Academic Foundation, Shantiniketan.

Lecture Programme of Professor Mohini Mullick, ICPR (Visiting Professor Indian) March 19, 2015

A lecture prgramme of Professor Mohini Mullick (ICPR Visiting Professor Indian) was organized at ICPR Academic Centre, Lucknow on 19.03.2015.

Professor Chhanda Gupta (ICPR Visiting Professor-Indian) Lecture Programme March, 24th 2015

A Lecture Programme of Professor Chhanda Gupta (ICPR Visiting Professor – Indian) was held on 24.03.2015 at 2:00 PM at Conference Hall of ICPR Academic Centre.

The ICPR Academic Cetre at lucknow. India

Indian Council of Philosophical Research

Darshan Bhavan

36, Tuglakabad Institutional Area, (Near Batra Hospital). MB Road, New Delhi - 110062